अज्ञातकर्तृका

बृहट्टिप्पनिका

वर्धमान जिनरत्नकोश अंतर्गत

अज्ञातकर्तृका

बृहट्टिप्पनिका

श्रुतभवन संशोधन केंद्र

पुणे

श्रुतदीपग्रन्थश्रेणिः २७

- वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प लाभार्थी -

मांगरोळ निवासी मातुश्री चंद्रकलाबेन सुंदरलाल शेठ परिवार

ग्रंथनाम - बृहट्टिप्पनिका
कर्ता - अज्ञात जैनश्रमण
विषय – कोश
संपादक - मुनिवैराग्यरतिविजयगणी
सह संपादक - मदनदेव डोंगरे

प्रकाशक - श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन - श्रुतभवन संशोधन केंद्र, पुणे
पत्र - ३२ + २०० = २३२
आवृत्ति - प्रथम, वि.सं.२०७५, ई. २०१९
मूल्य - ४००.०० रु.
स्वामित्व - श्रमणसंस्थाधीनश्रुतदीपानुसन्धानसंस्थानम्।
ISBN - 978-81-941972-4-9

-: प्राप्तिस्थल :-

पुणे : **श्रुतभवन संशोधन केंद्र**
४७/४८ अचल फार्म, आगम मंदिर से आगे,
सच्चाई माता मंदिर के पास, कात्रज, पुणे-४११०४६
Mo.७७४४००५७२८ (9-00am to 5-00pm)
www.shrutbhavan.org
Email : shrutbhavan@gmail.com

अहमदाबाद : **श्री उमंगभाई शाह**
बी-४२४, तीर्थराज कॉम्प्लेक्स,
वी.एस.हॉस्पिटल के सामने मादलपुर,
अहमदाबाद- मो.०९८२५१२८४८६

मुंबई : **श्री गौरवभाई शाह**
सी/१११, जैन एपार्टमेंट, ६० फीट रोड, देवचंद नगर रोड,
भायंदर (वेस्ट) मुंबई-४०११०१. मो.०९८३३१३९८८३

सुरत : **श्री सेवंतीलालभाई मेहता**
ओंकारसूरि ज्ञानमंदिर, सुभाष चौक,
गोपीपुरा, सुरत - ३९५००१ मो. ९८२४१५२७२७

मुद्रण : नूतन आर्ट, अहमदाबाद

प्रकाशकीयम्

परमात्मना श्रीमहावीरभगवता केवलज्ञानं सम्प्राप्य श्रुतज्ञानशक्तिरधिकारश्च गणधरभगवद्भ्यस्समर्पितः। तमाधारीकृत्य गणधरभगवद्भिरागमरचना कृता।

प्राचीनकाले साधवो मुखोद्गतं कृत्वा आगमग्रन्थान् स्मृतावधारयन्। मुखपरम्परयैव सूत्र-सूत्रार्थपठनादागमज्ञानं भवति स्म। परमात्मनः श्रीमहावीरभगवतो निर्वाणानन्तरमष्टशतवर्षाणि यावत् परम्परेयमविच्छिन्ना स्थिता। कालान्तरेण जनानां कण्ठस्थीकरणशक्तिः स्मरणशक्तिश्च क्षीणतरा जाता। परिणामतः आगमानां विस्मरणमारब्धम्। कालेऽस्मिन् कठिने गीतार्थसूरिभिरागमानां लेखनमारब्धम्। आगमानामन्यशास्त्राणां लेखनमिदं तत्काल उपलब्धैः विविधप्राकृतिकसंसाधनैरभवत्। विद्वद्भिराचार्यैः मूलशास्त्ररहस्यमवगन्तुमागमानां कृतं विवेचनमेव टीका अथवा व्याख्यानमिति प्रसिद्धम्।

अनन्तरम्, विकसितासु प्रादेशिकभाषासु शास्त्राणां तत्र तत्र अनुवादोऽभवत्। स्वज्ञानमुपयुज्य नूतनशास्त्राणां रचनां कर्तुं प्रेरयन्ति स्म आचार्याः स्वशिष्यान्। एवं श्रमणपरम्परया शास्त्रज्ञानमपि वृद्धिं गतम्। सहस्राधिकपञ्चशतवर्षेषु पञ्चचत्वारिंशदागमानाधारीकृत्य सहस्रावधिशास्त्रग्रन्थाः निर्मिताः। ग्रन्थानामेतेषां नैकाः प्रतयोऽपि जाताः। हस्तलिखितत्वात् ताः 'हस्तलिखितानि' इति कथ्यन्ते।

सूचिपत्रनिर्माणम्

हस्तलिखितानां नियोजनबद्धसंरक्षणपद्धतेः विकासोऽप्यग्रे अभवत्। हस्तलिखितसङ्ग्रहाः सङ्घेषूपाश्रयस्थानकेष्वपि च मन्दिरेषु संरक्षिता आसन्। प्रत्येकस्मिन् ज्ञानभाण्डारे उपलब्धहस्तलिखितानां सूचिपत्रं भवति स्म। तत् 'टीप' अथवा 'टिप्पणी' इति कथ्यते स्म। एतासु टिप्पणीषु बृहट्टिप्पणी प्राचीनतमा। विक्रमात् त्र्यशीत्यधिके त्रयोदशशततमे संवत्सरे(१३८३) वर्षे केनचित् मुनिना तत्काले उपलब्धानां हस्तलिखितानां सूचिरूपा टिप्पणीयं निर्मिता। सूच्यामस्यां विविधग्रन्थाभिधानानि, तेषां कर्तारो गाथासङ्ख्या च निर्दिष्टाऽस्ति। अपि चोक्तग्रन्थस्य हस्तलिखितसङ्ख्याऽपि उल्लिखिता वर्तते। भारतवर्षे उपलब्धानां सूचिपत्राणामितिहासे प्रथमसूचिपत्ररूपेण विराजते बृहट्टिप्पणिका।

यन्त्रयुगेऽस्मिन्नाविष्कृतानां विभिन्नसंसाधनानां साहाय्येनैतेषां सूचिपत्राणां प्रतिलिपयः निर्मिताः विविधेषु भाण्डारेषु वितरिताश्च। नैकैः भाण्डारैः स्वकीयहस्तलिखितानां सूचिपत्राणि प्रकाशितानि। संशोधकाः साधवो विद्वांसश्च यथावश्यकं तानि उपयुञ्जन्ति। विदेशस्थानां हस्तलिखितानां सूचिपत्राण्यान्तरजालेऽपि प्राप्तुं शक्यन्ते।

सूचिपत्राणामुपयुक्तता

विविधैरुद्दैशैः विद्वांसः हस्तलिखितान्यभ्यसन्ति। भाषाधर्मविज्ञानतत्त्वज्ञानाभ्यासकानां कृते प्राचीनहस्तलिखितानि महत्त्वपूर्णानि। आवश्यकहस्तलिखितानां सुलभप्राप्त्यर्थं सूचिपत्राण्यावश्यकानि। ग्रन्थाभिधानेन सह तस्य कर्ता, टीकाः, टीकाकाराः इत्यादिविषयेष्ववबोधयन्ति सूचिपत्राणि। अतस्तेषां संशोधनकार्ये महत्त्वम्।

श्रुतभवनसंशोधनकेन्द्रस्य योगदानम्

प्रामाणिकसूचिनिर्माणाय महत्त्वं ददत् श्रुतभवनं तस्य विकासाय कटिबद्धम्। संशोधनकार्ये अस्याः महत्त्वं ज्ञात्वा श्रुतभवनसंशोधनकेन्द्रस्य वर्धमानजिनरत्नकोशविभागेन बृहट्टिप्पणिका सम्पादिता। भविष्यत्काले संशोधनक्षेत्रे इयं मार्गदर्शिका भूयादित्याशास्ते।

शाहोपाह्वो भरतः

(श्रुतदीपसंशोधनसंस्थानस्योपाध्यक्षः)

प्रकाशकीय

परमात्मा श्री महावीरदेव ने केवलज्ञान प्राप्त करके श्रुतज्ञान की शक्ति और अधिकार गणधर भगवंतों को सोंपा। उसके आधारपर गणधर भगवंतों ने आगमों की रचना की।

प्राचीनकाल में साधुभगवंत आगम का वह ज्ञान मुखपाठ करके सतत अपने स्मृतिपटलपर रखते थे। उस काल में आगमज्ञान श्रुतबद्ध-मुखपरंपरा से सूत्र और सूत्रार्थ सहित सीखा जाता था। परमात्मा श्री महावीरदेव के निर्वाण पश्चात लगभग ८०० वर्षों से अधिक समय तक यह परंपरा अविच्छिन्न चलती रही। कालांतर में मुखाग्र-कंठस्थ यादशक्ति क्रमशः क्षीणतर होने लगी। इस कारण से आगम विस्मृत होने लगे। तब तत्कालीन गीतार्थ सूरिभगवंतों द्वारा विस्तारित स्वरूप में आगमों के लेखन की परंपरा शुरु हुई। यह लेखन उस काल में उपलब्ध ताड नामक वृक्ष के छाल से बने पत्र (सामान्य भाषा में उस काल का मनुष्य के हाथों द्वारा निर्मित 'कागज') पर आगम एवं अन्य शास्त्रों का लेखन होने लगा। ज्ञानी भगवंतों ने मूल शास्त्रों के रहस्य तक पहुंचने के लिए आगमों पर जो विवरण / विवेचन आदि लिखें। इन को ही आगे चलकर टीका अथवा व्याख्यान के नाम से आज तक पहचाना जाता है।

तदनंतर, इस लेखनविधा का विकास हुआ। अनेक शास्त्रों के भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं (उदा.-गुजराती, राजस्थानी, मरुगुर्जर, हिंदी आदि) में अनुवाद भी हुए। श्रमणों द्वारा लेखन की यह परंपरा उत्तरोत्तर पीढी दर पीढी वृद्धिंगत होने लगी। गुरुभगवंत अपने अधीनस्त शिष्यों को पढाने (अध्ययन) और फिर नये एवं पुराने शास्त्रों की रचना करते हुए अपने ज्ञान का विनियोग करने की भी प्रेरणा करते थे। १५०० वर्ष की समयावधि में ४५ आगमों के आधारपर हजारों नये शास्त्रों की रचनाएं हुई। इन शास्त्रों की अनेक हस्तलिखित आवृत्तियां भी तैयार हुई। हाथों से लिखी गई इन आवृत्तियों को ही हस्तप्रत (पांडुलिपियां) कहा जाता है।

सूचिपत्र का निर्माण

शास्त्रों की उपरोक्त हस्तलिखित प्रतों की सार-संभाल करने की नियोजनबद्ध परंपरा की भी शुरुआत हुई। इन हस्तप्रतों के संग्रह स्थानीय संघों के उपाश्रयों-स्थानकों अथवा मंदिरों के अधिकार में रहे और ज्ञानभंडारों में संरक्षित किया जाता रहा। प्रत्येक ज्ञानभंडारों में संग्रहित कौन-कौन से शास्त्र हैं? उनका सूचिपत्र तैयार किया जाता था, इस पद्धति को 'टिप्पणी' अथवा 'टीप' कहा जाता था। ये टीप-संग्रह हस्तप्रतों अथवा पोथी के रूप में संभाली जाती थी। सबसे प्राचीन सूचिपत्र के रूप में बृहट्टिप्पनिका को सर्वोच्च बहुमान प्राप्त है। आज से लगभग ६०० वर्ष पूर्व वि.सं. १३८३ में किसी अज्ञात मुनिभगवंत मे उस काल में प्राप्य तमाम शास्त्रों की सूचि इस टिप्पनिका में दर्ज की है। इस सूचिसंग्रह में उपलब्ध शास्त्रों के नाम, उनके कर्ता और गाथाओं की संख्याए दर्शायी है। साथ ही उक्त शास्त्र की कितनी पांडुलिपियां है इसका भी उल्लेख किया है। भारत में उपलब्ध इस प्रकार के सूचिपत्र के इतिहास में बृहट्टिप्पनिका को सर्वप्रथम सूचि (Catalogue) के रूप में सम्मान प्राप्त है।

मशीन के युग में अनेक नये-नये संसाधनों का अविष्कार हुआ है। इनका आधार लेकर हाथों से लिखित इन सूचिपत्रों के आधुनिक कागज पर अनेक नकलें भी उतारी जाने लगी और सैकडों भंडारों में वितरित हुई। अनेक ज्ञानभंडारों ने अपने निजी सूचिपत्र भी छपवाये।

(मुख्यतया इन में सरकारी अथवा अर्धसरकारी संस्थाओं के सूचिपत्र का समावेश है) संशोधन करनेवाले मुनिभगवंत एवं विद्वान अपनी आवश्यकतानुसार इन सूचिपत्रों का उपयोग करने लगे। अनेक हस्तलिखित प्रतियों की झेरॉक्स प्रतियों का भी उपयोग होने लगा। आज तो विदेशों में स्थित ग्रंथालयों की सूचि भी इन्टरनेट पर उपलब्ध है। इस तरह सूचिपत्रों की व्याप्ति बढने लगी।

सूचिपत्रों का उपयोग

सूचिपत्रों का सर्वाधिक उपयोग संशोधक पूज्य आचार्यादि - मुनिभगवंतों एवं अन्य विद्वान संशोधकों द्वारा होता है। जो कि संस्कृत, प्राकृत, पाली, अर्धमागधी, अपभ्रंश जैसी प्राचीन भाषाओं के मर्मज्ञ होते हैं। ये ब्राह्मी, शारदा, ग्रंथ और नागरी आदि प्राचीन लिपिओं के भी निष्णात होते हैं। अपने स्वाध्याय के लिये शास्त्रों का संशोधन और अनुवाद करते हैं। साथ ही इनके आधारों पर महानिबंध भी लिखते हैं। कुछ श्रावक-श्राविकाएं भी अपने धार्मिक ज्ञान की वृद्धि हेतु जरुरी साहित्य की खोज के लिए इनका उपयोग करते हैं।

इसके उपरांत गणित, अवकाशविज्ञान (खगोलीय), भाषाशास्त्र आदि विषयों के विद्वान भी अपने विषयांतर्गत अभ्यास एवं संशोधन हेतु सहायक सामग्रियों की खोज के लिए प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों की सूचिपत्रों को खंगालते रहते है।

सूचिपत्र की उपयोगिता

पूज्य गुरुभगवंत अथवा अन्य विद्वान शास्त्र संशोधन के लिए इन सूचिपत्रों को एकत्रित करते हैं। इसके पीछे बडा और एकमात्र आशय यह है कि अनेक हस्तप्रतों में सर्वाधिक प्राचीन प्रत और प्रामाणिक प्रत का चयन करना होता है। इनमें भी कर्ता द्वारा स्व-हस्त से लिखित प्रत को तो सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त होती है जिसे मूल और आदर्श प्रत कहा जाता है।

पूर्वाचार्यों द्वारा स्वरचित नये शास्त्रों में फिर बाद में और नये प्रकरणों का भी समावेश होता रहता था तथा उपयुक्त स्थानों पर सुधार भी होते रहते थे। एक ही शास्त्र पर अनेक विद्वान आचार्यभगवंतों द्वारा टीकाएं भी रची जाती थी। एक ही विषयपर अनेक आचार्यभगवंतों द्वारा विविध ग्रंथों की रचना भी होती थी। उक्त शास्त्रों पर अनेक विद्वानश्रावकों के द्वारा भी रचनाएं प्रस्तुत होती रहती थी।

स्वाभाविक है कि शास्त्रसंशोधन की प्रक्रिया में उपरोक्त सभी ग्रंथों की अनेक प्रतियों की उपयोगिता जुडी रहती है और इसी कारण संशोधकों को उपरोक्त सूचिपत्रों की आवश्यकता निहित है।

श्रुतभवन संशोधन केंद्र का योगदान

श्रुतभवन उपरोक्त सूचिसंकलन को लक्ष्य में रखकर सुसंबद्ध प्रामाणिक सूचि को प्राथमिकता देते हुए प्रथम चरण से ही इसे विकसित बनाने के लिए कटिबद्ध रहा है। सामान्य एवं उच्चकक्षा के संशोधन में उपयोगी बने अतः इस महत्त्वपूर्ण संदर्भसेवा के उपयोग हेतु श्रुतभवन संशोधन केंद्र स्थित वर्धमान जिनरत्नकोश विभाग द्वारा बृहट्टिप्पनिका का अद्ययावत संपादन किया गया है। भविष्य में संशोधन क्षेत्र के लिए यह सार्थक मार्गदर्शी बनेगी बस इन्हीं श्रद्धाभाव सहित...।

भरत शाह
(मानद उपाध्यक्ष)

પ્રકાશકીય

શાસ્ત્રોની રચના -

પરમાત્માશ્રી મહાવીરદેવે કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને શ્રુતજ્ઞાનની શક્તિ અને અધિકાર ગણધર ભગવંતોને આપ્યા અને ગણધર ભગવંતોએ આગમોની રચના કરી.

પ્રાચીન કાળમાં સાધુભગવંતો આગમોને મુખપાઠ કરી યાદ રાખતા હતા. તે સમયમાં આગમો પ્રધાનપણે મુખપરંપરાથી સૂત્ર અને સૂત્રાર્થ સાથે શીખવવામાં આવતા હતા. પરમાત્મા શ્રી મહાવીરદેવનાં નિર્વાણ પછી લગભગ ૮૦૦ થી વધુ વરસ સુધી આ પરંપરા ચાલુ રહી. યાદશક્તિ ઓછી થવાનાં કારણે આગમો ભૂલાવા લાગ્યા ત્યારે ગીતાર્થ સૂરિભગવંતોએ વિસ્તૃતરૂપે આગમોની લેખન પરંપરાની શરુઆત કરી. તે સમયે ઉપલબ્ધ તાડ નામના વૃક્ષના પત્ર પર આગમો અને અન્ય શાસ્ત્રો લખાયાં. જ્ઞાની ગુરુભગવંતોએ મૂળ શાસ્ત્રોના રહસ્ય સુધી પહોંચવા માટે આગમો પર વિવરણ/વિવેચન લખ્યાં જેને ટીકા કે વ્યાખ્યાનના નામે ઓળખવામાં આવે છે.

સમય જતાં ઘણાં ખરાં શાસ્ત્રોના પ્રાદેશિક ભાષાઓમાં (જેમ કે ગુજરાતી, રાજસ્થાની, મરુગુર્જર, હિંદી) અનુવાદ પણ થયા. શ્રમણો દ્વારા લખવાની પરંપરા શરુ થઈ. પેઢી-દર-પેઢી શાસ્ત્રો લખવાની પરંપરા આગળ વધી. ગુરુભગવંતો શિષ્યોને ભણાવતા અને નવાં શાસ્ત્રોની રચના કરીને પોતાના જ્ઞાનનો વિનિયોગ કરવાની પ્રેરણા કરતા. ઉપરાંત જૂનાં અને નવાં શાસ્ત્રો લખવાની પ્રેરણા પણ કરતા હતા આ રીતે ૧૫૦૦ વરસમાં ૪૫ આગમોના આધારે હજારો શાસ્ત્રોની રચના થઇ. અને તેમની લાખો નકલો તૈયાર થઇ. (હાથથી લખાયેલાં શાસ્ત્રોની નકલને હસ્તપ્રત કહેવાય છે)

સૂચિપત્રોનું નિર્માણ -

આ રીતે લખાયેલાં શાસ્ત્રોને સાચવવાની પદ્ધતિસરની પરંપરાનો પ્રારંભ થયો. શાસ્ત્રો સંઘના, સ્થાનકના કે મંદિરના અધિકારમાં રહેલા જ્ઞાનભંડારોમાં સચવાતાં હતા. દરેક જ્ઞાનભંડારમાં ક્યાં ક્યાં શાસ્ત્રો છે તેની સૂચિ (લીસ્ટ) રહેતી હતી. જેને તે જમાનામાં ટિપ્પણી અથવા ટીપ કહેવાતી હતી. આ ટીપ હાથ વડે લખાતી હતી અને મોટે ભાગે તે ટીપ હસ્તપ્રત અથવા પોથીના રૂપમાં સચવાતી હતી. શાસ્ત્રોની સહુથી જૂની સૂચિ તરીકેનું બહુમાન **'બૃહત્ ટિપ્પનિકા'**ને જાય છે. આજથી લગભગ ૬૦૦ વરસ પહેલા વિ.સં. ૧૩૮૩માં કોઇ અજ્ઞાત મુનિભગવંતે તે સમયમાં ઉપલબ્ધ તમામ શાસ્ત્રોની સૂચિ બનાવેલી જોવા મળે છે. તેમાં શાસ્ત્રનું નામ, તેના કર્તાનું નામ, તેની ગાથાઓ કેટલી છે? અને તેની નકલ ક્યાં છે? તે માહિતી આપવામાં આવી છે. ભારતના સૂચિપત્રના ઇતિહાસમાં તેને સહુથી પહેલી સૂચિ (Catalogue) ગણવામાં આવે છે.

યંત્રયુગમાં ઘણાં નવા સાધનોનો આવિષ્કાર થયો છે. ત્યારે હાથેથી લખેલાં સૂચિપત્ર પરથી ફરીથી નવાં કાગળ પર સૂચિપત્ર લખાયાં અને તે સેંકડો જ્ઞાનભંડારમાં વહેચાયાં. કેટલાક જ્ઞાનભંડારોએ પોતાના સૂચિપત્ર છપાવ્યાં પણ ખરા. (ખાસ કરીને સરકારી કે અર્ધસરકારી સંસ્થાઓના સૂચિપત્ર છપાવવામાં આવ્યાં) સંશોધન કરનાર મુનિભગવંતો અને વિદ્વાનો જરૂર પડે ત્યારે આ સૂચિપત્રો ઉપયોગમાં લેતા. હાથથી લખાયેલા સૂચિપત્રોની Xerox થઇ શકતી તેથી તેનો પણ ઉપયોગ થયો. (વિદેશમાં રહેલી કેટલાક ગ્રંથાલયોની સૂચિ ઇંટરનેટ પર ઉપલબ્ધ છે.) આમ, દરેક જ્ઞાનભંડાર પાસે પોતાની સૂચિ છે. આ રીતે સેંકડો સૂચિપત્રો તૈયાર થયાં.

સૂચિપત્રનો ઉપયોગ -

સૂચિપત્રોનો સહુથી વધુ ઉપયોગ સંશોધક પૂજ્ય આચાર્યાદિ મુનિભગવંતો તેમ જ સંશોધક વિદ્વાનો કરે છે. આ વિદ્વાનો સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, પાલિ, અર્ધમાગધી, અપભ્રંશ જેવી પ્રાચીન ભાષાના જાણકાર હોય છે અને બ્રાહ્મી, શારદા, ગ્રંથ, નાગરી જેવી પ્રાચીન લિપિઓમાં પણ નિષ્ણાત હોય છે. પોતાના સ્વાધ્યાય માટે તેઓ શાસ્ત્રોનું સંશોધન અને અનુવાદ કરે છે, તેના આધારે મહાનિબંધો પણ લખે છે. (શ્રાવક-શ્રાવિકા પણ પોતાના ધાર્મિક જ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરવા માટે સહાયક પુસ્તક મેળવવા સૂચિપત્રોનો ઉપયોગ કરે છે.)

ઉપરાંત; ગણિત, અવકાશવિજ્ઞાન, ભાષાશાસ્ત્ર જેવા વિષયોના વિદ્વાન અને બીજા પણ વિદ્વાન પોતાના વિષયનો અભ્યાસ અને સંશોધન કરવામાં સહાયક હસ્તપ્રતો શોધવા માટે સૂચિપત્રોનો ઉપયોગ કરે છે.

સૂચિપત્રની ઉપયોગિતા -

પૂજ્ય ગુરુભગવંતો અથવા અન્ય વિદ્વાન શાસ્ત્રનું સંશોધન કરે છે ત્યારે તેઓ શાસ્ત્રોની અનેક હસ્તપ્રતો એકત્રિત કરે છે. તેની પાછળનો આશય એ છે કે– અનેક હસ્તપ્રતોમાંથી પ્રાચીન અને પ્રામાણિક હસ્તપ્રત કઇ છે? તે જાણી શકાય. તેમાં સ્વહસ્ત-લિખિત હસ્તપ્રત બહુ અગત્યની ગણાય છે. તેને મૂળ તેમ જ આદર્શ પણ કહેવાય છે. આ બધી જ પ્રતોનો સંશોધન માટે ઉપયોગ થાય છે. પૂર્વાચાર્યો દ્વારા સ્વરચિત નવાં શાસ્ત્રોમાં નવાં પ્રકરણોનો સમાવેશ કરાતો હતો. તથા ઉપયુક્ત સ્થાનો પર સુધારા પણ કરાતા હતા. એક જ શાસ્ત્ર પર અનેક આચાર્યભગવંતો ટીકા રચતા હતા. એક જ વિષય પર અનેક આચાર્યભગવંતો ગ્રંથની રચના કરતા હતા. તે જ રીતે શ્રાવક કે ગૃહસ્થ અથવા વિદ્વાનો પણ શાસ્ત્રની રચના કરતા હતા. અનેક ગૃહસ્થોએ શાસ્ત્રો લખ્યાં અને લખાવ્યાં. આવાં એક શાસ્ત્રના સંશોધન માટે સ્વાભાવિકપણે શાસ્ત્રોની અનેક હસ્તપ્રતોની જરૂર પડી. આ માટે સંશોધક મુનિભગવંતોને અને વિદ્વાનોને હસ્તલિખિત ભંડારના સૂચિપત્રોની આવશ્યકતા ઊભી થઇ.

શ્રુતભવન સંશોધન કેંદ્ર-એ આ હસ્તપ્રતોની વૈજ્ઞાનિક પ્રામાણિક સૂચિને સંશોધનનું એક મહત્ત્વનું અંગ ગણીને તેનો પ્રથમથી જ વિકાસ કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. હસ્તપ્રતોની વૈજ્ઞાનિક સૂચિઓ સામાન્ય માણસથી પણ વધારે ઉચ્ચ શિક્ષણક્ષેત્રમાં સંશોધન કરનાર સંશોધકો માટે ઉપયોગી છે. ગ્રંથસૂચિઓ અને લેખસૂચિઓ એ સંશોધકો માટે મહત્ત્વપૂર્ણ સંદર્ભ સાધનો છે. આ સાધનોની મદદથી સંશોધકોને પોતાનાં સંશોધનમાં ઉપયુક્ત સહાયતા મળી રહે છે અને પોતાને જરૂરી એવું સાહિત્ય શોધવામાં સમય વેડફાતો નથી, એનાથી સંશોધનમાં પણ ગતિ આવે છે.

આવી જ એક મહત્ત્વની સંદર્ભ-સેવાના ભાગ રૂપે શ્રુતભવન સંશોધન કેંદ્રના **વર્ધમાન જિનરત્નકોશ વિભાગ** દ્વારા **બૃહત્ ટિપ્પનિકા** સંપાદિત કરવામાં આવી છે. બૃહત્ ટિપ્પનિકા સંશોધનક્ષેત્રમાં માર્ગદર્શક નીવડશે. તેમ જ સંશોધકોને પોતાના અભ્યાસ-સંશોધનક્ષેત્રે ફલદાયી થશે એવી શ્રદ્ધા છે.

ભરત શાહ

(માનદ ઉપાધ્યક્ષ)

Publisher's note

Composition of the Shastras

On the attainment of the Ultimate Knowledge, Paramatma Shri Mahavira deva was bestowed upon the ability and authority for the Shrutgyana by the Ganadhara Bhagavan and the Agama texts were composed by them.

In ancient/olden times honorable sages used to memorize the Agamas, learning them by heart orally. That time, Agamas, along with the Sutras and Sutrartha, the interpretation thereof were taught mostly by the oral tradition. This tradition of oral learning did continue throughout all the years, till nearly 800 years after Nirvana, the emancipation of Paramatma Shri Mahavira deva. As the capacity of memory started getting diminished, Agamas did get forgotten; due to that, Geetartha suri Bhagavan started the tradition of rendering the Agamas to writing, on a large scale. At that time, Agamas and other texts of scriptures were got written on the Palm-leaves. For conveying the secrets of the Shastras smoothly, knowledgeable Guru-Bhagavans did write explanations and expositions on the Agamas, which are commonly known as Tika or Vyakhyana.

As the time passed by, all these original scriptures were translated in the provincial languages also, such as Gujrati, Rajastani, Marugurjar, Hindi. Shramanas kept the tradition of writing continued. Generation by generation, the tradition of writing got developed with differences. Guru Bhagavan gave inspiration for the employment of original knowledge through making the disciples rehearse and through compilation of new scriptures; moreover, he gave instigation for writing the new compositions of the new Shastrasor scriptures also. In this way, thousand of scriptures were compiled in 1500 years, on the basis of 45 Agamas, and millions of copies of these were prepared in later period. (The copies of the Scriptures written by hand are called Manuscripts.)

Making of Catalogues

Further, there started a tradition of the preserving these scriptures methodically, written in this way. These scriptures were conserved in the custody of the Samgha i.e. Organization, Sthanakas or temples. There used to be a list indicating which scriptures are there in each of these stores or collections of the scriptures and in these were told or noted the comments or remarks in that period. These comments were written by hand and on a larger scale, these comments were conserved in the form of a manuscript or a pothi. The honour of being the oldest of all the types of catalogues goes to 'Brihat-Tippanika'. One such Catalogue is observed to be available today, which was prepared by some unknown Jain monk, nearly 600 years before today, in Vikram Samvat 1383, containing the list of all those scriptures available that time. Information regarding the name of each scripture, its author or composer, how many verses are contained therein, where its copy is available is given in this list. This is counted as the first catalogue of its type in the Indian history of catalogues.

In the mechanical era, many new instruments are invented. Then, for making the hand-written catalogue new, the catalogues were written on fresh new paper and were distributed to hundreds of stores or collection-libraries of scriptures. Many of these libraries did print out their own lists of scriptures also. (Particularly, Governmental and Semi-governmental institutes have printed and published their catalogues.) Researchers and scholars utilize these catalogues, when required. Photo-copies can be made of the hand-written catalogues, and they also are useful for them. (Catalogues of many libraries situated in foreign countries are available on internet). Thus, every library is in possession of its own catalogue. In this way, hundreds of catalogues are prepared.

Utility of the Catalogues

These catalogues are utilized in entirety by honourable preceptors Muni Bhagavan who carry out research and also other researcher scholars. These scholars are conversant with various languages of olden times like Sanskrit, Prakrit, Pali, Ardhamagadhi, Apabhramsha etc. and also are expert in different scripts of the past time such as Brahmi, Sharada, Grantha, and Nagari. For their own study, they have carried out studies on these scriptures and have sometimes translated them also and depending on them, they have written large monographs and research articles. (Shravakas and Shravikas also take assistance of the catalogues for getting ancillary texts to enhance their own religious knowledge.)

In addition to that, scholars of the subjects like Mathematics, Astronomy, Linguistics and other researchers also use the catalogues for finding out the manuscripts that can prove helpful for the study of and research in their subject of research.

Importance of the Catalogues

When Hon.Guru-Bhagavans or other scholars carry out research regarding the Scriptures, they collect many manuscripts of any particular scripture. The intention behind it is to be able to

point out which of these is the oldest and original among many of the manuscripts. Among these, the copy prepared by the author himself is counted as very precious. It is the original and ideal also. All these copies are useful and beneficial for research. Earlier teachers used to include new chapters in new scriptures composed by them, and to make corrections at appropriate places. Many honourable Acharyas used to compose commentaries on one and the same text. In the same way, Shravakas and lay-men or other scholars used to compose the scriptures. Many house-holders did write and got written the scriptures. Thus, many manuscripts were required naturally for research of one scripture. For this arose the need of the catalogues of collections of manuscripts in case of Muni Bhagavans or other scholars who carry out research.

Shrutbhavan Research centre- it counts the scientific and authentic research of the catalogues of manuscripts a very important aspect and from the beginning it is making efforts to make its development. Scientific catalogues of the manuscripts are useful for research for everyone, from common man to the researchers doing research in the academic field. Catalogues of manuscripts and lists of write-ups are the most important tools for the researchers. With the help of these tools, they get proper assistance continuously for their own research; their time does not get wasted in searching for the literature required for their research and thus the speed of the research gets accelerated.

In the form of an important service to this field of research, Brihat-tippanika is being edited by the department of Vardhamana Jinaratna Kosha (VJRK) of the Shrutbhavan Research centre. This Brihat-tippanika will prove guiding in the field of research. It is believed that the personal study of the researchers will be fruitful in this field by that manner only.

Bharat Shah
(Vice President)

શ્રુતપ્રેમી

દીક્ષાના દાનેશ્વરી પૂજ્યપાદ તપાગચ્છાધિરાજ
આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય **રામચંદ્રસૂરીશ્વરજી** મહારાજાએ
વિ.સં.૨૦૪૭માં
પુખરાજ રાયચંદ આરાધના ભવન સાબરમતીમાં
જીવનના અંતિમ દિવસો વીતાવ્યા હતા.
તેમના અનંત ઉપકારોની પાવન સ્મૃતિમાં
શ્રીશંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ આરાધક સંઘ
પુખરાજ રાયચંદ આરાધના ભવન
સાબરમતીમાં થયેલ
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી
આ પુસ્તક પ્રકાશનનો લાભ લેવામાં આવ્યો છે.

अनुक्रमः बीजक

(१)	**संपादकीय**		
(२)	**बृहट्टिप्पनिका मूलपाठ**		१-१८
(३)	**परिशिष्ट-१**	बृहट्टिप्पनिका कृति सूचि	२१-७५
(४)	**परिशिष्ट-२**	बृहट्टिप्पनिका कृति वर्णानुक्रम सूचि	७७-९२
(५)	**परिशिष्ट-३**	बृहट्टिप्पनिका कर्ता वर्णानुक्रम सूचि	९३-१०९
(६)	**परिशिष्ट-४**	बृहट्टिप्पनिका कृतिस्वरूपद्वारा वर्गीकृत सूचि	१११-१२६
(७)	**परिशिष्ट-५**	बृहट्टिप्पनिका भाषाद्वारा वर्गीकृत सूचि	१२७-१४२
(८)	**परिशिष्ट-६**	बृहट्टिप्पनिका विषयद्वारा वर्गीकृत सूचि	१४३-१५९
(९)	**परिशिष्ट-७**	सूत्रादिश्लोकमान (पं. श्रीदीपविजयकृत)	१६१-१६७
(१०)	**परिशिष्ट-८**	सिद्धांतश्लोक	१६९-१७३
(११)	**परिशिष्ट-९**	आलेखचित्र (चार्टस्)	१७५-१८७
(१२)	**परिशिष्ट-१०**	संकेतसूचि	१८९-१९१
(१३)	**परिशिष्ट-११**	संदर्भग्रंथसूचि	१९१
(१४)	**परिशिष्ट-१२**	बृहट्टिप्पनिका हस्तप्रत	१९३-१९९

सम्पादकीयम्

भारतवर्षे सूचिपत्रनिर्माणपरम्परा नैवार्वाचीना। प्राचीनकालतः सङ्ग्रहेषु हस्तलिखितानां संरक्षणस्य संवर्धनस्य च विविधाः पद्धत्यः प्रचलितास्सन्ति। सूचिपत्रनिर्माणं तासामेव एकमङ्गम्। टीप-टिप्पण-टिप्पणिका-हुण्डी-बीजकादिभिरभिधानैः प्रसिद्धं तत्पूर्वतनकाले। सूचिपत्राणामपि प्रकारवैविध्यं वर्तते। हस्तलिखितसङ्ग्रहस्थानां भिन्नग्रन्थानां सूचयः, एककर्तृकग्रन्थानां सूचयः[१], एकग्रन्थस्थभिन्नविषयाणां सूचयः (सम्प्रति 'अनुक्रमणिका' इति प्रसिद्धा), भिन्नभाण्डारस्थग्रन्थानां सूचय इत्यादयस्सूचिप्रकारा भवन्ति। ग्रन्थालयशास्त्रे विविधप्रकारैर्वर्गीकरणं महत्त्वपूर्णम्। **बृहट्टिप्पणिका** अपि एवमेव वर्गीकृतं परिपूर्णं शास्त्रीयसूचिसंस्करणम्। भारते सूचिपत्रविषये जातैः संशोधनैः सिद्धमस्ति **बृहट्टिप्पणिकायाः** सर्वास्वपि टिप्पणीषु प्राचीनतमत्वम्। अस्या रचनाकालः ख्रिस्ताब्दस्य पञ्चदशतमं शतकमिति संशोधकैरनुमन्यते[२]। **बृहट्टिप्पणिकायाः** आद्यसम्पादकाः प्राच्यविद्यासंशोधकाः श्रीजिनविजयाः वदन्ति-

*"**बृहट्टिप्पणिका**ख्यायाः प्राचीनजैनग्रन्थसूच्याः कर्तुः कालस्य च ज्ञानमस्पष्टम्। परन्त्वस्यां समाहितैर्ग्रन्थनामभिरवधार्यते यदस्या रचना विक्रमकालस्य पञ्चदशशतकस्य मध्यकाले केनचिद्धीमता कृता स्यात्। अस्य पुष्ट्यर्थमुच्यते यत्सूच्यामस्यां रचनावर्षानुक्रमेणोक्तेषु ग्रन्थेष्वन्तिमो विक्रमस्य १४४३तमे वर्षे रचितः कुलमण्डनसूरीणां 'प्रवचनपाक्षिकादिआलापकसङ्ग्रहः'(क्र.१६४)। तदुत्तरकालीना न काऽपि रचना उल्लिखितास्ति सूच्यामस्याम्। पूर्वकालीनग्रन्थेषु विक्रमस्य १४३६तमे वर्षे रचितः उपदेशचिन्तामणिः (क्र. २२३), विक्रमस्य १४२९तमे वर्षे रचिता प्रश्नोत्तररत्नमालावृत्तिः (क्र. २२२), विक्रमस्य १४२६तमे वर्षे रचिता भक्तामरस्तवटीका (क्र. १३२) इत्यादयो ग्रन्था वर्तन्ते। विक्रमकालस्य पञ्चदशशतकस्य तृतीयचरणे रचितास्सोमसुन्दर-मुनिसुन्दर-गुणरत्न-ज्ञानसारादयोऽन्ये ग्रन्था न समाविष्टास्सूच्यामस्याम्। अतस्सूचिरियं १४४०तः १४६०पर्यन्तं कदाचिन्निर्मितेति मे मतिः।*

कर्ता

जैनसम्प्रदायस्य मोदायेदं यदस्याः कृतेः कर्ता जैनमुनिरासीत्। दुर्भाग्यवशात् सोऽद्याप्यज्ञातनामा। १६८ क्रमाङ्कस्य कृतावुल्लिखितात् **'सामाचारी अनेकविधा गच्छान्तरीया'** इत्यस्माद्वचनाज्ज्ञायते यद् बृहट्टिप्पणिकाकारस्तपागच्छीय आसीत्। श्रीजिनविजयाः प्रतिपादयन्ति-

"सूचिकर्ता कश्चन समर्थो विद्वान् तथोत्कृष्टसाहित्यप्रेमी यतिरासीदित्यनुमीयते। तेन सूचिनिर्माणं सूक्ष्मतया कृतमस्ति। ग्रन्था विषयानुसारं पृथक्कृताः। प्रत्येकग्रन्थस्यान्तर्गतस्वरूपं सम्यक् निरीक्ष्यैव तेषामन्तर्भावः कृतः। सूच्यां ग्रन्थाभिधानम्, तस्य कर्ता, रचनाकालस्तथा च श्लोकसङ्ख्या इति चतुष्टयं सूक्ष्मेक्षितमस्ति।"

वैशिष्ट्यम्

बृहट्टिपणिकायाः वैशिष्ट्यमिदं यन्नेदमेकभाण्डारस्थहस्तलिखितानां सूचिपत्रम्। नैकेषु ग्रन्थभाण्डारेषु निविष्टान् हस्तलिखितानाधारीकृत्य निर्मिता सूचिरियम्। तेष्वपि पत्तन (पाटण), देवपत्तन (प्रभासपाटण)[३], भरुच[४], खंभात तथा देवगिरिः[५] इति पञ्च प्रमुखभाण्डारानि। विषयेऽस्मिन् श्रीजिनविजया वदन्ति-

"सूचिकर्त्रा मुख्यतः पाटन (अणहिलपुरपत्तनम्), खंभात (स्तम्भतीर्थम्), भरुच (भृगुपुरम्) तथा प्रभासपाटन (देवपत्तनम्) एतेषां प्रान्तानां प्रमुखभाण्डारानुपलक्ष्य सूचिर्निर्मिता। मारवाडप्रान्तस्थं जैसलमेरनगरस्थितः सुप्रसिद्धो ज्ञानभाण्डारो नात्र समाविष्टः। एतस्मादवधार्यते यत्सूचिकर्ता गुजरातनिवासी तपागच्छीयविद्वान् आसीत्।"

कृतिप्रधाना सूचिरियम्। प्रामुख्येन ग्रन्थप्रख्यापनमुपलक्ष्यैषा निर्मिता। तस्मिन्काले हस्तप्रतिलेखनप्रवृत्तिर्बलवती आसीत्। लेखका अक्षरसङ्ख्यानुसारं पारिश्रमिकं प्राप्नुवन्ति स्म। अतः ग्रन्थानामक्षरगणना आरब्धा। तदेव ग्रन्थाग्रम्। विविधग्रन्थानां तेषामुत्तमप्रतीनां चावबोधनार्थं कस्यचिन्मुनेः प्रयत्नैस्सूचिरियं निर्मिता स्यात्। यद्यपि पञ्चदशशतकपर्यंतं रचिता ग्रन्था अस्यां निर्दिष्टास्तथापि तत्कालीना नैके ग्रन्था अस्यामनिर्दिष्टा अपि वर्तन्ते।

जैनसाहित्ये बृहट्टिप्पणिकायाः महत्त्वविषये श्रीजिनविजयाः कथयन्ति-

"केवलं सूच्यामस्यां नामशेषा नैके ग्रन्थाः प्रत्यक्षरूपेणानुपलब्धास्सम्प्रति। विद्वद्भिः संशोधकैर्विषयेऽस्मिन् चिन्तनीयम्। सम्मतितर्काख्यस्य सुप्रसिद्धस्य जैनसाहित्यभूषणग्रन्थस्याद्य केवलमेका बृहद्वृत्तिः प्राप्यते। परं सूच्यां तु वृत्तित्रयनिर्देशः (क्र. ३५८)। तस्मिन्प्रथमवृत्तेस्त्वनन्यं महत्त्वम्। मल्लवादीसूरयस्तस्याः कर्तृत्वेन निर्दिष्टाः। मल्लवादिसूरिभिः कृतस्य सम्मतिविवरणस्य प्रमाणं हरिभद्रसूरीणां लेखनेऽपि प्राप्यते। न्यायशास्त्रस्य विकासमुपलक्ष्य नैकेषां प्रश्नानां समाधानमनया टीकया भवितुमर्हतीति तस्या महत्त्वम्। अतो विद्वज्जनैस्तस्याः संशोधनार्थं प्रयत्नरतैर्भाव्यम्।

सम्मतेः काचिदन्यकर्तृका टीकाऽपि अत्रोल्लिखिता वर्तते। सा कस्यचिद्दिगम्बराचार्यस्यापि भवितुमर्हति। विषयेऽस्मिन् मित्रवर्यैः श्रीमता

---

१ पूर्णिमागच्छाचार्यैः श्रीभावप्रभसूरिभिः पूज्योपाध्यायश्रीयशोविजयानां ग्रन्थानां सूचिः निर्मिता। सा पूज्याचार्यश्रीयशोदेवसूरीणां (पूज्याचार्यश्री धर्मसूरीणां शिष्याः) सङ्ग्रहे साहित्यमन्दिरे पालिताणानगर आसीत्। तस्या नैकेषां ग्रन्थानां ज्ञानमभवत्।

२ Manuscripts were collected by the rulers of different states, including the Mughal emperors, and religious institutions, including monasteries (mathas) of different sects and the Jain bhandaras. The Jain munis played a significant role in the area of collecting and preserving the manuscripts of various shastras – Jain, Brahmanical and Buddhist.The credit of compiling the earliest known catalogue in India goes to the Jain community. So far as our information goes, the earliest catalogue of manuscripts was compiled under the title, Brihattipanika, as early as VikramaSamvat 1440 (1383 C.E.) by a Jain monk, whose name is unfortunately not known. TheBrihattipanika, covers some manuscripts in the collections of several places such as Patan, Cambey and Bharauch. It furnishes data of authors' names, period of writing and grantha-parimana (the extent of each text)(History of Cataloguing NMM website).

३ प्रभासपाटणप्रान्ते सम्प्रति भाण्डारो न प्राप्यते।

४ भरुचप्रान्ते सम्प्रति भाण्डारो न प्राप्यते।

५ देवगिरिर्नामाद्यतनीये महाराष्ट्रे औरंगाबादसमीपस्थं दौलताबादनगरम्। अत्र पेथडशाहेन जिनालयं निर्मितम्। अतो जैनानां निवासः स्यात्। अपि च, जगद्गुरवः आचार्यश्रीहीरसूरीश्वराः तथा उपाध्यायाः श्रीधर्मसागरा अत्र न्यायादिविषयानध्येतुमागता आसन्। अत एतद्विद्याकेन्द्रम्। भाण्डारोऽपि स्यादेव। सेनप्रश्ने देवगिरिसङ्घस्योल्लेखो वर्तते (सेनप्रश्न-उल्लासः-४, प्रश्नः-१३)। सङ्घोऽयं गुजराते अथवा राजस्थानेऽपि भवितुमर्हति। उल्लेखकृतिक्रमः २९१

नाथुरामप्रेमीमहोदयैः जैनहितैषीपत्रस्य ई. १९२१वर्षस्य जनवरी-फरवरीमासयोः संयुक्ताङ्के महत्त्वपूर्णा टिप्पणी प्रकाशिता। संशोधकैरुक्तटीका गवेषणीयेत्याग्रहः। एवं सूचिनिर्दिष्टाः प्रत्यक्षमनुपलब्धा नैके ग्रन्था विद्यन्ते।

ज्ञातव्यानि

बृहट्टिपणिकायामष्टप्रकारकाणि ज्ञातव्यानि सन्ति। ग्रन्थाभिधानम्, ग्रन्थकर्तुरभिधानम्, रचनाकालः, ग्रन्थविषयः, मूलग्रन्थ-टीकासम्बन्धः, उक्तग्रन्थस्य प्राप्ताप्राप्तता, प्राप्तिस्थानविषये विवरणम्, ग्रन्थाग्रं चेत्यष्टौ ज्ञातव्यानि वर्ण्यन्ते।

आधुनिकग्रन्थालयनियमानुसारिण्येव रचना अस्याः सूच्याः। सूचिकर्तुर्वैज्ञानिकी दृष्टिरभिनन्दनार्हा खलु। सर्वे ग्रन्था द्विधा विभक्ताः। आगमा आगमेतराश्च। आगमान्तर्गतं साहित्यं त्रिधा पृथक्कृतम्। एकादशाङ्गानि द्वादशोपाङ्गानि आवश्यकानि चेति। षट् छेदाः, चत्वारि मूलानि, दश प्रकीर्णकानि, चूलिकाद्वयं च तृतीयभागे समाविष्टम्। आवश्यकसूत्राणामधिकटीकाप्राप्यन्त इत्यतः पृथक्सूचिः। अपि च, आगमस्वरूपदृष्टिगतग्रन्थानां पृथक्सूचिः। आगमेतरं साहित्यं नवधा विभक्तम्। चरणकरणानुयोगः, कथानुयोगः, न्यायतर्कौ, व्याकरणं तथा कोषः, छन्दस्तथा साहित्यम्, काव्यम्, नाटकम्, ज्यौतिषम् इत्यादि। प्रकीर्णक-चरणकरणानुयोगे तत्त्वज्ञान-प्रकरणोपदेश-योगाचार-विधिस्तोत्र-कर्मग्रन्थादयो विषयास्समाविष्टाः। कथानुयोगे तीर्थङ्करचरित्राणि, शलाकापुरुषचरित्राणि, महापुरुषचरित्राणि क्रमेण सूचिबद्धानि। ज्योतिर्विभागे शकुन-योगाम्नाय-मन्त्र-कल्प-सामुद्रिकादिविषयषट्कम्। वर्गीकरणेऽस्मिन्यथावश्यं जैनग्रन्थाः स्वसमयाभिधानेन जैनेतरग्रन्थाश्च परसमयाभिधानेन निर्दिष्टा वर्तन्ते।

टिप्पणी

बृहट्टिप्पणिकायां कर्त्रा ग्रन्थानां ज्ञातव्यैः सह नैकत्र स्वकीयाः टिप्पण्योऽपि कृतास्सन्ति। यथा-

१. कृतेः भाण्डारे उपलब्धिविषयिणी टिप्पणी यथा- कृतिक्रमाङ्काः ४०.३, ७२, ७३, ७४[१] आदि।

२. भिन्नग्रन्थाग्रसम्बन्धिनी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः २९१, ४९१ आदि[२]।

३. कर्तृविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः ११३, ११६ आदि[३]।

४. रचनाकालविशेषविषयणीटिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः २२४, २३२, २३९, २४६, २६५ आदि[४]।

५. विशिष्टकृतेः विषयगर्भिता टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः ९४(२), १४४, १४५, १५४, १६०, १६१, १६२, १८३, १८६, २०४, २२०, ३३२, ३३३, ३३६, ३३७ आदि[५]।

६. समानाभिधानकग्रन्थानामादिवाक्यविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः ४०(५), ११९(३), १८९, २१२, २१३, २१४ आदि[६]।

७. भाषा एवमध्ययनविभागसम्बन्धिनी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः १२५, १५८, २१९, २६८, २७२, २९२, २९४, २९५, ३००, ३०३, ३११, ३३१, ३३९, ३४८, ३५८.२, ३६१, ३६३, ३७२ आदि[७]।

८. अन्यविद्वद्भिः संशोधितकृतिविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः २४८ आदि[८]।

९. कृतिपूर्णताविषयिणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः २९९ , ५०१[९]।

१०. कृतीनामप्रामाणिकताविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः २९७[१०]।

११. कृतीनामाधुनिकताविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः १५५, १७२[११]।

१२. कृतीनां विशेषताविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः. ७२.२ ,८९[१२]।

१३. कृतीनां जैनकर्तृत्वविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः ३३८, ३७१ आदि[१३]।

---

१ ४०.३-चूर्णिटिप्पनकं भृगु. गु. ३ विना न, ७२ समयसारटीका अमृतचन्द्रसूरीया भृगु[पुरम्] देव[पत्तनं] वि[ना] न। ७३ पञ्चास्तिकाय-सङ्ग्रहाभिधसमयस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देव[पत्तनं] विना न। ७४ प्रवचनसारस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देवपत्तनं विना न।

२ २९१ त्रिषष्टीयं महावीरचरित्रं- ३४९२ प्रत्यन्तरे- ५१६१ देवगिरि। ४९१ काव्यानुशाससनानामालङ्कारचूडामणिवृत्तिः श्रीहेमसूरीया ८ अध्याया २८००- ४२०० प्रत्यन्तरे।

३ ११३ नव्यकर्मविपाकवृत्ति-नव्यकर्मस्तववृत्ति-नव्यबन्ध-स्वामित्वावचूर्णि-नव्यषडशीतिकवृत्तिनव्यशतकवृत्तयः ५ सूत्रकारतपाश्रीदेवेन्द्रसूरियाः, ११६ सत्तरीटिप्पनकम्, खरतररामदेवगणिकृतम्- गाथा ५४७। १७० उपदेशमालावृत्तिः प्राकृता कृष्णर्षिशिष्यजयसिंहसूरिकृता ९१३ वर्षे।, १८५ सम्यक्त्ववृत्तिः सूत्रकारचन्द्रप्रभसूरि-सन्तानीय-श्रीतिलकीया १२७७ वार्षिकी ८०००।

४ २२४ श्रीआदिनाथचरित्रं प्राकृतं जयसिंहदेवराज्ये ११६० वर्षे वर्धमानसूरिरचितम् ११०००, १२०००।, २३२ सुमतिचरितं प्रा. मुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतम् ९६२१।, २३९ चन्द्रप्रभचरितं प्रा. श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रम् ८०३२।, २४६ श्रेयांसचरितं प्रा. श्रीजयसिंहदेवराज्ये हरिभद्राचार्यकृतम्, गाथा ६५८४, स्तम्भतीर्थं विना न।, २६५ मल्लिचरितं बहुप्राकृतं हरिभद्रीयं कुमारपालराज्ये कृतं गाथाकाव्यमयं ग्रन्थाग्रम् ९०००।

५ ९४ कर्मप्रकृतिसूत्रम्- गाथा- ४७५।(२)वेदनादि ८ करणवाच्या चूर्णिः- ७०००।अन्योदाहरणानि सूच्यां द्रष्टव्यानि।

६ ४०.(५) जीतकल्पविवरणं सङ्क्षिप्तगमनिकारूपं 'सिरिवीरजिणं नमिउं' इति ५४३।, ११९(३) लघुसङ्ग्रहणीवृत्तिः 'नमिउं अरिहंताई' त्ति, मलधारिदेवभद्रीया ३५००।, १८९ 'माणुस्सखित्ते' ति विवेकमञ्जरीवृत्तिः १२२३ वर्षे अकलङ्कदेवीया।, २१२ 'इसिमंडल' इत्याद्यऋषिमण्डलस्तवः गाथा २७१।, २१३ 'इसिमंडल' ऋषिमण्डलवृत्तिः ४६१४।, २१४ 'भत्तिभर' इति ऋषिमण्डलसूत्रम् २०८।

७ १२५ क्षेत्रसमाससूत्रं संस्कृतमाह्निकचतुष्टयरूपम् उमास्वातिवाचककृतम्।अन्योदाहरणानि सूच्यां द्रष्टव्यानि।

८ २४८ वासुपूज्यचरितं प्रा. चान्द्रप्रभं हेमसूर्यादिशोधितम् ८०००, स्तम्भतीर्थं विना न।

९ २९९ हरिवंशचरितं सं. नेम्यादिबहुवृत्तवाच्यमाद्यन्तरहितं श्लोकाः ९०००।, ५०१ श्रीभोजराकृताऽलङ्कारस्य वृत्तिः पदप्रकाशनाम्नी आजडकृता काव्यबन्धादिवाच्या।

१० २९७ पुण्डरीकचरित्रं सं. १३७२ वर्षे कामलप्रभं क्वचिद् अनागमिकार्थे- ३३००। (कश्चिदनागमिकार्थः वर्ततेऽस्मिन्।)

११ १५५ शत्रुञ्जयमाहात्म्यं, कल्पितप्रायम्, आधुनिकधनेश्वरीयम्।, १७२ हेयोपादेयेत्यादिकैव केनापि कथाभिर्येजिता सं. १५००,९५०० वर्षे।अस्योल्लेखः श्रीजिनविजयैःस्वीये सम्पादकीये कृतः।

१२ ८९ विचारसारप्रकरणं प्रद्युम्नसूरिकृतं सोपयोगि, बहुसङ्ग्रहं गाथा ८९७।, ७७(२) आद्यपञ्चाशकचूर्णिः ११७२ वर्षे यशोदेवीया सभावाच्या, ३३००।

१३ ३३८ कौमुदीकथा जैनकृता १६००।, ३७१ प्रमाणसङ्ग्रहप्रकरणं ९ प्रस्तावं जैनं ७१२।

१४. अप्राप्ते ग्रन्थाग्रे हस्तलिखितपत्रोल्लेखविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः३८६, ४४९, ६४६ आदि[१]।

१५. दार्शनिककृतीनां पृथग्दर्शनविभागविषयणी टिप्पणी यथा - कृतिक्रमाङ्काः ३५८तः ४२२पर्यन्तम्।

पूर्वप्रकाशनम्

बृहट्टिप्पणिका पूर्वं द्विवारं प्रकाशिता। प्रथमतः प्राच्यविद्यासंशोधकैः श्रीजिनविजयैः सप्तसप्तत्यधिकैकोनविंशतितमशततमे विक्रमवर्षे जैन-साहित्य-संशोधक-मासिकस्य (ई. १९२१) प्रथमभागे (द्वितीयाङ्के) सपरिशिष्टं प्रकाशिता। हस्तलिखितद्वयस्य साहाय्येन मुद्रिता सूचिरियम्। तयोरेकं हस्तलिखितं त्रिशताधिकवर्षेभ्योऽपि प्राचीनम्। अपरं च नूतनम्। द्वेऽपि हस्तलिखिते बडोदानगरस्थानां श्रीकान्तिविजयमहोदयानां शास्त्रसङ्ग्रहे आस्ताम्। अस्याः सूचेः एका लिपिः खम्भातनगरस्य शान्तिनाथ-हस्तप्रत-भाण्डारेऽपि विद्यते। अस्या एव लिप्याः प्रतिलिपिः आचार्यैः श्रीमदानन्दसागरसूरिभिः कारिता आसीत्। सा प्रतिलिपिः इदानीं जैनानन्द-हस्तप्रत-भाण्डारे सूरतनगरे विद्यते (हस्तप्रतक्रमाङ्कः- ९९८)।

पूज्याचार्याणां श्रीविजयप्रद्युम्नसूरीणां प्रेरणया अहमदावादनगरे स्थितया श्रुतज्ञान-प्रसारक-सभया २०६० षष्ट्यधिकविंशतितमे विक्रमसंवत्सरे (ई. २००४) अस्याः पुस्तकाकारं पुनर्मुद्रणं कृतम्। प्रा. हरि-दामोदर-वेलणकरमहाभागैः 'जिनरत्नकोशे' सम्पादनमिदं स्वीकृतमस्ति। तत्रीया एव कृतिक्रमाङ्का जिनरत्नकोशे निर्दिष्टा वर्तन्ते। सम्पादनेऽस्मिन् कृतिक्रमाङ्कानां मूलं तथा टीका इति न सम्यग्विभाजनम्। कुत्रचित् मूलकृतिः टीकायामन्यत्र च टीकाकृतिः मूले दर्शिताऽस्त्यनवधानेन (क्र.७१.३)। आभ्यामेव सम्पादनाभ्यां सार्धं 'जैन-श्वेताम्बर-हेराल्ड्' पत्रिकायां (ई. १९०६, अङ्काः ४-८) बृहट्टिप्पणिकामाधारीकृत्य 'जैनसिद्धान्तसूचिः' शीर्षकान्तर्गता कोष्टकाकारा ग्रन्थसूचिः प्रकाशिता अस्ति।

प्रस्तूयमाने नूतनसम्पादने बृहट्टिप्पणिका विदुषां मान्या भवेदित्याशयेन सम्पादिता वर्गीकृता च। भ्रष्टपाठास्तत्र तत्र निर्दिश्य जैनानन्दप्रतिलिप्याधारेण यथाशक्यं संशोधिताः।

परिशिष्टानि

द्वादशपरिशिष्टानि विद्यन्ते सम्पादनेऽस्मिन् -

प्रथमे परिशिष्टे कृतिविभागानुसारिण्यनुक्रमणिका वर्तते। विदुषामनुसन्धानार्थं प्राचीनक्रमाङ्का अपि निर्दिष्टाः। बृहट्टिप्पणिकानिर्दिष्टप्रत्याख्यापकानां सह तत्रानिर्दिष्टाख्यापकान्यपि दीयन्ते परिशिष्टेऽस्मिन्। तद्यथा-

१.१) **अनुक्रमाङ्काः**–कृतीनां क्रमः।

१.२) **बृहट्टिप्पनिकानिर्दिष्टक्रमः।**

१.३) **बृहट्टिप्पनिकानिर्दिष्ट-उपक्रमः**–एकस्मिन्नेव क्रमाङ्के निर्दिष्टा एकाधिकाः कृतयः।

१.४) **बृहट्टिप्पनिकानिर्दिष्टटीका (चाइल्ड कृति) अङ्काः**–एकक्रमाङ्कगता एकाधिकाः टीकाकृतयः।

१.५) **बृहट्टिप्पनिकानिर्दिष्टकृतिनाम।**

१.६) **वर्तमानं कृतिनाम।**

१.७) **कृतिस्वरूपम्**- मूलमथवा टीका। अत्रेदं स्वरूपद्वयमेव निर्दिष्टम्। कृतिस्तु मूला अथवा ग्रन्थस्य व्याख्यारूपाऽपि भवितुमर्हति। निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि-अवचूर्णि-बालावबोधादयो व्याख्याप्रकारा अत्र गौणीकृताः।

१.८) **कर्तृनाम**- मूलग्रन्थस्य अथवा टीकायाः कर्तुः नामात्र निर्दिश्यते। कर्तृद्वये सति + चिह्नेनद्वयोर्निर्देशः। येषां कर्तृणां नामानि **बृहट्टिप्पणिकायां** न सन्ति तेषां नामानि परिशिष्टे अर्धवर्तुलाकारकोष्टके ( ) दर्शितानि।

१.९) **भाषा**– एकाधिकाः भाषाः + चिह्नेन दर्शिताः।

१.१०) **गाथा**–उपलब्ध्यनुसारं गाथासङ्ख्यानिर्देशः।

१.११) **ग्रन्थाग्रम्**–स्थूलरूपेण ग्रन्थाग्रनिर्देशः कृतः। यथाशक्यं हस्तलिखितानि संशोध्य ग्रन्थाग्राणि निर्दिष्टानि। हस्तलिखितेष्वप्यनुपलब्धे सति ग्रन्थाग्रे प्रत्येका आर्या अष्टत्रिंशदक्षराणामिति पूर्णग्रन्थस्य ग्रन्थाग्रं गणितम्।।

१.१२) कृतिरचनावर्षं विक्रमसंवत्सरानुसारेण कथितम्।

१.१३) **बृहट्टिप्पनिकायां** केवलं नामशेषा ये ग्रन्थास्तेऽप्यत्र उल्लिखिताः।

१.१४) परिशिष्टे **बृहट्टिप्पनिका**मनुसृत्यैव विषयविभाजनम्।

१.१५) विषयविभाजनं वर्धमान-जिनरत्नकोश-विभागस्थ-सूचिपत्रानुसारम्।

१.१६) **स्वसमय-परसमय - बृहट्टिप्पनिका**यामिवात्रापि आगमेतरकृतयः **स्वसमय-परसमय** इति निर्दिष्टानि। दार्शनिककृतयस्तु दर्शनानुसारिण्यः।

१.१७) **टिप्पण्यः**–**बृहट्टिप्पणिका**यामिव कृतिसम्बन्धिज्ञातव्यान्यपि कथितानि।

१.१८) **सम्पादकीया टिप्पणी**–अन्यग्रन्थानुशीलनेन प्राप्तानि ज्ञातव्यानि **सम्पादकीयटिप्पणी**रूपेण प्रदर्शितानि।

द्वितीये परिशिष्टे कृतीनां वर्णानुक्रमेण सूचिः।

तृतीये परिशिष्टे कर्तृणां वर्णानुक्रमेण सूचिः।

चतुर्थे परिशिष्टे कृतिस्वरूपानुसारं वर्णानुक्रमेण सूचिः।

पञ्चमे परिशिष्टे भाषानुसारि वर्गीकरणम्।

षष्ठे परिशिष्टे विषयानुसारि वर्गीकरणम्।

सप्तमे परिशिष्टे कविवर्य-श्रीदीपविजयैः कस्यचित्प्रश्नानामुत्तररूपेण रचिता आगमानां ग्रन्थाग्रप्रमाणं दर्शयन्ती **सूत्रादिश्लोकमाना**ख्या कृतिर्वर्तते। अस्या हस्तलिखितम् सुरतनगरे जैनानन्दभाण्डारे विद्यते (क्रमाङ्कः- ३०७९)। विविधकृतीनां ग्रन्थाग्रार्थं कृतिरियं समाविष्टा।

---

१ ३८६ प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरणं च यशोदेवसाधुकृतम् आद्यं तु त्रिवर्गपरिहारेण अपौ.पत्राणि११
प्रत्यन्तरे प. १४।, ४४९ आख्यातावचूरिर्लौकिकव्याकरणसम्बद्धा प. ३६।, ६४६ सुधाकलशाख्यसुभाषितकोशः पं. रामचन्द्रकृतः, पत्र....।

अष्टमे परिशिष्टे अज्ञातकर्तृका **सिद्धान्तश्लोकाख्या** कृतिर्वर्तते। अस्यां जैनेतरग्रन्थानामपि ग्रन्थाग्रनिर्देशो वर्तते। सुरतनगरस्थे जैनानन्दभाण्डारे कृतिरियं विद्यते। **बृहट्टिप्पणिका**यामविद्यामानाः नैकाः कृतयोऽस्यां निर्दिष्टाः। अतोऽस्या उपयोगित्वम्। अत्रस्थग्रन्थाग्रगणनायाः दोषाः संशोध्य सम्मार्जिताः। सुधारितसङख्याः अर्धवर्तुलाकारकोष्ठकेषु ( ) प्रदर्श्यते। वृद्धिं गतः पाठो धन्वाकारकोष्ठकेषु { }।

नवमे परिशिष्टे सम्पादनप्रक्रियायां प्राप्तानामाख्यापकानां सङ्ख्यानां च वैशिष्ट्यपूर्णा वैविध्यपूर्णा विदा आलेखेषु प्रदर्श्यते। तद्यथा-

९.१) **बृहट्टिप्पणिका**यामागमसाहित्यकृतयः२०७ (२०%) तथा आगमेतरसाहित्यकृतयः ८२६ (८०%) विद्यन्ते। सम्मील्य कृतिसङ्ख्या१०३३ भवति। (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः१)

९.२) **बृहट्टिप्पणिका**यां प्राप्तकृतीनां भाषानुसारिवर्गीकरणात् निम्नलिखितं विस्तृतज्ञानं प्राप्यते - (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः २)

प्राकृतभाषायाः १६० कृतयः (१९ %)

संस्कृतभाषायाः ६४९ कृतियः (७९ %)

अन्यभाषाणाम् १६ कृतयः (२%)

९.३) **बृहट्टिप्पणिका**याःआगमसाहित्यस्य भाषानुसारिण्या तथा कृतिस्वरूपानुसारिण्या ग्रन्थाग्रगणनया निम्नलिखिताविदा प्राप्ता। (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखौ ३ तथा ४)

आगमसाहित्येऽर्धमागधीप्राकृतश्लोकाः -१,६४,२४२ (२१%)

आगमसाहित्ये सूत्राधारितश्लोकाः- ९७,७४५ (१२%)

आगमसाहित्येनिर्युक्तिश्लोकाः- ३,९६५ (१ प्रतिशतादपिन्यूनम्)

आगमसाहित्ये भाष्यश्लोकाः- ५९,९६०(८%)

आगमसाहित्ये चूर्णिश्लोकाः- १,३४,४९८ (१७ %)

आगमसाहित्ये टीकाश्लोकाः - ५,०१,८३८ (६३%)

आगमसाहित्यस्य सङ्क्षेपेण श्लोकप्रमाणम् - ७,९८,००६

बृहट्टिप्पणिकायां स्वसमयपरसमयौ मिलित्वा ८२६ आगमेतरकृतयः विद्यन्ते।

९.४) **बृहट्टिप्पणिका**या आगमेतरकृतीनां भाषानुसारिवर्गीकरणेन निम्नलिखिता विदा प्राप्यते- (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः ५)

आगमेतरप्राकृतकृतयः –१६०(१९%)

आगमेतरसंस्कृतकृतयः - ६४९ (७९%)

९.५) **बृहट्टिप्पणिका**या आगमेतरकृतीनां स्वरूपानुसारिवर्गीकरणेन निम्नलिखिता विदा प्राप्यते (द्रष्टव्यं परिशिष्टं९, आलेखः ६)

आगमेतरमूलकृतयः ५४५–(६६%)

आगमेतरटीकाकृतयः२८१–(३४%)

९.६) **बृहट्टिप्पणिकाया** आगमेतरकृतीनां कृति-अनुसारिग्रन्थाग्रगणनया निम्नलिखिता विदा प्राप्यते- (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः ७)

आगमेतरसाहित्ये मूलकृतयः ९,२३,७९१श्लोकप्रमाणम्। (२३ %)

आगमेतरसाहित्ये टीकाकृतयः १०,९४,४७७ श्लोकप्रमाणम्। (२७ %)

आगमेतरसाहित्यं संक्षेपेण २०,२१,५८८ श्लोकप्रमाणम्।

अनुपलब्धा आगमेतरकृतयः - २५८

९.७) **बृहट्टिप्पणिका**या आगमेतरकृतीनां कृति-स्वरूपानुसारिवर्गीकरणेन तथा भाषानुसारिवर्गीकरणेन प्राप्ता विदा- (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः ८)

आगमेतरप्राकृतमूलकृतयः -१५५ (१९%)

आगमेतरसंस्कृतमूलकृतयः - ३८५ (४७%)

अन्यभाषाणामागमेतरमूलकृतयः - ५

आगमेतरसंस्कृतटीकाः -२७०(३३%)

आगमेतरप्राकृतटीकाः- ११(१%)

९.८) आगमेतरसाहित्यस्य धर्मानुसारिवर्गीकरणेन निम्नलिखिता विदा प्राप्यते। (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः ९)

आगमेतरसाहित्ये दिगम्बरकृतयः - २०(२%)

आगमेतरसाहित्येजैनेतरकृतयः - १०५ (१३%)

आगमेतरसाहित्येजैनकृतयः - ६९१(८५%)

९.९) आगमेतरसाहित्यस्य विषयानुसारिवर्गीकरणेन निम्नलिखिता विदा प्राप्यते - (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः १०)

विषयः	**कृतिसङ्ख्या**	**प्रतिशतम्**
चरित्रम्	११९	१४%
उपदेशः	९३	११%
आगमिकप्रकरणम्	६४	७%
स्तोत्रम्	५८	७%
जैनन्यायः	५८	७%
व्याकरणम्	५२	६%

काव्यम्	४९	६%
दर्शनम्	४४	५%
कर्मग्रन्थः	४१	५%
अध्यात्मम्	४०	५%
ज्योतिषम्	३३	४%
कोशः	३०	३%
साहित्यम्	२५	३%
नाटकम्	२२	३%
आचारः	२१	२%
लघुकथा	२०	२%
छन्दः	१३	२%
तत्त्वज्ञानम्	१२	१%
कथासङ्ग्रहः	१२	१%
सुभाषितम्	११	१%
निमित्तम्	८	१%
चर्चा	८	१%
विधिः	७	१%
वास्तु	६	१%
शकुनः	६	१%
मन्त्रः	६	१%
अन्ये	४	१%

९.१०) **बृहट्टिप्पणिका**याःसमग्रकृतीनां गणनया निम्नलिखिता विदा प्राप्यते - (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः १)

आगमसाहित्यस्य मूलकृतयः - ७२(२६%)

आगमेतरसाहित्यस्य मूलकृतयः - ५४५ (२५%)

आगमसाहित्यस्य टीकाकृतयः - १३५ (१९%)

आगमेतरसाहित्यस्य टीकाकृतयः - २८१(३०%)

आगमेतरसाहित्यस्यप्राकृतमूलकृतयः - १५५ (९%)

आगमेतरसाहित्यस्यप्राकृतटीकाकृतयः - ११(१%)

आगमेतरसाहित्यस्य संस्कृतमूलकृतयः - ३८५ (४७%)

आगमेतरसाहित्यस्य संस्कृतटीकाकृतयः - २७०(३३%)

अनुपलब्धाः कृतयः - ३५

९.११) **बृहट्टिप्पणिका**याःसमग्रकृतीनां ग्रन्थाग्रगणनया निम्नलिखिता विदा प्राप्यते - (द्रष्टव्यं परिशिष्टं ९, आलेखः११)

आगमसाहित्यश्लोकप्रमाणम् - ७,९८,००६ (२८%)

आगमेतरसाहित्यश्लोकप्रमाणम् -२०,१८,२६८ (७२%)

समग्रजैनसाहित्यश्लोकप्रमाणम्-२८,१६,२७४

दशमे परिशिष्टे प्रस्तूयमानसम्पादने प्रयुक्तानां सङ्केतानां सूचिर्वर्तते।

एकादशे परिशिष्टे प्रस्तूयमानसम्पादने उपयुक्तानां सन्दर्भग्रन्थानां सूचिर्वर्तते।

द्वादशे परिशिष्टे बृहट्टिप्पणिकायायाः जैनानन्द-हस्तप्रत-भाण्डारस्थं हस्तलिखितं (हस्तप्रतक्रमाङ्कः ०९९८) छायाङ्कितं दत्तम्।

प्रस्तूयमानं सम्पादनं **वर्धमान-जिनरत्न-कोश-प्रकल्प**द्वारा निर्मीयमाणस्य **जैन-कृति-कृतिकार-कोश**स्य प्राथमिकरूपमिति वर्णितुं शक्यते। **जैन-कृति-कृतिकार-कोशे** द्वाविंशतिसहस्राधिककृतीनां समावेशो भविष्यति।

भारतीयकोशशास्त्रेतिहासे मानदण्डत्वेन विराजमानाया अस्या लघुकृतेः सवर्गीकरणसम्पादनस्यानन्दः शब्दातीतः खलु। प्राचीनग्रन्थवि भवस्यान्वेषणायोद्युक्तान्विदुषां प्रति साहाय्यकस्सार्थकश्च स्यादयं यत्न इत्येवाकाङ्क्षा।

कृतज्ञता

मम परमोपकारिणां गुरुदेवानां परमपूज्याचार्याणां श्री**रामचन्द्रसूरीश्वराणाम्,** पितृगुरुदेवानां परमपूज्यमुनिप्रवराणां श्री**संवेगरतिविजया**नां पुण्यकृपा, भ्रातृवर्यस्य मुनिप्रवरस्य श्री**प्रशमरतिविजयस्य** स्नेहभावः, मुनिवरश्री**संयमरतिविजया**ः, परमपूज्यसाध्वी श्री**हर्षरेखाश्रीणां** शिष्यवर्या साध्वीश्री**जिनरत्नाश्री**ः, साध्वीश्री**मधुरहंसाश्री**ः, साध्वीश्री**धन्यहंसाश्रीः च** एतेषां सर्वेषां साहाय्यकत्वमेव मम प्रवृत्तेः आधारशिला। एतेषां ऋणविमोचनं नैव शक्यम्।

प्रस्तावनायाः हिन्दी-अनुवादकर्ता श्री-**ओमजी-ओसवाल**महोदयः, आङ्ग्लानुवादकर्त्री डॉ. **विनया क्षीरसागर**महोदया तथा संस्कृतानुवादकर्ता श्री-**अमोघ-प्रभुदेसाई**महोदयः इति सर्वेषां साहाय्यकभावं श्रुतभक्तिं चानुमोदयामीति।

तदेवं **बृहट्टिप्पणिका** यथामति सम्पाद्यात्र प्रस्तुता विदुषां बोधवृद्ध्यै बोधिशुद्ध्यै च सम्पद्यन्तामिति शुभमभिलषन् सम्पादनेऽस्मिन् दृश्यमानाः छद्मस्थसुलभाः क्षतयो विद्वांसः सम्मार्क्ष्यन्ति निर्देक्ष्यन्ति चेति निवेदयँश्च विरमति परमगुरुवराचार्यवर्यश्रीमद्विजय**रामचन्द्रसूरीश्वरा**णां विनेयान्यतमः पितृगुरुमुनिप्रवर-श्री**संवेगरति**विजयानामनुजस्य मुनिप्रवरश्री**प्रशमरति**विजयस्य च सतीर्थ्यो

-वैराग्यरतिविजयः

वैक्रमीये चतुस्सप्तत्यधिके द्विसहस्रतमेऽब्दे

फाल्गुनस्य शुक्लपञ्चम्यां श्रुतभवने।

संपादकीय

भारत में सूचिपत्रों की उपयोगिता का इतिहास नया नहीं है। प्राचीनकाल से हमारे यहां हस्तलिखित प्रतों के संग्रह और उनके संरक्षण-संवर्धन की वैज्ञानिक प्रणालियां अपनायी जाती रही हैं। सूचिपत्रों का निर्माण भी इसी का एक अंग है। उस काल में इन्हे टीप, टिप्पण, टिप्पनिका, हुंडी, बीजक आदि नामों से जाना जाता था। इन सूचिपत्रों के भी अनेक आयाम होते थे। हस्तप्रतभंडारों के प्रथम सूचिपत्र, किसी कर्ता विशेष के द्वारा रचित ग्रंथों की सूचि[१], एक ही ग्रंथ में उल्लेखित भिन्न-भिन्न विषयों की सूचि, (वर्तमान समय में इसे अनुक्रमणिका कहा जाता है।) अनेक कृतियों की सूचि, भिन्न-भिन्न भंडारों में स्थित कृतियों की सूचि आदि अनेक स्तरों पर ये कार्य होता था। ग्रंथालयविज्ञान के अंतर्गत भिन्न भिन्न वर्गीकरणों का वैज्ञानिक महत्त्व है। **बृहट्टिप्पनिका** ऐसा ही वर्गीकृत परिपूर्ण वैज्ञानिक सूचि-संस्करण है।

भारत में सूचिपत्रों के ऐतिहासिक संदर्भो पर अनेक संशोधन एवं सर्वेक्षण हुए हैं। जिसमें **बृहट्टिप्पनिका** भारत में उपलब्ध तमाम सूचिपत्रों में सर्वाधिक प्राचीन और आधारभूत है। इसका रचनाकाल १५वीं शताब्दि के आसपास अनुमानित है।[२] **बृहट्टिप्पनिका** के प्रथम संपादक प्राच्यविद्या संशोधनकार श्री जिनविजयजी महाराज का कथन है कि-

''**बृहट्टिप्पनिका** नामक प्राचीन जैन ग्रंथसूचि के मूल निर्माता और काल की जानकारी अस्पष्ट है, परंतु इस में समाहित ग्रंथों के नामों से अवधारणा बनती है कि विक्रम की १५वीं सदी के मध्यकाल में किसी विद्वान द्वारा इस सूचि की निर्मिति हुई है। इस बात भी पुष्टि का कारण यह है कि रचना वर्ष के अनुक्रम से जिन ग्रंथों के नामों का उल्लेख किया है उनमें सबसे अंतिम नाम संवत् १४४३ में रचित कुलमंडनसूरि के 'प्रवचनपाक्षिकादिआलापकसंग्रह' का ही है (क्रमांक १६४)। इसके पश्चात की कोई भी रचना का उल्लेख इस सूचि में नहीं है। इससे पूर्व के संवत् १४३६ में रचित उपदेशचिंतामणि (क्रमांक २२३), संवत् १४२९ मे रचित प्रश्नोत्तररत्नमालावृत्ति (क्रमांक २२२), संवत १४२६ में रचित भक्तामरस्तवटीका (क्रमांक १३२) आदि ग्रंथों के नाम दर्ज है। लगभग पंद्रहवी शताब्दी के तीसरे भाग में हुए सोमसुंदर, मुनिसुंदर, गुणरत्न और ज्ञानसार आदि अन्य ग्रंथों का इसमें कहीं उल्लेख नहीं है। इस आधारपर मेरा मत है कि इस सूचि का निर्माण १४४० से १४६० के मध्य हुआ है, अर्थात आज से लगभग सवापाँचसौ वर्ष पूर्व।''

१ पूर्णिमागच्छ के आचार्य श्री भावप्रभसूरिजी म. ने पू.उपा. श्री यशोविजयजी म. के ग्रंथों की सूचि बनायी थी। वह पू.आ. श्री यशोदेवसूरिजी म. के (पू. आ. श्री धर्मसूरिजी म. के) संग्रह साहित्यमंदिर, पालिताणा में थी। उसमें से बहुत ग्रंथों की माहिती मिली।

२ Manuscripts were collected by the rulers of different states, including the Mughal emperors, and religious institutions, including monasteries (mathas) of different sects and the Jain bhandaras. The Jain munis played a significant role in the area of collecting and preserving the manuscripts of various shastras – Jain, Brahmanical and Buddhist. The credit of compiling the earliest known catalogue in India goes to the Jain community. So far as our information goes, the earliest catalogue of manuscripts was compiled under the title, Brihattipanika, as early as Vikrama Samvat 1440 (1383 C.E.) by a Jain monk, whose name is unfortunately not known. TheBrihattipanika, covers some manuscripts in the collections of several places such as Patan, Cambey and Bharauch. It furnishes data of authors' names, period of writing and grantha-parimana (the extent of each text) (History of Cataloguing NMM website).

कर्ता

उपरोक्त सूचि के कर्ता जैन मुनि थे। जैन समाज के लिए ये गौरवास्पद घटना है। दुर्भाग्य से उनके नाम से हम आज भी अनजान हैं। कृति क्रमांक १६८ में उल्लेखित 'समाचारी अनेकविधा गच्छांतरीया' इन शब्दों के आधार से इतना पता चलता है कि कर्ता तपागच्छीय थे। इस संदर्भ में श्री जिनविजयजी म. का कथन है कि -

'' सूचि तैयार करनेवाले कोई समर्थ विद्वान और उत्कृष्ट साहित्यप्रेमी यतिजन होने का अनुमान है। उन्होनें इस सूचि के बहुत सारी बारिकियों पर पूरा-पूरा ध्यान रखा है। ग्रंथों का विषयानुसार पृथक्करण किया है और प्रत्येक ग्रंथ के अंतर्गत स्वरूप को जांचा-परखा और फिर दर्ज किया है। सूचि में ग्रंथ का नाम, कर्ता, रचनाकाल एवं कुल श्लोक संख्याएं इन चार बातों के लिए प्रत्येक ग्रंथ के संबंध में सूक्ष्मतम नजर डाली है।

विशेषता

बृहट्टिप्पनिका की खास बात यह है कि यह मात्र किसी एक ग्रंथभंडार की हस्तप्रतों का सूचिपत्र नहीं है। अनेक भंडारों में स्थित ग्रंथसंग्रहों के आधार लेकर यह बना है। पांच प्रमुख भंडारों के नामों का उल्लेख है। पत्तन (पाटण), देवपत्तन (प्रभासपाटण)[३], भरुच[४], खंभात और देवगिरी[५]। श्री जिनविजयजी के कथनानुसार—

''सूचिकर्ता ने मुख्यतः पाटन (अनहिलपुरपत्तन), खंभायत (स्तंभतीर्थ), भरुच (भृगुपुर) और प्रभासपाटन (देवपत्तन) के मुख्य ग्रंथभंडारों को दृष्टिगत रखकर इस सूचि का निर्माण हुआ है। मारवाड के सुप्रसिद्ध जैसलमेर स्थित ज्ञानभंडार का इसमें समावेश नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि उस ग्रंथभंडार पर कर्ता का ध्यान नहीं गया। इसके कारण एक अवधारणा यह भी बनती है कि सूचिकर्ता गुजरात निवासी और तपागच्छीय विद्वान होना चाहिए।''

प्रस्तुत सूचि कृतिप्रधान है। ग्रंथों की जानकारी देने के प्रमुख लक्ष्य के साथ इसकी निर्मिती हुई है। उस काल में हस्तप्रतों के लेखन की प्रवृत्ति पुरजोर चलती थी। लिखनेवाले लहियाओं को अक्षरों के गणनानुसार पारिश्रमिक दिया जाता होगा। इसके लिए ग्रंथ के अक्षरों की गणना की जाती थी। जिसे **ग्रंथाग्र** कहा जाता है। कौन सा ग्रंथ लिखने योग्य है, उसकी सर्वोत्तम प्रति कौन से भंडार में उपलब्ध है ये जानकारियां सहजता से मिल जाए इस लक्ष्य को ध्यान मे रखकर किन्हीं अज्ञात मुनिवर की पहल से यह सूचिपत्र बना होगा। १५वीं सदी से पूर्व की रचनाओं की इस सूचि में जानकारी मिलती है मगर उस काल की सूचिबाह्य अन्य कृतियां भी है।

जैन साहित्य में इस ऐतिहासिक सूचि का स्थान कितना महत्त्वपूर्ण है इसे भी श्री जिनविजयजी के शब्दों में ही देखें—

३ प्रभास पाटण में आज भंडार मिलता नहीं।

४ भरुच में आज भंडार मिलता नहीं।

५ देवगिरी मतलब आज के महाराष्ट्र में औरंगाबाद के पास आया हुआ दौलताबाद। यहां पेथडशाह ने जिनालय बंधवाया था इसलिए जैनों की वसति होगी। इसके अलावा जगद्गुरु आ. श्री हीरसूरीश्वरजी म. तथा उपा. श्री धर्मसागरजी म. यहां पर न्याय आदि विषयों का अभ्यास करने के लिए आए थे। मतलब यह विद्या का केंद्र भी होगा इसलिए यहां भंडार भी होगा। सेनप्रश्न में देवगिरी संघ का उल्लेख है (सेनप्रश्न उल्लास ४, प्रश्न १३)। यह संघ गुजरात अथवा राजस्थान में होगा। यह उल्लेख उसका भी हो सकता है। उसका उल्लेख कृति क्रमांक २९१ में है।

" इस सूचि में दर्ज अनेक ऐसे ग्रंथ भी हैं जिनका आज तक कोई ठिकाना ही पता नहीं है। इस बाबत विद्वान शोधकर्ताओं को लक्ष देना खास जरुरी है। उदाहरणार्थ - **सम्मतितर्क** जैसे सुप्रसिद्ध और जैन साहित्यभूषण ग्रंथ की आज मात्र एक ही बृहद्वृत्ति मिलती है। परन्तु इस सूचि में इसकी तीन आवृत्तियों (क्रमांक ३५८) का उल्लेख मिलता है। इसमें प्रथम आवृत्ति तो काफी महत्त्वपूर्ण है। कारण इसके कर्ता मल्लवादी दर्शाये गये हैं। मल्लवादीसूरि ने **सम्मति** पर कहीं तो विवरण लिखा है। इसका प्रमाण हमें हरिभद्रसूरिजी के लेखन में मिलता है। ऐतिहासिक दृष्टि से मल्लवादीजी की टीका का स्थान काफी महत्त्वपूर्ण है। कारण उसके आधारपर ही न्यायशास्त्र के विकास और इतिहास संबंधी अनेक प्रश्नों की विशिष्ट ऊहापोह संभव बनी है। मल्लवादीजी की टीका से ही अनेक अज्ञात विषयों का ज्ञापन और संदिग्ध बातों का निराकरण हो पा रहा है। इन तथ्यों के महत्त्व को ध्यान में रखकर **सम्मति** की टीका का गहन शोध करने हेतु विद्वज्जनों को आग्रहपूर्ण रहना चाहिए।''

''**सम्मति** की एक अन्य तीसरी टीका का भी इस सूचि में उल्लेख है। उसके कर्ता के नाम का उल्लेख नहीं है। मात्र **अन्यकर्तृक** शब्द अधोरेखित है। कदाचित यह टीका कोई दिगंबर विद्वान कृत भी हो सकती है। इस बाबत हमारे विद्वान मित्र श्रीयुत नाथुरामजी प्रेमी ने **जैनहितैषी** के सन १९२१ के जनवरी-फरवरी मास के संयुक्तांक में महत्त्वपूर्ण टिप्पणी प्रकाशित भी है। अतः आग्रहणीय है कि उक्त टीका पर शोधकजनों ने गवेषणा करना चाहिए। **बृहट्टिप्पनिका** में इसके अतिरिक्त भी अनेक ग्रंथों के नामों का उल्लेख मिलता है। जिनके नाम सूचि में तो दर्ज है मगर वर्तमान में वे शास्त्र उपलब्ध नहीं है।''

जानकारियां

बृहट्टिप्पनिका में आठ प्रकार की जानकारियां दी गयी है। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, रचनाकाल, ग्रंथ का विषय, मूलग्रंथ और टीका के बीच का संबंध, उक्त ग्रंथ प्राप्त है अथवा नहीं, किसी खास ग्रंथालय में मिलता है तो उसकी जानकारी, ग्रंथ में कितने श्लोक हैं (३२ अक्षर =१ श्लोक) अर्थात ग्रंथाग्र की जानकारी आदि का समावेश किया गया है।

ग्रंथालय विज्ञान नियमानुसार अपेक्षित तमाम जानकारीयां इस सूचिपत्र में दर्ज है। **बृहट्टिप्पनिकाकार** ने सूचिपत्र का वर्गीकरण भी वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टि के अनुसार किया है। समस्त ग्रंथों को दो विभागों में विभाजित किया है। आगम और आगमेतर। आगम अंतर्गत साहित्य ग्यारह अंग, बारह उपांग, आवश्यक आदि तीन भागों को पृथक् पृथक् रखा है। छ छेद, चार मूल, दस प्रकीर्णक और दो चुलिका आदि का तीसरे भाग में समावेश किया है। आवश्यकसूत्र पर अधिकतम टीकाएं मिलती है। इसलिए उनकी अलग सूचि दी गई है। इसके अलावा आगम स्वरूप दृष्टिगत ग्रंथों की भी पृथक् सूचि है। आगमेतर साहित्य को ९ प्रकारों में विभाजित रखा है। चरणकरणानुयोग, कथानुयोग, न्याय-तर्क, व्याकरण-कोष, छंद-साहित्य, काव्य, नाटक, ज्योतिष आदि। प्रकीर्णक चरणकरणानुयोग में तत्त्वज्ञान, प्रकरण, उपदेश, योग, आचार, विधि, स्तोत्र, कर्मग्रंथ आदि जैसे विषयों का समावेश किया गया है। कथानुयोग में तीर्थंकरों के चरित्र, शलाकापुरुष चरित्र, महापुरुष चरित्र इस क्रमानुसार सूचिबद्ध किया गया है। व्याकरण और कोष एक ही विभाग में है। छंद और साहित्य का अपना एक पृथक् विभाग है। ज्योतिष विभाग में शकुन, योग, आम्नाय, मंत्र, कल्प, सामुद्रिक आदि छ विषयों का समावेश है। उपरोक्त वर्गीकरण में जहां जरुरी था वहां जैन ग्रंथों को स्वसमय के नाम से और जैनेतर ग्रंथों को परसमय के नाम से दर्ज किया गया है।

टिप्पणी

बृहट्टिप्पनिका के कर्ता ने इस सूचिपत्र में कुछ ग्रंथों की जानकारी के साथ स्वयं की टिप्पणीयां भी जोडी है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं —

१. कृति की भंडार में उपलब्धि विषयक टिप्पणी - कृति क्रमांक ४०.३, ७२, ७३, ७४[१] आदि।

२. कुछ स्थान पर ग्रंथाग्र में मतभेद संबंधी - कृति क्रमांक २९१, ४९१ आदि[२]।

३. कर्ता विषयक - कृति क्रमांक ११३, ११६ आदि[३]।

४. किसी कृति की रचना, किसी विशेष राज्यकाल में हुई है - क्रमांक २२४, २३२, २३९, २४६, २६५ आदि[४]।

५. किसी कृति विशेष की विषयगर्भित टिप्पणी - क्रमांक ९४(२), १४४, १४५, १५४, १६०, १६१, १६२, १८३, १८६, २०४, २२०, ३३२, ३३३, ३३६, ३३७ आदि में देखी जा सकती है[५]।

६. समान नामवाले कृतियों के आदिव्याक्य दर्शाती टिप्पणी - क्रमांक ४०(५), ११९(३), १८९, २१२, २१३ और २१४ आदि[६]।

७. कृति की भाषा एवं उनके अध्ययन विभाग संबंधी टिप्पणीयां - क्रमांक १२५, १५८, २१९, २६८, २७२, २९२, २९४, २९५, ३००, ३०३, ३११, ३३१, ३३९, ३४८, ३५८.२, ३६१, ३६३, ३७२ आदि[७]।

८. अन्य विद्वानों द्वारा संशोधित कृतिविषयक टिप्पणीयां - क्रमांक २४८ आदि[८]।

९, कृति की पूर्णता से संबंधित टिप्पणी - क्रमांक २९९ और ५०१ में मिलती है[९]।

---

१ ४०.३-चूर्णिटिप्पनकं भृगु. गु. ३ विना न, ७२ समयसारटीका अमृतचन्द्रसूरीया भृगू[पुरम्] देव[पत्तनं] वि[ना] न। ७३ पञ्चास्तिकाय-सङ्ग्रहाभिधसमयस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देव[पत्तनं] विना न। ७४ प्रवचनसारस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देवपत्तनं विना न।

२ २९१ त्रिषष्टीयं महावीरचरित्रं- ३४९२ प्रत्यन्तरे- ५१६१ देवगिरि। ४९१ काव्यानुशाससनानामालङ्कारचूडामणिवृत्तिः श्रीहेमसूरीया ८ अध्याया २८००- ४२०० प्रत्यन्तरे।

३ ११३ नव्यकर्मविपाकवृत्ति-नव्यकर्मस्तववृत्ति-नव्यबन्ध-स्वामित्वावचूर्णि-नव्यषडशीतिकवृत्ति नव्यशतकवृत्तयः ५ सूत्रकारतपाश्रीदेवेन्द्रसूरियाः, ११६ सत्तरीटिप्पनकम्, खरतररामदेवगणिकृतम्- गाथा ५४७।, १७० उपदेशमालावृत्तिः प्राकृता कृष्णर्षिशिष्यजयसिंहसूरिकृता ९१३ वर्षे।, १८५ सम्यक्त्ववृत्तिः सूत्रकारचन्द्रप्रभसूरि-सन्तानीय-श्रीतिलकीया १२७७ वार्षिकी ८०००।

४ २२४ श्रीआदिनाथचरित्रं प्राकृतं जयसिंहदेवराज्ये ११६० वर्षे वर्धमानसूरिरचितम् ११०००, १२०००।, २३२ सुमतिचरितं प्रा. मुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतम् ९६२१।, २३९ चन्द्रप्रभचरितं प्रा. श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रम् ८०३२।, २४६ श्रेयांसचरितं प्रा. श्रीजयसिंहदेवराज्ये हरिभद्राचार्यकृतम्, गाथा ६५८४, स्तम्भतीर्थं विना न।, २६५ मल्लिचरितं बहुप्राकृतं हरिभद्रीयं कुमारपालराज्ये कृतं गाथाकाव्यमयं ग्रन्थाग्रम् ९०००।

५ ९४ कर्मप्रकृतिसूत्रम्- गाथा- ४७५।(२)वेदनादि ८ करणवाच्या चूर्णिः- ७०००। बाकी के उदाहरण सूचि में देखें।

६ ४०.(५) जीतकल्पविवरणं सङ्क्षिप्तगमनिकारूपं 'सिरिवीरजिणं नमिउं' इति ५४३।, ११९(३) लघुसङ्ग्रहणीवृत्तिः 'नमिउं अरिहंताई' त्ति, मलधारिदेवभद्रीया ३५००।, १८९ 'माणुस्सखित्ते' ति विवेकमञ्जरीवृत्तिः १२२३ वर्षे अकलङ्कदेवीया।, २१२ 'इसिमंडल' इत्याद्यऋषिमण्डलस्तवः गाथा २७१।, २१३ 'इसिमंडल' ऋषिमण्डलवृत्तिः ४६१४।, २१४ 'भत्तिभर' इति ऋषिमण्डलसूत्रम् २०८।

७ १२५ क्षेत्रसमाससूत्रं संस्कृतमाह्निकचतुष्टयरूपम् उमास्वातिवाचककृतम्। बाकी के उदाहरण सूचि में देखें।

८ २४८ वासुपूज्यचरितं प्रा. चान्द्रप्रभं हेमसूर्यादिशोधितम् ८०००, स्तम्भतीर्थं विना न।

९ २९९ हरिवशंचरितं सं. नेम्यादिबहुवृत्तवाच्यमाद्यन्तरहितं श्लोका: ९०००।, ५०१ श्रीभोजराकृताऽलङ्कारस्य वृत्तिः पदप्रकाशनाम्नी आजडकृता काव्यबन्धादिवाच्या।

१०. सूचिकर्ता ने कुछ कृतियों की अप्रामाणिकता को लेकर भी अपनी टिप्पणी दर्ज की है - क्रमांक २९७[१]।

११. कृति की आधुनिकता संबंधी - क्रमांक १५५, १७२[२]।

१२. कृति की विशेषता दर्शाती टिप्पणी - क्रमांक ७२.२ और ८९[३]।

१३. कृति का नाम अजैन दर्शाया हो अथवा उस नाम से अन्य जैन कृति उपलब्ध हो और उसमें कर्ता जैन हो इस बाबत - क्रमांक ३३८, ३७१ आदि[४]।

१४. सूचिकर्ता को जहां जहां ग्रंथाग्र नहीं मिल पाये वहां हस्तप्रतों के पत्रों का उल्लेख किया है - क्रमांक ३८६, ४४९, ६४६ आदि[५]।

१५. दार्शनिक कृतियों को पृथक् दर्शन विभाग में स्थान दिया है - क्रमांक ३५८ से लेकर ४२२ तक।

पूर्वप्रकाशन

प्रस्तुत **बृहट्टिप्पनिका** इससे पूर्व दो बार प्रकाशित हुई है। सर्वप्रथम प्राच्यसंशोधक **श्री जिनविजयजी** ने विक्रम संवत् १९७७ में जैन साहित्य संशोधक मासिक के (वर्ष १९२१ भाग १, अंक २) परिशिष्ट में प्रकाशित की थी। उन्होंने यह सूचि दो हस्तलिखित प्रतों से मुद्रित की थी जिसमें एक प्रत लगभग ३००-४०० वर्ष पुरानी है और दुसरी नयी है। ये दोनों प्रतियां बडौदा स्थित श्री कांतिविजयजी के शास्त्रसंग्रह में थी। इसकी प्रत खंभात के शांतिनाथ भगवान हस्तप्रतभंडार में भी उपलब्ध है[६]। जिसकी प्रतिलिपि पूज्य आचार्य श्री आनंदसागरसूरिजी महाराज ने करवाई थी। यह प्रत जैनानंद हस्तप्रतभंडार में उपलब्ध है। (हस्तप्रत क्रमांक ०९९८)

पूज्य आचार्य श्री विजयप्रद्युम्नसूरिजी महाराज की प्रेरणा से श्रुतज्ञान प्रसारक सभा, अहमदाबाद द्वारा विक्रम संवत् २०६० में (सन २००४) इसका पुस्तकाकार पुनर्मुद्रण हुआ। प्रो. श्री हरी दामोदर वेलणकर ने **जिनरत्नकोश** में इस संपादन को स्वीकार किया है। वही कृति क्रमांक उन्होंने जिनरत्नकोश में दिये है। इस संपादन में कृतिक्रमांक को मूल एवं टीका जैसे विभागों में नहीं दिये है। कदाचित कोई अनवधान से कोई कृति टीकाकृति के रूप में अथवा कोई टीकाकृति का मूलकृति के रूप में प्रस्तुत हुई है (क्रमांक ७१.३)। इसके पश्चात 'जैन श्वेतांबर हेराल्ड' में (सन १९०६, अंक ४-८) **बृहट्टिप्पनिका** पर आधारित 'जैन सिद्धांतों की सूचि' शीर्षक के अन्तर्गत कोष्ठकाकार ग्रंथसूचि प्रकाशित हुई है। विशेष उपयोग के आशय से अर्थात वर्गीकरण मूलानुरूप आदि विशेष ग्राह्य बने इस दृष्टि से इसका संपादन तैयार किया गया है। कुछ मूल **बृहट्टिप्पनिका** के पाठ को भ्रष्ट करते दिखाई देते है। जिसे जैनानंद की प्रतिलिपि के आधार से सुधारने के प्रयास हुए है मगर वहां भी वे पाठ भ्रष्ट दर्शाए गये हैं।

परिशिष्ट

प्रस्तुत संपादन में बारह परिशिष्ट हैं -

प्रथम परिशिष्ट में कृतियों की अनुक्रमणिका है, जिसमें कृति के विभाग अनुसार क्रमांक दर्शाये हैं, विद्वानों के लिए अनुसंधान हेतु पुराने क्रमांकों का भी समावेश किया गया है। इस परिशिष्ट में **बृहट्टिप्पनिका** में वर्णित जानकारियों के साथ-साथ उन जानकारियों का भी समावेश है जो कि **बृहट्टिप्पनिका** में उपलब्ध नहीं है। ऐसी तमाम जानकारियां प्रस्तुत है उनका वर्णन निम्नानुसार है -

१.१) **अनुक्रमांक** - कृतियों का क्रम।

१.२) **बृहट्टिप्पनिका निर्दिष्ट क्रम।**

१.३) **बृहट्टिप्पनिका में निर्दिष्ट उपक्रम -** एक ही क्रमांक अंतर्गत एक से अधिक कृतियां प्रस्तुत करनी हो उनकी गणना पेटाकृति (उपक्रमानुसार) के रूप में की जाती है।

१.४) **बृहट्टिप्पनिका निर्दिष्ट टीका (चाइल्ड कृति) अंक** - एक ही क्रमांक अंतर्गत टीकारूप कृतियां।

१.५) **बृहट्टिप्पनिका में निर्दिष्ट कृतिनाम।**

१.६) **वर्तमान में प्रचलित कृति का नाम।**

१.७) **कृति का स्वरूप** - मूल अथवा टीका। यहां केवल इन दोनों स्वरूपों को निर्धारित किया है। कृति मूल अथवा किसी ग्रंथ की व्याख्यारूप में हो भी सकती है। निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, अवचूर्णि, बालावबोध जैसी व्याख्या के विविध प्रकारों को यहां गौण रखा गया है।

१.८) **कर्तानाम** - मूल अथवा टीकात्मक कृति के कर्ता का नाम। एक ही कृति के अगर दो कर्ता हो तो वहा दोनों नाम + चिन्ह के साथ दर्शाये गये हैं। जिन कर्ताओं के नाम **बृहट्टिप्पनिका** में उल्लेखित नहीं हुए हैं उनके नाम परिशिष्ट में अर्धगोलाकार कोष्ठक सहित दर्शाये गये है।

१.९) **भाषा** - कृति की भाषा अगर मिश्र है वहां + चिन्ह सहित दर्शायी गयी है।

१.१०) **गाथा** - ग्रंथ अथवा टीका की गाथासंख्या उपलब्ध हो तो उन्हें दर्शाया गया है।

१.११) **ग्रंथाग्र** - यहां बताई गयी ग्रंथाग्र की गणना स्थूल है। संभव हुआ वहां तक हस्तप्रतों में ग्रंथाग्र देखकर संख्याएं दर्शायी गयी है। जहां अनुपलब्धियां रही वहां एक आर्या के संभावित ३८ अक्षर गिनकर ग्रंथाग्र की गणना की है।

१.१२) कृति का रचना वर्ष विक्रम संवत् अनुसार उल्लेखित है।

---

१ २९७ पुण्डरीकचरित्रं सं. १३७२ वर्षे कामलप्रभं क्वचिद् अनागमिकार्थे- ३३००। (इसमें कोई अनागमिक अर्थ है।)

२ १५५ शत्रुञ्जयमाहात्म्यं, कल्पितप्रायम्, आधुनिकधनेश्वरीयम्।, १७२ हेयोपादेयेत्यादिकैव केनापि कथाभिर्येजिता सं. १५००,९५०० वर्षे। इसका उल्लेख श्री जिनविजयजी ने अपने संपादकीय में किया है।

३ ८९ विचारसारप्रकरणं प्रद्युम्नसूरिकृतं सोपयोगि, बहुसङ्ग्रहं गाथा ८९७।, ७७ (२) आद्यपञ्चाशकचूर्णिः ११७२ वर्षे यशोदेवीया सभावाच्या, ३३००।

४ ३३८ कौमुदीकथा जैनकृता १६००।, ३७१ प्रमाणसङ्ग्रहप्रकरणं ९ प्रस्तावं जैनं ७१२।

५ ३८६ प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरणं च यशोदेवसाधुकृतम् आद्यं तु त्रिवर्गपरिहारेण अपौ.पत्राणि११
प्रत्यन्तरे प. १४।, ४४९ आख्यातावचूरिर्लौकिकव्याकरणसम्बद्धा प. ३६।, ६४६ सुधाकलशाख्यसुभाषितकोशः पं. रामचन्द्रकृतः, पत्र....।

६ राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के रिपोर्ट अनुसार इसकी प्रत खंभात में है परंतु इसका उल्लेख पू. पुण्यविजयजी म. द्वारा तैयार किये हुये सूचिपत्र मे नहीं है। The manuscript of this catalogue is still preserved in the Shaninatha Bhandara. (History of Cataloguing NMM website).

१.१३) **बृहट्टिप्पनिका** में अनेक ग्रंथों को अनुपलब्ध बताया है ऐसे ग्रंथों का भी इसमें समावेश हुआ है। (अनुपलब्ध अर्थात ऐसे ग्रंथ जिनके नाम मिलते है मगर ग्रंथ नहीं मिलते)

१.१४) परिशिष्ट में विषय विभाजन **बृहट्टिप्पनिका** के अनुसार है।

१.१५) विषय विभाजन वर्धमान जिनरत्नकोश विभाग में तैयार सूचिपत्रों के अनुसार है।

१.१६) **स्वसमय-परसमय** - **बृहट्टिप्पनिका** में आगमेतर कृतियों का विभाजन **स्वसमय-परसमय** के अनुसार किया गया है। उसी के अनुसार यहां भी प्रस्तुत किया गया है। सुविधानुसार दार्शनिक कृतियों का दर्शन अनुसार अवतरण हुआ है।

१.१७) **टिप्पणी** - **बृहट्टिप्पनिका** में कृति संबंधी जानकारियां और टिप्पणियां है। उनका समावेश भी यहां हुआ है।

१.१८) **संपादकीय टिप्पणी** - अन्य ग्रंथों का अनुसंधान करते हुए प्राप्त जानकारियों का **संपादकीय टिप्पणी** के रूप में उपयोग हुआ है।

दूसरे परिशिष्ट में कृतियों की सूचि वर्णानुक्रमणीय है।

तीसरे परिशिष्ट में कर्ताओं की सूचि वर्णानुक्रमणीय है।

चौथे परिशिष्ट में कृति के स्वरूप अनुसार वर्णानुक्रमणीय सूचि है।

पांचवें परिशिष्ट में भाषानुसार वर्गीकृत सूचि है।

छठे परिशिष्ट में विषयानुसार वर्गीकृत सूचि है।

सातवें परिशिष्ट में **सूत्रादिश्लोकमान** नामक कृति है। जिसमें कवि बहादुर पं. श्री दीपविजयजी महाराज से किसी के द्वारा पुछे गये प्रश्न के उत्तर स्वरूप में आगमों का ग्रंथाग्र प्रमाण दर्शाया गया है। इसकी प्रत जैनानंद भंडार, सुरत में उपलब्ध है। (हस्तप्रत क्रमांक ३०७९) कृतियों की ग्रंथाग्र संख्याओं को ध्यान में रखकर इसका समावेश किया गया है।

आठवें परिशिष्ट में **सिद्धांतश्लोक** नामक कृति का समावेश हुआ है। इसके कर्ता का नाम अज्ञात है। इसमें जैनेतर ग्रंथ के ग्रंथाग्रों को भी दर्शाया गया है। जैनानंद भंडार, सुरत में उपलब्ध इसकी हस्तप्रत का क्रमांक १८६४ है। इस कृति में **बृहट्टिप्पनिका** में जिसे स्थान नहीं मिला है ऐसी कृतियों का उल्लेख यहां मिलता है। इस कारण भी इस कृति की उपयोगिता बढी है। यहां ग्रंथाग्र संख्याओं की गणना की त्रुटियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए सुधार किये गये है। सुधारित संख्याओं का उल्लेख अर्धगोलाकार ( ) कोष्ठकों में दर्ज है। धनुष्याकार { } कोष्ठकों में वृद्धिगत पाठ है।

नववें परिशिष्ट के अंतर्गत इस संपादन में भिन्न-भिन्न प्रकार की जानकारियों और आंकडों का आकलन करते हुए एक परियोजना चित्र (चार्टस्) भी बनाया गया है, जिसमे संख्यानुरूप एवं प्रतिशत अनुसार जानकारियां दर्ज की गयी है। **बृहट्टिप्पनिका** में उपलब्ध जानकारियों के आकलन से निम्नलिखित विवरण प्राप्त होता है-

९.१) **बृहट्टिप्पनिका** में आगम साहित्य की कृतियां २०७ है (२० प्रतिशत) और आगमेतर साहित्य की ८२६ कृतियां अर्थात ८० प्रतिशत, इस तरह कुल कृतियों की संख्या १०३३ है। (देखें परिशिष्ट ९, आलेख १)

९.२) **बृहट्टिप्पनिका** में प्राप्त कृतियों का भाषानुरूप वर्गीकरण करते हुए निम्नलिखित विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है - (देखें परिशिष्ट ९, आलेख २)

प्राकृत भाषा की १६० कृतियां (१९ प्रतिशत)

संस्कृत भाषा की ६४९ कृतियां (७९ प्रतिशत)

अन्य भाषाओं की १६ कृतियां (२ प्रतिशत)

९.३) **बृहट्टिप्पनिका** में आगम साहित्य के भाषावार और कृति के स्वरूप अनुसार ग्रंथाग्र की गणना करते हुए निम्नलिखित जानकारियां उपलब्ध हुई है। (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ३ और ४)

आगम साहित्य में अर्धमागधी प्राकृत भाषा के १,६४,२४२ श्लोक है। (२१ प्रतिशत)

आगम साहित्य में सूत्र आधारित ९७,७४५ श्लोक प्रमाण है। (१२ प्रतिशत)

आगम साहित्य में निर्युक्तियां ३,९६५ श्लोक प्रमाण अर्थात १ प्रतिशत से भी कम है।

आगम साहित्य में भाष्य ५९,९६० श्लोक प्रमाण (८ प्रतिशत)

आगम साहित्य में चूर्णि १,३४,४९८ श्लोक प्रमाण (१७ प्रतिशत)

आगम साहित्य में टीकाएँ ५,०१,८३८ श्लोक प्रमाण (६३ प्रतिशत)

कुल आगम साहित्य ७,९८,००६ श्लोक प्रमाण है।

बृहट्टिप्पनिका में आगमेतर कृतियों की मूल संख्या ८२६ हैं। जिसमे स्वसमय एवं परसमय दोनों प्रकारोंकी कृतियों का समावेश हुआ है।

९.४) **बृहट्टिप्पनिका** में आगमेतर कृतिय़ों का भाषावार वर्गीकरण करते हुए निम्नलिखित विस्तारित जानकारियां हांसिल हुए है- (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ५)

आगमेतर प्राकृत भाषा की १६० कृतियां है जिनका प्रतिशत १९ है।

आगमेतर संस्कृत भाषा की ६४९ कृतियां है और कुल साहित्य ७९ प्रतिशत है।

९.५) **बृहट्टिप्पनिका** में आगमेतर कृतियों का उनके स्वरूप अनुसार वर्गीकरण करते हुए निम्नलिखित जानकारियां हांसिल होती है। (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ६)

आगमेतर मूल कृतियां ५४५ है जिनका प्रतिशत ६६ आता है।

आगमेतर टीका कृतियों की संख्या २८१ है अर्थात ३४ प्रतिशत है।

९.६) **बृहट्टिप्पनिका** में उपलब्ध आगमेतर कृतियों की कृति के अनुसार ग्रंथाग्र की गणना करते हुए निम्नलिखित जानकारियां प्राप्त हुई है- (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ७)

आगमेतर साहित्य में मूल कृतियां ९,२३,७९१ श्लोक प्रमाण है। (२३ प्रतिशत)

आगमेतर साहित्य में टीकाओं की कृतियां १०,९४,४७७ श्लोक प्रमाण है। (२७ प्रतिशत)

आगमेतर कुल साहित्य २०,२१,५८८ श्लोक प्रमाण है।

अनुपलब्ध आगमेतर कृतियों की संख्या २५८ है।

९.७) **बृहट्टिप्पनिका** में आगमेतर कृतियों का कृति-स्वरूप और भाषावार वर्गीकरण में नीचे मुताबिक जानकारियां मिली है। (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ८)

आगमेतर प्राकृत भाषा की मूल कृतियां १५५ है। (१९%)

आगमेतर संस्कृत भाषा की मूल कृतियां ३८५ है। (४७%)

आगमेतर अन्य भाषाओं की मूल कृतियां ५ है।

आगमेतर संस्कृत भाषा में टीकाएं २७० है। (३३%)

आगमेतर प्राकृत भाषा में टीकाएं ११ कृतियां है। (१%)

९.८) आगमेतर साहित्य का धर्मानुसार वर्गीकरण में नीचे मुताबिक जानकारियां प्राप्त होती है। (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ९)

आगमेतर साहित्य में दिगंबर कृतियों की संख्या २० है। (२%)

आगमेतर साहित्य में जैनेतर कृतियों की संख्या १०५ है। (१३%)

आगमेतर साहित्य में जैन कृतियों की संख्या ६९१ है। (८५%)

९.९) आगमेतर साहित्य के विषयानुसार वर्गीकरण में निम्नलिखित जानकारियां उपलब्ध हुई है - (देखें परिशिष्ट ९, आलेख १०)

विषय	**कृतिसंख्या**	**प्रतिशत**
चरित्र	११९	१४%
उपदेश	९३	११%
आगमिक प्रकरण	६४	७%
स्तोत्र	५८	७%
जैन न्याय	५८	७%
व्याकरण	५२	६%
काव्य	४९	६%
दर्शन	४४	५%
कर्मग्रंथ	४१	५%
अध्यात्म	४०	५%
ज्योतिष	३३	४%
कोश	३०	३%
साहित्य	२५	३%
नाटक	२२	३%
आचार	२१	२%
लघुकथा	२०	२%
छंद	१३	२%
तत्त्वज्ञान	१२	१%
कथासंग्रह	१२	१%
सुभाषित	११	१%
निमित्त	८	१%
चर्चा	८	१%
विधि	७	१%
वास्तु	६	१%
शकुन	६	१%
मंत्र	६	१%
अन्य	४	१%

९.१०) **बृहट्टिप्पनिका** में समग्र आगम और आगमेतर कृतियों की गणना से नीचे मुताबिक जानकारियां प्राप्त हुई है - (देखें परिशिष्ट ९, आलेख १)

आगम साहित्य की मूल कृतियां ७२ है। (२६%)

आगमेतर साहित्य की मूल कृतियां ५४५ है। (२५%)

आगम साहित्य की टीका कृतियां १३५ है। (१९%)

आगमेतर साहित्य की टीका कृतियां २८१ है। (३०%)

आगमेतर साहित्य की प्राकृत मूल कृतियां १५५ है। (९%)

आगमेतर साहित्य की प्राकृत टीका कृतियां ११ है। (१%)

आगमेतर साहित्य की मूल संस्कृत कृतियां ३८५ है। (४७%)

आगमेतर साहित्य की संस्कृत टीका कृतियां २७० है। (३३%)

अनुपलब्ध कृतियों की संख्या ३५ है।

९.११) **बृहट्टिप्पनिका** में समग्र आगम और आगमेतर कृतियों के ग्रंथाग्र की गणनानुसार नीचे मुताबिक जानकारियां प्राप्त होती है- (देखें परिशिष्ट ९, आलेख ११)

आगम साहित्य कुल ७,९८,००६ श्लोक प्रमाण है। (२८%)

आगमेतर साहित्य कुल २०,१८,२६८ श्लोक प्रमाण है। (७२%)

समग्र जैन साहित्य कुल २८,१६,२७४ श्लोक प्रमाण है।

दसवें परिशिष्ट में प्रस्तुत संपादन में प्रयोजित संकेतों की सूचि है।

ग्यारहवें परिशिष्ट में प्रस्तुत संपादन में प्रयोजित संदर्भ ग्रंथों की सूचि है।

बारहवें परिशिष्ट में **बृहट्टिप्पनिका** की हस्तप्रत है जो जैनानंद हस्तप्रत भंडार, सुरत में उपलब्ध है। (हस्तप्रत क्रमांक ०९९८)

प्रस्तुत संपादन **वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प** द्वारा तैयार हो रहे **जैन कृति-कृतिकार कोश** का प्राथमिक रूप कहा जा सकता है।

जैन कृति-कृतिकार कोश में २२,००० से अधिक कृतियां दर्ज होने की संभावना है।

भारतीय कोशशास्त्र के इतिहास में मानदण्ड मानी गई इस लघुकृति का वर्गीकरण करते हुए पुनः संपादन करने का अहोभाव और आनंद का अनुभव शब्दातीत है। आशा है प्राचीन ग्रंथ विरासत के प्रति अभिरुची जागृत रखने वाले विद्वानों के लिये यह प्रयास सार्थक बनेगा।

कृतज्ञता

मेरे परम उपकारी गुरुदेव परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रामचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा** तथा पितृगुरुदेव परम पूज्य मुनिप्रवर श्री **संवेगरतिविजयजी** महाराज साहेब की पावन कृपा, बंधु मुनिप्रवर श्री **प्रशमरतिविजयजी** महाराज का स्नेहभाव तथा मुनिवर श्री **संयमरतिविजयजी** महाराज साहेब, परमपूज्य साध्वीजी श्री **हर्षरेखाश्रीजी** म. की शिष्या साध्वीजी श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म. सा., साध्वीजी श्री **मधुरहंसाश्रीजी** म. सा., साध्वीजी श्री **धन्यहंसाश्रीजी** म. सा. का निरपेक्ष सहायक भाव मेरी प्रत्येक प्रवृत्तियों की आधारशिला है। इन सबके उपकारों से मुक्त होना कदापि संभव नहीं है। संपादकीय का हिंदी अनुवाद श्री ओमजी ओसवाल ने किया है, अंग्रेजी भाषा में अनुवाद विदुषी डॉ. विनया क्षीरसागर ने किया है एवं संस्कृत अनुवाद श्री अमोघ प्रभुदेसाई ने किया है। आप सभी के सहायकभाव और श्रुतभक्ति की अनुमोदना करता हुँ।

श्रुतभवन, कात्रज, पुणे
फाल्गुन शुक्ल पंचमी, २०७४

- वैराग्यरतिविजय

સંપાદકીય

બૃહત્ ટિપ્પનિકા : પ્રાચીનતમ સૂચિપત્ર

સૂચિપત્રોની ઉપયોગિતા ભારત દેશમાં અજાણી નથી. પ્રાચીન સમયથી ભારત દેશમાં હસ્તપ્રતોનો સંગ્રહ થતો આવ્યો છે અને તેને સાચવવાની વૈજ્ઞાનિક પદ્ધતિઓ પણ પ્રાચીન કાળમાં અમલમાં હતી. તેના એક ભાગરૂપે સૂચિપત્રો પણ બનતાં. તે જમાનામાં સૂચિપત્રોને ટીપ, ટિપ્પણ, ટિપ્પનિકા, હુંડી, બીજક વગેરે નામે ઓળખવામાં આવતાં. હસ્તપ્રતોના ભંડારની પણ સૂચિ બનતી, કોઇ એક કર્તાના ગ્રંથોની પણ સૂચિ બનતી[૧]. એક ગ્રંથમાં ચર્ચાયેલા વિષયોની પણ સૂચિ બનતી. (આજે જેને અનુક્રમણિકા કહેવાય છે). કૃતિઓની પણ સૂચિ બનતી. અનેક હસ્તપ્રતોના ભંડારની કૃતિઓની પણ સૂચિ બનતી. ગ્રંથાલયવિજ્ઞાન અનુસાર આ બધા વર્ગીકરણો વૈજ્ઞાનિક છે. બૃહત્ ટિપ્પનિકા આવું જ એક વૈજ્ઞાનિક વર્ગીકરણ કરીને તૈયાર કરવામાં આવેલું સૂચિપત્ર છે.

ભારતમાં સૂચિપત્રોના ઇતિહાસ અંગે અનેક સંશોધન અને સર્વેક્ષણ થયા છે. તેનાં તારણ મુજબ બૃહત્ ટિપ્પનિકા ભારત દેશમાં પ્રાપ્ત થતાં સૂચિપત્રોમાં સહુથી પ્રાચીન છે. તેની રચના પંદરમી સદીની આસપાસમાં થઇ છે.[૨] તેના પ્રથમ સંપાદક પ્રાચ્યવિદ્યાસંશોધક **શ્રી જિનવિજયજી જણાવે છે કે-**

બૃહટ્ટિપ્પનિકા નામક પ્રાચીન જૈન ગ્રંથ સૂચિ કોણે અને ક્યારે બનાવી છે તેનો કાંઇ પતો લાગ્યો નથી. પરંતુ એમાં આવેલા ગ્રંથોના નામો ઉપરથી એટલું અનુમાન કરી શકાય છે કે વિક્રમના પંદરમા સૈકાના મધ્ય ભાગમાં કોઇ વિદ્વાને આ સૂચિ તૈયાર કરી છે. કારણ કે સાલવારના જે ગ્રંથનામો આમાં આપેલાં છે તેમાં સૌથી છેવટનું નામ, સંવત્ ૧૪૪૩ માં રચાએલા કુલમંડનસૂરિના 'પ્રવચનપાક્ષિકાદિ આલાપક સંગ્રહ'નું છે (નં.૧૬૪). તેના પછીની

૧ પૂર્ણિમા ગચ્છના આચાર્ય શ્રીભાવપ્રભસૂરિજી મહારાજે પૂજ્ય ઉપાધ્યાય શ્રી યશોવિજયજી મહારાજના ગ્રંથોની સૂચિ બનાવી હતી. તે પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીયશોદેવસૂરિજી મહારાજના(પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીધર્મસૂરિજી મહારાજના) સંગ્રહ સાહિત્યમંદિર, પાલિતાણામાં હતી. તેમાંથી ઘણા ગ્રંથોની માહિતી મળી.

૨ Manuscripts were collected by the rulers of different states, including the Mughal emperors, and religious institutions, including monasteries (*mathas*) of different sects and the Jain *bhandaras*. The Jain munis played a significant role in the area of collecting and preserving the manuscripts of various *shastras* – Jain, Brahmanical and Buddhist. The credit of compiling the earliest known catalogue in India goes to the Jain community. So far as our information goes, the earliest catalogue of manuscripts was compiled under the title, *Brihattipanika*, as early as Vikrama Samvat 1440 (1383 C.E.) by a Jain monk, whose name is unfortunately not known. The*Brihattipanik,* covers some manuscripts in the collections of several places such as Patan, Cambey and Bharauch. It furnishes data of authors' names, period of writing and *grantha-parimana* (the extent of each text) (History of Cataloguing NMM website).

સાલનો રચાએલો કોઇ ગ્રંથ એ સૂચિમાં દાખલ થએલો જણાતો નથી. તેની પહેલા, સં. ૧૪૩૬ માં રચાએલા ઉપદેશ ચિંતામણિ (નં. ૨૨૩), સં. ૧૪૨૯ માં રચાએલી પ્રશ્નોત્તર રત્નમાલાવૃત્તિ (નં. ૨૨૨), ૧૪૨૬ માં બનેલી ભક્તામરસ્તવટીકા (નં. ૧૩૨) ઇત્યાદિ ગ્રંથોની નોંધ થએલી એમાં અવશ્ય જોવાય છે. પરંતુ તે પછીનું એકે નામ જોવાતું નથી. લગભગ પંદરમા સૈકાના ત્રીજા જ પાદમાં થએલા સોમસુંદર, મુનિસુંદર, ગુણરત્ન, જ્ઞાનસાગર આદિ પ્રસિદ્ધ ગ્રંથકારોના ગ્રંથોની નોંધ એમાં બિલકુલ લેવાઇ નથી. તેથી હું એ સૂચિની તૈયાર થવાની તારીખ વિ. સં. ૧૪૪૦થી ૬૦ ની વચ્ચે મૂકું છું. એટલે આજથી લગભગ સવાપાચસો વર્ષ પહેલાં એ સૂચિ થએલી છે.

કર્તા

તેના કર્તા એક જૈન મુનિ છે. તે જૈન સમાજ માટે ગૌરવ લેવા જેવી ઘટના છે. કમનસીબે તે મુનિ ભગવંતનું નામ અજ્ઞાત છે. કૃતિ ક્રમાંક ૧૬૮માં સામાચારી અનેકવિધા ગચ્છાન્તરીયા આ વચનથી તેઓ તપાગચ્છના હોય તેવું જણાય છે. તેમના વિષે **શ્રી જિનવિજયજી નોંધે છે કે-**

સૂચિ કરનાર કોઇ સમર્થ વિદ્વાન્ અને ઉત્કૃષ્ટ સાહિત્યપ્રિય યતિજન જ હોવો જોઇએ. તેણે એ સૂચિ ઘણી જ બારીકીથી પૂરેપૂરી જાંચ સાથે કરેલી છે. ગ્રંથોને વિષયવાર તારવી કાઢ્યા છે અને દરેક ગ્રંથને તપાસી તપાસીને નોંધ્યો છે. સૂચિમાં ગ્રંથ, તેના કર્તા, તેની રચાયાની સાલ અને તેની એકંદર શ્લોકસંખ્યા એમ ચાર બાબતો લીધી છે અને દરેક ગ્રંથના સંબંધમાં શોધ કરી કરી છેવટે આ ચાર બાબતોમાંથી જેટલી મળી તેટલી નોંધી છે.

વિશેષતા

બૃહત્ ટિપ્પનિકાની વિશેષતા એ છે કે તે કોઇ એક હસ્તપ્રત ભંડારનું સૂચિપત્ર નથી. આ સૂચિપત્ર અનેક હસ્તપ્રતોના ભંડારનો આધાર લઇને બન્યું છે. તેમાં પાંચ હસ્તપ્રતભંડારનાં નામ મળે છે. પત્તન (પાટણ), દેવપત્તન (પ્રભાસ પાટણ)[૧], ભરુચ[૨], ખંભાત અને દેવગિરિ[૩]. **શ્રી જિનવિજયજીના** કહેવા પ્રમાણે -

સૂચિકર્તાએ મુખ્ય કરીને પાટણ (અનહિલપુર પત્તન), ખંભાયત (સ્તંભતીર્થ), ભરુચ (ભૃગુપુર) અને પ્રભાસ પાટણ (દેવપત્તન)ના મુખ્ય પુસ્તક ભંડારો જોઇને આ સૂચિ બનાવી છે. મારવાડના સુપ્રસિદ્ધ જૈસલમેરના જ્ઞાનભંડારનું આમાં નામ નથી તેથી તે જોવાયો હોય તેમ જણાતું નથી. એ ઉપરથી એમ પણ અનુમનાય છે કે સૂચિકર્તા કોઇ ગુજરાતનો અને ખાસ કરીને તપાગચ્છનો વિદ્વાન્ હોવો જોઇએ.

આ સૂચિપત્ર કૃતિપ્રધાન છે. તેમાં ગ્રંથોની માહિતી આપવાનો પ્રધાન હેતુ છે. તે સમયમાં હસ્તપ્રતો લખાવવાની પ્રવૃત્તિ વેગમાં ચાલતી. હસ્તપ્રતો લહિયાઓને અક્ષર મુજબ વેતન અપાતું. તે માટે દરેક ગ્રંથના અક્ષર ગણવામાં આવતા. જેને ગ્રંથાગ્ર કહેવાય છે. કયા ગ્રંથો લખાવવા જેવા છે અને તેની હસ્તપ્રત કયા ભંડારમાં છે તેની માહિતી સહેલાઇથી મળતી નહીં. સરવાળે હસ્તપ્રતો લખાવવાની પ્રવૃત્તિમાં તકલીફ પડતી. આ સમસ્યા નિવારવા કોઇ અજ્ઞાત મહામના મુનિવરે પહેલ કરી આ સૂચિપત્ર બનાવ્યું હશે. પંદરમી સદી પહેલા પ્રચલિત ગ્રંથોની માહિતી આ સૂચિમાંથી મળે છે. આ સૂચિમાં નહીં નોંધાયેલી આ સિવાય પણ કૃતિઓ છે.

જૈન સાહિત્યના ઇતિહાસમાં આ સૂચિનું સ્થાન કેટલું મહત્ત્વનું છે તે **શ્રી જિનવિજયજી**ના શબ્દોમાં જ જોઇએ.

આ સૂચિમાં જણાવેલા કેટલાક ગ્રંથોનો આજે ક્યાંએ પતો સંભળાતો નથી. તો તે માટે વિદ્વાનોએ શોધ કરવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. દાખલા તરીકે 'સમ્મતિતર્ક' જેવા સુપ્રસિદ્ધ અને જૈન સાહિત્યભૂષણ ગ્રંથની આજે માત્ર એક બૃહદ્વૃત્તિ જ મળી આવે છે. પરંતુ એ સૂચિમાં તેની ત્રણ વૃત્તિઓ નોંધેલી છે. (જુઓ ક્રમાંક ૩૫૮) તેમાં પ્રથમ વૃત્તિ તો બહુ જ મહત્ત્વની છે. કારણ કે તેના કર્તા મલ્લવાદી જણાવ્યા છે. મલ્લવાદી સૂરિએ સમ્મતિ ઉપર કાંઇક વિવરણ લખ્યું છે તેનો પુરાવો તો આપણને હરિભદ્રસૂરિના લેખમાંથી પણ મળી આવે છે. ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ મલ્લવાદીની એ ટીકાનું ઘણું જ મહત્ત્વ હોઈ શકે છે. કારણ કે તેના આધારે ન્યાયશાસ્ત્રના વિકાસ અને ઇતિહાસ સંબંધી અનેક પ્રશ્નોનો વિશિષ્ટ ઊહાપોહ કરી શકાય છે. અને તે ઉપરથી અનેક અજ્ઞાત બાબતોનું જ્ઞાપન અને સંદિગ્ધ વાતોનું નિરાકરણ કરી શકાય છે. તેથી સમ્મતિની એ ટીકાની શોધખોળ કરવા માટે દરેક વિદ્વાનને આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરવામાં આવે છે.

સમ્મતિની એક ત્રીજી ટીકાની પણ એમાં નોંધ કરેલી છે. તેનો કર્તા કોણ છે તે એમાં જણાવ્યું નથી. ફક્ત 'અન્યકર્તૃક' છે, એમ જણાવી છે. કદાચ એ ટીકા કોઇ દિગંબર વિદ્વાન્ કૃત હોય, જેના સંબંધમાં અમારા વિદ્વાન્ મિત્ર શ્રીયુત નાથૂરામજી પ્રેમીએ જૈનહિતૈષીના સન્ ૧૯૨૧ ના જાન્યુઆરી-ફેબ્રુઆરી માસના સંયુક્ત અંકમાં એક મહત્ત્વની ટિપ્પણી પ્રકાશિત કરી છે. તો શોધક જનોએ એ ટીકાની પણ ગવેષણા કરવી આવશ્યક છે. આવી જ રીતે બીજા પણ અનેક ગ્રંથોનાં નામો જોવામાં આવે છે કે જે એ સૂચિમાં નોંધાયલા છે પણ અત્યારે ઉપલબ્ધ થતા નથી.

માહિતી

આ સૂચિપત્રમાં આઠ પ્રકારની માહિતી આપવામાં આવી છે. ગ્રંથનું નામ, ગ્રંથના કર્તાનું નામ, ગ્રંથનું રચનાવર્ષ, ગ્રંથનો વિષય, મૂળ ગ્રંથ અને ટીકા ગ્રંથ વચ્ચેનો સંબંધ, તે ગ્રંથ મળે છે કે નહીં તેની માહિતી, તે ગ્રંથ કોઇ ચોક્કસ ભંડારમાં જ મળતો

---

૧ પ્રભાસ પાટણમાં આજે ભંડાર મળતો નથી.

૨ ભરુચમાં આજે ભંડાર મળતો નથી.

૩ દેવગિરિ એટલે આજે મહારાષ્ટ્રમાં ઔરંગાબાદ પાસે આવેલું દૌલતાબાદ અહીં પેથડશાહે જિનાલય બંધાવેલું એથી જૈનોની વસતિ હશે. તેમ જ જગદ્‌ગુરુ આચાર્ય શ્રીહીરસૂરીશ્વરજી મહારાજ તથા ઉપાધ્યાય શ્રી ધર્મસાગરજી મહારાજ અહીં ન્યાય વિગેરેનો અભ્યાસ કરવા આવ્યા હતા એટલે વિદ્યાનુ કેંદ્ર પણ હશે એથી અહીં પણ ભંડાર હશે. સેનપ્રશ્નમાં દેવગિરિ સંઘનો ઉલ્લેખ છે(સેનપ્રશ્ન ઉલ્લાસ ૪, પ્રશ્ન ૧૩). આ સંઘ ગુજરાત અથવા રાજસ્થાનમાં હશે. આ ઉલ્લેખ તેનો પણ હોઈ શકે છે. તેનો ઉલ્લેખ કૃતિ ક્રમાંક- ૨૯૧માં છે.

હોય તો તેની માહિતી, ગ્રંથમાં કેટલા શ્લોક છે (બત્રીસ અક્ષર બરાબર એક શ્લોક) એટલે ગ્રંથાગ્ર છે તેની માહિતી. ગ્રંથાલયવિજ્ઞાન અનુસાર સૂચિપત્રમાં આપવામાં આવતી તમામ આવશ્યક માહિતી આ સૂચિપત્રમાં છે. બૃહત્ ટિપ્પનિકાકારે સૂચિપત્રનું વર્ગીકરણ પણ વૈજ્ઞાનિક રીતે કર્યું છે. તેમણે તમામ ગ્રંથોને બે વિભાગમાં વહેંચ્યા છે. આગમ અને આગમેતર. આગમ સાહિત્યને અગિયાર અંગ, બાર ઉપાંગ, આવશ્યક આદિ એ ત્રણ પ્રકારમાં વહેંચ્યું છે. છ છેદ, ચાર મૂળ, દસ પ્રકીર્ણક અને બે ચૂલિકા એ છ ત્રીજા પ્રકારમાં સમાય છે. આવશ્યકસૂત્ર પર વધારે ટીકા મળે છે તેથી તેની સૂચિ અલગ આપી છે. આ સિવાય આગમ તરીકે ગણાતા ગ્રંથોની સૂચિ આપી છે. આગમેતર સાહિત્યને નવ પ્રકારમાં વહેંચ્યું છે. ચરણકરણાનુયોગ, કથાનુયોગ, ન્યાય-તર્ક, વ્યાકરણ-કોષ, છંદ-સાહિત્ય, કાવ્ય, નાટક, જ્યોતિષ આદિ પ્રકીર્ણક. ચરણકરણાનુયોગમાં તત્ત્વજ્ઞાન, પ્રકરણ, ઉપદેશ, યોગ, આચાર, વિધિ, સ્તોત્ર, કર્મગ્રંથ જેવા વિષયોનો સમાવેશ કર્યો છે. કથાનુયોગમાં તીર્થંકરોના ચરિત્ર, શલાકાપુરુષચરિત્ર, મહાપુરુષચરિત્ર આ ક્રમથી સૂચિ આપી છે. વ્યાકરણ અને કોષ એક જ વિભાગમાં છે. છંદ અને સાહિત્ય એક જ વિભાગમાં છે. જ્યોતિષ વિભાગમાં શકુન, યોગ, આમ્નાય, મંત્ર, કલ્પ, સામુદ્રિક આ છ વિષયોનો સમાવેશ કર્યો છે. વર્ગીકરણમાં જરુર જણાઇ ત્યાં જૈન ગ્રંથોને સ્વસમયના નામે નોંધ્યા છે અને જૈનેતર ગ્રંથોને પરસમયના નામે નોંધ્યા છે.

ટિપ્પણી

સૂચિના કર્તાએ તેમાં અમુક ગ્રંથો વિષયે વિશેષ માહિતી આપી છે, ક્યાંક પોતાની ટિપ્પણીઓ પણ ઉમેરી છે. તેને નીચે પ્રમાણે વહેંચી શકાય—

૧) કૃતિની ભંડારમાં ઉપલબ્ધિ વિષે ટિપ્પણીઓ છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ-કૃતિ ક્રમાંક- ૪૦.૩, ૭૨, ૭૩, ૭૪[૧] વગેરે.

૨) ક્યાંક ગ્રંથાગ્રમાં મતભેદ વિષે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક-૨૯૧, ૪૯૧ વગેરે.[૨]

૩) ક્યાંક કર્તા વિષે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ-કૃતિ ક્રમાંક- ૧૧૩, ૧૧૬ વગેરે.[૩]

૪) ક્યાંક કૃતિ કોના રાજ્યકાળમાં રચાઈ છે તે વિષે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૨૨૪, ૨૩૨, ૨૩૯, ૨૪૬, ૨૬૫ વગેરે.[૪]

૫) કૃતિના વિષય પરત્વે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૯૪(૨), ૧૪૪, ૧૪૫, ૧૫૪, ૧૬૦, ૧૬૧, ૧૬૨,૧૮૩, ૧૮૬, ૨૦૪, ૨૨૦, ૩૩૨, ૩૩૩, ૩૩૬, ૩૩૭ વગેરે.[૫]

૬) સમાન નામ ધરાવતી કૃતિઓના આદિવાક્ય જણાવતી ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૪૦(૫), ૧૧૯(૩), ૧૮૯, ૨૧૨, ૨૧૩, ૨૧૪ વગેરે.[૬]

૭) કૃતિની ભાષા તેમ જ તેના વિભાગ (અધ્યાય) વગેરે વિષે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક-૧૨૫, ૧૫૮, ૨૧૯, ૨૬૮, ૨૭૨, ૨૯૨, ૨૯૪, ૨૯૫, ૩૦૦, ૩૦૩, ૩૧૧, ૩૩૧, ૩૩૯, ૩૪૮, ૩૫૮.૨, ૩૬૧, ૩૬૩, ૩૭૨ વગેરે.[૭]

૮) અન્ય વિદ્વાનો દ્વારા સંશોધિત કૃતિ વિષે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૨૪૮ વગેરે.[૮]

૯) કૃતિની પૂર્ણતા વિષેની ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ-કૃતિ ક્રમાંક-૨૯૯, ૫૦૧ વગેરે.[૯]

૧૦) કૃતિ અપ્રામાણિકતા વિષે ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ-કૃતિ ક્રમાંક- ૨૯૭.[૧૦]

૧૧) કૃતિની આધુનિકતા વિષે ટીપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૧૫૫, ૧૭૨ વગેરે.[૧૧]

૧૨) કૃતિની વિશેષતા જણાવતી ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૭૭.૨, ૮૯ વગેરે.[૧૨]

૧૩) કૃતિનું નામ અજૈન જણાતું હોય અથવા તે નામની અન્ય અજૈન કૃતિ હોય પણ તેના કર્તા જૈન હોય તે વિષયની પણ ટિપ્પણી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક- ૩૩૮, ૩૭૧ વગેરે.[૧૩]

૧૪) સૂચિના કર્તાએ જ્યાં ગ્રંથાગ્ર નથી મળ્યાં ત્યાં હસ્તપ્રતના પત્રોની નોંધ કરી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક-૩૮૬, ૪૪૯, ૬૪૬ વગેરે.[૧૪]

---

૧ ૪૦.૩-ચૂર્ણિટિપ્પનકં भृगु. गु. ३ विना न, ७२ समयसारटीका अमृतचन्द्रसूरीया भृगु[पुरम्] देव[पत्तनं] वि[ना] न। ७३ पञ्चास्तिकाय-सङ्ग्रहाभिधसमयस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देव[पत्तनं] विना न। ७४ प्रवचनसारस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देवपत्तनं विना न।

૨ ૨૯૧ त्रिषष्टीयं महावीरचरित्रं- ३४९२ प्रत्यन्तरे- ५१६१ देवगिरि। ४९१ काव्यानुशासननामालङ्कारचूडामणिवृत्तिः श्रीहेमसूरीया ८ अध्याया २८००- ४२०० प्रत्यन्तरे।

૩ ૧૮૫૧૧૩ नव्यकर्मविपाकवृत्ति-नव्यकर्मस्तववृत्ति-नव्यबन्धस्वामित्वावचूर्णि-नव्यषडशीतिकवृत्ति नव्यशतकवृत्तयः ५ सूत्रकारतपाश्री देवेन्द्रसूरियाः, ११६ सत्तरीटिप्पनकम्, खरतररामदेवगणिकृतम्- गाथा ५४७, १७० उपदेशमालावृत्तिः प्राकृता कृष्णर्षिशिष्यजयसिंहसूरिकृता ९१३ वर्षे, १८५ सम्यक्त्ववृत्तिः सूत्रकारचन्द्रप्रभसूरि-सन्तानीय-श्रीतिलकीया १२७७ वार्षिकी ८०००।

૪ २२४ श्रीआदिनाथचरित्रं प्राकृतं जयसिंहदेवराज्ये ११६० वर्षे वर्धमानसूरिरचितम् ११०००, १२०००, २३२ सुमतिचरितं प्रा. मुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतम् ९६२१, २३९ चन्द्रप्रभचरितं प्रा. श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रम् ८०३२, २४६ श्रेयांसचरितं प्रा. श्रीजयसिंहदेवराज्ये हरिभद्राचार्यकृतम्, गाथा ६५८४, स्तम्भतीर्थं विना न, २६५ मल्लिचरितं बहुप्राकृतं हरिभद्रीयं कुमारपालराज्ये कृतं गाथाकाव्यमयं ग्रन्थाग्रम् ९०००।

૫ ૯૪ कर्मप्रकृतिसूत्रम्- गाथा- ४७५।(२)वेदनादि ८ करणवाच्या चूर्णिः- ७०००। બાકીના ઉદાહરણ સૂચિમાં જોઈ લેવા.

૬ ४०.(५) जीतकल्पविवरणं सङ्क्षिप्तगमनिकारूपं 'सिरिवीरजिणं नमिउं' इति ५४३।, ११९(३) लघुसङ्ग्रहणीवृत्तिः 'नमिउं अरिहंताई' त्ति, मलधारिदेवभद्रीया ३५००।, १८९ 'माणुस्सखित्ते' ति विवेकमञ्जरीवृत्तिः १२२३ वर्षे अकलङ्कदेवीया।, २१२ 'इसिमंडल' इत्याद्यऋषिमण्डलस्तवः गाथा २७१।, २१३ 'इसिमंडल' ऋषिमण्डलवृत्तिः ४६१४।, २१४ 'भत्तिभर' इति ऋषिमण्डलसूत्रम् २०८।

૭ १२५ क्षेत्रसमाससूत्रं संस्कृतमाह्निकचतुष्टयरूपम् उमास्वातिवाचककृतम्। બાકીના ઉદાહરણ સૂચિમાં જોઈ લેવા.

૮ २४८ वासुपूज्यचरितं प्रा. चान्द्रप्रभं हेमसूर्यादिशोधितम् ८०००, स्तम्भतीर्थं विना न।

૯ २९९ हरिवंशचरितं सं. नेम्यादिबहुवृत्तवाच्यमाद्यन्तरहितं श्लोकाः ९०००।, ५०१ श्रीभोजराजकृताऽलङ्कारस्य वृत्तिः पदप्रकाशनाम्नी आजडकृता काव्यबन्धादिवाच्या।

૧૦ २९७ पुण्डरीकचरित्रं सं. १३७२ वर्षे कामलप्रभं क्वचिद् अनागमिकार्थे- ३३००। (=આમાં કોઈ અનાગમિક અર્થો છે.)

૧૧ १५५ शत्रुञ्जयमाहात्म्यं, कल्पितप्रायम्, आधुनिकधनेश्वरीयम्।, १७२ हेयोपादेयेत्यादिकैव केनापि कथाभिर्योजिता सं. १५००,९५०० वर्षे। આનો ઉલ્લેખ શ્રી જિનવિજયજીએ પોતાનાં સંપાદકીયમાં કર્યો છે.

૧૨ ८९ विचारसारप्रकरणं प्रद्युम्नसूरिकृतं सोपयोगि, बहुसङ्ग्रहं गाथा ८९७।, ७७ (२) आद्यपञ्चाशकचूर्णिः ११७२ वर्षे यशोदेवीया सभावाच्या, ३३००।

૧૩ ३३८ कौमुदीकथा जैनकृता १६००।, ३७१ प्रमाणसङ्ग्रहप्रकरणं ९ प्रस्तावं जैनं ७१२।

૧૪ ३८६ प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरणं च यशोदेवसाधुकृतम् आद्यं तु त्रिवर्गपरिहारेण अपौ.पत्राणि११

૧૫) દાર્શનિક કૃતિઓઓ દર્શનના વિભાગ પ્રમાણે વહેંચી છે. ઉદાહરણ તરીકેઃ- કૃતિ ક્રમાંક-૩૫૮ થી ૪૨૨.

પૂર્વપ્રકાશન

આ પહેલા બૃહત્ ટિપ્પનિકા બે વાર પ્રકાશિત થઇ છે. સર્વ પ્રથમ પ્રાચ્યવિદ્યાસંશોધક **શ્રી જિનવિજયજીએ** વિક્રમ સંવત ૧૯૭૭માં જૈન સાહિત્ય સંશોધક માસિકના (વર્ષ ૧૯૨૧, ભાગ ૧, અંક ૨) પરિશિષ્ટમાં પ્રકાશિત કરી હતી. તેમણે આ સૂચિ બે હસ્તલિખિત પ્રતો ઉપરથી મુદ્રિત કરી હતી. જેમાંની એક પ્રત તો લગભગ ૩૦૦-૪૦૦ વર્ષ જેટલી જુની હતી અને એક નવી લખાએલી હતી. બંને પ્રતો વડોદરાના **પ્ર. શ્રી કાંતિવિજયજીના** શાસ્ત્રસંગ્રહમાંની હતી. ખંભાતના શાંતિનાથ ભગવાન હસ્તપ્રતભંડારમાં તેની પ્રત મળે છે.[૧] તેની પ્રતિલિપિ પૂજ્ય આચાર્ય **શ્રીઆનંદસાગરસૂરિજી** મહારાજે કરાવી હતી. તેની પ્રત જૈનાનંદ હસ્તપ્રત ભંડાર, સુરતમાં મળે છે. (હસ્તપ્રત ક્રમાંક-૦૯૯૮)

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી **વિજયપ્રદ્યુમ્નસૂરિજી** મહારાજની પ્રેરણાથી શ્રુતજ્ઞાન પ્રસારક સભા, અમદાવાદ દ્વારા વિક્રમ સંવત ૨૦૬૦માં (ઈસવીસન ૨૦૦૪) તેનું પુસ્તકાકારે પુનર્મુદ્રણ થયું. પ્રો. **શ્રી હરિ દામોદર વેલણકરે** જિનરત્નકોશમાં આ સંપાદનને માન્ય ગણ્યું હતું. તેમાં જે કૃતિનંબર હતા તે જ કૃતિનંબર તેમણે જિનરત્નકોશમાં આપ્યા છે. આ સંપાદનમાં કૃતિનંબર મૂળ અને ટીકા એવા વિભાગથી નથી આપવામાં આવ્યા. વળી ક્યાંક શરતચૂકથી કૃતિ ટીકાકૃતિ રૂપે અથવા ટીકાકૃતિ મૂળકૃતિ રૂપે અપાઈ છે. (જુઓ ક્રમાંક-૭૧ (૩). ત્યાર બાદ જૈન શ્વેતાંબર હેરાલ્ડમાં (વર્ષ ઈ.સ. ૧૯૦૬ અંક ૪-૮) બૃહત્ ટિપ્પનિકાના આધારે **જૈન સિદ્ધાંતોનું લીસ્ટ** આ શીર્ષક હેઠળ **શ્રી ૨વજી દેવરાજે** કોષ્ટકાકારે ગ્રંથસૂચિ પ્રગટ કરી. આ વર્ગીકરણ મૂલાનુરૂપ, વધુ ગ્રાહ્ય તેમ જ ઉપયોગી બને એ આશયથી આ સંપાદન તૈયાર કરવામાં આવ્યું છે. ક્યાંક મૂળ બૃહત્ ટિપ્પનિકાનો પાઠ ભ્રષ્ટ છે. તેને જૈનાનંદની પ્રતિલિપિ કરેલી હસ્તપ્રતના આધારે સુધારવા યત્ન કર્યો પણ તેમાં પણ તે પાઠ ભ્રષ્ટ જણાય છે.

પરિશિષ્ટ

પ્રસ્તુત સંપાદનમાં બાર પરિશિષ્ટો છે.

પ્રથમ પરિશિષ્ટમાં કૃતિની અનુક્રમાંક સૂચિ છે. તેમાં કૃતિના વિભાગપુરઃસર ક્રમાંક દર્શાવ્યા છે. વિદ્વાનોના અનુસંધાનાર્થે જૂના ક્રમાંક પણ સમાવ્યા છે. આ પરિશિષ્ટમાં બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં દર્શાવેલી માહિતી છે જ. જે માહિતી બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં નથી મળી અન્યત્ર પ્રાપ્ત થઈ છે તે બધી અર્ધગોળાકાર કોષ્ટકમાં લખી છે. આ પરિશિષ્ટમાં અઢાર પ્રકારની માહિતી આપવામાં આવી છે. તેનું વિવરણ નીચે મુજબ છે.

૧.૧) **અનુક્રમાંક**- કૃતિઓનો સળંગ ક્રમ

૧.૨) **બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં નિર્દિષ્ટ કૃતિનો ક્રમ**

૧.૩) **બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં નિર્દિષ્ટ પેટાક્રમ** (એક જ ક્રમાંકમાં એકથી વધુ કૃતિ આપવી હોય તો તેને પેટાકૃતિ ગણી છે.)

૧.૪) **બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં નિર્દિષ્ટ ટીકા** (ચાઈલ્ડ કૃતિ) **અંક.** (એક જ ક્રમાંકમાં આવતી ટીકારૂપ કૃતિઓ)

૧.૫) **બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં નિર્દિષ્ટ કૃતિનામ**

૧.૬) **વર્તમાનમાં કૃતિનું પ્રચલિત નામ** (જેથી કૃતિ ઓળખવામાં સરળતા રહે)

૧.૭) **કૃતિનું સ્વરૂપ**- મૂળ અથવા ટીકા. અહીં કેવળ બે જ સ્વરૂપ નિર્ધારિત કર્યા છે. કૃતિ મૂળ હોય અથવા કોઈ ગ્રંથની વ્યાખ્યારૂપ હોય. નિર્યુક્તિ, ભાષ્ય, ચૂર્ણિ, અવચૂરિ, બાલાવબોધ જેવા વ્યાખ્યાના વિવિધ પ્રકારો અહીં ગૌણ કર્યા છે.

૧.૮) **કર્તા નામ**- મૂળ અથવા ટીકાત્મક કૃતિના કર્તાનું નામ. એક કૃતિના બે કર્તા હોય તો બંને નામ + સરવાળાના ચિહ્ન સાથે દર્શાવ્યા છે. બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં કર્તાનો ઉલ્લેખ ન હોય તો તેવા નામ અર્ધગોળાકાર કૌંસમાં મૂક્યા છે.

૧.૯) **ભાષા**- કૃતિની ભાષા જો મિશ્ર હોય તો + સરવાળાના ચિહ્ન પૂર્વક દર્શાવી છે.

૧.૧૦) **ગાથા**- ગ્રંથની કે ટીકાની ગાથા સંખ્યા ઉપલબ્ધ હોય તો દર્શાવી છે.

૧.૧૧) **ગ્રંથાગ્ર**- અહીં દર્શાવવામાં આવેલી ગ્રંથાગ્રની ગણના સ્થૂલ છે. બની શકે ત્યાં સુધી હસ્તપ્રતોમાં ગ્રંથાગ્ર જોઈને લખ્યા છે. જ્યાં ન મળે ત્યાં એક આર્યાના સંભવિત ૩૮ અક્ષર ગણી ગ્રંથાગ્રની ગણતરી કરી છે.

૧.૧૨) કૃતિનું રચનાવર્ષ વિક્રમ સંવત્ અનુસારે છે.

૧.૧૩) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં ઘણા ગ્રંથોને અનુપલબ્ધ જણાવ્યા છે. તેને અહીં સમાવ્યા છે. અનુપલબ્ધ એટલે જે ગ્રંથનુ કેવળ નામ મળે છે, ગ્રંથ મળતો નથી.

૧.૧૪) અહીં **બૃહત્ ટિપ્પનિકાનાં અનુસારે વિષય વિભાજન** છે.

૧.૧૫) **વિષયવિભાજન** અહીં વર્ધમાન જિનરત્નકોશ વિભાગમાં તૈયાર થતા સૂચિપત્રોને અનુસારે વિષયવિભાજન કર્યું છે. તેમાં જૈન સાહિત્ય કા બૃહદ્ ઇતિહાસને નજર સામે રાખ્યો છે.

૧.૧૬) **સ્વસમય-પરસમય**- બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમેતર કૃતિઓનું વિભાજન **સ્વસમય-પરસમય** એ પ્રમાણે કરવામાં આવ્યું છે. તે અહીં છે. સુવિધા ખાતર દાર્શનિક કૃતિઓને દર્શન અનુસાર વહેંચી છે.

૧.૧૭) **ટિપ્પણી**- બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં કૃતિ અંગે **માહિતી અથવા ટિપ્પણી**ઓ છે તે અહીં દર્શાવી છે.

૧.૧૮) **સંપાદકીય ટિપ્પણી**-અન્ય ગ્રંથોનું અનુસંધાન કરતા ઉપલબ્ધ થયેલી માહિતી **સંપાદકીય ટિપ્પણી** તરીક અહીં સમાવી છે.

બીજા પરિશિષ્ટમાં કૃતિઓની વર્ણાનુક્રમે સૂચિ છે.

ત્રીજા પરિશિષ્ટમાં કર્તાની વર્ણાનુક્રમે સૂચિ છે.

प्रत्यन्तरे प. १४।, ४४९ आख्यातावचूरिर्लौकिकव्याकरणसम्बद्धा प. ३६।, ६४६ सुधाकलशाख्यसुभाषितकोशः पं. रामचन्द्रकृतः, पत्र....।

१ રાષ્ટ્રીય પાંડુલિપિ સંસ્થાનના રિપોર્ટ પ્રમાણે તેની પ્રત ખંભાતમાં છે પરંતુ પૂ. પુણ્યવિજયજી મ. દ્વારા તૈયાર કરવામાં આવેલ સૂચિપત્રમાં નથી. The manuscript of this catalogue is still preserved in the Shaninatha Bhandara. (History of Cataloguing NMM website).

ચોથા પરિશિષ્ટમાં કૃતિ સ્વરૂપાનુસાર વર્ણાનુક્રમે સૂચિ છે.

પાંચમા પરિશિષ્ટમાં ભાષાનુસાર વર્ગીકૃત સૂચિ છે.

છટ્ઠા પરિશિષ્ટમાં વિષયાનુસાર વર્ગીકૃત સૂચિ છે.

સાતમા પરિશિષ્ટમાં સૂત્રાદિશ્લોકમાન નામની કૃતિ છે. તેમાં કવિબહાદુર **પં. શ્રી દીપવિજયજી** મહારાજને કોઈએ પૂછેલા પ્રશ્નના ઉત્તર સ્વરૂપે આગમોનું ગ્રંથાગ્ર પ્રમાણ દર્શાવ્યું કૃતિ છે. જૈનાનંદ ભંડાર સુરતમાં તેની હસ્તપ્રત મળી છે. (હસ્તપ્રત ક્રમાંક-૩૦૭૯) કૃતિઓની ગ્રંથાગ્ર સંખ્યા દર્શાવતી હોવાથી અહીં સમાવી છે.

આઠમા પરિશિષ્ટમાં સિદ્ધાંતશ્લોક નામની કૃતિ છે. તેના કર્તા અજ્ઞાત છે. તેમાં જૈનેતર ગ્રંથના ગ્રંથાગ્ર પણ દર્શાવ્યા છે. જૈનાનંદ ભંડાર, સુરતમાં તેની હસ્તપ્રત મળી છે. (હસ્તપ્રત ક્રમાંક-૧૮૬૪), આ કૃતિમાં બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં ન હોય તેવી કૃતિઓ પણ જોવા મળે છે. આ દૃષ્ટિએ આ કૃતિ ઉપયોગી છે. અહીં ગ્રંથાગ્ર સંખ્યા લખવામાં આવેલી ક્ષતિઓ સર્વસંખ્યાને નજરમાં રાખીને સુધારી છે. સુધારેલી સંખ્યા અર્ધગોળાકાર () કોષ્ટકમાં છે. ધનુષાકાર કોષ્ટકમાં { } વધારાનો પાઠ છે.

નવમા પરિશિષ્ટમાં આ સંપાદનમાં અલગ અલગ પ્રકારની માહિતી અને આંકડાઓનું આકલન કરી આલેખ (ચાર્ટસ્) પણ બનાવવામાં આવ્યા છે. તેમાં સંખ્યા પ્રમાણે તથા ટકાવારી પ્રમાણે માહિતી પ્રસ્તુત થઇ છે. બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં ઉપલબ્ધ થતી માહિતીનું આકલન કરીને નીચે પ્રમાણે વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે.

૯.૧) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમ સાહિત્યની ૨૦૭ કૃતિઓ છે (૨૦%) અને આગમેતર સાહિત્યની ૮૨૬ કૃતિઓ છે. (૮૦%) કુલ કૃતિઓ ૧૦૩૩ છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૧)

૯.૨) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં કૃતિઓનું ભાષાનુસાર વર્ગીકરણ કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૨)

પ્રાકૃત ભાષાની ૧૬૦ કૃતિઓ છે. (૧૯%)

સંસ્કૃત ભાષાની ૬૪૯ કૃતિઓ છે. (૭૯%)

અન્ય ભાષાની ૧૬ કૃતિઓ છે. (૨%)

૯.૩) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમ સાહિત્યના ભાષાનુસાર અને કૃતિસ્વરૂપ અનુસાર ગ્રંથાગ્રની ગણતરી કરતા નીચે પ્રમાણે વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૩,૪)

આગમ સાહિત્યમાં અર્ધમાગધી પ્રાકૃત ભાષાના ૧,૬૪,૨૪૨ શ્લોક છે. (૨૧%)

આગમ સાહિત્યમાં સૂત્રો આશરે ૯૭,૭૪૫ શ્લોક પ્રમાણ (૧૨%) છે.

આગમ સાહિત્યમાં નિર્યુક્તિઓ ૩૯૬૫ શ્લોક પ્રમાણ (૧%થી ઓછી) છે.

આગમ સાહિત્યમાં ભાષ્ય ૫૯,૯૬૦ શ્લોક પ્રમાણ (૮%) છે.

આગમ સાહિત્યમાં ચૂર્ણિ ૧,૩૪,૪૯૮ શ્લોક પ્રમાણ (૧૭%) છે.

આગમ સાહિત્યમાં ટીકાઓ ૫,૦૧,૮૩૮ શ્લોક પ્રમાણ (૬૩%) છે.

કુલ આગમ સાહિત્ય ૭,૯૮,૦૦૬ શ્લોક પ્રમાણ છે.

બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમેતર કૃતિઓની સંખ્યા કુલ ૮૨૬ છે. આમાં સ્વસમય અને પરસમય બંને પ્રકારની કૃતિઓ સમાય છે.

૯.૪) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમેતર કૃતિઓનું ભાષાનુસાર વર્ગીકરણ કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૫)

આગમેતર પ્રાકૃત ભાષાની ૧૬૦ કૃતિઓ છે. (૧૯%)

આગમેતર સંસ્કૃત ભાષાની ૬૪૯ કૃતિઓ છે. (૭૯%)

આગમેતર અન્ય ભાષાની ૧૬ કૃતિઓ છે. (૨%)

૯.૫) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમેતર કૃતિઓનું કૃતિસ્વરૂપ અનુસાર વર્ગીકરણ કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૬)

આગમેતર મૂળ કૃતિઓ ૫૪૫ છે. (૬૬%)

આગમેતર ટીકા કૃતિઓ ૨૮૧ છે. (૩૪%)

૯.૬) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમેતર કૃતિઓના કૃતિસ્વરૂપ અનુસાર ગ્રંથાગ્રની ગણતરી કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૭)

આગમેતર સાહિત્યમાં મૂળ કૃતિઓ ૯,૨૩,૭૯૧ શ્લોક પ્રમાણ છે. (૨૩%)

આગમેતર સાહિત્યમાં ટીકા કૃતિઓ ૧૦,૯૪,૪૭૭ શ્લોક પ્રમાણ છે. (૨૭%)

આગમેતર સાહિત્ય કુલ ૨૦,૨૧,૫૮૮ શ્લોક પ્રમાણ છે.

અનુપલબ્ધ આગમેતર કૃતિઓ ૨૫૮ છે

૯.૭) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં આગમેતર કૃતિઓનું કૃતિસ્વરૂપ અને ભાષા અનુસાર વર્ગીકરણ કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૮)

આગમેતર પ્રાકૃત ભાષાની મૂળ કૃતિઓ -૧૫૫ છે. (૧૯%)

આગમેતર સંસ્કૃત ભાષાની મૂળ કૃતિઓ ૩૮૫ છે. (૪૭%)

આગમેતર અન્ય ભાષાની મૂળ કૃતિઓ ૫ છે.

આગમેતર સંસ્કૃત ભાષાની ટીકા કૃતિઓ ૨૭૦ છે. (૩૩%)

આગમેતર પ્રાકૃત ભાષાની ટીકા કૃતિઓ ૧૧ છે. (૧%)

૯.૮) આગમેતર સાહિત્યનું ધર્માનુસાર વર્ગીકરણ કરતા નીચે મુજબ વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૯)

આગમેતર સાહિત્યમાં દિગંબર કૃતિઓની સંખ્યા ૨૦ છે. (૨%)

આગમેતર સાહિત્યમાં જૈનેતર કૃતિઓની સંખ્યા ૧૦૫ છે. (૧૩%)

આગમેતર સાહિત્યમાં જૈન કૃતિઓની સંખ્યા ૬૯૧ છે. (૮૫%)

૯.૯) આગમેતર સાહિત્યનું વિષયાનુસાર વર્ગીકરણ કરતા નીચે મુજબ વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૧૦)

વિષય	**કૃતિસંખ્યા**	**ટકાવારી**
ચરિત્ર	૧૧૯	૧૪%
ઉપદેશ	૯૩	૧૧%
આગમિક પ્રકરણ	૬૪	૭%
સ્તોત્ર	૫૮	૭%
જૈન ન્યાય	૫૮	૭%
વ્યાકરણ	૫૨	૬%
કાવ્ય	૪૯	૬%
દર્શન	૪૪	૫%
કર્મગ્રંથ	૪૧	૫%
અધ્યાત્મ	૪૦	૫%
જ્યોતિષ	૩૩	૪%
કોશ	૩૦	૩%
સાહિત્ય	૨૫	૩%
નાટક	૨૨	૩%
આચાર	૨૧	૨%
લઘુકથા	૨૦	૨%
છંદ	૧૩	૨%
તત્ત્વજ્ઞાન	૧૨	૧%
કથાસંગ્રહ	૧૨	૧%
સુભાષિત	૧૧	૧%
નિમિત્ત	૮	૧%
ચર્ચા	૮	૧%
વિધિ	૭	૧%
વાસ્તુ	૬	૧%
શકુન	૬	૧%
મંત્ર	૬	૧%
અન્ય	૪	૧%

૯.૧૦) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં સમગ્રપણે આગમ અને આગમેતર કૃતિઓની ગણતરી કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૧)

આગમ સાહિત્યની મૂળ કૃતિઓ ૭૨ છે. (૨૬%)

આગમેતર સાહિત્યની મૂળ કૃતિઓ ૫૪૫ છે. (૨૫%)

આગમ સાહિત્યની ટીકા કૃતિઓ ૧૩૫ છે. (૧૯%)

આગમેતર સાહિત્યની ટીકા કૃતિઓ ૨૮૧ છે. (૩૦%)

આગમેતર સાહિત્યની પ્રાકૃત મૂળ કૃતિઓ ૧૫૫ છે. (૯%)

આગમેતર સાહિત્યની પ્રાકૃત ટીકા કૃતિઓ ૧૧ છે. (૧%)

આગમેતર સાહિત્યની મૂળ સંસ્કૃત કૃતિઓ ૩૮૫ છે. (૪૭%)

આગમેતર સાહિત્યની સંસ્કૃત ટીકા કૃતિઓ ૨૭૦ છે. (૩૩%)

અનુપલબ્ધ કૃતિઓની સંખ્યા ૩૫ છે.

૯.૧૧) બૃહત્ ટિપ્પનિકામાં સમગ્રપણે આગમ અને આગમેતર કૃતિઓના ગ્રંથાગ્રની ગણતરી કરતા નીચે મુજબની વિગતો પ્રાપ્ત થાય છે. (જુઓ પરિ.- ૯ આલેખ- ૧૧)

આગમ સાહિત્ય કુલ ૭,૯૮,૦૦૬ શ્લોક પ્રમાણ છે. (૨૮%)

આગમેતર સાહિત્ય કુલ ૨૦,૧૮,૨૬૮ શ્લોક પ્રમાણ છે. (૭૨%)

સમગ્ર જૈન સાહિત્ય કુલ ૨૮,૧૬,૨૭૪ શ્લોક પ્રમાણ છે.

દસમા પરિશિષ્ટમાં આ સંપાદનમાં પ્રયોજાયેલાં સંકેતોની સૂચિ છે.

અગિયારમા પરિશિષ્ટમાં આ સંપાદનમાં પ્રયોજાયેલાં સંદર્ભગ્રંથોની સૂચિ છે.

બારમા પરિશિષ્ટમાં બૃહત્ ટિપ્પનિકાની હસ્તપ્રત છે. તે જૈનાનંદ હસ્તપ્રત ભંડાર, સુરતમાં છે. (હસ્તપ્રત ક્રમાંક-૦૬૬૮)

આ સંપાદન **વર્ધમાન જિનરત્નકોશ પ્રકલ્પ** દ્વારા તૈયાર થઈ રહેલા **જૈન કૃતિ-કૃતિકાર કોશ**નું પ્રાથમિક રૂપ છે તેમ કહી

શકાય. જૈન કૃતિ-કૃતિકાર કોશમાં ૨૨૦૦૦ થી વધુ કૃતિઓની નોંધ થવાની સંભાવના છે.

ભારતીય કોશશાસ્ત્રના ઈતિહાસમાં માનદંડ બનેલી આ લઘુકૃતિનું વર્ગીકરણ કરીને પુનઃસંપાદન કરવામાં જે અહોભાવ અને આનંદનો અનુભવ થયો છે તે શબ્દાતીત છે. આશા છે પ્રાચીન ગ્રંથવારસાને જાણવા અને જાળવવાની ઈચ્છા ધરાવતા વિદ્વાનોને આ પ્રયાસ સાર્થક લાગશે.

કૃતજ્ઞતા

મારા પરમ ઉપકારી ગુરુદેવ પરમ પૂજ્ય **આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય રામચંદ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજા** તથા પિતૃગુરુદેવ પરમ પૂજ્ય **મુનિપ્રવરશ્રી સંવેગરતિ વિજયજી મ.સા.**ની પાવન કૃપા, બંધુમુનિવરશ્રી **પ્રશમરતિવિજયજી મ.**નો સ્નેહભાવ તથા તેમ જ **મુનિવરશ્રી સંયમરતિ વિજયજી મ.,** પરમ પૂજ્ય **સાધ્વીજી શ્રીહર્ષરેખાશ્રીજીમ.**ના શિષ્યા **સાધ્વીજી શ્રીજિનરત્નાશ્રીજી મ.**, સા. **શ્રી મધુરહંસાશ્રીજી મ.**, સા. **શ્રી ધન્યહંસાશ્રીજી મ.**નો નિરપેક્ષ સહાયકભાવ મારી પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિની આધારશિલા છે. તેમના ઉપકારોથી મુક્ત થવું સંભવ નથી. સંપાદકીયનો હિંદી અનુવાદ શ્રી ઓમજી ઓસવાલ, આંગ્લ અનુવાદ વિદુષી ડૉ. વિનયા ક્ષીરસાગર અને સંસ્કૃત અનુવાદ શ્રી અમોઘ પ્રભુદેસાઈએ કર્યો છે. આપ સહુનો સહાયકભાવ અને શ્રુતભક્તિની અનુમોદના કરું છું.

શ્રુતભવન, કાત્રજ
ફાગણ સુદ પાંચમ, ૨૦૭૪

- વૈરાગ્યરતિવિજય

Editorial

Brihat-Tippanika: A most ancient Catalogue

Utility of catalogues is not unknown in India. From ancient times, the collection of manuscripts is being done in India; most scientific methods of preserving them also were in vogue at that time. A partial catalogue also got prepared. That time, the catalogues were known by different names like Ṭīpa, Ṭippaṇa,Ṭippaṇikā, Huṇḍī, Bījaka etc. List of the Collection-Libraries also occurred, and the lists of the works of one particular author got prepared[२](which is known today as Anukaramanika, i.e. list of contents or Index). List of the texts also can be prepared. According to the Library-Science, all these classifications are totally scientific. Brihat-Tippanika is that Catalogue which is the only one of its kind and is prepared after the scientific analysis.

In India, a lot of research and survey has been done from the point of view of the History of the catalogues. As a salvation to it, Brihat-Tippanika is the oldest of all the catalogues that became available throughout the country of India. Its composition is done nearly in the 15th century.[३] Its first editor, orientologist Shri Jinavijayji has said –(original in Gujarati) It is difficult to trace out who has prepared this list of ancient Jain texts named Brihat-Tippanika, and when was it prepared. But from the names of the texts occurring in it, it can be inferred that some scholar has made this list in the middle of the 15th century of Vikram era; because among the names of the texts, that are given here along with the years, the last name is of the ‘ Pravacana-Pakshikadi-Alapaka-Samgraha’(no.164). No other text composed after this year is not known to have been recorded in this list, and certainly the texts composed before it, such as Upadesha cintamani (no. 223) written

१ A catalogue or list of the works of Honourable Upadhyaya Shri Yashovijayaji Maharaj was prepared by Acarya shri Bhavaprabhasuriji of Purnima Gaccha. It is now in the collection-library of Honourable Acarya Shri Yashovijayaji Maharaj (Honourable Acarya Dharmasuriji Maharaj), Sahityamandir, Palitana. From that information about all the works is available.

२ Manuscripts were collected by the rulers of different states, including the Mughal emperors, and religious institutes, including monasteries(mathas) of different sects and the Jain bhandaras The Jain munis played a significant role in the area of collecting and preserving the manuscripts of various shastras—Jain,Brahmaical and Buddhist. The credit of compiling the earliest known catalogue in India goes to the Jain community. So far as our information goes, the earliest catalogueof manuscripts was compiled under the title ,BrihatTippanika,, as early as VikramSamvat 1440 (1383 C.E.) by a Jain monk, whose name is unfortunately not known. The BrihatTippanikacovers some manuscripts in the collections of several places like Patan, Cambey and Bharauch. It furnishes data of author’s names, period of writing and grantha-parimana (the extent of each text)(History of Cataloguing, NMM website.)

in Sam.1436, Prashnottara-ratnamala-vritti(no. 222), composed in Sam. 1428, Bhaktamara-stava-tika (no. 132) prepared in Sam. 1426 can certainly be seen noted in the list, but not a single name of any text after that is seen here. We notice that even no note is made of famous authors like Somasundar, Munisundar, Gunaratna, Jnanasagar etc. who had been there in approximately the third quarter of the Fifteenth century. Therefore, the date of the occurrence of this prepared list is given in between Vikram Sam1440 and 1460, which means that this list got prepared nearly 525 years earlier than today.

Author/Compiler

Compiler of this text is a Jain Muni. This event is much adorable for the Jain community. Unfortunately, name of this Muni Bhagavan is unknown. From the statement Samacari anekavidhagacchantariya, in text no.168, it can be said that he was from that/their Tapagaccha. About this point, Shri Jinavijayji has noted that- (original Gujarati) – the compiler of this catalogue was certainly an able scholar and an excellent Yatiraj, fond of literature also. He has prepared this with utmost care with minute and complete examination. Subject-wise ---- are drawn and are noted after utter scrutiny of every text. In the list, four items viz. Text, its Author, Year of its Composition, and the total number of the verses contained are included and the information as became available on the careful research , in relation to every text, are noted.

Special Feature

The special feature of the Brihat-tippanika is that it is not the catalogue of any single manuscript library. It has been prepared on the basis of many collections of manuscripts. Among them, we get names of the Five manuscript-collections, as Pattan (Patan), Devapattan (PrabhasPatan)[१], Bharuch[२], Khambhat and Devagiri[३]. As is told by Shri Jinavijayaji ,

The compiler of this list has prepared it, having reviewed the main libraries , mainly at Patan (AnahilpurPattan), Khambhayat (Stambhatirtha), Bharuch (Bhrigupur), and PrabhasPatan (Devapattan). Name of the famous collection at Jaisalmer of Marwad is not contained in this list. Whatever is to be seen there is not mentioned. In addition to this, it is also inferred that the author must be someone form Gujarat, especially has to be a scholar belonging to Tapagaccha.

This list mainly focuses on the texts. Prime objective of it is to provide therein information about the texts. At that time the activity of getting the texts written was running in speedily. The charges for writing were given to the scribes in proportion to the letters they had written. For that the letters of every text were counted which are generally called as Granthagras. The information about which text is taken up for writing and in which Library does its copy exist, does not become available easily. A difficulty was felt to carry out the activity of writing in case of the texts on the whole. As a solution to this problem, some unknown noble-minded and great Muni has created this catalogue, as the beginning. From this list, information about the texts current in use before the Fifteenth Century is available. Still, there are texts other than these and not registered in this list.

How much important position is of this catalogue in the History of Jain Literature can be known from the words of Shri Jinavijayji only –

Information regarding the where about of many the texts appearing in this list cannot be known today. Therefore, there is an urgent need on the part of the scholars to do research for this. For example, only one Brihadvritti, elaborate explanation, is available today on a very famous and prestigious Jain text like Sammatitarka, though three Vrittis on this text are noted in this list (cf. no. 358), of these, the first Vritti is very important as its author is noted to be Mallavadi. MallavadiSuri had written many commentaries on Sammati, and the proof thereof can be availed in an article by Haribhadrasuri. It is possible that these commentaries of Mallavadi are of great importance, historically;as, on their basis, distinguished deliberation can be carried out on many problems in context of the development and history of the Nyayashastra. Additionally, informing about many unknown topics and refutation of many doubtful subjects is possible. Therefore, every scholar and researcher recommends with insistence the research and understanding these commentaries on Sammati.

A note of a third commentary on Sammati also is made in this list. It is not known who the author of it is. It is only informed that it is 'anyakartrika' i.e. done by another author. Perhaps, this commentary is done by one Digambar scholar; regarding this our learned friend Mr. NathuRamji Premi has published one important note in the joint number of Jaina hitaishi of the months of January – February, of the year 1921.So the researchers have to investigate into these commentaries also. In this way only names of many other texts are seen to be noted in this catalogue but are not

१ Collection library is not there today at PrabhasPatan.

२ Collection Library is not there today at Bharuc.

३ Devgiri is Daulatabad of these days which is situated near Aurangabad in Maharashtra. Here only a Jinalaya, Temple of Jina, was constructed by Pethadshah. Here the Jainas used to dwell. Here only, AcaryaShriHeerasurishvarjiMaharaj as well as UpadhyayShriDharmasagarjiMaharaj had come to carryout studies in the Nyaya and other shastras. This was the centre for learning and, therefore, naturally, it was the collection –library also. In Senaprashna, there is a special mention of the DevagiriSamgha (SenaprashnaUllasa 4,Prashna 13). This Samgha was either in Gujrat or in Rajastan. This mention can be of this also. Its mention is made in Text no 291.

available at present.

Information

In this catalogue, eightfold information has been given. It is about - Name of the text, name of the author of the text, year of the composition, subject of the text, relation between the original text and the commentary, information whether this text is available or not, information of the definite collection-library if the text is available there, how many verses are there in the text (32 syllables are equal to one verse) and the number of the Granthagras. According to the Library-science, all that required information occurs in this catalogue that is being provided in any list of books. The compiler has done the classification of the list also scientifically. The author has divided all the texts in two groups, viz. Agama and Agametara, i.e. other than Agama. Agama literature also is divided into three categories like eleven Angas, four Upangas, Avashyakas etc. Six Chedas, four Mulas, ten Prakirnakas and two Chulikas these are included in the third category. Additional commentaries are got on the Avashyaka Sutra; therefore, a separate list is written of them. Other than these, a list is provided of those texts that are counted like the Agamas. Literature other than the Agamas is divided into nine classes such as : Charanakarananuyoga, Kathanuyoga, Nyaya-Tarka, Vyakarana-Kosha, Chandas-Sahitya, Kavya, Nataka, Jyotisha etc. and Prakirnaka. In the class of Charanakarananuyoga are included the topics like Tattvajnana, Prakarana, Upadesha, Yoga, Achara, vidhi, Stotra, and Karmagranthas. In the Kathanuyoga, the list is given following the order as Charitra of the Tirthankaras, ShalakapurushaCharitra, MahapurushaCharitra. Vyakarana – Grammar – and Kosha – Lexicons – are counted in one and the same section. Under the section of Jyotisha are included six topics as Shakuna, Yoga, Amnaya, Mantra, Kalpa, and Samudrika. In the classification, names of the time of their own are recorded by the Jain texts and of the other texts by the texts other than Jain, when it was felt necessary.

Comments

The author of this list has given special information with reference to certain texts, and somewhere has added his own comments also. They can be classified as follows –

1. Comments are regarding the availability of the texts in the collections-libraries, e.g. text no. 40.3, 72, 73, 74[१] etc.
2. Somewhere comment is given regarding the difference of opinion on the Granthagras,[२] e.g. text no 291, 491 etc.
3. At places, a comment is found on the author, e.g. text no. 113, 116 etc.[३]
4. At some places, a note is given about the period of that ruler in whose region the text was compiled, e.g. text no. 224, 232, 239, 246, 264 etc.[४]
5. Comments are according to the subject of the texts also, e.g. text no. 94(2), 144, 145, 154, 160,162, 183, 204, 220, 332,333, 336, 337 etc.[५]
6. Notes show the sentences of beginning in case of those texts that bear the same title, e.g. text no. 40(5), 119(3), 189, 212, 213,214 etc.[६]
7. Notes are given regarding the sections or chapters of the texts as are given about their language, e.g. text no. 125, 158, 219, 268, 272, 292, 294,295,300,303, 311, 331, 339, 348,358.2, 361, 363,372 etc.[७]
8. Comment relates to the text searched out by other scholars, e.g. text no. 248 etc.[८]
9. Comments are in context with the completion of the text, e.g. text no. 299,501 etc.[९]
10. Comment is made on the point of the faithfulness of the text, cf. text no. 297.[१०]

१ 40.3 चूर्णिटिप्पणकं भृगु. गु. 3 विना न, 72 समयसारटीका अमृतचन्द्रसूरिया भृगु[पुरम्] देव[पत्तनं] वि[ना] न।73 पञ्चास्तिकाय-संग्रहाभिधसमयस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरिया देव[पत्तनं]विना न। 74 प्रवचनसारस्यवृत्तिः अमृतचन्द्रसूरिया देवपत्तनंविना न।

२ 291 त्रिषष्टीयं महावीरचरित्रं- 3492 प्रत्यन्तरे-5161 देवगिरि। 491

३ 185113 नव्यकर्मविपाकवृत्ति-नव्यकर्मस्तववृत्ति-नव्यबन्ध-स्वामित्वावचूर्णि-नव्यषडशीतिकवृत्ति नव्यशतकवृत्तयः 5 सूत्रकारतपाश्रीदेवेन्द्रसूरियाः, 116 सत्तरीटिप्पनकम्, खरतररामदेवगणिकृतम् –गाथा 547। 170 उपदेशमालावृत्तिः प्राकृता कृष्णर्षिशिष्यजयसिंहसूरिकृता 913 वर्षे। 185 सम्यक्त्ववृत्तिः सूत्रकारचन्द्रप्रभसूरि-सन्तानीयश्रीतिलकीया 1277 वार्षिकी 8000।

४ 224 श्रीआदिनाथचरित्रं प्राकृतं जयसिंहदेवराज्ये 1160 वर्षे वर्धमानसूरिरचितम् 11000,12000। 232 सुमतिचरितं प्रा. मुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतम् 9621।, 239 चन्द्रप्रभचरितंप्रा.श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रम् 8032। 246 श्रेयांसचरितं प्रा.जयसिंहदेवराज्ये हरिभद्राचर्यकृतम्, गाथा 6584, स्तम्भतीर्थं विना न।, 265 मल्लिचरितं बहुप्राकृतं हरिभद्रीयंकुमारपालराज्येकृतं गाथाकाव्यमयं ग्रन्थाग्रम् 9000।

५ 94 कर्मप्रकृतिसूत्रम्- गाथा – 475। (2) वेदनादि 8 करणवाच्या चूर्णिः – 7000. Please see the other examples in the list.

६ 40(5)जीतकल्पविवरणं सङ्क्षिप्तगमनिकारूपं 'सिरिवीरजिणं नमिउं'इति 543 । 119(3) लघुसङ्ग्रहणीवृत्तिः'नमिउं अरिहंताई'त्ति, मलधारिदेवभद्रीया 3500।, 189 'माणुस्सखित्ते'तिविवेकमंजरीवृत्तिः 1223 वर्षेअकलङ्कदेवीया।, 212 'इसिमंडल'इत्याद्यऋषिमण्डलस्तवःगाथा 271।, 213 'इसिमंडल'ऋषिमण्डलवृत्तिः 4614।, 214 'भत्तिभर'इतिऋषिमण्डलसूत्रम् 208।

७ 125 क्षेत्रसमाससूत्रंसंस्कृतमाह्निकचतुष्टयरूपम् उमास्वातिवाचककृतम्।Please see the other examples in the list.

८ 248 वासुपूज्यचरितं प्रा. चान्द्रप्रभं हेमसूर्यादिशोधितम् 8000, स्तम्भतीर्थं विना न।

९ 299 हरिवंशचरितंसं. नेम्यादिबहुवृत्तवाच्यमाद्यन्तरहितं श्लोकाः 9000।, 501 श्रीभोजराजकृतालङ्कारस्य वृत्तिः पदप्रकाशनाम्नी आजडकृता काव्यबन्धादिवाच्या।

१० 297 पुण्डरीकचरित्रं सं. 1372 वर्षे कामलप्रभं क्वचिद् अनागमिकार्थे – 3300। (= In this, there is some meaning other than that of

11. They are about the modernity of the texts.Cf. text no. 155, 172 etc.[१]
12. Notes are informing about the peculiarities of the texts, e.g. text no.77.2, 89 etc.[२]
13. If the name of the text appears Non-Jain, or of there is another non-Jain text of the same name by some Jain author, it is noted in the note on it, cf. text no.388,371 etc.[३]
14. The author of the list/catalogue has noted those folia of the manuscripts where he did not get the number of the Granthagras, e.g. text no. 389, 449, 646 etc.[४]
15. Texts of Darshanas, i.e. Philosophical texts are distributed the Darshanas, cf. texts from no. 358 up to no. 422.

Earlier Publication

Before this, Brihattippanika is published twice. First of all, it was published by the great Orientalist Shri Jinavijayaji as the Appendix of the Monthly Jain Sahitya Samshodhaka,(Part 1, no 2 of the year 1921), in Vikram Samvat 1977. This Catalogue was published by him on the basis of two manuscripts. Of these, one copy was nearly 300 – 400 year's old and one was got written newly. These copies belonged to the collection of scriptures of Pravartak Shri Kantivijayaji Library of Vadodara. Their copies are available in the Shantinath Bhagavan manuscript collection at Khambhat.[५] It's copy was prepared by Pujya Acharya Shri Anandsagarsuriji Maharaj. It's copy is available at Jainananda Collection of manuscripts in Surat, (manuscript no. - 0998).

It's reprint was done in book-form by the Shrutagyana Prasarak Sabha, Ahmedabad, through the inspiration by Pujya Acharya Shri Vijay Pradyumnasuriji Maharaj, in Vikram Samvat 2060,(C.E. 2004). In the Jinaratnakosha,, Prof. Hari Damodar Velankar has counted this edition as acceptable. Prof. Hari Damodar Velankar , the editor of Jinaratnakosha has mentioned the same number of texts in Jinaratnakosha. In this editing text-numbers are not presented in the division as the original text and commentary; moreover, through oversight, many texts are noted as commentaries and commentarial texts are given as original or basic texts (cf. no71.3). After that, on the basis of the Brihat-Tippanika, Shri Ravji Devraj published a list of books in tabular form, under the title 'Jain Siddhantonu list' (List of the treatises on Jain doctrines). This edition has been prepared with the intention that this classification may prove totally acceptable, and thereby useful as its origin. Many of the readings in the Brihat-Tippanika are corrupted. He has tried to correct them with the help of the copy of the manuscript made by Jainananda, but the readings therein also appear to be corrupt.

Appendices

Present Edition contains 12 appendices.

The First Appendix contains the list of serial numbers of the texts. Therein, the numbers of the texts are indicated by the sections. For the continuation of reference for scholars, older number also is included there. In this appendix, the information provided in the Brihat-Tippanika is certainly present. All the information which is not there in the Brihat-Tippanika, and is available elsewhere, is written in the round bracket. In this appendix, 18 types of information have been given. Its explanation is as follows –

1.1 Sr. no. - Continuous succession of the texts.
1.2 Serial no. of the texts as indicated in the Brihat-Tippanika.
1.3 No. of the Sub-texts (Peta-kriti) indicated in the BrihatTippanika. (When more than one texts appear under one and the same number, they are called Petakritis.)
1.4 No. of the Commentary indicated in the Brihat-Tippanika (Commentarial texts occurring under the same number.)
1.5 Title of the text as appearing in the Brihat-Tippanika.
1.6 Name of the text current today (so that it be easy to recognize the text).
1.7 Nature of the text-Original/Basic or Commentary. Here only two categories are fixed down, as whether the text is the original one or a commentary. Various types of the

---

the Agamas)

[16]155शत्रुंजयमाहात्म्यं, कल्पितप्रायम्,आधुनिकधनेश्वरीयम् ।, 172 हेयोपादेयेत्याकैव केनापि कथाभिर्योजिता सं. 1500, 9500 वर्षे ।ShriJinavijayaji has mentioned this in his own Editorial note.

१ 1789 विचारसारप्रकरणं प्रद्युम्नसूरिकृतं सोपयोगि, बहुसङ्ग्रहंगाथा 897 ।, 77(2) आद्यपञ्चाशकचूर्णिः 1172 वर्षे यशोदेवीया सभावाच्या, 3300।

२

३ 338 कौमुदीकथा जैनकृता 1600 ।, 371 प्रमाणसङ्ग्रहप्रकरणं 9 प्रस्तावं जैनं 712 ।

४ 386 प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरणं च यशोदेवसाधुकृतम् आद्यं तु त्रिवर्गपरिहारेण अपौ. पत्राणि 11 प्रत्यन्तरे प.14 ।, 449 आख्यातावचूरिर् लौकिकव्याकरणसम्बद्धा प. 36 ।,646 सुधाकलशाख्यसुभाषितकोशः पं. रामचन्द्रकृतः, पत्र.... ।

५ According to the report of National Manuscript Mission, copy of it is in Khambhat, but not in the catalogue that was prepared by Hon. PunyavijayajiMaharaj. Cf. – The manuscript of this catalogue is still preserved in the ShantinathaBhandara.(History of Cataloguing, NMM website).

commentaries like Niryukti, Bhashya, Churni, Avachuri, Balavabodha are treated here as sub-ordinate.

1.8 Name of the author or compiler.- Name of the author of the basic text or the one of the nature of the commentary. If there are two authors of one text, both names are shown with the + sign of addition. If the mention is not done in the Brihat-Tippanika, that name is given in the round bracket.

1.9 Language - Language of the text; if it is mixed, it is shown with the + sign of addition preceding it.

1.10 Gatha - If the number of the Gathas of the Text of Commentary is available, it is indicated.

1.11 Granthagra – Counting of the granthagras indicated here is superficial. Where it was possible, the number of them is written after looking into the manuscripts. In case it is not available, the counting of the granthagras is done, assuming the 38 possible letters of one Arya verse.

1.2 Year of the composition of the text is according to Vikram Samvat.

1.13 Many texts are noted in the Brihat-Tippanika as unavailable. They are included here, under this number. Unavailable means those texts whose name only is available and not the text.

1.14 Here the classification of the subjects is given following the Brihat-Tippanika.

1.15 Division of Subjects. Here the classification is given according to that list which is made ready in the Department of Vardhamana JinaratnaKosha. Therein, is followed the view of the book 'Jaina Sahitya ka Brihad Itihasa' (Extensive History of Jain Literature).

1.16 Svasamaya – Parasamaya. In the Brihat-Tippanika, Classification of the texts other than the Agamas is done as the Svasamaya (the own ,i.e. the Jain treatise) and the Parasamaya (the other i.e. the Non-Jain treatise). The same principle is retained here. For convenience, the division of the texts on Darshanas is done following the Darshanas, i.e. Philosophical Streams.

1.17 Notes – Notes or information given in the Brihat-Tippanika in relation to the texts is noted here also.

1.18 Editor's note. The information collected while searching through other texts is included here in the way of Editor's note.

The Second Appendix is the Alphabetical Index of the texts.

The Third Appendix contains the Alphabetical Index of the Authors.

The Fourth Appendix is the Alphabetical Index of the texts according to their nature or form.

The Fifth Appendix comprises of the list according to the Languages.

The Sixth Appendix has the list classified according to the Subjects.

Seventh Appendix contains a work called SutradiShlokamana. This text gives the answers in the form of the count of the Granthagras of the Agama-texts asked to somebody by Pandit Shri Deepavijayaji Maharaja. Its manuscript is available in the Jaiananda Bhandar, Surat (ms. No. 3079). The number of the Granthagras of the texts being indicated is included here only.

In the Eighth appendix is given a text called Siddhanta Shloka. Its author is unknown. In it the Granthagras of the texts other than the Jaina school are also given. Its manuscript is available in the Jaiananda Bhandar, Surat (ms no. 1864). In this can be seen those texts also that are not found in the Brihat tippanika. From this point, this work is useful. Here, the discrepancies entered in while writing the Granthagras are corrected, keeping in view all the numbers.The corrected number is given in the round bracket-( ). In the parentheses-{ } is given the reading of addition.

The Ninth Appendix gives charts and graphs that are created to explain about different types of information and numbers used for editing this text. There, information is given according to the figures and percentage. For the understanding of the information available in the Brihat tippanika, the details as given below are available --

9.1 In the Brihat tippanika, there are 207 texts (20%) of the Agama Literature and 826 texts (80%)are other than the Agamas. In total, there are 1033 texts. (cf. App. 9,graph 1).

9.2 While classifying the texts according to the Language, the details as given below become available, (cf. App.9, graph 2)–

160 texts are in the Prakrit language (19%).

649 texts are in the Sanskrit language (79%).

16 texts are in the other languages (2%).

9.3 While counting the Granthagras of the Agama texts, according to their Language and the nature of the text, details can be given as following (cf. App.9, charts 3,4) –

In the Agama Literature, 1, 64,242 verses are in the Ardhamagadhi Prakrit language

(21%).

In the Agama Literature, Sutras contain nearly 97,745verses (12%).

In the Agama Literature, Niryuktis run in 3964verses (less than 1%).

In the Agama Literature, measure of the Bhashyas is 59,960 verses (8%).

In the Agama Literature, Curnis are in 1, 34,498 verses (17%).

In the Agama Literature, Tikas are contained in 5, 01,838 verses (63%).

Thus total Agama Literature is measured in 7, 98,006 verses.

Number of the Non-Agama Texts mentioned in the Brihat tippanika is 826. This includes both the Svasamaya (the own, i.e. the Jain treatises) and the Parasamaya (the other i.e. the Non-Jain treatises).

9.4 While classifying the Non-Agama texts inthe Brihat tippanika, according to the language, the following information becomes available (cf. App. 9, chart 5) –

160 texts are in the Non-Agamic Prakrit language (19%).

949 texts are in the Non-Agamic Sanskrit language (79%).

19 texts are in other Non-Agamic languages (2%).

9.5 While classifying the Non-Agama texts in the Brihat tippanika according to their nature, details given below can be seen (cf. App. 9, graph 6) –

Non-Agamic original texts are 545 (66%).

Non-Agamic commentarial texts are 181(34%).

9.6 At the time of counting the Granthagras according to the nature of the Non-Agamic texts in the Brihat tippanika, following details become available (cf. App. 9, graph 7)—

The count of the verses in the Non-Agamic Basic or original texts is 9,23,791 (23 %).

The number of the verses in the Non-Agamic commentarial texts is 10,94,477 (27%).

Verses of the Non-Agamic Literature are totally counted as 20,21,588.

Unavailable Non-Agamic texts are 258.

9.7 While classifying the Non-Agama texts in the Brihat tippanika according to their nature and language, details given below can be seen (cf. App. 9, graph 8) –

Basic texts in the Non-Agamic Prakrit language are 155 (18%).

Basic texts in the Non-Agamic Sanskrit language are 384 (47%).

Basic texts in the other Non-Agamic languages are 5.

Commentarial texts in the Non-Agamic Sanskrit language are 270 (33%).

Commentarial texts in the Non-Agamic Prakrit language are 11(1%).

9.8 While classifying the Non-Agama texts according to the religion, details given below can be seen (cf. App. 9, graph 9) –

In the Non-Agamic texts, texts of Digambar sect are 20 (2%).

In the Non-Agamic texts, non-Jain texts are 104 (13%).

In the Non-Agamic texts, Jain texts are 691 (85%).

9.9 When the Non- Agamic texts are classified subject-wise, following details are available (cf. App. 9, graph 9) –

Subject	No of texts	Percentage. (%)
Caritra – biography	119	14
Upadesha – teaching	93	11
Agamic Prakarana -	64	7
Stotra --	58	7
Jain Nyaya (Logic)	58	7
Vyakarana – Grammar	52	6
Kavya – Poetry	49	6
Darshan – Philosophy	44	5
Karmagrantha—ritual books	41	5
Adhyatma – spiritual books	40	5
Jyotish – Astronomy/Astrology	33	4
Kosha – Lexicon	30	3
Sahitya – Literature	25	3
Acara -- Ethics	21	2
Laghukatha – Short Stories	20	2
Chandas – Prosody	13	2

Tattvajnana – Philosophy	12	1
Kathasamgraha – Stories	12	1
Subhashita – Anthology	11	1
Nimitta – Occasions	08	1
Carca – Discussion	8	1
Vidhi – Law or rules	7	1
Vastu – Architecture	6	1
Shakuna – Signs	6	1
Mantra	6	1
Anya – other	4	1

9.10 when counted totally, the Agama- and non-Agama texts, following details are available (cf. App. 9, graph 1) –

Basic Agama texts are 72 (26%).

Basic works from the non-Agamic texts are 545 (25%).

Commentaries on the Agama texts are 134 (19%).

Commentaries on the non-Agamic texts are 281 (30%).

Basic works from the non-Agamic texts in Prakrit are 155(9%).

Prakrit Commentarial works from the non-Agamic texts are 11 (1%).

Basic works from the non-Agamic texts in Sanskrit are 385 (47%).

Sanskrit Commentarial works from the non-Agamic texts are 270 (33%).

Number of the unavailable texts is 34.

9.11 when counted totally, Granthagras of the Agama- and non-Agama texts, following details are available (cf. App. 9, graph 11) –

Agama literature is contained wholly in 7,98,006 verses (28%).

Literature other than the Agamas runs totally in 20,18,268 verses (72%).

Thus, Jain Literature, on the whole, is measured by 28,16,274 verses.

Tenth Appendix contains the List of Abbreviations used in this Edition.

Eleventh Appendix gives the list of the Books referred to in this Edition.

In the Twelfth Appendix is given the Manuscript of the Brihat Tippanika, which is located in the Jainananda manuscript Collection, Surat (manuscript no. 0998).

This Editing job can be said to be the basic form of Jain Kriti-Kritikara Kosha – Index of the Jain texts and authors being prepared by the Project Vardhamana Jinaratna Kosha. There is a possibility that in this will be noted texts more than 22,000.

The experience of the admiration and joy is beyond words, which was attained while re-editing,with classification, this small text which has become a yardstick of prestige in the history of Indian Lexicography. It is hoped that this effort will be felt as serving the purpose by those who are well-acquainted with the tradition of ancient scriptures and cherish a wish for its preservation.

Gratitude

Holy blessings of my highly obliging Gurudev Parama Poojya Acaryadev Shri Ramacandrasureeshvaraji Maharaj as well as PitriGurudev Parama Poojya Munipravarashri Samvegarativijayaji Maharaja, brotherly affection of BandhuMuneeshvraahri Prashamarativijayaji Maharaj and unselfish assistance of Sadhviji Shri Jinaratnashriji Maharaj,Sadhviji ShriMadhura-hamsashriji Mah., SadhvijiShriJinaratnashrijiMah., the disciples of Parama Poojya Sadhviji ShriHarsharekhashriji Maharaj are the foundation-stones of my every undertaking. It is never possible to get free from their obligations.

Shrutabahavan, Katraj **VairagyaratiVijaya.**

Phagan Shu. 5,2074.

સંપાદકમંડલ

શ્રુતભવન સંશોધન કેંદ્ર-વર્ધમાન જિનરત્નકોશ વિભાગ

સંપાદક

પરમ પૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય રામચંદ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્ય

પૂજ્ય મુનિશ્રી **વૈરાગ્યરતિવિજયજી** ગણિવર્ય

સહ સંપાદક - મદનદેવ ડોંગરે

સહાયક

ચિંતામણિ સૂર્યવંશી	પ્રદીપ રુપનર	પ્રકાશ પાટીલ	અનુરુ મિશ્રા
સુરજ માને	ધીરજ ભટ	પવન ઠાકુર	અનિલ ઝા

સંશોધન વિભાગ

अज्ञातकर्तृका

बृहट्टिप्पनिका

(१) एकादशाङ्गानि

१ **श्रीआचाराङ्गसूत्रं श्रीसुधर्मस्वामिकृतम्- २५२५।**

(१) निर्युक्तिः श्रीभद्रबाहुकृता ग्रन्थाग्रं ४५०, गाथा ३६२।

(२) चूर्णिः ८३००।

(३) वृत्तिः शीलाचार्यीया ९३३ वार्षिका, १२०००।

२ **श्रीसूत्रकृताङ्गसूत्रम्- २१००।**

(१) निर्युक्तिः २६५, गाथा २०८।

(२) चूर्णिः १००००।

(३) वृत्तिः शीलाचार्येण कृता, १२८५०।

३ **श्रीस्थानाङ्गसूत्रम्- ३६००।**

(१) वृत्तिः श्रीअभयदेवैः ११२० वर्षे ११० कृता, १४२५०।

४ **श्रीसमवायाङ्गसूत्रम्- १६६७।**

(१) वृत्तिः ११२० वर्षे अभयदेवीया, ३५७४।

५ **भगवतीसूत्रम्-एकचत्वारिंशत्-शतकमयम् १५७५२।**

(१) चूर्णिः ३११४।

(२) अवचूर्णिः पत्तनचित्कोशेऽस्ति।

(३) वृत्तिः ११२८ वर्षे अभयदेवसूरिकृता १८६१६।

६ **ज्ञातधर्मकथासूत्रम्- ५४००।**

(१) वृत्तिः ११२० वर्षे कृता ३८००।

७ **श्रीउपासकदशासूत्रम्- ८१२।**

८ **श्रीअन्तकृद्दशासूत्रम्- ८९९।**

९ **श्रीअनुत्तरौपपातिकदशासूत्रम्- १९२।**

(१) उपासक-अन्तकृत्-अनुत्तरौपपातिकवृत्तिः १३००।

१० **श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रम्- १२५६।**

(१) वृत्तिः ४६००।

११ **श्रीविपाकसूत्रम्- १२१६।**

(१) वृत्तिः ९००।

एकादशाङ्गीसूत्रसङ्ख्या- ३५३३९। वृत्तिः सङ्ख्या- ७४७९०।

(२) द्वादशोपाङ्गानि

१२ **उववाइयसूत्रम्- ११६७।**

(१) वृत्तिः ३१२५ अभयदेवीया।

१३ **राजप्रश्नीयसूत्रम्- २०७९, २१२०।**

(१) वृत्तिर्मलयगिरीया- ३७००।

१४ **जीवाभिगमसूत्रम्- ४७००।**

(१) चूर्णिः १५००।

(२) वृत्तिर्हारिभद्री प्रदेशवृत्तिनाम्नी- ११९२।

(३) वृत्तिर्मलयगिरीया- १४०००।

१५ **प्रज्ञापनासूत्रम्- षट्त्रिंशत्पदमयम्- ७७८७।**

(१) लघुवृत्तिर्हारिभद्री- ३७२८।

(२) वृत्तिर्मलयगिरीया- १६०००, १४५०० (?)।

(३) प्रज्ञापनातृतीयपदसङ्ग्रहणी श्रीअभयदेवसूरिकृता गाथा- १३३ तदवचूरिश्च- ४३०।

१६ **श्रीचन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्रम्- २०५४।**

(१) वृत्तिर्मलगिरीया- ९५००।

१७ **श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रम्- २२९६।**

(१) वृत्तिर्मलयगिरीया- ९०००।

१८ **जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रम्- ४४५४।**

(१) चूर्णिः १८७९।

(२) वृत्तिर्मलयगिरीया ९५००

१९- २३ **निरयावलिका-कल्पावतंसिक-पुष्पिता-पुष्पचुलिका-दशा (५) सूत्राणि- ११०९।**

(१) निरयावलिकादीनां पञ्चानां वृत्तिः, १२२८ वर्षे।

(३) आवश्यक-मूलच्छेद-सूत्र-वृत्त्यादीनि।

२४ मूलावश्यकसूत्रसामायिकादीनि, षड् अध्ययनानि- १०० प्रमाणानि।

(१) साधुप्रतिक्रमणसूत्रं तु- १३०।

(२) ललितविस्तरा चैत्यवन्दनावृत्तिर्हारिभद्री- १२७०।

(३) ललितविस्तराटिप्पनकं देवसूरिगुरुमुनिचन्द्रीयम्- १८००।

(४) चैत्य-साधुवन्दन-श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्तिः- ९५६ वर्षे पार्श्वेण कृता २००० प्रमाणा।

(५) ईर्यापथिकी-चैत्यवन्दनासूत्र-वन्दनकानि।

(६) ईर्या. १५०, चैत्य. ८४०, वन्द. ७२७, चूर्णयः ११७४ वर्षे यशोदेवकृताः।

(७) प्रत्याख्यानस्वरूपं यशोदेवकृतं गाथा- ३६०।

(८) प्रत्याख्यानवृत्तिः ५५०।

(९) चैत्यवन्दनादिसूत्र-साधु-श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रपदपर्याय-मञ्जर्यः-अकलङ्कदेवसूरीयाः।

(१०) श्राद्धसामायिक-प्रतिक्रमणसूत्रव्याख्याप्रकरणम्- ११८३ वर्षे जैनदेवम् गाथा २९३ श्लोक ३६५।

(११) चैत्यवन्दनामहाभाष्यं श्रीशान्तीयम्, सूत्रव्याख्याचरणादिवाच्यम्-'महामहपणमंत' इत्यादिपदम् गाथा ९२२।

(१२) चैत्यवन्दनाभाष्यवृत्तिः।

(१३) षडावश्यकं चैत्यवन्दनादिसर्वसूत्रव्याख्यारूपं तपाश्रीदेवेन्द्रसूरिकृतम् २७२०।

(१४) चैत्यवन्दनादिवृत्तिः कुलप्रदीपः २४५८।

(१५) चैत्यवन्दना-वन्दनकं-प्रत्याख्यानवृत्तयः श्रीतिलकीयाः २४५८।

(१६) श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रलघुवृत्तिः श्रीतिलकीया ३००।

(१७) साधुप्रतिक्रमणसूत्रवृत्तिः श्रीतिलकीया २९६।

(१८) चैत्यवन्दनाटीका हरिभद्रीया ४८२।

(१९) साधुप्रतिक्रमणसूत्रवृत्तिः आवश्यकबृहद्वृत्तिगता।

(२०) साधुप्रतिक्रमणसूत्रवृत्तिः १३६४ वर्षे जैनप्रभी ५४८।

(२१) श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णिः ११८३ वर्षे विजयसिंहीया ४५९०।

(२२) श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्तिः १२२२ वर्षे श्रीचन्द्रीया १९५०।

(२३) चैत्यवन्दनाविचारो गाथाबन्धेन सूत्रव्याख्यारूपः।

(२४) चैत्यवन्दनकप्रत्याख्यानभाष्याणि त्रीणि तपाश्रीदेवेन्द्रसूरिकृतानि, गाथा ६३, ४१, ४८।

(२५) चैत्यवन्दनाभाष्यवृत्तिः सङ्घाचारनाम्नी तपाश्रीधर्मघोषसूरिकृता ८५००।

(२६) बालावबोधा चैत्यवन्दनावृत्तिः खरतरतरुणप्रभसूरिभिः १३३१ वर्षे कृता ७०००।

(२७) साधुप्रतिक्रमणादिषड्विधावश्यकसूत्रवृत्तिः नेमिसाधुना ११२३ वर्षे कृता १५५०।

(२८) पञ्चपरमेष्ठिविवरणं प्राकृतगाथामयं बह्वन्तरकथम् ११६८ वर्षे मोतिसागरं गाथा २५०।

(२९) आवश्यकनिर्युक्तिः ३१००, २५५०।

(३०) आवश्यकचूर्णिः १३६००, १८४७४।

(३१) आवश्यकबृहद्वृत्तिर्हारिभद्री २२०००।

(३२) तट्टिप्पनकं मलधारिहेमचन्द्रीयम् ४६४०।

(३३) आवश्यकवृत्तिर्मलयगिरीया १८०००।

(३४) लघुवृत्तिः श्रीतिलकीया १२९६ वर्षे कृता १२३२५।

(३५) आवश्यकावचूरिः प. २२६।

(३६) विशेषावश्यकसूत्रं श्रीजिनभद्रगणिकृतम् ४०००।

(३७) बृहद्वृत्तिर्मलधारिहेमचन्द्रीया २८०००।

(३८) वृत्तिर्मलयगिरीया ९००० नास्ति।

(३९) जीर्णा वृत्तिः १४०००, पत्तनं विना नास्ति।

२५ ओघनिर्युक्तिसूत्रम्- ११६४।

(१) चूर्णिर्नास्ति।

(२) भाष्यम् ३००० नास्ति।

(३) वृत्तिर्द्रोणीया ६८२५।

(४) वृत्तिर्मलयगिरीया सूत्रमिश्रा ८८५० नास्ति।

२६ दशवैकालिकसूत्रम्- ७००।

(१) निर्युक्तिः गाथा ४४५, ४५२।

(२) चूर्णिः ७०००, ७९७०।

(३) बृहद्वृत्तिर्हारिभद्री ७५५०।

(४) वृत्तिः श्रीतिलकीया नेमिचरित्रगर्भा ७०००।

(५) लघु-बृहद्वृत्त्युद्धाररूपा सुमतिसूरीया २६००।

२७ पाक्षिकसूत्रम्- ३००।

(१) वृत्तिः यशोदेवकृता ११८० वर्षे २७००।

२८ पिण्डनिर्युक्तिसूत्रम्- ७०८।

(१) वृत्तिर्नास्ति ४०००।

(२) लघुवृत्तिराद्या, तत्राद्यानि १३५० हारिभद्राणि, शेषाणि तु १७५० देवाचार्यशिष्यवीराचार्यकृतानि ३१००।

(३) वृत्तिर्मलयगिरीया सूत्रमिश्रा ७५००।

२९ उत्तराध्ययनं षड्त्रिंशदध्ययनमयं सूत्रम्- २०००।

(१) निर्युक्तिः ७००, गाथा ६०७।

(२) चूर्णिर्गोवालियमहत्तरशिष्यकृता ५९००, ५८५०।

(३) लघुवृत्तिः ११२९ वर्षे देवेन्द्रगण्यपरनामश्रीनेमिचन्द्रसूरीया ससूत्रा १४०००।

(४) शान्त्याचार्यीया बृहद्वृत्तिः सूत्रमिश्रा १८०००।

३० निशीथसूत्र विंशोद्देशमयम्- ८१२, ९५०।

(१) बृहद्भाष्यम् १२०००।

(२) भाष्यम् ७०००।

(३) निशीथ-चूर्णि सूत्र-भाष्याणि २८०००।

(४) निशीथचूर्णिविंशोद्देशव्याख्या ११७३ वर्षे पार्श्वदेवगणिकृता ११०० नास्ति।

(५) निशीथविंशतमोद्देशवृत्तिः ११७३ वर्षे श्रीचन्द्रीया ११००।

३१ कल्पविशेषचूर्णिः- ३१०००।

३२ कल्पचूर्णिः- १२७००।

३३ कल्पवृत्तिः सूत्रभाष्यगर्भा आद्यानि ४६०० मलयगिरीयाणि, शेषा तु १३३२ वर्षे तपाक्षेमकीर्तीया ४२०००।

३४ व्यवहारसूत्रं दशोद्देशकमयम्- ३७३।

(१) भाष्यम् ६४००।

(२) चूर्णिः १२०००।

(३) व्यवहारवृत्तिः सूत्र-भाष्यगर्भा मलयगिरीया ३३६२५, ३४६२५।

३५ कल्पसूत्रं षड्-उद्देशमयम्- ४७३।

(१) बृहद्भाष्यम् १२०००।

(२) भाष्यम् ७६००।

(३) विशेषचूर्णिः ११००।

३६ दशाश्रुतस्कन्धसूत्रं दशाध्ययनमयम्- २१०६

(१) चूर्णिः २२२५।

३७ पर्युषणाकल्पसूत्रम्- १२१६।

(१) निर्युक्तिः गाथा ६८।

(२) चूर्णिः ७००।

(३) कल्पनिरुक्तटिप्पनकं विनयचन्द्रसूरिकृतम् १५८।

(४) कल्पटिप्पनकं पृथ्वीचन्द्रीयम् ६४०।

(५) सन्देहविषौषधिवृत्तिः १३६४ वर्षे जैनप्रभी।

३८ महानिशीथसूत्रं लघु-मध्यम-बृहद्वाचनम्- ३५००, ४२००, ४५४४।

३९ पञ्चकल्पसूत्रम्- ११३३।

(१) निर्युक्तिर्नास्ति।

(२) भाष्यं सङ्घदासगणिकृतं गाथा २५७४, ३०३४।

(३) चूर्णिः ३०००, ३१३६।

४० जीतकल्पसूत्रं जिनभद्रीयं गाथा १०५।

(१) भाष्यम् ३१२५ नास्ति।

(२) चूर्णिः सिद्धसेनीया १०००।

(३) चूर्णिटिप्पनकं भृगु. गु. ३ विना न।

(४) वृत्तिः १२२४ वर्षे श्रीतिलकीया १८००।

(५) जीतकल्पविवरणं सङ्क्षिप्तागमनिकारूपं 'सिरिवीरजिणं नमिउं' इति ५४३।

(६) श्राद्धजीतकल्पस्य सूत्र-वृत्ती श्रीतिलकीये गाथा ३० वृत्ति ११५।

(७) यतिजीतकल्पस्य श्रीसोमप्रभसूरीयस्य वृत्तिः साधुरत्नसूरीया ५७००।

(८) श्राद्धजीतकल्पस्य तपाश्रीधर्मघोषसूरीयस्य वृत्तिः श्रीसोमतिलकसूरीया २६०० न।

४१ नन्दीसूत्रम्- ७००।

(१) चूर्णिः ७३३ वर्षे कृता, स्तम्भतीर्थं विना नास्ति।

(२) लघुवृत्तिर्नास्ति २३०० प्रमाणा।

(३) नन्दीबृहद्वृत्तिर्मलयगिरीया ७७३२।

(४) टिप्पनकं श्रीचन्द्रीयमाघावृत्तिसत्कम् ३३००।

४२ अनुयोगद्वारसूत्रम्- गाथा १६०४।

(१) चूर्णिर्जिनदासमहत्तरीया २२६४।

(२) लघुवृत्तिर्नास्ति।

(३) बृहद्वृत्तिर्मलधारिहेमचन्द्रीया ५८००।

४३ आतुरप्रत्याख्यानम्- गाथा ८४-१३४।

(१) आतुरप्रत्याख्यानवृत्तिराञ्चलिकभुवनतुङ्गसूरिकृता ६३ ध्यानकनामगर्भा ४२०।

४४ महाप्रत्याख्यानसूत्रम्- १४३।

४५ देवेन्द्रस्तवः- गाथा ३०३।

४६ तन्दुलविचारिकम्- ४००।

४७ संस्तारकः- गाथा १२१।

४८ भक्तपरिज्ञा- १७१।

४९ आराधनापताका १०७८ वर्षे वीरभद्राचार्यकृता ९९३।

५० गणिविद्या- गाथा ८५।

५१ अङ्गविद्या षष्टिअध्यायात्मिका ९०००।

५२ चउसरणम्- गाथा ६४।

(१) चउसरणवृत्तिः आञ्चलिकभुवनतुङ्गसूरीया ८००।

५३ द्वीपसागरप्रज्ञप्तिः- गाथा २२३ श्लोकाः २८०।

५४ ज्योतिष्करण्डवृत्तिः ससूत्रा मलयगिरिया सू. १८५० वृ. ५०००।

५५ मरणसमाधिः- गाथा ६५६।

५६ तीर्थोद्गारः- गाथा १२३३।

५७ सिद्धप्राभृतसूत्र-वृत्ति, सूत्रम् १२०, वृत्तिः ८५०।

५८ निरयविभक्तिः- २०० नास्ति।

५९ चन्द्रवेधकम्- १७४।

६० अजीवकल्पः- गाथा ४४।

६१ गच्छाचारः- गाथा १३८।

६२ वीरस्तवः- गाथा ४३।

(४) आगमेतर-चरणकरणानुयोगादिग्रन्थाः

६३ वसुदेवहिण्डिप्रथमखण्डं सङ्घदासवाचककृतम्- ११०००।

६४ वसुदेवहिण्डिद्वितीयखण्डम् अपराचार्यकृतम्- ६६००।

६५ वसुदेवमध्यमखण्डं ससङ्ग्रहणीकम्- ९०००।

६६ ऋषिभाषितानि- ४५। ८५०।

६७ खण्ड-पुद्गल-निगोद-बन्ध-षट्त्रिंशिकावृत्तयो रत्नसिंहसूरि विस्तारिताः।

६८ तत्त्वार्थसूत्रम् औमास्वातम्- २२५।

(१) भाष्यं वृत्तिरूपम्।

(२) टीका भास्वामिशिष्यसिद्धसेनीया भाष्यव्याख्यारूपा १८२८२, २२२८२।

(३) तत्त्वार्थलघुवृत्तिः दिगम्बरी देव. विना नास्ति।

६९ श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्रम् औमास्वातम्- ४००।

(१) वृत्तिर्हारिभद्री २३३०।

७० विशेषणवतीसूत्रं जिनभद्रक्षमाश्रमणकृतम्- गाथा ४३८।

(१) विशेषणवृत्तिर्नास्ति।

७१ प्रवचनसारोद्धारसूत्रं २७६ द्वाररूपं नेमिचन्द्रीयम्- श्लोकः २००० गाथा १६०६।

(१) वृत्तिः २००० मितसूत्रगर्भा, २७६ द्वारा, १२४२ वर्षे सिद्धसेनसूरिकृता १८५००, १६५००।

(२) विषमपदटीका भृगु. विना न।

(३) धर्मसङ्ग्रहणीवृत्तिर्मलयगिरीया, सूत्रमिश्रा ११०००।

(४) धर्मसङ्ग्रहणीवृत्तिर्मलयगिरीया, सूत्रमिश्रा १०५०० प्रत्यन्तरे।

७२ समयसारटीका अमृतचन्द्रसूरीया भृगु|पुरम्| देव|पत्तनं| वि|ना| न।

७३ पञ्चास्तिकायसङ्ग्रहाभिधसमयस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देव|पत्तनं| विना न।

७४ प्रवचनसारस्य वृत्तिः अमृतचन्द्रसूरीया देवपत्तनं विना न।

७५ पञ्चसूत्रं प्राकृतमूलम्- सूत्राणि २१०।

(१) वृत्तिश्च हारिभद्री ८८०।

७६ पञ्चवस्तुकसूत्रं हारिभद्रम्- १६९४।

(१) पञ्चवस्तुटीका हारिभद्री, ५०५०।

७७ पञ्चाशकानि- १९, हारिभद्राणि, ११८४

(१) पञ्चाशकवृत्तिः १९, नवाङ्गअभयदेवैः ११२४ वर्षे कृता, ७४८०।

(२) आद्यपञ्चाशकचूर्णिः ११७२ वर्षे यशोदेवीया सभावाच्या, ३३००।

७८ षोडशकसूत्रं हारिभद्रम्- ३३०।

(१) षोडशकवृत्तिः १५००।

७९ ३२ अष्टकवृत्तिः १०८० वर्षे जैनेश्वरी- ३३७४।

८० धर्मसूत्राऽष्टक ३२ सूत्रे हारिभद्रम्- २७३, २५६।

८१ धर्मबिन्दुवृत्तिमौनिचन्द्री- ३०००।

८२ योगबिन्दुसूत्रं हारिभद्रम्- ५२०।

(१) योगबिन्दुवृत्तिः ३६२०।

८३ प्रशमरतिवृत्तिः ११८५ वर्षे हरिभद्रीया- १८००।

८४ श्रावकभङ्गकादि-विचार-गाथादिवृत्तिर्विजयदेवसूरिकृता- ५५७।

८५ दर्शनसत्तरी हारिभद्री, गाथा- १२०

८६ जीवसमासवृत्तिर्मलधारिहेमचन्द्रीया- ६६२७।

८७ नवतत्त्वगाथानां देवगुप्तीयानां भाष्यस्य नवाङ्गअभयदेवीयस्य वृत्तिः ११७४ वर्षे यशोदेवी २४००।

८८ 'एगविहं सम्मरुई' इत्यादि सम्यक्त्व गाथावृत्तिः- १०५।

८९ विचारसारप्रकरणं प्रद्युम्नसूरिकृतं सोपयोगि, बहुसङ्ग्रहं गाथा ८९७।

९० पवयणसंदोह.....।

(१) पवयण-संदोहवृत्तिः.....।

९१ सिद्धिपञ्चाशिकासूत्र-वृत्ति तपाश्रीदेवेन्द्रसूरीये- ७१०।

९२ योनिप्राभृतं वीरात् ६०० धारसेनम्।

९३ पिण्डविशुद्धिसूत्रं जैनवल्लभम्- गाथा- १०३।

(१) वृत्तिः ११७६ वर्षे यशोदेवी- २८००।

(२) दीपिका लघुवृत्तिरूपा- ५५०।

(३) अणुवृत्तिः[1] ११८० वर्षे श्रीचन्द्रसूरिया ४४००।

९४ कर्मप्रकृतिसूत्रम्- गाथा- ४७५।

(१) टीका मलयगिरीया ससूत्रा- ८०००।

(२) वेदनादि ८ करणवाच्या चूर्णिः- ७०००।

(३) कर्मप्रकृतिचूर्णिटिप्पनकं मुनिचन्द्रीयम् १९२०।

९५ पञ्चसङ्ग्रहस्य शतक-सप्ततिका-कषायप्राभृत-सत्कर्मकर्मप्रकृति-सङ्ग्रहात्मकस्य वृत्तिः सूत्रकारचन्द्रर्षिकृता, पत्तनं विना न।

(१) पञ्चसङ्ग्रहवृत्तिर्मलयगिरीया.....।

९६ दीपकसङ्ग्रहवृत्तिर्मलयदीपकम् (?), प्राक् तुल्य दैगम्बरम्, भृ. दे. विना न।

९७ बृहत्कर्मविपाकवृत्तिः परमानन्दकृता- ९६०।

९८ बृहत्कर्मविपाकटिप्पनकम्-उदयप्रभसूरीयम- ४२०।

९९ बृहत्कर्मस्तववृत्तिः श्रीगोविन्दाचार्यकृता- १००९- १०९०।

१०० बृहत्कर्मस्तवटिप्पनं वृत्तिरूपम् उदयप्रभसूरीयम्- २९२।

१०१ बृहद्बन्धस्वामित्ववृत्तिः ११७२ वर्षे हरिभद्रीया- २९२।

१०२ वस्तुविचारसाराख्यबृहत्षडशीतिकस्य जैनवल्लभीयस्य वृत्तिः प्राकृता रामदेवी- ८०५।

१०३ आगमिकवस्तुविचारसारापरनामकस्य जिनवल्लभीयस्य बृहत्षडशीतिकस्य वृत्तिर्मालयगिरी- २१४०।

१०४ बृहत्शतकवृत्तिर्मलधारि-हेमचन्द्रीया- ३७४०।

१०५ जिनवल्लभीयस्य सार्धशतकस्य सूक्ष्मार्थविचारसारापराख्यस्य वृत्तिः ११७२ वर्षे हरिभद्रीया- ८५०।

१०६ सूक्ष्मार्थविचारसारापरनामक-जिनवल्लभीयसार्धशतकवृत्तिः ११७२ वर्षेः धनेश्वरीया ३७००।

१०७ शतकचूर्णिः- २३८०।

१०८ शतकटिप्पनकम्-उदयप्रभसूरीयम्- ९७४।

१०९ आगमिकवस्तुविचारसारस्य 'बृहत्षडशीतिक' इति प्रसिद्धनाम्नो जैनवल्लभस्य वृत्तिः- यशोदेवीभद्रसूरीया (?)- १६३०।

११० सूक्ष्मार्थविचारसारापराख्यसार्धशतकवृत्तेः टिप्पनकम्- १४००।

१११ सूक्ष्मार्थविचारसारख्यसार्धशतकवृत्तिः प्राकृता।

११२ आगमिकवस्तुविचारसाराख्यषडशीतिकवृत्तिः ११७३ वर्षे हरिभद्रसूरीया- ८५०।

११३ नव्यकर्मविपाकवृत्ति-नव्यकर्मस्तववृत्ति-नव्यबन्धस्वामित्वावचूर्णि-नव्यषडशीतिकवृत्ति नव्यशतकवृत्तयः ५ सूत्र कारतपाश्रीदेवेन्द्रसूरीयाः- १८८२, ८३०, ३८५, २८००, ४२४०।

११४ सत्तरिचूर्णिर्नास्ति।

११५ सत्तरिटीका प्राकृता श्रीचन्द्रगणिमहत्तरीया- २३००, २२२८।

११६ सत्तरीटिप्पनकम्, खरतररामदेवगणिकृतम्- गाथा ५४७।

११७ सत्तरीटीका मलयगिरीया.....।

११८ सत्तरीभाष्यं नास्ति।

११९ बृहत्सङ्ग्रहणीसूत्रं जिनभद्रगणिकृतम्- गाथा ५३०।

(१) बृहत्सङ्ग्रहणीवृत्तिः ११३९ वर्षे शालिभद्री २८००- २५००।

(२) बृहत्सङ्ग्रहणीवृत्तिर्मालयागरी ५०००।

(३) लघुसङ्ग्रहणीवृत्तिः 'नमिउं अरिहंताई' त्ति, मलधारिदेवभद्रीया ३५००।

१२० बृहत्क्षेत्रसमासवृत्तिर्मालयगिरि- ७८८७।

१२१ बृहत्क्षेत्रसमासवृत्तिः सिद्धिसूरीया ११९२ वर्षे- ३०००।

१२२ बृहत्क्षेत्रसमासवृत्तिः १२३३ वर्षे देवभद्रीया- १००० स्तम्मने।

१२३ बृहत्क्षेत्रसमासलघुवृत्तिर्नास्ति।

१२४ लघुक्षेत्रसमासवृत्तिर्हरिभद्रसूरीया- ५११।

१२५ क्षेत्रसमाससूत्रं संस्कृतमाह्निकचतुष्टयरूपम् उमास्वातिवाचककृतम्।

(१) वृत्तिः २८८०।

१२६ जम्बूद्वीपसङ्ग्रहणी वृत्तिः- १५०।

१२७ वीतरागस्तवाः.....२०।

---

१ प्रत्यन्तरे अनुवृत्तिः ११७६ वर्षे यशोदेवी- २८००। वृत्तिः ११८० वर्षे श्रीचन्द्रसूरीया ४४००।

(१) वृत्तिः प्रभानन्दी २१२५।

१२८ शोभनस्तुतयः- ९६।

(१) वृत्तिः पं. धनपालकृता, ९५०।

१२९ धनपालपञ्चाशिका।

(१) धनपालपञ्चाशिकावृत्तिः प्रभानन्दसूरीया ६४०, ११००।

१३० 'निम्मलनहे वि' इति वीरस्तवस्य पं. धनपालकृतस्य वृत्तिः सूराचार्यकृता- २२५।

१३१ भक्तामरप्रदीपिका भृगुपुरं विना नास्ति।

१३२ भक्तामरस्तववृत्तिः गुणाकराचार्यैः १४२६ वर्षे कृता- १५७२।

१३३ 'जनेन येन' स्तुतिवृत्तिः- ३०५।

१३४ 'नम्रेन्द्रमौलि' इत्यादि बप्पभट्टिस्तुतयः- ९६।

(१) वृत्तिः सहदेवकृता ७३५।

१३५ यत्राखिल ५८, श्रीतीर्थराज ४, जयवृषभ २८ स्तुतयः, शस्ता शमा ४, यूयं यूयम् ४, देवेन्द्रैरनिशं स्तोत्रवृत्तयः, सत्तरिसयठाणं ३५९, क्षेत्रसमासः ३८१ शैवेयम् इत्यादिस्तवनानि च श्रीसोमतिलकीयानि ११००- ७०- ६००- २५०- २१०- १९८०।

१३६ अजितशान्तिस्तववृत्तिः, श्रीगोविन्दीया ३००।

१३७ श्रीअजितशान्तिस्तववृत्तिः देव. विना न।

१३८ जयतिहुअणवृत्तिः २५०।

१३९ अजितशान्ति-भयहर-उवलग्ग-तं जयउ-सिग्घभव-भयरहियं-उल्लासिक्कम-सप्तस्मरणवृत्तिः १३६५ वर्षे जैनप्रभी २२३७।

१४० उपसर्गहर-भयहरस्तववृत्ती उपसर्ग. वृत्तिः ३०० भयहर. वृत्तिः १६०। देवपत्तनं विना न।

१४१ 'ऐन्द्रस्येव' इत्यादि लघुस्तववृत्तिः ३००।

१४२ धरणोरगेन्द्रस्तववृत्तिः।

१४३ सिद्धसेनकृताः २० द्वात्रिंशिकाः ८५०।

१४४ २४ जिनस्तवाः २४, ६, ६ गाथामिताश्च्यवनादि १५ वस्तुवाच्याः।

१४५ २४ जिनस्तवाः २४, ८, ८ गाथाः, च्चवनादि ३९ वाच्या मलधारिदेवप्रभीयाः।

१४६ जम्बुगुरुकृतजिनशतकवृत्तिः आशाम्बरी ससूत्रा १०२५ वर्षे कृताशाम्बमुनिना, अत्र क्रम कर- मुख-वाग्-वर्णन-रूपाः ४ परिच्छेदाः, सूत्रकाव्यानि १०० वृत्तिः १५५०।

१४७ समन्तभद्रकृत- 'स्वयम्भुवा भूतहितेन भूतले समञ्जसम्' इत्यादि २४ जिनस्तवाः २४, वृत्तयः दिगम्बरप्रभाचन्द्रीयाः १५४१।

१४८ आराधनापताका अनेकधा श्रीसोमप्रभादिसूर्यादिकृताः।

१४९ आराधनापताका[1] आञ्चलिककृता ९३१।

१५० दूसमदण्डिका गाथा ९२।

१५१ दूसमविच्छेयदण्डिका २०४।

१५२ दूसमदण्डिका ११२।

१५३ व्युच्छेददण्डिका गाथा १७३। द्वितीया तु योगसारगणिकृता।

१५४ शत्रुञ्जयादि ६३ तीर्थकल्पाः संस्कृतप्राकृताः, १३८९ वर्षादौ जिनप्रभसूरिकृताः प्रसिद्धतीर्थैतिह्यवाच्याः ३५०३।

१५५ शत्रुञ्जयमाहात्म्यं, कल्पितप्रायम्, आधुनिकधनेश्वरीयम्।

१५६ शत्रुञ्जयकल्पः, पालित्तयसूरिकृतः, पत्तनं विना न।

१५७ गौतमभाषितानि काव्यानि ४२ प्राकृतानि।

१५८ विवेकविलासो जिनदत्तसूरिकृतो द्वादशोल्लासात्मकः।

१५९ सोमनीतिः सोमदेवसुरिकृता।

१६० शतपदी ११७ पदार्थमयी आञ्चलिकप्रणीता १२९४ वर्षे महेन्द्रसिंहाचार्यकृता ५४५०।

१६१ निजतीर्थिककल्पितकुमतनिरासापरनामकतत्त्वबोधप्रकरणं हारिभद्रीयम् आञ्चलिकपौर्णिममतच्छिद्र[2] ५०४०।

१६२ आचरणाशतकं चरणसहस्रोदधिसत्कं शतपदीपूर्वपक्षरूपम्।

१६३ श्रावकसमाचारीवृत्तिर्देवगुप्ताचार्यीया १२००।

१६४ प्रवचनपाक्षिकादि २५ अधिकारप्रतिबद्धा आलापकाः १४४३ वर्षे श्रीकुलमण्डनसूरीयाः।

१६५ तपासामाचारी ७००।

१६६ सामाचारी १३६ अधिकारा मलधारिदेवप्रभसूरीया।

१६७ सामाचारी सुबोधा सर्वानुष्ठानगोचरा धनेश्वरशिष्यश्रीचन्द्रीया १४५०- १२२१।

१६८ सामाचारी अनेकविधा गच्छान्तरीया।

१६९ उपधानस्वरूपं श्रीदेवसूरिकृतम्।

१७० उपदेशमालावृत्तिः प्राकृता कृष्णर्षिशिष्यजयसिंहसूरिकृता ९१३ वर्षे।

१७१ उपदेशमालावृत्तिः सिद्धर्षीया हेयोपादेयेत्यादिका।

१७२ हेयोपादेयेत्यादिकैव केनापि कथाभिर्योजिता सं. १५००,९५०० वर्षे।

१७३ उपदेशमालाकर्णिका १२९९ वर्षे औदयप्रभी ससूत्रा १२२७४, असूत्रा- ११४११।

१७४ दोघट्टी उपदेशमालावृत्ति रात्नप्रभी सं. १२३८ वर्षे असूत्रा १११५० ससूत्रा ११८२९।

---

१ प्रत्यन्तरे 'पताका' शब्दो नास्ति।

२ प्रत्यन्तरे 'छिद्रम्'

१७५ उपदेशमालाघुवृत्तिः सिद्धर्षीया ३५८६।

१७६ उपदेशमालावृत्तिर्हेयोपादेयेत्यादिका श्रीसिद्धसुरीया ४१६०।

१७७ पुष्पमालावृत्तिर्मलधारि-सूत्रकृत-हेमचन्द्रैः ११७५ वर्षे कृता १३८६८।

१७८ धर्मोपदेशमालावृत्तिः ११९० वर्षे मुनिदेवीया ६८००।

१७९ धर्मोपदेशमालावृत्तिः ९१५ वर्षे जयसिंहीया।

१८० धर्मोपदेशमालाविवरणं स्तम्भतीर्थं विना न।

१८१ भवभावनावृत्तिः, सूत्रकृत्-मलधारी-हेमचन्द्रीया ११७० वर्षे १३०००।

१८२ दिनकृत्यवृत्तिः तपाश्रीदेवेन्द्रीया १२८२०।

१८३ धर्मरत्नवृत्तिः तपाश्रीदेवेन्द्रीया श्राद्ध २१गुणादिवाच्या ९७००- ९६८२।

१८४ हितोपदेशमालावृत्तिः सूत्रकार-प्रभानन्द-भ्रातृ पं. परमानन्दीया १३०४ वर्षे ९५००।

१८५ सम्यक्त्ववृत्तिः सूत्रकारचन्द्रप्रभसूरि-सन्तानीय-श्रीतिलकीया १२७७ वार्षिकी ८०००।

१८६ सम्यक्त्ववृत्तिः प्राकृतकथागर्भा १२०००।

१८७ दर्शनशुद्धिवृत्तिर्देवभद्रसूरिकृता ३८००।

१८८ दर्शनशुद्धिः सन्देहविषौषधीनाम्नी गाथा २६२।

१८९ 'माणुस्सखित्ते' ति विवेकमञ्जरीवृत्तिः १२२३ वर्षे अकलङ्कदेवीया।

१९० विवेकमञ्जरीवृत्तिर्बालचन्द्री ८०००।

१९१ उपदेशकन्दलीवृत्तिर्बालचन्द्री ७६००।

१९२ शीलोपदेशमालावृत्तिः १२९४ वर्षे रुद्रपल्लीय-श्रीसोमतिलकीया।

१९३ योगशास्त्र १२ प्रकाशवृत्तिर्हैमी १२००-१२३००।

१९४ योगशास्त्र केवल ४ प्रकाशवृत्तिः।

१९५ उपदेशपदसूत्रं हारिभद्रम् १०४०।

(१) उपदेशपदवृत्तिः ११७४ वर्षे मौनिचन्द्री सूत्रगर्भिता १५५००।

१९६ संवेगरङ्गशाला ११७५ वर्षे नवाङ्गाभयदेववृद्धभ्रातृजिनचन्द्रीया १००५३।

१९७ वन्दनकुलवृत्तिः श्रीजिनकुलसूरिकृता ४३७० पावात्र न (?)।

१९८ विषयविनिग्रहकु. वृत्तिः १३३७ वर्षे मालचन्द्री १०००८ स्तम्भतीर्थं विना न।

१९९ नवपदवृत्तिर्देवगुप्ताचार्यादिभिः १०७३ वर्षे कृता २१७०।

२०० नवपदवृत्तिः १०७३ वर्षे जिनचन्द्रागण्याद्यैः कृता- २२१०।

२०१ नवपदवृत्तिः कुलचन्द्रादिकृता १०७३ वार्षिकी २६००।

२०२ नवपदवृत्तिः ११६५ वर्षे यशोदेवोपाध्यायकृता ९५००।

२०३ अभिनवनवपदवृत्तिः ११८२ वर्षे सूत्र कारदेवेन्द्रीया ९०००।

२०४ भगवतीद्वादशशतकगततृतीयउद्देशसत्कजयन्तिप्रश्नोत्तर सङ्ग्रहप्रकरणस्य मानतुङ्गीयस्य वृत्तिर्जयन्तीचरित्रवाच्या प्राकृतमूला १२६० वर्षे मालयप्रभी ६६००।

२०५ ठाणवृत्तिर्हेमसूरिगुरुदेवचन्द्रीया, तत्सूत्रं प्रद्युम्नसूरिकृतम् १३००० (वृत्तिमानम्।)

२०६ धर्मोपदेशप्रकरणं प्राकृतमूलं-बहुकथासङ्ग्रहं १३०५ वर्षे यशोदेवीयम् ८३३२।

२०७ पवज्जाविहाणवृत्तिः १३३८ वर्षे प्रद्युम्नीया ४५००।

२०८ पवज्जविहाणवृत्तिः जैनप्रभी २४८।

२०९ धर्मविधिप्रकरणवृत्तिः जयसिंहसूरिकृता १११४२।

२१० धर्मविधिप्रकरणवृत्तिः १२९६ वर्षे उदयसिंहाचार्यीया ५५२०।

२११ ऋषिमण्डलस्तवः संस्कृते मेरुतुङ्गसूरिकृतः कारिका ७०।

२१२ 'इसिमंडल' इत्याद्यऋषिमण्डलस्तवः गाथा २७१।

२१३ 'इसिमंडल' ऋषिमण्डलवृत्तिः ४६१४।

२१४ 'भत्तिभर' इति ऋषिमण्डलसूत्रम् २०८।

(१) अस्य वृत्तिः आञ्चलिकभुवनतुङ्गीया।

२१५ गौतमपृच्छावृत्तिः खरतरश्रीतिलकोपाध्यायकृता ५६००।

(५) कथानुयोगग्रन्थाः।

२१६ कथाकोशसूत्रम् गाथा २३९।

(१) कथाकोशवृत्तिः ११०८ वर्षे जैनेश्वरी ६०००।

२१७ कथामणिकोशवृत्तिर्नेमचन्द्रकृता ४१ अधिकारसूत्र व्याख्यारूपा ११९० वर्षे आम्रदेवी।

२१८ शीलभावनावृत्तिः १२२९ वर्षे रविप्रभी ९५७०।

२१९ कथारत्नकोशः सम्यक्त्वादि ५० अधिकारः ११५८ वर्षे देवभद्रसूरीयः १२३००।

२२० धर्माख्यानककोशवृत्तिः प्राकृतबहुकथामयी पत्तनं विना न।

२२१ दानोपदेशमालावृत्तिः पत्राणि ७१।

२२२ प्रश्नोत्तरमालावृत्तिः १४२९ वर्षे देवन्द्रसूरिकृता।

२२३ उपदेशचिन्तामणिः १४३६ वर्षे आञ्चलिकजयशेखरसूरिकृता १२०९३।

२२४ श्रीआदिनाथचरित्रं प्राकृतं जयसिंहदेवराज्ये ११६० वर्षे वर्धमानसूरिरचितम् ११०००, १२०००।

२२५ श्री आदिनाथचरित्रं संस्कृतं सम्प्रति न।
२२६ श्री अजितचरितं सं. न।
२२७ श्री अजितचरितं प्राकृतं न।
२२८ श्री सम्भवचरितं सं. न।
२२९ अभिनन्दनचरितं सं. न।
२३० अभिनन्दनचरितं प्रा. न।
२३१ सुमतिचरितं सं. न।
२३२ सुमतिचरितं प्रा. मुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतम् ९६२१।
२३३ पद्मप्रभचरित्रं प्राकृतं न।
२३४ सुपार्श्वचरितं संस्कृतं न।
२३५ सुपार्श्वचरितं ११९९ वर्षे लक्ष्मणगणिकृतं गाथा ८७०० श्लोकाः १०१३८-१०९८८।
२३६ चन्द्रप्रभचरितं सं. १३०२ वर्षे सार्वनन्दम् ६१४१।
२३७ चन्द्रप्रभचरितं सं. प्रा. १२६४ वर्षे देवेन्द्रसूरीयम् ५३२५।
२३८ चन्द्रप्रभचरितं प्रा. याशोदेवम् ६४००।
२३९ चन्द्रप्रभचरितं प्रा. श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रम् ८०३२।
२४० सुविधिचरितं प्रा. न।
२४१ सुविधिचरितं सं. न।
२४२ शीतलचरितं सं. न।
२४३ शीतलचरितं प्रा. न।
२४४ श्रेयांसचरितं सं. १३३२ वर्षे मानतुंगाचार्यैः कृतम् ५१२४ स्तम्भतीर्थं विना न।
२४५ श्रेयांसचरितं प्रा. देवभद्रीयम् ११०००, स्तम्भतीर्थं विना न।
२४६ श्रेयांसचरितं प्रा. श्रीजयसिंहदेवराज्ये हरिभद्राचार्यकृतम्, गाथा ६५८४, स्तम्भतीर्थं विना न।
२४७ वासुपूज्यचरितं सं. ११९९ वर्षे वर्धमानचार्यकृतम् ५४९४।
२४८ वासुपूज्यचरितं प्रा. चान्द्रप्रभं हेमसूर्यादिशोधितम् ८०००, स्तम्भतीर्थं विना न।
२४९ विमलचरितं सं. न।
२५० विमलचरितं प्रा. न।
२५१ अनन्तचरितं प्रा. गाथाबद्धं १२१६ वर्षे श्रीनेमिचन्द्रसूरीयं गाथाः १२०००।
२५२ धर्मचरितं सं. नेमिचन्द्रीयं न।
२५३ धर्मचरितं प्रा. न।
२५४ शान्तिचरितं सं. १३३२[१] वर्षे मौनिदेवम् ४८८५।
२५५ शान्तिचरितं सं. माणिक्यसूरीयम् ५५७४।
२५६ शान्तिचरितं सं. पौर्ण- अजितप्रभसूरिभिः १३१७ वर्षे कृतम् ४९११।
२५७ शान्तिचरितं प्रा. गद्यपद्यमयम् ११६० वर्षे श्रीहेमसूरिगुरुदेवचन्द्रसूरीयम् १२१००।
२५८ श्रीशान्तिचरितं सं. श्रीमणिभद्रसूरिणा १४०२ वर्षे कृतम् ६२७२।
२५९ कुन्थुचरितं सं. विबुधप्रभसूरिकृतम् ५५५५।
२६० कुन्थुचरितं प्रा. न।
२६१ अरचरितं प्रा. न।
२६२ अरचरितं सं. न।
२६३ मल्लिचरितं प्रा. ११७५ वर्षे जैनेश्वरम् ५५५५।
२६४ मल्लिचरितं सं. श्रीविनयचन्द्रीयम्।
२६५ मल्लिचरितं बहुप्राकृतं हरिभद्रीयं कुमारपालराज्ये कृतं गाथाकाव्यमयं ग्रन्थाग्रम् ९०००।
२६६ मुनिसुव्रतचरितं सं. पौर्ण. मुनिरत्नसुरिकृतम् २० स्थानककथाकलितम् ५१८५।
२६७ मुनिसुव्रतचरितं प्रा. ११९३ वर्षे चंद्रसूरिरइयं गाथा १०९९४।
२६८ मुनिसुव्रतचरितं बहुकथानकं ९ भवं विनयचन्द्रसूरीयम् ४५५२।
२६९ नमिचरितं सं. न।
२७० नमिचरितं प्रा. न।
२७१ नेमिचरितं प्रा. १२१६ वर्षे हरिभद्राचार्यैः कृतम् ८०३२।
२७२ नेमिचरितं प्रा. भवभावनावृत्त्यन्तर्गतमन्तरङ्गवक्तव्यतामिश्रम् ५१०२
२७३ नेमिचरितं प्रा. गद्यपद्यमयं १२३३ वर्षे देवसूरिशिष्यरत्नप्रभीयम् १२६००।
२७४ पार्श्वचरितम् सं. सर्वानन्दसूरिकृतम्।
२७५ पार्श्वचरितं सं. १२१८ वर्षे भावदेवसूरिकृतम् - ६७७४- ६४००।
२७६ पार्श्वचरितं सं. माणिक्यचन्द्रसूरिकृतं- १२७६ वर्षे - ५२७८।
२७७ पार्श्वचरितं प्रा. ११६५ वर्षे नवाङ्ग-अभयदेवप्रथमशिष्य-देवभद्राचार्यैः कृतम्- ९०००।
२७८ पार्श्वचरितं प्रा. दशभववाच्यं गाथा २५६४ ग्रन्थाग्रम्- ३२००।
२७९ महावीरचरितं सं. न।
२८० वीरचरित्रं प्रा. ११३९ वर्षे गुणचन्द्रगणिकृतम्- १२०००
२८१ वीरचरित्रं प्रा. ११३९ वर्षे नेमिन्द्रसूरिकृतम्- १२०००।

१ प्रत्यन्तरे १३२२ वर्षे

२८२ वीरचरित्रं प्रा. ११३९ वर्षे नेमिचन्द्रसूरिकृतम् २८१०- २४००।

२८३ महापुरुषचरित्रं मु. प्रा. शलाकापुरुषवृत्तवाच्यं ९२५ वर्षे शीलाचार्यैः कृतम् १००००।

२८४ महापुरुषचरित्रं प्रा. ६३ शलाकापुरुषवृत्तवाच्यं आम्रकृतं गाथा- ८७९०, श्लोकाः १००५०।

२८५ कथावलीप्रथमपरिच्छेदः प्रा. मु. २४ जिन-१२ चक्र्यादि-हरिभद्रसूरिपर्यंतसत्पुरुषचरित्रवाच्यो भाद्रेश्वरः २३८००।

२८६ त्रिषष्टिः श्रीऋषभादि ६३ महापुरुषवृत्तप्रतिबद्धां श्रीहेमसूरीया सम्पूर्णा।

२८७ त्रिषष्टीयं श्रीआदिचरितं केवलं- ५०००।

२८८ त्रिषष्टीयं रामायणं पृथक्- ३७१४।

२८९ त्रिषष्टीयं नेमिचरितं - ४९६५।

२९० त्रिषष्टीयं पार्श्वचरितं - १६००।

२९१ त्रिषष्टीयं महावीरचरित्रं- ३४९२ प्रत्यन्तरे- ५१६१ देवगिरि।

२९२ परिशिष्टपर्व जम्बूप्रमुखार्यरक्षितान्तपुरुषवाच्यं- ३४६०।

२९३ त्रिषष्टीगतं नलचरित्र- ११७७।

२९४ पद्मानन्दमहाकाव्यं २४ जिनवृत्तिरूपं पं. अमरचन्द्रकविकृतं १८ सर्गरूपं ८१९१।

२९५ श्रीपार्श्व १० गणधरचरित्राणि प्रा. मुख्यानि ४३५०।

२९६ अमरजिनस्य भाविनश्चरित्रं मुनिरत्नसूरिभिः १२५२ वर्षे कृतम्।

२९७ पुण्डरीकचरित्रं सं. १३७२ वर्षे कामलप्रभं क्वचिद् अनागमिकार्थे- ३३००।

२९८ ११ गणधरचरित्रं सं. खरतरदेवमत्युपाध्यायीयं- ६५००।

२९९ हरिवशंचरितं सं. नेम्यादिबहुवृत्तवाच्यमाद्यन्तरहितं श्लोकाः ९०००।

३०० हरिवशंचरितं सं. हन्दिककविकृतं पुराणभाषानिबद्धं नेम्यादिवृत्तवाच्यं ९०००।

३०१ पद्मचरितं प्रा. वीरात् ५३० वर्षेषु गतेषु विमलसूरिभिः कृतं मुख्यवैराग्यरसं - १०५५०।

३०२ सीताचरितं प्रा. ३१००।

३०३ सीताचरितं धर्मशास्त्रगतं प्राकृतं ३४००।

३०४ प्रत्येकबुद्धचरितं १२६१ वर्षे श्रीतिलकीयं- ६०५०।

३०५ जम्बुस्वामिचरितं प्रा. ८२ (?) वर्षे गाथा १६४४।

३०६ जम्बुस्वामिचरितं प्रा. सन्ध्यादिबन्धे १०१६ वर्षे पं. सागरदत्तेन कृतं- २६००।

(१) तस्य टिप्पनं ११००।

३०७ पृथ्वीचन्द्रचरितं प्रा. मुख्यं गाथादिमयं- ११७१ वर्षे शान्तिसूरिभिः कृतं ७५००।

(१) पृथ्वी. टिप्पनं १२२६ वर्षे कानकचन्द्रं ११००।

(२) पृथ्वी. चरित्रसङ्केतो विषमपदव्याख्यारूपो रत्नप्रभसूरिकृतः- ५९५।

३०८ समरादित्यचरित्रं प्रा. मूलं हारिभद्रं गाथा १००००।

३०९ समरादित्यचरित्रं सं. १३२४ वर्षे प्रद्युम्नीयं ४८७४।

३१० पाण्डवचरित्रं सं. मलधारिदेवप्रभसूरीयं ९८८४।

३११ प्राभावकचरितं सं. वज्रस्वामिप्रमुखप्रभावकाचार्यवृत्तवाच्यं १३३४ वर्षे प्राभाचन्द्रं ५७७४।

३१२ कुमारपालप्रतिबोधः बहुप्रा. शतार्थिसोमप्रभसूरिभिः १२४१ वर्षे कृतः ८८००।

३१३ कुमारपालप्रतिबोधः सं. १५७५।

३१४ मुनिपतिचरित्रं प्रा. ११७२ वर्षे हरिभद्रीयं गाथा ६४४ श्लो. ८०५।

३१५ मुनिपतिचरित्रं सं. १००५ वर्षे जम्बूनागमुनिकृतं ३२०० उद्ध. २७००।

३१६ महीपालचरित्रं स्तम्भतीर्थं विना न।

३१७ उपमितभवप्रपञ्चोद्धारः सं. देवसूरिकृतः २३७०।

३१८ उपमितप्रभवप्रपञ्चासारसमुच्चयो वार्धमानः १४६०।

३१९ उपमितसारोद्धारः सं. १२९८ वर्षे श्रीचन्द्रशिष्यदेवेन्द्रसूरीयः- ५७३०।

३२० कुवलयमाला प्रा. मु. ८३५ वर्षे उद्योतनसूरीया- १३०००।

३२१ कुवलयमाला सं. रत्नप्रभसूरीया- ३८९४।

३२२ भुवनसुन्दरीचरित्रं प्रा. गाथाबद्धं नाइनकुलश्रीविजयसिंहाचार्यैः ९७५ वर्षे कृतं गाथा ८९११।

३२३ हरिविक्रमचरित्रं सं. आगमिकजयतिलकसूरीयं।

३२४ सुलसाचरित्रं सं. आगमिकजयतिलकसूरीयं।

३२५ मलयसुन्दरी कथा सं. आगमिकजयतिलकीया- २४३०।

३२६ मलयसुन्दरी कथा प्रा. न।

३२७ मनोरमाचरित्रं प्रा. मु. गाथामयं च ११४० वर्षे श्रीअभदेवसूरीशिष्य-वर्धमानसूरीयं १५०००।

३२८ सप्तक्षेत्रीनामकथा ११७८ वर्षे गुणाकरीया- ७२००।

३२९ सुदर्शनाचरित्रं प्रा. तपाश्रीदेवेन्द्रीयं गाथा ४०५२।

३३० मृगावतीचरित्रं मलधारिदेवप्रभसूरीयं- १८७३।

३३१ सुरसुन्दरीकथा १६ परिच्छेदा धनेश्वरमुनिकृता संवत् १०१५ वर्षे गाथा ४०००।

३३२ बृहत्पूजाष्टकं रत्नचूडकथयाङ्कितम्।

३३३ रत्नचूडकथा पूजाफलवाच्या नेमप्रभाचार्यीया- ३५००।

३३४ पूजाष्टककथा प्रा. १०६०।

३३५ पूजाष्टककथा सं. न।

३३६ विजयचन्द्रकेवलिकथा प्रा. पूजाष्टककथागर्भा- ११२७ वर्षे चन्द्रप्रभसूरीया ४७०० गाथा ३९१०।

३३७ विजयचन्द्रकेवलिकथारहितास्तद्गताः पूजाष्टककथाः प्रा.।

३३८ कौमुदीकथा जैनकृता १६००।

३३९ पञ्चमीकथा दशकथानकात्मिका प्रा. महेश्वरसूरीया- २००४।

३४० नर्मदासुन्दरीकथा १७००।

३४१ जयसुन्दरीकथा प्रा. न।

३४२ सर्वाङ्गसुन्दरीकथा प्रा. २६७५।

३४३ ऋषिदत्ताचरित्रं प्रा. न।

३४४ कुसुमसारकथा नेमिचन्द्राचार्यैः १०९९ वर्षे कृता गाथा- १७००।

३४५ दमयन्तीकथा २, ५० (?)

३४६ सौभाग्यसुन्दरीकथा।

३४७. जिनदत्तकथा १२००।

३४८ कथारत्नसागरः १५ तरङ्गात्मकोमलधारिनरचन्द्रसूरीयः १५ कथाः।

३४९ धन्यशालिभद्रचरित्रं पूर्णभद्रगणिना १२८५ वर्षे कृतं श्लोकाः- १४६०।

३५० स्थूलिभद्रचरित्रं तपाजयानन्दसूरिकृतं श्लोकाः ६८४।

३५१ पञ्चाख्यानकं पूर्णभद्राचार्यैः १२५५ वर्षे शोधितम् ४६००।

३५२ प्रद्युम्नचरित्रं शाम्बचरित्रं १०७०।

३५३ प्रबन्धचूडामणिर्मेरुतुङ्गसूरीयः ३५०४।

३५४ २४ प्रबन्धाः ८४ कथाश्च राजशेखरसूरीयाः।

३५५ लीलावतीकथा भूषणभट्टसुतकृताऽऽद्यरसमिश्रिता च परसमयगता गाथाः १४३९।

३५६ कथापुस्तिका अनेकविधकथाभिरनिर्दिष्टनामिकाभिरुपेताः।

३५७ कथापुस्तिका विविधाः।

(६) न्याय-तर्कग्रन्थाः।

३५८ सम्मतिसूत्रं सिद्धसेनदिवाकरकृतम् गा. १७०।

(१) सम्मतिवृत्तिर्मल्लवादिकृता- ७००।

(२) सम्मतिवृत्तिः काण्डत्रयोपेता प्रद्युम्नशिष्या अभयदेवीया २५०००।

(३) सम्मतिवृत्तिरन्यकर्तृका।

३५९ प्रमाणकलिकाख्यवार्तिकसूत्र-वृत्ती शान्त्याचार्यीये, सू. ६०, वृ २८७३।

३६० नयचक्रवालवृत्तिर्मल्लवादीयद्वादशारनयक्रतुम्बसूत्रव्याखयारुपा ससूत्रा- १८०००।

३६१ अनेकान्तजयपताकासूत्रं हारिभद्रं सदसदादि ४अधिकारं ३६००- ३५००।

३६२ अनेकान्त. वृत्तिर्हारिभद्री- ८२५०।

(१) तट्टिप्पनकं मौनिचन्द्रम् २००।

३६३ स्याद्वादरत्नाकरसूत्रं ८ परिच्छेदं वादिश्रीदेवसूरिकृतम्।

३६४ स्याद्वादरत्नाकर आछणिया वादिश्रीदेवसूरिकृताः ३६०००, प्रथमखण्डं विना।

(१) रत्नाकरावतारिकाख्या तल्लघुटीका रत्नप्रभीया- ५०००।

(२) तट्टिप्पनके न।

३६५. न्यायावतारसूत्रं सिद्धसेनीयम्।

(१) तद्वृत्तिर्हारिभद्री च, सू.३२, वृत्तिः २०७३।

(२) न्यायावतारवृत्तिः सिद्धव्याख्यानिककृता।

३६६ आप्तमीमांसालङ्कारनामाष्टसहस्रो तर्को विद्यानन्दसूरीयः ८०००।

३६७ प्रामाणमीमांसासूत्र-वृत्ति हेमसूरीये सू..... वृ.....।

३६८ अनेकान्तावादप्रवेशो हारिभद्रः- ७००- ७३०।

३६९ सर्वज्ञसिद्धिप्रकरणं हारिभद्रम् ३००।

३७० द्रव्यालङ्कारस्तर्कः पं. रामचन्द्रगुणचन्द्रकृतः ४००।

३७१ प्रमाणसङ्ग्रहप्रकरणं ९ प्रस्तावं जैनं ७१२।

३७२ प्रमेयरत्नकोशः सर्वज्ञसिद्ध्यादि २३ वादस्थलः चन्द्रप्रभसूरीयः १६८०।

३७३ षड्दर्शनदिङ्मात्रविचारः।

३७४ षड्दर्शनसमुच्चयसूत्र-वृत्ती, सूत्र- ८६, वृ.१२५२।

३७५ परिणामिवस्तुव्यवस्थापनं १८०।

३७६ बे टिकनिषेधो वस्त्रव्यवस्थापनरूपः।

३७७ सर्वार्थप्रभाभावाद्यभावनिरासवादस्थलानि ४, ३१०।

३७८ केवलिभुक्ति-स्त्रीमुक्तिप्रकरणं शब्दानुशासनकृत्-शाकटायनकृत, तत्सङ्ग्रहश्लोकश्च ९४, प्रत्यन्तरे ९०।

३७९ हारिभद्रो नन्दिवृत्त्याद्यनमस्कारसम्बद्धसर्वज्ञव्यस्थापनावादः।

३८० सर्वज्ञव्यवस्थापनावादो योऽपि सोऽपि बहुरल्पो वा।

३८१ अपशब्दनिराकरणं २१५।

३८२ भेदाभेदाद्यनेकान्तव्यस्थापनं च- २००।

३८३ स्याद्वादमञ्जरी मल्लिषेणाचार्यैः १३४९ वर्षे कृता ३०००।

३८४ समन्तभद्रकृत-श्रीवर्धमानस्तोत्रवृत्तिविषमार्थाः।

३८५ अपौरुषेयवेदनिराकरणम्।

३८६ प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरणं च यशोदेवसाधुकृतम् आद्यं तु त्रिवर्गपरिहारेण[1] अपौ.पत्राणि ११ प्रत्यन्तरे प. १४।

३८७ श्वेताम्बरदर्शनसिद्धिः प. १९।

३८८ लोकतत्त्वनिर्णयो हारिभद्रः- १७०।

३८९ न्यायकुमुदचन्द्रसूत्र-वृत्ति दिगम्बरीयअकलङ्कदेव-प्रभाचन्द्रकृते सू. वृ. १६०००।

३९० प्रमेयरत्नमाला परीक्षामुखलघुवृत्तिरपरनाम्नी, तत्सूत्रं च- वृ. १५६७, सू. १४०।

३९१ न्यायविनिश्चयवृत्तिः- अनन्तवीर्यकृता दैगम्बरी।

३९२ आप्तपरीक्षावृत्तिस्तत्त्वार्थसूत्राद्यश्लोकव्याख्यारूपा।

३९३ पत्रपरीक्षा च पत्रवाक्यप्रकारव्याख्या।

३९४ प्रमेयकमलमार्तण्डो दिगम्बरीयप्रभाचन्द्रीयः – ११०००।

३९५ अध्यात्मतरङ्गिणीटीका दिगम्बरीयतर्करूपा।

३९६ हेतुबिन्दुटीका तर्करूपा।

३९७ प्रमाणवार्तिकाऽऽपरिच्छेदसूत्रं बौद्धीयम्,।

(१) तद्वृत्तिश्च आद्यपत्र- २- ३ रहिता।

३९८ तर्कभाषा टीका बौद्धमतवाच्या बालावबोध ३ परिच्छेदा ८४०।

३९९ न्यायबिन्दुसूत्रं बौद्धमतवाच्यम्।

(१) तट्टीका च धर्मोत्तराचार्यकृता सू. टी. १४७७।

४०० न्यायप्रवेशटीका च हारिभद्री सू. टी. ५९७।

४०१ न्यायप्रवेशकटिप्पनं ११६९ वर्षे श्रीचन्द्रीयम्।

४०२ तत्त्वसङ्ग्रहः प्रकृतीश्वरादिनिरासवाच्यो बौद्धः- ३७१६।

४०३ न्यायकुसुमाञ्जलितर्कः ५०४६ मितः।

४०४ न्यायतर्कसूत्रं अक्षपाद।

(१) भाष्य वात्स्यायन।

(२) वार्तिक भारद्वाज।

(३) तात्पर्यटीका वाचस्पति।

(४) तत्परिशुद्धि उदयन।

(५) न्यायालङ्कारवृत्ति श्रीकण्ठ।

(६) पञ्चप्रस्थानन्यायतर्काणि अभयतिलकोपाध्यायकृतानि षडपि ५३०००।

४०५ न्यायकलिकाटीका नैयायिकीय १६ पदार्थतत्त्वावाच्या ४०५।

४०६ सारसङ्ग्रहो नैयायिकीय १६ पदार्थवाच्यः।

४०७ न्यायभूषणसूत्रं न्यायसारापरनामकं ४००।

(१) न्यायसारटीका जायसिंही- २९००।

(२) न्यायसारटीका न्यायसारविचाराख्या।

(३) न्यायसारपञ्जिका।

४०८ मतमनोहरग्रन्थगतहेतुसाध्यगताशेषविशेषनिरूपरणसूत्रव्याख्यारूपं ७४०।

४०९ षट्पदार्थप्रवेशप्रकरणं वैशेषिकीयं- ९५०।

४१० भास्करभूषणः सृष्ट्यादिवाच्यः।

४११ किरणावली।

४१२ न्यायतन्त्रटीका व्याख्याखण्डम्।

४१३ किरणावलीटिप्पनके द्रव्यपदार्थः २३७३।

४१४ कन्दली-किरणावल्योः सूत्रम् ७७७।

४१५ न्यायकन्दलीटीका श्रीधरेण १०४८ वर्षे कृता वैशे|षि|कमता ६०००।

४१६ कन्दलीटिप्पनकं पं. नरचन्द्रकृतम् - २५००।

४१७ कन्दलीपञ्जिका १३८५ वर्षे मलधा.राजशेखरीया- ४०००।

४१८ न्यायलीलावती।

४१९ साङ्ख्यसप्ततिसूत्र- वृत्ति ७६ वृ.....।

४२० वृद्धवादसारप्रकरणं विजिगीषुयोग्यं भट्टश्रीविलासकृतं- ९००।

४२१ शास्त्रदर्पणो ब्रह्माऽद्वैतसिद्धयादीवाच्यः।

४२२ खण्डनखण्डखाद्ये श्रीहर्षकविकृते परिच्छेदाः ४, ५०००।

(१) खण्डनखण्डटिप्पनकम्।

(७) व्याकरण-कोश-ग्रन्थाः।

४२३ हेमव्याकरणसूत्राणि ११००।

४२४ उणादि ३००।

४२५ लिङ्गानुशासनम् २००।

(१) हैमचतुष्क बृ. हैमाख्यातबृहद्वृत्तिहैमतद्धितबृहद्वृत्तिहैमकृद्वृत्तिः, एवम् १८०००।

---

१ कवर्ग-चवर्ग-टवर्ग-इति वर्गत्रयगतव्यञ्जनानि परिहृत्यान्यैर्व्यञ्जनैरेतत् प्रकरणं रचितम्।

(२) १- ३- ४- ५- ६- ७- ८- १२- २७ पादे बृहन्न्यासः शब्दमहार्णवनामा।

४२६ धर्मघोष कृतन्यासः- ९००० च।

४२७ रामचन्द्रकृतन्यासः- ५३००० न।

४२८ परिभाषावृत्तिः- ४०००।

४२९ हैमन्यासोद्धारो लघुन्यासः कनकप्रभकृतः २८ पादसत्कः।

४३० कक्षापटो हैमबृहद्वृत्तिविषमपदव्याख्यारूपः।

४३१ हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात २- कृ-३ढुण्ढिकः।

४३२ हैमप्राकृतपाद ४वृत्तिः २४८५।

(१) प्राकृतवृत्तिदीपिका हरिभद्रसूरिकृता १५००।

(२) प्राकृतरूपसिद्धिः- हैमप्राकृतवृत्त्यवचूरिरूपा मलधा. पं. नरचन्द्रकृता प्राकृतप्रबोधवाच्या १६००।

४३३ हैमचतुष्क आख्यात-कृत्-तद्धितलघुवृत्तिः- ६०००।

४३४ काकलकायस्थकृत हैमलघुवृत्ति१चतुष्का-२ आख्यात-३ कृत् -४तद्धितढुण्ढिकादीपिका वाच्या।

४३५ हैमचतुष्कवृत्ति अवचूरिः २२१३।

४३६ हैमलिङ्गानुशासनवृत्तिः ३६८४।

४३७ हैमधातुपारायणम्।

४३८ हैमोणादिवृत्तिः - ३२५०।

४३९ हैमन्यायवृत्तिः - १७५।

४४० हैमनाममाला - १८००।

(१) हैमनाममालावृत्तिः ६ काण्डा प्रभुश्रीहेमकृता ९९९७

४४१ हैमानेकार्थनाममालासूत्रं शेषं १८२।

(२) हैमानेकार्थनाममाला [व्याख्या] स्वरकाण्डषट्का, आदौ स्वर-व्यञ्जनक्रमेण बद्धनामाऽन्तव्यञ्जनक्रबद्धा श्री महेन्द्रसूरीकृता १०६६०।

४४२ हैमदेशीनाममालासूत्रम्।

(१) हैमदेशीनाममालाया रत्नावली- इति नाम्नी वृत्तिः वर्गाष्टकक्रमनिबद्धा - ३३२० – ३५००।

४४३ समास-तद्धितसारप्रकरणं हैमसम्बद्धम्।

४४४ हैमविभ्रमसूत्र-वृत्ति पं. गुणचन्द्रकृते सू. २१, वृ- ६००।

४४५ कारकासमुच्चयोऽधिकारत्रयात्मकः आद्यद्वयवृत्तियुग् १२८० वर्षे श्रीप्रभसूरिकृतः प्राथमिकार्यः।

४४६ मुष्टिव्याकरणं मलयगिरिकृतम्।

४४७ कातन्त्रापरनामकलापकचतुष्काख्यातकृद्वृत्तिर्दुर्गसिंहकृता।

४४८ कातन्त्राचतुष्काख्यातकृत्पञ्जिका-त्रिलोचनदासकृता दौर्गसिंहवृत्तिविषमपदव्याख्यारूपा।

४४९ आख्यातावचूरिर्लौकिकव्याकरणसम्बद्धा प. ३६।

४५० लौकिककृद्वृत्तिटिप्पनकं तत्सूत्र-वृत्तिगर्भम्।

४५१ कातन्त्रलघुवृत्तिः २१००, ८०००।

४५२ धातुपारायणं त्रिलोचनदासीयम्।

४५३ कलापकविशेषव्याख्यानं न्यायरूपं धातुसूत्रं यावत्- ३२५।

४५४ औक्तिकं वृत्तित्रयोद्धाररूपम्।

४५५ कौमारसारसमुच्चयः श्लोकरूपो वृत्तिमयोद्धारसङ्ग्रहात्मकः- ३१०।

४५६ कलापकोणादिवृत्तिः पाद ५ सत्का।

४५७ षड्भाषालक्षणपारायणं ३४।

४५८ प्रमेयरत्नभाण्डागारे विशेषविवरणं कलापकाख्यातकृद्विषयम्।

४५९ नामाख्यातीयवृत्तिर्लक्षणकियत्पदसङ्ग्रहात्मिका- ६२५।

४६० कातन्त्रप्रयोगसमुच्चयः ५००।

४६१ कातन्त्रोत्तरं विद्यानन्दापरनामकं समासप्रकरणं यावत् विद्यानन्दसू. कृ. व्या।

४६२ लिङ्गानुशासनममरकृतं अमरकोशसम्बद्धकाण्डत्रये १४७०।

४६३ लिङ्गानुशासन ३४ आर्यामितं वामनकृतं ३४।

४६४ अमरकोशशेषः।

४६५ अमरकोशटिप्पनकम्।

४६६ स्यादिसमुच्चयः पं. अमरकविकृतः।

४६७ त्यादिसमुच्चयः अमरकविकृतः।

४६८ लौकिकत्यादिप्रक्रिया सर्वधरकृता।

४६९ सारस्वतव्याकरणं १२२०।

४७० सारस्वत टिप्पनकं १२००।

४७१ सारस्वतव्याकरणप्रक्रिया।

४७२ गणरत्नमहोदधिः पं. वर्धमानेन ११९७ वर्षे कृतः।

४७३ शाकटायनव्याख्या बहव्यः।

४७४ शब्दप्रभेदानुयायिनाममाला महेश्वरकविकृता।

४७५ काशिकवृत्तिः पाणिनिकृता (?)।

४७६ व्याकरणरत्नकोशः पाणि. लघुवृ.।

४७७ रूपावतारकसंक्षिप्तव्याकरणं पाणिनीयसंग्रहात्मकं समासान् यावत्।

(८) छन्दःसाहित्यग्रन्थाः।

४७८ हलायुधच्छन्दोवृत्तिर्भटहलायुधकृता १२३३।

४७९ छन्दप्रदीपो विप्रकृतः ९००।

४८० वृत्तरत्नाकरो भट्टकेदारकृतः १५०।

(१) तद्वृत्तिः श्रीकण्ठकृता ८२०।

४८१ जयदेवच्छन्दःशास्त्रवृत्तेः टिप्पनकं श्रीचन्द्रसूरिकृतम्।

४८२ नन्दिताढ्यप्राकृतछन्दोवृत्तिः श्रीदेवाचार्यशिष्यप्रकरणसु (शत ?) कारिरत्नचन्द्रगणिकृता।

४८३ छन्दोऽनुशासनापरनामकच्छन्दश्चूडामणिवृत्तिर्हेमसूरिकृता ४१००- २९९९।

४८४ गाथारत्नकोशो गाथालक्षणादिवाच्यः ७३।

४८५ काव्यप्रकाशसूत्र-वृत्ती १० उल्लासे सू. १४१ वृ. १७३०।

४८६ जयन्तीदीपिका जयन्तपुरोधः कृता ४७३०।

४८७ काव्यप्रकाशसङ्केतः १२१६ वर्षे माणिक्यचन्द्रीयः ३२४४।

४८८ काव्यप्रकाशविकाशः.....।

४८९ काव्यप्रकाशावचूर्णिः १२५०।

४९० काव्यप्रदीपिका सूत्र-वृत्तिगर्भा पाल्हदेवकृता ८०००।

४९१ काव्यानुशासननामालङ्कारचूडामणिवृत्तिः श्रीहेमसूरीया ८ अध्याया २८००- ४२०० प्रत्यन्तरे।

४९२ अलङ्कारचूडामणिवृत्तिविवेको हेमसूरीयः ४०००।

४९३ दण्ड्यलङ्कारः....।

४९४ अलङ्कारमहोदधिटीका मलधा. नरेन्द्रप्रभीया १२८ वर्षे कृता ४५००।

४९५ कविशिक्षा नाम काव्यकल्पकता सू. ५००।

४९५.१ सूत्रवृत्तिः पं. अमरकविकृता वृ. ३३५७।

४९६ वाग्भटालङ्कारवृत्तिः ६००।

४९७ रूद्रटालङ्कारः ६ अध्यायः।

४९८ कविशिक्षा बप्पभट्टशिष्यविनयचन्द्रकृता।

४९९ अलङ्कारसर्वस्वं राजानकश्रीरुचककृतं १६००।

५०० काव्यकल्पलतापरिमलः पं. अमरकविकृतः।

५०१ श्रीभोजराकृताऽलङ्कारस्य वृत्तिः पदप्रकाशनाम्नी आजडकृता काव्यबन्धादिवाच्या...।

५०२ चन्द्रालोकालङ्कारः पं. अमरकविकृतकाव्याम्नायः प. २०।

(९) गद्यपद्यकाव्यग्रन्थाः।

५०३ श्रीद्व्याश्रयमहाकाव्यं श्रीहेमसूरीयं २० सर्ग संस्कृतं २८२८- ३०२८।

५०४ द्व्याश्रयकाव्यपाद २८ वृत्तिः, १३१२ वर्षे खरतर अभयतिलकीया १७५७४।

५०५ प्राकृतद्व्याश्रयसूत्रं है ९५०।

५०६ प्राकृतद्व्याश्रयपाद ४ वृत्तिः खरतरपूर्णकलशीया १३०७ वर्षे कृता ४२३०।

५०७ धर्माभ्युदयकाव्यं वस्तुपालचरित्रवाच्यं उदयप्रभीयं ५२००- ५०४०।

५०८ श्रीशालेयं काव्यं शालिभद्रचरित्रवाच्यं पं. धर्मकुमारकृतं १३३४ वर्षे १२२४।

५०९ श्रीधर्मनाथमहाकाव्यं २१ सर्ग दिगम्बरीयकाव्यादिबन्धकविहरिचन्द्रकृतम्।

५१० श्रीनेमिचरित्रं महाकाव्यं संस्कृतं गद्य-पद्यमयं बहुखण्डितं १०९० वर्षे भोजराजराज्ये सूराचार्यकृतम्।

५११ श्रीनेमिमहाकाव्यटिप्पनकं १४००।

५१२ श्रीनेमिनिर्वाणकाव्यं वाग्भटकृतं १५ सर्ग १३६०।

५१३ नेमिदूतकाव्यं विक्रमकृतम्।

५१४ कुट्टिनीमतकाव्यं सं. दामोदरकृतं ११९०।

५१५ विक्रमाङ्काभ्युदयकाव्यम् ५१७।

५१६ बालभारतं ४३ सर्गं अमरकविकृतं परसमयवाच्यं ६७७४।

५१७ अभिनन्दकाव्यं रामचरित्रं वा ३६ सर्गम्।

५१८ सोमपालविलासकाव्यम्।

५१९ जल्हणकविकृतकाव्यम् १०००।

५२० नरनारायणनन्दकाव्यं मन्त्रिवस्तुपालकृतं १६००।

५२१ तिलकमञ्जरीकथा, धनपालकृता चम्पूरूपा वर्णनसारा।

(१) तिलकमञ्जरीटिप्पनकं शान्त्याचार्यीयं १२००।

५२२ तिलकमञ्जरीसारोद्धारो लघुधनपालकृतः- १२००।

५२३ कादम्बरीकथा बाणकविकृता पुलिद्रकृतसन्धाना।

५२४ सौभाग्यमञ्जरीकथा सं. गद्यपद्यमयी, परतीर्थ पं. महेन्द्रकृता ३१००।

५२५ वासवदत्तकथा सुबन्धुकविकृता।

(१) वासवदत्ता. टीका नारायणकविकृता।

५२६ चम्पूकथा ७ उल्लासा त्रिविक्रमभट्टकृता दमयन्तीकथाऽपरनाम्ना २५००।

(१) चम्पूकथादिटिप्पनकं चण्डपालकृतं १९००।

५२७ शातवाहनकृतगाथासप्तशती...।

(१) टीका भुवनपालकृता ४५००।

(२) शात. गाथावृत्तिः, श्रीआजडेन कृता।

(३) शात. गाथावृत्तिः, जल्हणदेवकृता।

५२८ रघुकाव्यं २० सर्गं १५७२।

५२९ माघकाव्यं २० सर्गं २७००।

(१) माघकाव्यटीका वल्लभदेवकृता।

५३० कुमारसम्भवकाव्यं ८ सर्गं ६१५ काव्यानि।

५३०.१ कुमारसम्भवकाव्यवृत्तिर्दिगम्बरीयधर्मकीर्तिकृता।

५३१ मेघदूतकाव्यम्।

(१) मेघदूतवृत्तिः।

५३२ किरातकाव्यं १८ सर्गं भारविकविना.....वर्षे कृतम्।

(१) किरातकाव्यस्य भारवीयस्य वृत्तिः प्रकाशवर्षकृता।

(२) किरातार्जुनीयकाव्यटीका लोकानन्दकृता।

५३३ गौडवधकाव्यं गाथाः ११६८।

५३४ नैषधमहाकाव्यं श्रीहर्षकविकृतं २२ सर्गं काव्यानि ४००९।

(१) नैषधटीका चाण्डवी।

(२) नैषधटीका गादाधरी।

(३) नैषधटीका विद्याधरी।

५३५ दशरूपालोकम्।

५३६ भारतशास्त्रम्।

५३७ धनुर्विद्या च।

(१०) नाटकानि

५३८ रघुविलासनाटकं पं. रामचन्द्रकृतम्।

५३९ नलविलासनाटकं पं. रामचन्द्रकृतम्।

५४० चाणक्यनाटकम्।

५४१ मोहपराजयनाटकं मन्त्रियशःपालकृतं श्रीकुमारपालनृपप्रतिबद्धं प्रायोऽन्तरङ्गवाच्यं १३२०।

५४२ मानमुद्राभञ्जननाटकं सनत्कुमारचक्रि-विलासवती सम्बन्धप्रतिबद्धं देवचन्द्रगणिकृतं १८००।

५४३ प्रबुद्धरौहिणेयं रामचन्द्रीयं १०००।

५४४ मुद्रितकुमुदचन्द्रनाटकं यशश्चन्द्रकृतं ५३५।

५४५ प्रबोधचन्द्रोदयनाटकं १०१०।

५४६ दूताङ्गदनाटकम्।

५४७ शृङ्गारतिलकनाटकम्।

५४८ मुरारिनाटकम्।

(१) मुरारिटिप्पनकं देवप्रभसूरिकृतं ७५००।

(२) मुरारिटिप्पनकं मल. नरचन्द्रसूरीयं २३५०।

५४९ अनर्घ्यराघवनाटकम्।

५५० मुद्राराक्षसनाटकं चन्द्रगुप्त-चाणक्यसम्बद्धं विशाखदेवकृतं।

५५१ सुकृतमण्डनं वस्तुपालसम्बद्धम्।

५५२ राघवाभ्युदयनाटकं पं. रामचन्द्रकृतं १० अङ्कम्।

५५३ चन्द्रलेखाविजयनाटकम्।

५५४ विक्रमोर्वशीनाटकं कालिदासकृतं ७७०।

५५५ कर्पूरमञ्जरी नाटकम्।

५५६ रत्नावलीनाटिका हर्षदेवकृता ७३३।

५५७ वनमालानाटिका पं. अमरचन्द्रकृता।

(११) ज्योतिः-शकुन-योगाम्नाय-मन्त्र-कल्प-सामुद्रिक-शास्त्राणि।

५५८ आयज्ञानतिलकसूत्र-वृत्ती बोसिरिकृते सू. गा. ७५०।

५५९ आयसद्भावः १९५। वृत्तिः १६००।

५६० कूरपर्वतः (?)।

५६१ प्रश्नव्याकरण ज्योतिर्वृत्तिः।

५६२ चूडामणिग्रन्थः २३००।

५६३ चूडामणिग्रन्थः ४१ प्रकरणे लक्ष्यणभट्टकृतः ६७२।

५६४ त्रिशती श्रीधरीया।

५६५ गणितशास्त्रम्।

५६६ चन्द्रोन्मीलनचूडामणिसारशास्त्रम्।

५६७ ज्ञानमञ्जरी।

५६८ वस्तुसार १, ज्योतिषसार २, द्रव्यपरीक्षा ३, रत्नपरीक्षा ४, त्रिशती तद्वृत्तयः ६ ग्रन्थाः १३७२ वर्षे ठ. फेरुकृताः।

५६९ गणिततिलकग्रन्थवृत्तिः सिंहतिलकसूरीया।

५७० प्रश्नप्रकाशो नरचन्द्रसूरिकृतः २० प्रकाशः ३६०।

५७१ नरपतिजयचर्या एकाशीतिकादि ८४ चक्रा।

५७२ नरपतिजयचर्या गतग्रहा।

५७३ नयनपूर्वाङ्कपञ्चाङ्गतिथिविवरणं करणशेखरवृत्तिनामकं।

५७४ वाराहीसंहिता सूत्र- वृत्ति- ४०००।

५७५ भाद्रबाहुवीसंहितासूत्रम्.....।

५७६ सारावलीज्योतिष्कं २७००।

५७७ ज्ञानदर्पणज्योतिष्कं त्रैलोक्यप्रकाशं हेमप्रभसूरिकृतं ११४१।

५७८ भुवनदीपकः पाद्मप्रभः १६७।

(१) वृत्तिः सिंहतिलकीया १७००।

५७९ रत्नकोशज्योतिष्कम्।

५८० रत्नमालाज्योतिः।

५८१ षष्टिसंवत्सरादिदैवग्रन्था अनेकविधा इह अनिरिर्दिष्टनामकाः।

५८२ हर्षप्रकाशज्योतिष्कं हर्षदेवगणिकृतम्।

५८३ चन्द्रार्कग्रहसारं ज्योतिष्कम्।

५८४ आशाधरीयपद्धतिः, यन्त्राणि च।

५८५ बृहज्जातकं २५ अध्यायरूपं वराहमिहिरीयम् ४००।

५८६ श्रीधरीयजातकपद्धतिटीका।

५८७ षट्पञ्चाशिकावृत्तिः सप्ताध्याया ५५०।

५८८ प्रश्नज्ञानपद्धतिः भट्टोपलकृता।

५८९ विद्वज्जनवल्लभाख्यप्रश्नज्ञानं १९ अध्यायं श्रीभोजीयम्।

५९० पुस्तकेन्द्र ग्रन्थः गा. ११५।

५९१ रुनज्ञानं पासा केवली विशेषरूपं श्लो. २१५।

५९२ मातृकाकेवली ५०।

५९३ देवतादि ११ द्वारैः कालज्ञानम्।

५९४ प्राकृतं पिपीलिकाज्ञानम्।

५९५ नाडीसञ्चारज्ञानं च।

५९६ सिद्धाज्ञापद्धतिः।

५९७ नाथपुस्तिका योगिनामाम्नायग्रन्थासत्का हरीमेखलाजनाश्चर्यकराञ्जनसिद्धया- दियोगादिवाच्या, खेलवाडिमा-हुयाकृता,गाथा १३९७।

५९८ अर्धकाण्डं दुर्गदेवीयं अ. १०- १४७।

५९९ मन्त्रमहोदधिः प्रा. दिगम्बरश्रीदुर्गदेवकृतः, मं गा. ३६।

६०० भैरवपद्मावतीकल्पः श्रीमल्लिषेणसूरिकृतः ४००।

६०१ रुद्राक्षकल्पः ७५।

६०२ श्वेतार्ककल्पः।

६०३ कामरूपपञ्चाशिका निमित्तवाच्या तद्वृत्तिः सू. वृ. ८८ गा. (?)।

६०४ वसन्तराजो लावशर्मणः २३५०।

६०५ शकुनसारोद्धारो माणिक्यसूरीयः १३३८ वार्षिकः ५०८।

६०६ शकुनशास्त्रं प्राकृतं वार्तामयं प. १४।

६०७ शकुनशास्त्रं प्राकृतं वार्तामयं प. १४।

(१२) प्रकीर्णकग्रन्थाः

६०८ श्रीशान्तिनाथचरितं दिगम्बरीयं गा. २१९६।

६०९ यशोधरचरितं दिगम्बरीयम्।

६१० यशोधर काव्यपञ्जिका।

६११ प्रतिक्रमणटीकासूत्रं दिगम्बरीयम्।

६१२ आनन्दसमुच्चयः।

६१३ अध्यात्मशास्त्रं बहुप्रकरणमयम्।
६१४ पातञ्जलियोगशास्त्रवृत्तिः सूत्रयुता श्रीभोजराजकृता।
६१५ आत्मावबोधो मलधा. देवप्रभसूरिकृतः ५५०।
६१६ ज्ञानार्णवोऽध्यात्मवाच्यः श्रीशुभचन्द्रसूरीयः हैमयोगशास्त्रतुल्यवाच्यो बहुवैराग्यः ४०००।
६१७ ज्ञानदीपिका पिण्डस्थादिध्यानवाच्या।
६१८ तत्त्वार्थसाराख्यं मोक्षशास्त्रं अमृतचन्द्रसूरीयम्।
६१९ संवेगद्रुमकन्दली विमलाचार्यकृता, कारिका ५२।
६२० ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्रम्।
६२१ ज्ञानाङ्कुशः का. २८।
६२२ योगकल्पद्रुमः।
६२३ अमृतसिद्धिः।
६२४ विरूपाक्षयोगशतं गा. १०१ अ. ६१।
६२५ साम्यशतं विजयसिंहीयं १०४।
६२६ शमभावशतं अन्तरङ्गकथावाच्यं श्रीधर्मघोषसूरि कृतम् १०२।
६२७ गीता भारते भीष्मपर्वगता ७१६।
६२८ धर्मपरीक्षा परसमयाऽसंबद्धतावाच्या दिगम्बरीयाऽमितगतिकृता।
६२९ वज्रसूत्री विप्रजात्यादिनिरासवाच्या।
६३० भविष्योत्तरोद्धारः परसमयबहुस्वरूपवाच्यो जैनकृतः परसमयज्ञानाय।
६३१ द्विजवदनचपेटा विप्रजात्यादिनिराकरणवाच्या।
६३२ वनस्पतिसत्तरी (१) श्री मुनिचन्द्रसूरिकृता (प्रत्येकं) गा. ७०।
६३३ पाक्षिकसत्तरी (२) श्री मुनिचन्द्रसूरिकृता (प्रत्येकं) गा. ७०।
६३४ अङ्गुलविचारा (३) श्री मुनिचन्द्रसूरिकृता (प्रत्येकं) गा. ७०।
६३५ सम्यक्त्वस्वरूपं जिनचन्द्रगणिकृतं, गा. १०४।
६३६ जिनप्रतिष्ठा।
६३७ यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थलं जिनदेवसूरिकृतं, ११८५ वर्षे, प. २६।
६३८ श्रीशान्तिवेतालीया पर्वपञ्जिका स्नपनविध्यादिवाच्या।
६३९ श्रीशीलाचार्यीया धूमावल्यादिवृत्तिः।
६४० कुसुमाञ्जल्यादिवाच्या समुद्राचार्यकृता २५०।
६४१ ग्रहदोषज्ञानाध्यायः (१) दोषशान्तिकं जैन (२) दोषशान्तिकं लौकिकं (३) च त्रयमपि सिंहतिलकसूरिकृतं त्रयाणां गन्थाग्रम् १२४ सङ्ख्या पत्र ५।
६४२ आलोचनाविधान-आलोचनपदसंग्रहादयोऽनेके सङ्ग्रहाः।
६४३ सूक्तरत्नाकर-सुभाषितसमुद्रप्रमुखाः सुभाषितग्रन्था अनेकविधाः सर्वे धर्मकुमारीयाः।
६४४ शुभावली।
६४५ दानादिप्रकरणं सं. सुराचार्यकृतं सप्तावसरं काव्यादिबन्धं प. ३४।
६४६ सुधाकलशाख्यसुभाषितकोशः पं. रामचन्द्रकृतः, पत्र....।
६४७ दीपालीकल्पः १४४।
६४८ दीपोत्सवकल्पः, सं. १३८५ वर्षे विनयचन्द्रकृतः २७४।
६४९ दृष्टान्तशतं १०४।
६५० तत्त्वबिन्दुः ७१।
६५१ बोधप्रदीपिका ५२।
६५२ सिन्दूरप्रकरः ९८।
६५३ इष्टोपदेशः ५१।
६५४ सर्वेऽपि सूक्तरूपाः ग्रन्थाग्रम् ३८५।

(परिशिष्ट १)

बृहट्टिप्पनिका

कृतिसूचि

परिशिष्ट-१ बृहट्टिप्पनिका कृतिसूचि

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१	१			आचारांगसूत्र	मू.	सुधर्मास्वामी	प्रा.		२५२५			एका. (१)	आगम अंग		
२	१		१	आचारांगसूत्र निर्युक्ति	टी.	भद्रबाहुस्वामी	प्रा.	३६२	४५०			एका. (१)	आगम अंग		
३	१		२	आचारांगसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.,सं.		८३००			एका. (१)	आगम अंग		
४	१		३	आचारांगसूत्र टीका	टी.	शीलांकाचार्य	सं.		१२०००	९३३		एका. (१)	आगम अंग		
५	२			सूत्रकृतांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		२१००			एका. (१)	आगम अंग		
६	२		१	सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति	टी.	भद्रबाहुस्वामी	प्रा.	२०८	२६५			एका. (१)	आगम अंग		
७	२		२	सूत्रकृतांगसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.,सं.		१००००			एका. (१)	आगम अंग		
८	२		३	सूत्रकृतांगसूत्र टीका	टी.	शीलांकाचार्य	सं.		१२८५०	(९३३?)		एका. (१)	आगम अंग		
९	३			स्थानांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.	७८३	३६००			एका. (१)	आगम अंग		
१०	३		१	स्थानांगसूत्र टीका	टी.	अभयदेवसूरि	सं.		१४२५०	११२०		एका. (१)	आगम अंग		(११० कृता अधिक पाठ)
११	४			समवायांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		१६६७			एका. (१)	आगम अंग		
१२	४		१	समवायांगसूत्र टीका	टी.	अभयदेवसूरि	सं.		३५७४	११२०		एका. (१)	आगम अंग		
१३	५			भगवतीसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		१५७५२			एका. (१)	आगम अंग		एकचत्वारिंशत्शतकमयं
१४	५		१	भगवतीसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.,सं.		३११४			एका. (१)	आगम अंग		
१५	५		२	भगवतीसूत्र अवचूरि	टी.	अज्ञात	सं.		३११८			एका. (१)	आगम अंग		पत्तनचित्कोशेऽस्ति
१६	५		३	भगवतीसूत्र वृत्ति	टी.	अभयदेवसूरि	सं.		१८६१६	११२८		एका. (१)	आगम अंग		
१७	६			ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		५४००			एका. (१)	आगम अंग		
१८	६		१	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति	टी.	(अभयदेवसूरि)	सं.		(३८००)	११२०		एका. (१)	आगम अंग		
१९	७			उपासकदशांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		८१२			एका. (१)	आगम अंग		
२०	७		१	उपासकदशांगसूत्र वृत्ति	टी.	(अभयदेवसूरि)	सं.		१३००			एका. (१)	आगम अंग		(त्रय ग्रंथाग्र)
२१	८			अंतकृद्दशांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		८९९			एका. (१)	आगम अंग		(ग्रंथाग्र-७९०)
२२	८		१	अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति	टी.	(अभयदेवसूरि)	सं.		(४००)			एका. (१)	आगम अंग		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
२३	९			अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		१९२			एका. (१)	आगम अंग		
२४	९		१	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र टीका	टी.	(अभयदेवसूरि)	सं.		(१०१)			एका. (१)	आगम अंग		(त्रय ग्रंथाग्र)
२५	१०			प्रश्नव्याकरणसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		१२५६			एका. (१)	आगम अंग		(ग्रंथाग्र-१३००)
२६	१०		१	प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति	टी.	(अभयदेवसूरि)	सं.		४६३०			एका. (१)	आगम अंग		(ग्रंथाग्र-५६३०)
२७	११			विपाकसूत्र	मू.	(सुधर्मास्वामी)	प्रा.		१२१६			एका. (१)	आगम अंग		
२८	११		१	विपाकसूत्र टीका	टी.	(अभयदेवसूरि)	सं.		९००			एका. (१)	आगम अंग		एकादशांगीसूत्रसंख्या-३५३३९, वृत्तिसंख्या-७४७९०
२९	१२			उववाइयसूत्र (औपपातिकसूत्र)	मू.	(स्थविर)	प्रा.		११६७			द्वा. (२)	आगम उपांग		
३०	१२		१	उववाइयसूत्र टीका	टी.	अभयदेवसूरि	सं.		३१२५			द्वा. (२)	आगम उपांग		
३१	१३			राजप्रश्नीयसूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		२१२०			द्वा. (२)	आगम उपांग		ग्रंथाग्र-२०७९
३२	१३		१	राजप्रश्नीयसूत्र टीका	टी.	(मलयगिरिसूरि)	सं.		३७००			द्वा. (२)	आगम उपांग		
३३	१४			जीवाभिगमसूत्र (जीवाजीवाभिगमसूत्र)	मू.	(स्थविर)	प्रा.		४७००			द्वा. (२)	आगम उपांग		(ग्रंथाग्र-४७५०)
३४	१४		१	जीवाभिगमसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.+सं.		१५००			द्वा. (२)	आगम उपांग		
३५	१४		२	जीवाजीवाभिगमसूत्र प्रदेशवृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		११९२			द्वा. (२)	आगम उपांग		
३६	१४		३	जीवाजीवाभिगमसूत्र टीका	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		१४०००			द्वा. (२)	आगम उपांग		
३७	१५			प्रज्ञापनासूत्र	मू.	(श्यामाचार्य)	प्रा.		७७८७			द्वा. (२)	आगम उपांग		षट्त्रिंशत्पदमयम्
३८	१५		१	प्रज्ञापनासूत्र लघु वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		३७२८			द्वा. (२)	आगम उपांग		(ग्रंथाग्र-४७००)
३९	१५		२	प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		१६०००			द्वा. (२)	आगम उपांग		ग्रंथाग्र-१४५००?
४०	१५		३	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी	मू.	अभयदेवसूरि	प्रा.	१३३	(१५८)			द्वा. (२)	आगम उपांग		(संबंध कृति)
४१	१५	३	१	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी अवचूरि	टी.	(अज्ञात)	प्रा.		४३०			द्वा. (२)	आगम उपांग		(संबंध कृति)
४२	१६			चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		२०५४			द्वा. (२)	आगम उपांग		
४३	१६		१	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		९५००			द्वा. (२)	आगम उपांग		
४४	१७			सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		२२९६			द्वा. (२)	आगम उपांग		
४५	१७		१	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		९०००			द्वा. (२)	आगम उपांग		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४६	१८			जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		४४५८			द्वा. (२)	आगम उपांग		
४७	१८		१	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र चूर्णि	मू.		प्रा.+सं.		१८७९			द्वा. (२)	आगम उपांग		(यह स्वतंत्र कृति जंबूद्वीपकरण के नाम से है)
४८	१८		२	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र टीका	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		९५००			द्वा. (२)	आगम उपांग		
४९	१९			निरयावलिकासूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		११०९			द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५०	१९		१	निरयावलिकासूत्र वृत्ति	टी.	(श्रीचंद्रसूरि)	सं.		(६००)	१२२८		द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५१	२०			कल्पावतंसिकासूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.					द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५२	२०		१	कल्पावतंसिकासूत्र टीका	टी.	(श्रीचंद्रसूरि)	सं.			१२२८		द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५३	२१			पुष्पिकासूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.					द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५४	२१		१	पुष्पिकासूत्र टीका	टी.	(श्रीचंद्रसूरि)	सं.			१२२८		द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५५	२२			पुष्पचूलिकासूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.					द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५६	२२		१	पुष्पचूलिकासूत्र टीका	टी.	(श्रीचंद्रसूरि)	सं.			१२२८		द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५७	२३			वृष्णिदशासूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.					द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५८	२३		१	वृष्णिदशासूत्र टीका	टी.	(श्रीचंद्रसूरि)	सं.			१२२८		द्वा. (२)	आगम उपांग		(पांचों का ग्रंथाग्र)
५९	२४			आवश्यकसूत्र	मू.	गणधर	प्रा.		१०५			आव. (३)	आगम आवश्यक		
६०	२४		१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र	मू.		प्रा.		१३०			आव. (३)	आगम आवश्यक		
६१	२४		२	चैत्यवंदनसूत्र ललितविस्तराटीका (ललितविस्तरा चैत्यवंदनवृत्ति)	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		१२७०			आव. (३)	आगम आवश्यक		
६२	२४		३	ललितविस्तराटीका की पंजिकाटीका (ललितविस्तरापंजिकाटीका)	टी.	मुनिचंद्रसूरि	सं.		१८००			आव. (३)	आगम आवश्यक		देवसूरिगुरु
६३	२४		४	चैत्यवंदन वृत्ति	टी.	पार्श्वदेव गणी	सं.		२०००	९५६		आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)
६४	२४	४	१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	टी.	पार्श्वदेव गणी	सं.			९५६		आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)
६५	२४	४	२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	टी.	पार्श्वदेव गणी	सं.			९५६		आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)
६६	२४	५	१	ईर्यापथिकीसूत्र	मू.		प्रा.					आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६७	२४	६	१	ईर्यापथिकीसूत्र अवचूर्णि (इरियावहियादंडकचूर्णि)	टी.	यशोदेवसूरि	प्रा.		१५०	११७४		आव. (३)	आगम आवश्यक		
६८	२४	५	२	चैत्यवंदनसूत्र	मू.		प्रा.					आव. (३)	आगम आवश्यक		
६९	२४	६	२	चैत्यवंदन अवचूर्णि	टी.	यशोदेवसूरि	प्रा.		४८०	११७४		आव. (३)	आगम आवश्यक		(जि.र.को. ग्रंथाग्र-८४५)
७०	२४	५	३	वंदनकसूत्र	मू.		प्रा.					आव. (३)	आगम आवश्यक		
७१	२४	६	३	वंदनक अवचूर्णि	टी.	यशोदेवसूरि	प्रा.		७२७	११७४		आव. (३)	आगम आवश्यक		
७२	२४		७	प्रत्याख्यानस्वरूप प्रकरण	मू.	यशोदेवसूरि	प्रा.	३६०	(४२८)	(११८२)		आव. (३)	आगम आवश्यक		
७३	२४		८	प्रत्याख्यानसूत्र वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.		५५०			आव. (३)	आगम आवश्यक		
७४	२४	९	१	चैत्यवंदनसूत्र पदपर्याय	टी.	अकलंकदेवसूरि	सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		
७५	२४	९	२	साधुप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय	टी.	अकलंकदेवसूरि	सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		
७६	२४	९	३	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय	टी.	अकलंकदेवसूरि	सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		
७७	२४		१०	श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्र व्याख्याप्रकरण	टी.	जिनदेवसूरि	सं.	२९३	३६५			आव. (३)	आगम आवश्यक		
७८	२४		११	चैत्यवंदनामहाभाष्य	टी.	शांतिसूरि	प्रा.	९२२	(११८०)			आव. (३)	आगम आवश्यक		सूत्रव्याख्याचरणादिवाच्यम्, महामहपणमंत इत्यादिपदम्
७९	२४		१२	चैत्यवंदनाभाष्य वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		
८०	२४		१३	षडावश्यक चैत्यवंदनादिसर्वसूत्रव्याख्यारूप	टी.	देवेंद्रसूरि	सं.		२७२०			आव. (३)	आगम आवश्यक		
८१	२४		१४	चैत्यवंदनादि वृत्ति	टी.	कुलप्रदीप	सं.		२४५८			आव. (३)	आगम आवश्यक		
८२	२४	१५	१	चैत्यवंदनसूत्र टीका (चैत्यवंदनलघुटीका)	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		५५०	(१३०४)		आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)
८३	२४	१५	२	वंदनकसूत्र टीका (वंदनकसूत्रलघुटीका)	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)
८४	२४		१५	प्रत्याख्यानसूत्र टीका (प्रत्याख्यानलघुवृत्ति)	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		(तीनों के ग्रंथाग्र)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
८५	२४		१६	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र लघुवृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		३००			आव. (३)	आगम आवश्यक		
८६	२४		१७	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		२९६	(१३०४)		आव. (३)	आगम आवश्यक		
८७	२४		१८	चैत्यवंदनसूत्र टीका	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		४८२			आव. (३)	आगम आवश्यक		
८८	२४		१९	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	टी.		सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		आवश्यकबृहद्वृत्तिगता
८९	२४		२०	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि	सं.		५४८	१३६४		आव. (३)	आगम आवश्यक		
९०	२४		२१	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि (वंदित्तुसूत्र चूर्णि)	टी.	विजयसिंहसूरि	प्रा.+सं.		४५९०	११८३		आव. (३)	आगम आवश्यक		
९१	२४		२२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	टी.	श्रीचंद्रसूरि	सं.		१९५०	१२२२		आव. (३)	आगम आवश्यक		(ग्रंथाग्र२००० है.)
९२	२४		२३	चैत्यवंदनाविचार	टी.		सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		गाथाबन्धेन सूत्रव्याख्यारूप
९३	२४	२४	१	चैत्यवंदनसूत्रभाष्य	मू.	देवेंद्रसूरि	सं.	६३	(७५)			आव. (३)	आगम आवश्यक		
९४	२४	२४	२	वंदनकभाष्य (गुरुवंदनभाष्य)	मू.	देवेंद्रसूरि	प्रा.	४१	(४९)			आव. (३)	आगम आवश्यक		
९५	२४	२४	३	प्रत्याख्यानभाष्य (पच्चक्खाणभाष्य)	मू.	देवेंद्रसूरि	प्रा.	४८	(५७)			आव. (३)	आगम आवश्यक		
९६	२४		२५	चैत्यवंदनभाष्य संघाचारवृत्ति (संघाचारभाष्य)	टी.	धर्मघोषसूरि तपा.	सं.		८५००	(१३२७ पूर्व)		आव. (३)	आगम आवश्यक		
९७	२४		२६	चैत्यवंदन वृत्ति बालावबोध	टी.	तरुणप्रभसूरि खरतर	सं.		७०००	१३३१		आव. (३)	आगम आवश्यक		
९८	२४		२७	साधुप्रतिक्रमाणादि षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति	टी.	नेमि साधु	सं.		१५५०	११२३		आव. (३)	आगम आवश्यक		(कर्ता नमि साधु)
९९	२४		२८	पंचपरमेष्ठि विवरण	टी.	मतिसागर	प्रा.	२५०	(२९७)	११६८		आव. (३)	आगम आवश्यक		प्राकृतगाथामयं बह्वन्तरकथम्.
१००	२४		२९	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति	टी.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.		२५५०			आव. (३)	आगम आवश्यक		ग्रंथाग्र-३१०० (गाथा १६२३ है, बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र है.
१०१	२४		३०	आवश्यकसूत्र चूर्णि	टी.		प्रा.		१३६००			आव. (३)	आगम आवश्यक		ग्रंथाग्र-१८४७४ (बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र है।)
१०२	२४		३१	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति (आवश्यकसूत्रवृत्ति प्रदेशव्याख्या)	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		२२०००			आव. (३)	आगम आवश्यक		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१०३	२४		३२	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति टिप्पनक	टी.	हेमचंद्रसूरि मलधारी	सं.		४६४०			आव. (३)	आगम आवश्यक		
१०४	२४		३३	आवश्यकसूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		१८०००			आव. (३)	आगम आवश्यक		
१०५	२४		३४	आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		१२३२५	१२९६		आव. (३)	आगम आवश्यक		
१०६	२४		३५	आवश्यकसूत्र अवचूरि	टी.		सं.					आव. (३)	आगम आवश्यक		पत्र-२२६
१०७	२४		३६	विशेषावश्यकसूत्र	टी.	जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	सं.		४०००			आव. (३)	आगम आवश्यक		
१०८	२४		३७	विशेषावश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि मलधारी	सं.		२८०००			आव. (३)	आगम आवश्यक		
१०९	२४		३८	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		९०००		नास्ति	आव. (३)	आगम आवश्यक		
११०	२४		३९	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति (जीर्णा)	टी.	(कोट्याचार्य)	सं.		१४०००			आव. (३)	आगम आवश्यक		पत्तनं विना नास्ति (मुद्रित)
१११	२५			ओघनिर्युक्ति	मू.	भद्रबाहुस्वामी	प्रा.	(८११)	११६४			आव. (३)	आगम मूल		
११२	२५		१	ओघनिर्युक्ति चूर्णि	टी.		प्रा.				नास्ति	आव. (३)	आगम मूल		
११३	२५		२	ओघनिर्युक्ति भाष्य	टी.		प्रा.		३०००		नास्ति	आव. (३)	आगम मूल		
११४	२५		३	ओघनिर्युक्ति टीका	टी.	द्रोणसूरि	सं.		६८२५	(११४९)		आव. (३)	आगम मूल		
११५	२५		४	ओघनिर्युक्ति टीका	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		८८५०		नास्ति	आव. (३)	आगम मूल		सूत्रमिश्रा (ग्रंथाग्र-७६८६)
११६	२६			दशवैकालिकसूत्र	मू.	शय्यंभवसूरि	प्रा.	(५७५)	७००			आव. (३)	आगम मूल		
११७	२६		१	दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति	टी.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.	(४४५)	४५२			आव. (३)	आगम मूल		(गाथा ३७१, ग्रंथाग्र-५५०)
११८	२६		२	दशवैकालिकसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.+सं.		७०००			आव. (३)	आगम मूल		ग्रंथाग्र-७९७० (बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र है।)
११९	२६		३	दशवैकालिकसूत्र बृहद्वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		७५५०			आव. (३)	आगम मूल		
१२०	२६		४	दशवैकालिकसूत्र वृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		७०००	(१३०४)		आव. (३)	आगम मूल		नेमिचरित्रगर्भा
१२१	२६		५	दशवैकालिकसूत्र लघुवृत्ति	टी.	सुमतिसूरि	सं.		२६००			आव. (३)	आगम मूल		बृहद्वृत्त्युद्धाररूपा
१२२	२७			पाक्षिकसूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		३००			आव. (३)	आगम आवश्यक		
१२३	२७		१	पाक्षिकसूत्र वृत्ति (सुखविबोधाटीका)	टी.	यशोदेवसूरि	सं.		२७००	११८०		आव. (३)	आगम आवश्यक		
१२४	२८			पिंडनिर्युक्ति	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.	(६७१)	७०८			आव. (३)	आगम मूल		(ग्रंथाग्र-८३५)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१२६	२८		२	पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि+वीराचार्य	सं.		३१००			आव. (३)	आगम मूल		तत्राद्यानि १३५० हारिभद्राणि, शेषाणि तु १७५० देवाचार्यशिष्य वीराचार्यकृतानि
१२७	२८		३	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		७०००			आव. (३)	आगम मूल		सूत्रमिश्रा, उभय ग्रंथाग्र ग्रंथाग्र-६२९२
१२८	२९			उत्तराध्ययनसूत्र	मू.	(अनेक स्थविर)	प्रा.	(१७२०)	२०००			आव. (३)	आगम मूल		अध्ययन ३६
१२९	२९		१	उत्तराध्ययनसूत्र निर्युक्ति	टी.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.	६०७	७००			आव. (३)	आगम मूल		
१३०	२९		२	उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णि	टी.	गोवालिय महत्तर शिष्य	प्रा.+सं.		५८५०			आव. (३)	आगम मूल		ग्रंथाग्र-५९०० (बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र दीए है।)
१३१	२९		३	उत्तराध्ययसूत्र लघुवृत्ति (सुखबोधा टीका)	टी.	नेमिचंद्रसूरि (देवेंद्र गणी)	सं.		१४०००	११२९		आव. (३)	आगम मूल		ससूत्रा (ग्रंथाग्र-१२०००)
१३२	२९		४	उत्तराध्ययसूत्र बृहद्वृत्ति (शिष्यहिता पाइय टीका)	टी.	शांतिसूरि (वादिवेताल)	सं.+प्रा.		१८०००			आव. (३)	आगम मूल		सूत्रमिश्रा (ग्रंथाग्र-१६०००)
१३३	३०			निशीथसूत्र	मू.	(स्थविर)	प्रा.		८१२-९५०			आव. (३)	आगम छेद		उद्देश २०
१३४	३०		१	निशीथसूत्र बृहद्भाष्य	टी.	अज्ञात	प्रा.		१२०००			आव. (३)	आगम छेद		
१३५	३०		२	निशीथसूत्र भाष्य (निसीहसुत्तभास)	टी.	अज्ञात	प्रा.		७०००			आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-८४००)
१३६	३०		३	निशीथसूत्र चूर्णि (विसेसणिसीहचुण्णि)	टी.	(जिनदास गणी महत्तर)	प्रा.+सं.		२८०००			आव. (३)	आगम छेद		(चूर्णि ग्रं.२१०००)
१३७	३०		४	निशीथसूत्र चूर्णिविंशोद्देशव्याख्या	टी.	पार्श्वदेव गणी	सं.		११००	११७३		आव. (३)	आगम छेद		
१३८	३०		५	निशीथसूत्र विंशोद्देशवृत्ति	टी.	श्रीचंद्रसूरि	सं.		११००	११७३		आव. (३)	आगम छेद		
१३९	३१			कल्पविशेष चूर्णि	टी.		प्रा.+सं.		३१०००			आव. (३)	आगम छेद		(वर्तमान में केवल १०००० ग्रंथाग्र है।)
१४०	३२			कल्प चूर्णि	टी.		प्रा.+सं.		१२७००			आव. (३)	आगम छेद		
१४१	३३			कल्पवृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि + क्षेमकीर्तिसूरि	सं.		४२०००	१३३२		आव. (३)	आगम छेद		सूत्रभाष्यगर्भा, आद्यानि ४६०० मलयगिरियाणि, शेषा तु तपाक्षेमकीर्तिया

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१४२	३४			व्यवहारसूत्र	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.		३७३			आव. (३)	आगम छेद		उद्देश १० (ग्रंथाग्र-६८८)
१४३	३४		१	व्यवहारसूत्र भाष्य	टी.	अज्ञात	प्रा.	(४६७५)	६४००			आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-५२००)
१४४	३४		२	व्यवहारसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.+सं.		१२०००			आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-१०३६०)
१४५	३४		३	व्यवहारसूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		३३६२५			आव. (३)	आगम छेद		भाष्यगर्भा, ग्रंथाग्र-३४६२५ (ग्रंथाग्र-२७८२५, बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र दीए है।)
१४६	३५			कल्पसूत्र	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.		४७३			आव. (३)	आगम छेद		षड्-उद्देशयम्
१४७	३५		१	कल्पसूत्र बृहद्भाष्य	टी.		प्रा.		१२०००			आव. (३)	आगम छेद		
१४८	३५		२	कल्पसूत्र विशेषचूर्णि	टी.		प्रा.+सं.		११००			आव. (३)	आगम छेद		(यह और कृति क्र.३१ एक है या भिन्न)
१४९	३६			दशाश्रुतस्कंधसूत्र	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.		२१०६			आव. (३)	आगम छेद		दशा १० (चूर्णि ग्रंथाग्र-२२२५)
१५०	३७			पर्युषणाकल्पसूत्र (बारसासूत्र, पज्जोसवणकप्प, पर्युषणाकल्प)	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.		१२१६			आव. (३)	आगम छेद		
१५१	३७		१	कल्पसूत्र निर्युक्ति	टी.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.	६८	(८१)			आव. (३)	आगम छेद		
१५२	३७		२	कल्पसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.+सं.		७००			आव. (३)	आगम छेद		
१५३	३७		३	कल्पसूत्र कल्पनिरुक्तटिप्पनक (दुर्गपदनिरुक्त)	टी.	विनयचंद्रसूरि	सं.		१५८			आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-४१८)
१५४	३७		४	कल्पसूत्र टिप्पनक	टी.	पृथ्वीचंद्रसूरि	सं.		६४०			आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-६५०)
१५५	३७		५	कल्पसूत्र संदेहविषौषधिवृत्ति (कल्पसूत्रपंजिकाटीका)	टी.	जिनप्रभसूरि	सं.		(३०४१)	१३६४		आव. (३)	आगम छेद		
१५६	३८			महानिशीथसूत्र लघुवाचना	मू.	(गणधर)	प्रा.		३५००			आव. (३)	आगम छेद		
१५७	३८		१	महानिशीथसूत्र मध्यमवाचना	टी.	(गणधर)	सं.		४२००			आव. (३)	आगम छेद		
१५८	३८		२	महानिशीथसूत्र बृहद्वाचना	टी.	(गणधर)	सं.		४५४४			आव. (३)	आगम छेद		
१५९	३९			पंचकल्पसूत्र	मू.	(गणधर)	प्रा.		११३३			आव. (३)	आगम छेद		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१६१	३९		२	पंचकल्पभाष्य	टी.	संघदास गणी	प्रा.		२५७४			आव. (३)	आगम छेद		ग्रंथाग्र-३०३५ (ग्रंथाग्र-३१८५, बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र दिये है।)
१६२	३९		३	पंचकल्पसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.+सं.		३०००			आव. (३)	आगम छेद		ग्रंथाग्र-३१३६ (बृ.टी. में दो बार ग्रंथाग्र दिये है।)
१६३	४०			जीतकल्पसूत्र	मू.	जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण	प्रा.	१०५	(१३०)			आव. (३)	आगम छेद		
१६४	४०		१	जीतकल्पसूत्र भाष्य	टी.	(अज्ञात)	प्रा.	(२६०८)	३१२५		नास्ति	आव. (३)	आगम छेद		
१६५	४०		२	जीतकल्पसूत्र चूर्णि	टी.	सिद्धसेनसूरि	प्रा.		१०००			आव. (३)	आगम छेद		
१६६	४०		३	जीतकल्पसूत्र टिप्पनक	टी.	(अज्ञात)	प्रा.					आव. (३)	आगम छेद		भृगु. गु. ३ विना न
१६७	४०		४	जीतकल्पसूत्र वृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		१८००	१२२४		आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-१७००, संवत्-१२७४)
१६८	४०		५	जीतकल्पसूत्र विवरण	टी.	(अज्ञात)	सं.		५४३			आव. (३)	आगम छेद		संक्षिप्तगमनिकारूपम् (सिरिवीरजिणं नमिउं)
१६९	४०		६	श्राद्धजीतकल्प (लघुश्राद्धजीतकल्प)	मू.	श्रीतिलकसूरि	प्रा.	३०	(३५)			आव. (३)	आगम छेद		
१७०	४०	६	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	प्रा.		११५			आव. (३)	आगम छेद		
१७१	४०		७	यतिजीतकल्प	मू.	सोमप्रभसूरि	प्रा.	३०६	(३७५)	(१३वीं)		आव. (३)	आगम छेद		
१७२	४०	७	१	यतिजीतकल्प वृत्ति	टी.	साधुरत्नसूरि	सं.		५७००	(१४५६)		आव. (३)	आगम छेद		
१७३	४०		८	श्राद्धजीतकल्प	मू.	धर्मघोषसूरि	प्रा.	(१४१)	(१६७)			आव. (३)	आगम छेद		
१७४	४०	८	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति	टी.	सोमतिलकसूरि	सं.		२६००	(१३७३?)		आव. (३)	आगम छेद		(ग्रंथाग्र-२५४७)
१७५	४१			नंदीसूत्र	मू.	(देववाचक)	प्रा.	(१२०)	७००	(१०वीं?)		आव. (३)	आगम चूलिका		
१७६	४१		१	नंदीसूत्र चूर्णि	टी.	(जिनदास गणी महत्तर)	प्रा.+सं.		(१५००)	(७३३)		आव. (३)	आगम चूलिका		स्तम्भतीर्थं विना नास्ति
१७७	४१		२	नंदीसूत्र वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		२३००		नास्ति	आव. (३)	आगम चूलिका		
१७८	४१		३	नंदीसूत्र बृहद्वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		७७३२			आव. (३)	आगम चूलिका		
१७९	४१		४	नंदीसूत्र वृत्ति टिप्पनक	टी.	श्रीचंद्रसूरि	सं.		३३००			आव. (३)	आगम चूलिका		आद्यवृत्तिसत्कम्
१८०	४२			अनुयोगद्वारसूत्र	मू.	(आर्यरक्षित)	प्रा.		१६०४			आव. (३)	आगम चूलिका		ग्रंथाग्र-(२०००)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१८१	४२		१	अनुयोगद्वारसूत्र चूर्णि	टी.	जिनदासगणिमहत्तर	प्रा.+सं.		२२६५			आव. (३)	आगम चूलिका		(ग्रंथाग्र-२२६८)
१८२	४२		२	अनुयोगद्वारसूत्र लघुवृत्ति	टी.		सं.				नास्ति	आव. (३)	आगम चूलिका		(ग्रंथाग्र-२२६८)
१८३	४२		३	अनुयोगद्वारसूत्र बृहद्वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि मल.	सं.		५८००			आव. (३)	आगम चूलिका		(ग्रंथाग्र-५७००)
१८४	४३			आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक	मू.	(वीरभद्र गणी)	प्रा.	८४	१३४			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		(गाथा-७०, ग्रंथाग्र-१००)
१८५	४३		१	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक वृत्ति (आतुरप्रत्याख्यानविवरण)	टी.	भुवनतुंगसूरि आंचलिक	सं.		४२०			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		६३ ध्याननामगर्भा (ग्रंथाग्र-८५०)
१८६	४४			महाप्रत्याख्यानसूत्र प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	१४३	(१७६)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१८७	४५			देवेंद्रस्तव प्रकीर्णक	मू.	ऋषिपालित	प्रा.	३०३	(३७५)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		(ग्रंथाग्र-३११)
१८८	४६			तंदुलवैचारिक प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	४००	(५००)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१८९	४७			संस्तारक प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	१२१	(१५५)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९०	४८			भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक	मू.	(वीरभद्र गणी)	प्रा.	१७१	(२१५)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९१	४९			आराधनापताका प्रकीर्णक	मू.	वीरभद्राचार्य	प्रा.	९९३	(१२००)	१०७८		आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९२	५०			गणिविद्या प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	८५	(१०५)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९३	५१			अंगविद्या प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.		९०००			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		अध्याय ६०
१९४	५२			चतुःशरण प्रकीर्णक	मू.	(वीरभद्र गणी)	प्रा.	६४	(८०)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९५	५२		१	चतुःशरण प्रकीर्णक वृत्ति	टी.	भुवनतुंगसूरि आंचलिक	सं.		८००			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९६	५३			द्वीपसागरप्रज्ञप्ति संग्रहणी	मू.	(स्थविर)	प्रा.	२२३	२८०			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९७	५४			ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक	मू.	(पादलिप्तसूरि)	प्रा.		१८५०			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९८	५४		१	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक टीका	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		५०००			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
१९९	५५			मरणसमाधि प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	६५६	(८३७)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		(ग्रंथाग्र-६६३)
२००	५६			तीर्थोद्गार प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	१२३३	(१५६५)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०१	५७			सिद्धप्राभृतसूत्र प्रकीर्णक	मू.	स्थविर	प्रा.	(१२०)	(१३५)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०२	५७		१	सिद्धप्राभृत प्रकीर्णक वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.		८५०			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
२०३	५८			निरयविभक्ति	मू.	अज्ञात	सं.		२००		नास्ति	आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०४	५९			चंद्रवेधक प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.		१७४			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०५	६०			अजीवकल्प प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	४४	(५२)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०६	६१			गच्छाचार प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	१३८	(१६७)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०७	६२			वीरस्तव प्रकीर्णक	मू.	(स्थविर)	प्रा.	४३	(५१)			आव. (३)	आगम प्रकीर्णक		
२०८	६३			वसुदेवहिंडी-प्रथम खंड	मू.	संघदास वाचक	प्रा.		११०००			आग.च. (४)	चरित्र		
२०९	६४			वसुदेवहिंडी-द्वितीय खंड	मू.	अज्ञात	प्रा.		६६००			आग.च. (४)	चरित्र		
२१०	६५			वसुदेवमध्यम खंड	मू.	अज्ञात	प्रा.		९०००			आग.च. (४)	चरित्र		मू.टी. के सहित ग्रंथाग्र
२११	६५		१	वसुदेवमध्यम खंड संग्रहणी	टी.	अज्ञात	प्रा.					आग.च. (४)	चरित्र		
२१२	६६			ऋषिभाषितानि	मू.	स्थविर	प्रा.		८५०			आग.च. (४)	आगम प्रकीर्णक		अध्ययन-४५
२१३	६७		१	खंडषट्त्रिंशिका (परमाणुषट्त्रिंशिका)	मू.	अज्ञात	प्रा.	३६	४३			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२१४	६७	१	१	खंडषट्त्रिंशिका वृत्ति	टी.	रत्नसिंहसूरि	सं.					आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२१५	६७		२	पुद्गलषट्त्रिंशिका	मू.	(धर्मघोषसूरि)	प्रा.	३६	४३			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२१६	६७	२	१	पुद्गलषट्त्रिंशिका वृत्ति	टी.	रत्नसिंहसूरि	सं.					आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२१७	६७		३	निगोदषट्त्रिंशिका	मू.	(धर्मघोषसूरि)	प्रा.	३६	४३			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२१८	६७	३	१	निगोदषट्त्रिंशिका वृत्ति	टी.	रत्नसिंहसूरि	सं.		६५३			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२१९	६७		४	बंधषट्त्रिंशिका	मू.	(धर्मघोषसूरि)	प्रा.					आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२२०	६७	४	१	बंधषट्त्रिंशिका वृत्ति	टी.	रत्नसिंहसूरि	सं.					आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२२१	६८			तत्त्वार्थसूत्र	मू.	उमास्वाति	सं.		२२५			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२२२	६८		१	तत्त्वार्थसूत्र भाष्य	टी.	उमास्वाति	सं.		४०००			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२२३	६८		२	तत्त्वार्थसूत्र व्याख्या	टी.	सिद्धसेन गणी	सं.		१८२८२			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		
२२४	६८		३	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति (लघु)	टी.		सं.					आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		दिगंबरीय, देव. विना नास्ति
२२५	६९			श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र	मू.	उमास्वाति	प्रा.		४००			आग.च. (४)	उपदेश, आचार		
२२६	६९		१	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		२३३०			आग.च. (४)	उपदेश, आचार		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
२२७	७०			विशेषणवतीसूत्र	मू.	जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	प्रा.	४३८	५२०			आग.च. (४)	चर्चा		
२२८	७०		१	विशेषणवतीसूत्र वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	चर्चा		वृत्तिर्नास्ति
२२९	७१			प्रवचनसारोद्धार	मू.	नेमिचंद्रसूरि	प्रा.	१६०६	२०००			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		द्वार-२७६
२३०	७१		१	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति	टी.	सिद्धसेनसूरि	सं.		१६५००	१२४२		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		सिद्धसेनसूरिकृता(उ.१८५००)
२३१	७१		२	प्रवचनसारोद्धार विषमपद टीका	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		भृगु. विना न
२३२	७१		३	धर्मसंग्रहणी	मू.	हरिभद्रसूरि	प्रा.	१३९६	१६५८			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		(यह ७१ की पेटा नहीं है।)
२३३	७१	३	१	धर्मसंग्रहणी वृत्ति	टी.	मलयगिरि	सं.		११०००			आग.च. (४)	तत्त्वज्ञान		१०५००
२३४	७२			समयसार प्रकरण	मू.	(कुंदकुदाचार्य)	प्रा.	४१५	४९३			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२३५	७२		१	समयसार प्रकरण टीका	टी.	अमृतचंद्र	सं.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		भृगु(पुरम्),देव(पत्तनं) विना न
२३६	७३			पंचास्तिकाय संग्रह	मू.	(कुंदकुदाचार्य)	प्रा.	१७३	२०५			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		देव (पत्तनं) विना न
२३७	७३		१	पंचास्तिकाय संग्रह वृत्ति	टी.	अमृतचंद्र	सं.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		देव (पत्तनं) विना न
२३८	७४			प्रवचनसार	मू.	(कुंदकुदाचार्य)	प्रा.	२७५	३२७			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		देव. विना न
२३९	७४		१	प्रवचनसार वृत्ति	टी.	अमृतचंद्र	सं.		४१७६			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		देव. विना न
२४०	७५			पंचसूत्र	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	२१०				आग.च. (४)	उपदेश		
२४१	७५		१	पंचसूत्र वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		८८०			आग.च. (४)	उपदेश		
२४२	७६			पंचवस्तुक	मू.	हरिभद्रसूरि	प्रा.	१६९४	२०१२			आग.च. (४)	आचार		(मुद्रित में १७१४ गाथा है।)
२४३	७६		१	पंचवस्तुक वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		५०५०			आग.च. (४)	आचार		
२४४	७७			पंचाशक १९	मू.	हरिभद्रसूरि	प्रा.	११८४	१४०६			आग.च. (४)	उपदेश		(मुद्रित में ९९० गाथा है।)
२४५	७७		१	पंचाशक १९ वृत्ति	टी.	अभयदेव नवांगी	सं.		७४८०	११२४		आग.च. (४)	उपदेश		
२४६	७७		२	पंचाशक-१ चूर्णि	टी.	यशोदेवसूरि	सं.		३३००	११७२		आग.च. (४)	उपदेश		सभावाच्या
२४७	७८			षोडशक	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.	३३०	३९२			आग.च. (४)	उपदेश,अध्यात्म		(मुद्रित में २५७ गाथा है।)
२४८	७८		१	षोडशक वृत्ति	टी.	?	सं.		१५००			आग.च. (४)	उपदेश,अध्यात्म		
२४९	८०			धर्मसूत्राष्टक (अष्टकसूत्र)	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.	२५६	२५६			आग.च. (४)	उपदेश		सूत्र-३२, श्लोक-२७३ (मुद्रित पुस्तक में २५८ श्लोक है।)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
२५०	७९			अष्टकसूत्र वृत्ति	टी.	जिनेश्वरसूरि	सं.		३३७४	१०८०		आग.च. (४)	उपदेश		
२५१	८१			धर्मबिंदु	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		२७३			आग.च. (४)	उपदेश,आचार		
२५२	८१		१	धर्मबिंदु वृत्ति	टी.	मुनिचंद्रसूरि	सं.		३०००			आग.च. (४)	उपदेश,आचार		
२५३	८२			योगबिंदु	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.	५२०	५२०			आग.च. (४)	उपदेश,अध्यात्म		(मुद्रित पुस्तक में ५२७ श्लोक है।)
२५४	८२		१	योगबिंदु वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		३६२०			आग.च. (४)	उपदेश,अध्यात्म		
२५५	८३			प्रशमरति	मू.	उमास्वाति	सं.	३१३	३७२			आग.च. (४)	उपदेश,तत्त्वज्ञान		
२५६	८३		१	प्रशमरति वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		१८००	११८५		आग.च. (४)	उपदेश,तत्त्वज्ञान		
२५७	८४			श्रावकभंगकादिविचारगाथा	मू.	अज्ञात	प्रा.					आग.च. (४)	आचार		
२५८	८४		१	श्रावकभंगकादिविचारगाथा वृत्ति	टी.	विजयदेवसूरि	सं.		५५७			आग.च. (४)	आचार		
२५९	८५			दर्शनसत्तरी	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.	१२०	१४३			आग.च. (४)	उपदेश		(इस कृति का नाम संशयास्पद है. गाथा ७० होनी चाहिए।)
२६०	८६			जीवसमास	मू.	अज्ञात	सं.	२८६	३४०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२६१	८६		१	जीवसमास वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि मल.	सं.		६६२७			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२६२	८७			नवतत्त्व	मू.	देवगुप्तसूरि (जिनचंद्र)	प्रा.	१५	१८			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२६३	८७		१	नवतत्त्व भाष्य	टी.	अभयदेवसूरि नवांगी	सं.	१३९	१६५			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२६४	८७	१	१	नवतत्त्व भाष्य वृत्ति	टी.	यशोदेवसूरि	सं.		२४००	११७४		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२६५	८८			सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि	मू.	अज्ञात	प्रा.			१०५		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२६६	८८		१	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.		१०५			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		देखो प्रा.भा.अ.क्र.
२६७	८९			विचारसार प्रकरण	मू.	प्रद्युम्नसूरि	प्रा.	८९७	१०६५			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		सोपयोगि बहुसंग्रहात्मक (मुद्रित पुस्तक में ९०० गाथा है।)
२६८	९०			पवयणसंदोह (नवपद प्रकरण, प्रवचनसंदोह)	मू.	अज्ञात	प्रा.	२५०	२९६			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		देखो प्रा.भा.अ.क्र. (नमिऊण वद्धमाणं ववगयमाणं) कुछ पाठ भ्रष्ट है।
२६९	९०		१	पवयणसंदोह वृत्ति (प्रवचनसंदोह वृत्ति)	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
२७०	९१			सिद्धिपंचाशिकासूत्र (सिद्धपंचाशिकासूत्र)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	५०	६०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२७१	९१		१	सिद्धिपंचाशिका वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		७१० ६५०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२७२	९२			योनिप्राभृत	मू.	धरसेन आ.	प्रा.			वीरात् ६००		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
२७३	९३			पिंडविशुद्धिसूत्र	मू.	जिनवल्लभसूरि	प्रा.	१०३	१२२			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण, आचार		
२७४	९३		१	पिंडविशुद्धि वृत्ति	टी.	यशोदेवसूरि	सं.		२८००	११७६		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण, आचार		
२७५	९३		२	पिंडविशुद्धि दीपिका लघुवृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.		५५०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण, आचार		
२७६	९३		३	पिंडविशुद्धि अणुवृत्ति	टी.	श्रीचंद्रसूरि	सं.		४४००	११८०		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण, आचार		प्रत्यन्तरे अनुवृत्ति-११७६ वर्षे यशोदेवी-२८००, वृत्ति-११८० वर्षे श्रीचंद्रसूरीया ४४००
२७७	९४			कर्मप्रकृतिसूत्र	मू.	(शिवशर्मसूरि)	प्रा.	४७५	५६४			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२७८	९४		१	कर्मप्रकृतिसूत्र वृत्ति	टी.	मलयगिरि	सं.		७४३६			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		८००० उभय ग्रंथाग्र
२७९	९४		२	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.		७०००			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		वेदनादि ८ करणवाच्या
२८०	९४	२	१	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि टिप्पनक	टी.	मुनिचंद्रसूरि	सं.		१९२०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२८१	९५			पंचसंग्रह	मू.	चंद्रर्षि (महत्तर)	प्रा.	९६३	११४३			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		शतक-सप्ततिका-कषायप्राभृत-सत्कर्म-कर्मप्रकृति-संग्रहात्मक
२८२	९५		१	पंचसंग्रह वृत्ति	टी.	चंद्रर्षि (महत्तर)	सं.		९०००			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		पत्तनं विना न
२८३	९५		२	पंचसंग्रह वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		१८८५०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		कुछ पाठ भ्रष्ट है।

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
२८४	९६			दीपकसंग्रह	मू.	मलयदीपक?	सं.					आग.च. (४)			दिगंबर, भृ.दे. विना न (जिन. कोश में पंचसंग्रहदीपक कर्ता-इंद्रवामदेव। यह नेमिचंद्र के गोम्मटसार का संस्कृत रूपांतरण है,इसमें पांच अध्याय है और १४९८ श्लोक है।)
२८५	९६		१	दीपकसंग्रह वृत्ति	टी.	मलयदीपक?	सं.					आग.च. (४)			दिगंबर, भृ.दे. विना न
२८६	९७			बृहत्कर्मविपाक (प्राचीन कर्मविपाक)	मू.	(गर्गर्षि)	प्रा.	१६८	१९९			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२८७	९७		१	बृहत्कर्मविपाक वृत्ति	टी.	परमानंदसूरि	सं.		९६०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२८८	९८			बृहत्कर्मविपाक टिप्पनक	टी.	उदयप्रभसूरि	सं.		४२०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२८९	९९			बृहत्कर्मस्तव (प्राचीन कर्मस्तव)	मू.	(जिनवल्लभसूरि)	प्रा.	५७	६७			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		(मुद्रित पुस्तक में ५५ गाथा है।)
२९०	९९		१	बृहत्कर्मस्तव वृत्ति	टी.	गोविंदाचार्य	सं.		१००९-१०९०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९१	१००			बृहत्कर्मस्तव टिप्पन	टी.	उदयप्रभसूरि	सं.		२९२			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		वृत्तिरूपं
२९२	१०१			बृहद्बंधस्वामित्व (प्राचीन बंधस्वामित्व)	मू.	अज्ञात	प्रा.	५४	६४			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९३	१०१		१	बृहद्बंधस्वामित्व वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		५६०	११७२		आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९४	१०२			बृहत्षडशीति (आगमिकवस्तुविचारसार)	मू.	जिनवल्लभ गणी	प्रा.	८६	१०२			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९५	१०२		१	बृहत्षडशीति वृत्ति	टी.	रामदेव	प्रा.		८०५	(११७३)		आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९६	१०३			बृहत्षडशीति वृत्ति	मू.	मलयगिरि	सं.		२१४०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		(जिन.में २४१० ग्रं. दिया है.)
२९७	१०४			बृहत्शतक (बंधशतक)	मू.	(शिवशर्मसूरि)	प्रा.	१११	१३२			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९८	१०४		१	बृहत्शतक वृत्ति	टी.	हेमचंद्र मल.	सं.		३७४०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
२९९	१०५			सार्धशतक (सूक्ष्मार्थविचारसार)	मू.	जिनवल्लभ गणी	प्रा.	१५२	१८०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३००	१०५		१	सार्धशतक वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		८५०	(११७२)		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३०१	१०६			सार्धशतक वृत्ति	टी.	धनेश्वरसूरि	सं.		३७००	११७१		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
३०२	१०७			बृहत्शतक चूर्णि	टी.	अज्ञात	प्रा.		२३८०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३०३	१०८			बृहत्शतक टिप्पनक	टी.	उदयप्रभसूरि	सं.		९७४			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३०४	१०९			बृहत्षडशीति वृत्ति	टी.	यशोभद्रसूरि	सं.		१६७२			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		यशोदेवीभद्रसूरीया इति पाठः
३०५	११०			सार्धशतक टिप्पन	टी.	अज्ञात	सं.		१४००			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३०६	१११			सार्धशतक वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		(प्रायः रामदेव की वृत्ति है।)
३०७	११२			सार्धशतक वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		८५०	११७३		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		(प्रायः पुनरावर्तन है।)
३०८	११३		१	नव्यकर्मविपाक (प्रथम कर्मग्रंथ)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	६१	७२			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३०९	११३	१	१	नव्यकर्मविपाक वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		१८८२			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१०	११३		२	नव्यकर्मस्तव (द्वितीय कर्मग्रंथ)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	३४	४०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३११	११३	२	१	नव्यकर्मस्तव वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		८३०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१२	११३		३	नव्यबंधस्वामित्व (तृतीय कर्मग्रंथ)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	२४	२८			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१३	११३	३	१	नव्यबंधस्वामित्व अवचूर्णि	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		३८५			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१४	११३		४	नव्यषडशीति (चतुर्थ कर्मग्रंथ)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	८६	१०२	२१००		आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१५	११३	४	१	नव्यषडशीति वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		२८००	१६३०		आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१६	११३		५	नव्यशतक (पंचम कर्मग्रंथ)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	१००	११९			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१७	११३	५	१	नव्यशतक वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		४२४०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१८	११४			सत्तरी (षष्ठ कर्मग्रंथ)	मू.	(चंद्रर्षि महत्तर)	प्रा.	७२	८५			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३१९	११४		१	सत्तरी चूर्णि	टी.	अज्ञात	सं.				नास्ति	आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३२०	११५			सत्तरी टीका	टी.	श्रीचंद्र गणी महत्तर	प्रा.		२२२८			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		ग्रंथाग्र-२३००
३२१	११६			सत्तरी टिप्पनक	टी.	रामदेव गणी खर.	प्रा.	५४७	६५०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		
३२२	११७			सत्तरी वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		३७८०			आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		(कुछ पाठ भ्रष्ट है।)
३२३	११८			सत्तरीभाष्य	टी.		प्रा.	१९०	२२५		नास्ति	आग.च. (४)	कर्मग्रंथ		(पाण्डुलिपियां मिलती है-देखो जिन.कोश (४१४))
३२४	११९			बृहत्संग्रहणी	मू.	जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	प्रा.	५३०	६२९			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
३२५	११९		१	बृहत्संग्रहणी वृत्ति	टी.	शालिभद्रसूरि	सं.		२८००-२५००	११३९		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३२६	११९		२	बृहत्संग्रहणी वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		५०००			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३२७	११९		३	लघुसंग्रहणी (संग्रहणीरत्न)	मू.	(श्रीचंद्रसूरि)	प्रा.	२७४	३२५	३५००		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३२८	११९	३	१	लघुसंग्रहणी वृत्ति	टी.	देवभद्रसूरि मल.	सं.		३५००			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३२९	१२०			बृहत्क्षेत्रसमास	मू.	(जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण)	प्रा.	६३७	७५६			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३३०	१२०		१	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति	टी.	मलयगिरिसूरि	सं.		७८८७			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३३१	१२१			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति	टी.	सिद्धिसूरि	सं.		३०००	११९२		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		(जिन. में रचना वर्ष ११८५ दिया है।)
३३२	१२२			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति	टी.	देवभद्रसूरि	सं.		१०००	१२३३		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		स्तंभने
३३३	१२३			बृहत्क्षेत्रसमास लघु वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.				नास्ति	आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३३४	१२४			लघुक्षेत्रसमास	मू.	(अज्ञात)	प्रा.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३३५	१२४		१	लघुक्षेत्रसमास वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.	५११	६०६	(११८५)		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३३६	१२५			क्षेत्रसमाससूत्र	मू.	उमास्वाति वाचक	सं.					आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		आह्निकचतुष्टयरूपम्, कुछ पाठ भ्रष्ट है।
३३७	१२५		१	क्षेत्रसमाससूत्र वृत्ति	टी.		सं.		२८८०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३३८	१२६			जंबूद्वीपसंग्रहणी	मू.	(हरिभद्रसूरि)	प्रा.	३०	३५			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		(जैन ग्रंथावली(९९) टिप C में गाथा ११२की नोंध की है।)
३३९	१२६		१	जंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.	१५०	१७३			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
३४०	१२७			वीतराग स्तव (वीतराग स्तोत्र)	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.	१८९	१८९			आग.च. (४)	स्तोत्र		अध्याय-२०,कुछ पाठ भ्रष्ट है।
३४१	१२७		१	वीतराग स्तव वृत्ति	टी.	प्रभानंदसूरि	सं.		२१२५			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३४२	१२८			शोभन स्तुति (चतुर्विंशतिजिन स्तुति)	मू.	(शोभनमुनि)	सं.	९६	२४०			आग.च. (४)	स्तोत्र		काव्य ९३
३४३	१२८		१	शोभन स्तुति वृत्ति	टी.	धनपाल पं.	सं.		९५०			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३४४	१२९			धनपालपंचाशिका (ऋषभपंचाशिका)	मू.	धनपाल पं.	प्रा.	५०	५९			आग.च. (४)	स्तोत्र		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
३४५	१२९		१	धनपालपंचाशिका वृत्ति	टी.	प्रभानंदसूरि	सं.		६४०			आग.च. (४)	स्तोत्र		ग्रंथाग्र-११००
३४६	१३०			वीर स्तव	मू.	धनपाल पं.	प्रा.					आग.च. (४)	स्तोत्र		निम्मलनहवि इति
३४७	१३०		१	वीर स्तव वृत्ति	टी.	सूराचार्य	सं.		२२५			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३४८	१३१			भक्तामर स्तव (भक्तामर स्तोत्र)	मू.	(मानतुंगसूरि)	सं.	४४	९९			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३४९	१३१		१	भक्तामर स्तव प्रदीपिका	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		भृगुपुरं विना नास्ति
३५०	१३२			भक्तामर स्तव वृत्ति	टी.	गुणाकर आ. (गुणसुंदर)	सं.		१५७२	१४२६		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३५१	१३३			जनेन येन स्तुति (चतुर्विंशतिजिन स्तुति)	मू.	(सोमप्रभसूरि)	सं.	२७	३८			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३५२	१३३			जनेन येन स्तुति वृत्ति	टी.		सं.		३०५			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३५३	१३४			बप्पभट्टि स्तुति (नम्रेंद्रमौलि स्तुति, चतुर्विंशतिजिन स्तुति)	मू.	बप्पभट्टि	सं.	९६	२४०			आग.च. (४)	स्तोत्र		नम्रेंद्रमौलि इत्यादि
३५४	१३४		१	बप्पभट्टि स्तुति वृत्ति	टी.	सहदेव	सं.		७३५			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३५५	१३५	१	२	यत्राखिल स्तुति	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.	५८	६८			आग.च. (४)	स्तोत्र		(१)संदर्भः जैन स्तोत्र संग्रह-१, २) जैन स्तोत्र समुच्चय)
३५६	१३५		२	श्रीतीर्थराज स्तुति (साधारणजिन स्तुति (चतुर्था))	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.	४				आग.च. (४)	स्तोत्र		(संदर्भः जैन स्तोत्र संदोह-१)
३५७	१३५		२	जयवृषभ स्तुति	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.	२८	३३			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३५८	१३५		४	शस्ता शमा स्तोत्र	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.	४				आग.च. (४)	स्तोत्र		
३५९	१३५	४	१	शस्ता शमा स्तोत्र वृत्ति	टी.	सोमतिलकसूरि	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६०	१३५		५	यूयं यूयं स्तोत्र	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.	४				आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६१	१३५	५	१	यूयं यूयं स्तोत्र वृत्ति	टी.	सोमतिलकसूरि	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६२	१३५		६	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६३	१३५	६	१	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र वृत्ति	टी.	सोमतिलकसूरि	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६४	१३५		७	सत्तरिसयठाण (सप्ततिशतस्थानक)	मू.	सोमतिलकसूरि	प्रा.	३५९	४२६			आग.च. (४)	स्तोत्र		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
३६५	१३५		८	क्षेत्रसमास	मू.	सोमतिलकसूरि	प्रा.	३८१	४५२			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६६	१३५		९	श्रीशैवैयं (नेमिजिन स्तवन)	मू.	सोमतिलकसूरि	सं.	४५	८५			आग.च. (४)	स्तोत्र		११००-७०-६००-२५०-२१०-१९८० अनुवृत्तयः, यह पाठ मालुम नहीं पडता है. (१)संदर्भः जैन स्तोत्र संदोह-१, २) जैन स्तोत्र संदोह-२)
३६७	१३६			अजितशांति स्तव	मू.	(नंदिषेण मुनि)	सं.	३७, ४०	४६			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६८	१३६		१	अजितशांति स्तव वृत्ति	टी.	गोविंदाचार्य	सं.		३००			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३६९	१३७			अजितशांति स्तव वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		देव. विना न
३७०	१३८			जयतिहुअण स्तोत्र (स्तंभनपार्श्वनाथ स्तोत्र)	मू.	(अभयदेवसूरि)	प्रा.	३०	३५			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७१	१३८		१	जयतिहुअण वृत्ति	टी.	अज्ञात	सं.		२५०			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७२	१३९		१	अजितशांति स्तव वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.		७४०	१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७३	१३९		२	भयहर स्तोत्र (नमिऊण स्तोत्र)	मू.	(मानतुंगसूरि)	सं.	२४	२९			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७४	१३९	२	१	भयहर स्तोत्र वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.			१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७५	१३९		३	उवसग्गहर स्तोत्र	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	प्रा.	५	६			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७६	१३९	३	१	उवसग्गहर स्तोत्र वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.			१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७७	१३९		४	तं जयउ स्तोत्र	मू.	(जिनदत्तसूरि)	प्रा.	२६	३०			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७८	१३९	४	१	तं जयउ स्तोत्र वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.			१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३७९	१३९		५	सिग्घभव	मू.	(जिनदत्तसूरि)	प्रा.	१४	१६			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३८०	१३९	५	१	सिग्घभव वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.			१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३८१	१३९		६	मयरहियं स्तोत्र	मू.	जिनदत्तसूरि (खरतर)	प्रा.	२१	२५			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३८२	१३९	६	१	मयरहियं स्तोत्र वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.			१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३८३	१३९		७	उल्लासिक्कम	मू.	(जिनदत्त)	प्रा.	१७	४५			आग.च. (४)	स्तोत्र		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
३८४	१३९	७	१	उल्लासिक्कम वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सं.			१३६५		आग.च. (४)	स्तोत्र		सप्तस्मरण वृत्ति ग्रंथाग्र-२२३७ जिनप्रभसूरि
३८५	१४०		१	उवसग्गहर वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		३००			आग.च. (४)	स्तोत्र		देवपत्तनं विना न
३८६	१४०		२	भयहर (नमिऊण) वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		१६०			आग.च. (४)	स्तोत्र		देवपत्तनं विना न
३८७	१४१			ऐंद्रस्येव इत्यादि लघुवृत्ति (त्रिपुराभारती स्तव वृत्ति, लघु स्तोत्र वृत्ति)	मू.	(सोमतिलकसूरि)	सं.		३००			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३८८	१४२			धरणोरगेंद्र स्तव (पार्श्वजिन स्तव)	मू.	(वादिदेवसूरि)	सं.	३९	४६			आग.च. (४)	स्तोत्र		(१)संदर्भः जैन स्तोत्र समुच्चय)
३८९	१४२		१	धरणोरगेंद्र स्तव वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.					आग.च. (४)	स्तोत्र		
३९०	१४३			विंशतिद्वात्रिंशिका	मू.	सिद्धसेनदिवाकरसूरि	सं.		८५०			आग.च. (४)	स्तोत्र		
३९१	१४४			चतुर्विंशतिजिन स्तव	मू.	(अज्ञात)	सं.		१४४			आग.च. (४)	स्तोत्र		६-६ गाथामिताः, १५ वस्तुवाच्याः
३९२	१४५			चतुर्विंशतिजिन स्तव	मू.	देवप्रभसूरि मल.	सं.		१९२			आग.च. (४)	स्तोत्र		८-८ गाथामिताः, च्यवनादि ३९ वस्तुवाच्याः
३९३	१४६			जिनशतक	मू.	जंबू कवि	सं.	१००	११९			आग.च. (४)	स्तोत्र		परिच्छेद-४, आशांबरी ससूत्रा १०२५ वर कृता शांबमुनिना, अत्र क्रम कर-मुख-वाग्-वर्णन्-रूपाः
३९४	१४६		१	जिनशतक वृत्ति	टी.	शांबमुनि (नागेंद्रगच्छ)	सं.		१५५०	१०२५		आग.च. (४)	स्तोत्र		
३९५	१४७			चतुर्विंशतिजिन स्तव (स्वयंभू स्तोत्र)	मू.	समंतभद्र	सं.	२४	३६			आग.च. (४)	स्तोत्र		स्वयंभूवा भूतहितेन भूतले समञ्जसम् इत्यादि
३९६	१४७		१	चतुर्विंशतिजिन स्तव वृत्ति	टी.	प्रभाचंद्र	सं.		१५४१			आग.च. (४)	स्तोत्र		दिगंबरीय
३९७	१४८			आराधनापताका	मू.	सोमप्रभ	सं.					आग.च. (४)	उपदेश		अनेकविधा, सोमप्रभादिसूर्यादिकृता
३९८	१४९			आराधनापताका	मू.	आंचलिक	सं.	९३१	११०५			आग.च. (४)	उपदेश		प्रत्यन्तरे पताकाशब्दो नास्ति
३९९	१५०			दूषमदंडिका	मू.	(विमलप्रभसूरि)	प्रा.	९२	१०९			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४००	१५१			दूषमविच्छेददंडिका	मू.	अज्ञात	प्रा.	२०४	२४२			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
४०१	१५२			दूषमदंडिका	मू.	अज्ञात	प्रा.	११२	१३३			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
४०२	१५३			व्युच्छेददंडिका	मू.	योगसार गणी	प्रा.	१७३	२०५			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
४०३	१५४			त्रिषष्ठितीर्थकल्प (विविधतीर्थकल्प)	मू.	जिनप्रभसूरि	प्रा.+सं.		३५०३	१३८९		आग.च. (४)	इतिहास		प्रसिद्धतीर्थैतिह्यवाच्या
४०४	१५५			शत्रुंजयमाहात्म्य	मू.	धनेश्वरसूरि	सं.		१००००			आग.च. (४)	उपदेश		कल्पितप्रायम् आधुनिकधनेश्वरसूरीयम्
४०५	१५६			शत्रुंजयकल्प	मू.	पादलिप्तसूरि	सं.	३९	४६			आग.च. (४)	स्तोत्र		पत्तनं विना न
४०६	१५७			गौतमभाषित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	४२	५०			आग.च. (४)	उपदेश		४२ काव्य
४०७	१५८			विवेकविलास	मू.	जिनदत्तसूरि	सं.	१३२३	१३२३			आग.च. (४)	उपदेश		उल्लास-१२
४०८	१५९			सोमनीति (नीतिवाक्यामृत)	मू.	सोमदेवसूरि	सं.		१६४७			आग.च. (४)	नीति		
४०९	१६०			शतपदी	मू.	महेंद्रसिंहसूरि आंचलिक	सं.		५४५०	१२९४		आग.च. (४)	चर्चा		११७ पदार्थमयी
४१०	१६१			तत्त्वबोध प्रकरण (निजतीर्थिककल्पितकुमतनिरास)	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		५०४०			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		आंचलिकपौर्णिमतच्छित्
४११	१६२			आचरणशतक	मू.	(अज्ञात)	सं.					आग.च. (४)	चर्चा		चरणसहस्रोदधिसत्कं शतपदीपूर्वपक्षरूप
४१२	१६३			श्रावकसामाचारी	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		११७५			आग.च. (४)	आचार		
४१३	१६३		१	श्रावकसामाचारी वृत्ति	टी.	देवगुप्तसूरि	सं.		१२००			आग.च. (४)	आचार		
४१४	१६४			आलापक (विचारसंग्रह, सिद्धांतालापकोद्धार)	मू.	कुलमंडन गणी	सं.			१४४३		आग.च. (४)	चर्चा		अधिकार-२५
४१५	१६५			तपासमाचारी	मू.	(अज्ञात)	सं.		७००			आग.च. (४)	आचार		
४१६	१६६			सामाचारी	मू.	देवप्रभसूरि मल.	सं.					आग.च. (४)	आचार		अधिकारा-१३६
४१७	१६७			सामाचारी (सुबोधासामाचारी)	मू.	श्रीचंद्रसूरि (धनेश्वर शि.)	सं.		१४५०	१२२१		आग.च. (४)	आचार		
४१८	१६८			सामाचारी	मू.		सं.					आग.च. (४)	आचार		अनेकविधा गच्छांतरीया

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४१९	१६९			उपधानस्वरूप	मू.	देवसूरि	सं.					आग.च. (४)	आचार		
४२०	१७०			उपदेशमाला	मू.	(धर्मदास गणी)	सं.	५४२	६४३			आग.च. (४)	उपदेश		
४२१	१७०		१	उपदेशमाला वृत्ति	टी.	जयसिंहसूरि (कृष्णर्षि शि.)	प्रा.			९१३		आग.च. (४)	उपदेश		
४२२	१७१			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति	टी.	सिद्धर्षि गणी	सं.		९५००			आग.च. (४)	उपदेश		
४२३	१७२			उपदेशमाला हेयोपदेया कथा	मू.	(वर्धमानसूरि)	सं.		९५००	१५००		आग.च. (४)	उपदेश		केनापि कथाभिर्योजिता
४२४	१७३			उपदेशमाला कर्णिका वृत्ति	टी.	उदयप्रभसूरि	सं.		११४११	१२९९		आग.च. (४)	उपदेश		ससूत्रा-१२२७४
४२५	१७४			उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति	टी.	रत्नप्रभसूरि	सं.		१११५०	१२३८		आग.च. (४)	उपदेश		ससूत्रा-११८२९
४२६	१७५			उपदेशमाला लघु वृत्ति	टी.	सिद्धर्षि गणी	सं.		३५८६			आग.च. (४)	उपदेश		(जिन.कोश में ४१७०ग्रंथाग्र है)
४२७	१७६			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति	टी.	सिद्धर्षि गणी	सं.		४१६०			आग.च. (४)	उपदेश		(१७५-१७६ यह १७१ की ही टीका लगती है।)
४२८	१७७			पुष्पमाला	मू.	हेमचंद्रसूरि मल.	प्रा.	५०५	५९९	११७५		आग.च. (४)	उपदेश		
४२९	१७७		१	पुष्पमाला वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि मल.	सं.		१३८६८	११७५		आग.च. (४)	उपदेश		
४३०	१७८			धर्मोपदेशमाला	मू.	जयसिंहसूरि	प्रा.	१४९	१७७	९१५		आग.च. (४)	उपदेश		(जिन.कोश में १०२गाथा है.)
४३१	१७८		१	धर्मोपदेशमाला वृत्ति	टी.	मुनिदेवसूरि	सं.		६८००	११९०		आग.च. (४)	उपदेश		
४३२	१७९			धर्मोपदेशमाला प्रकरण वृत्ति	टी.	जयसिंहसूरि	प्रा.		६६५०	९१५		आग.च. (४)	उपदेश		
४३३	१८०			धर्मोपदेशमाला विवरण	टी.	अज्ञात	सं.					आग.च. (४)	उपदेश		स्तंभनतीर्थ विना न
४३४	१८१			भवभावना	मू.	हेमचंद्रसूरि मल.	प्रा.	५३१	६३१	११७०		आग.च. (४)	उपदेश		
४३५	१८१		१	भवभावना वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि मल.	सं.		१३०००	११७०		आग.च. (४)	उपदेश		
४३६	१८२			दिनकृत्य (श्राद्धदिनकृत्य)	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.	३४४	४०८			आग.च. (४)	आचार		(मुद्रित में ३४३ गाथा है।)
४३७	१८२		१	दिनकृत्य वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि तपा.	सं.		१२८२०			आग.च. (४)	आचार		
४३८	१८३			धर्मरत्न	मू.	(शांतिसूरि)	प्रा.	१४५	१७२			आग.च. (४)	उपदेश		श्राद्ध २१ गुणादिवाच्या ९७००-९६८२
४३९	१८३		१	धर्मरत्न वृत्ति	टी.	देवेंद्र तपा.	सं.		९६८२			आग.च. (४)	उपदेश		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४४०	१८४			हितोपदेशमाला	मू.	प्रभानंदसूरि	प्रा.	५२५	६२३			आग.च. (४)	उपदेश		(जिन. कोश में उपदेशामृत नाम से उल्लिखित है (४६१))
४४१	१८४		१	हितोपदेशमाला वृत्ति	टी.	परमानंदसूरि	सं.		९५००	१३०४		आग.च. (४)	उपदेश		
४४२	१८५			सम्यक्त्व (दर्शनशुद्धि प्रकरण)	मू.	चंद्रप्रभसूरि	प्रा.	२२६	२६८			आग.च. (४)	उपदेश		
४४३	१८५		१	सम्यक्त्व वृत्ति	टी.	श्रीतिलकसूरि	सं.		८०००	१२७७		आग.च. (४)	उपदेश		
४४४	१८६			सम्यक्त्व वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		१२०००			आग.च. (४)	उपदेश		प्राकृतकथाकगर्भा, (संभवतः यह टीका ११८४ में चंद्रप्रभ-धर्मघोषसूरि शि. विमलगणि रचित है. जिन. को. (१६७))
४४५	१८७			दर्शनशुद्धि	मू.	(देवभद्रसूरि)	प्रा.		५२७			आग.च. (४)	उपदेश		
४४६	१८७		१	दर्शनशुद्धि वृत्ति	टी.	देवभद्रसूरि (+शांतिचंद्र)	सं.		३८००			आग.च. (४)	उपदेश		(जिन.को. में ३००८ ग्रंथाग्र दिया है. (१६७))
४४७	१८८			दर्शनशुद्धि (संदेहविषौषधिनाम्नी)	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	२६२	३११			आग.च. (४)	उपदेश		
४४८	१८९			विवेकमंजरी	मू.	(पद्मदेवसूरि)	प्रा.		११२५०			आग.च. (४)	उपदेश		आदिवाक्य-माणुस्सखित्ते
४४९	१८९		१	विवेकमंजरी वृत्ति	टी.	अकलंकदेव	सं.		११२५०	१२२३		आग.च. (४)	उपदेश		उभय ग्रंथाग्र, कर्ता के शिष्य देवप्रभसूरि द्वारा आरब्ध और अकलंकदेव द्वारा पूर्ण। जिन. को. (३५९)
४५०	१९०			विवेकमंजरी	मू.	(आसड)	सं.	१४४	१७१	(१२४८)		आग.च. (४)	उपदेश		
४५१	१९०		१	विवेकमंजरी वृत्ति	टी.	बालचंद्रसूरि	सं.		८०००			आग.च. (४)	उपदेश		
४५२	१९१			उपदेशकंदली	मू.	(आसड)	प्रा.	१२५	१४८			आग.च. (४)	उपदेश		
४५३	१९१		१	उपदेशकंदली वृत्ति	टी.	बालचंद्रसूरि	सं.		७६००			आग.च. (४)	उपदेश		
४५४	१९२			शीलोपदेशमाला	मू.	(जयकीर्तिसूरि)	सं.	११६	१३८			आग.च. (४)	उपदेश		(मुद्रित में ११४ गाथा है।)
४५५	१९२		१	शीलोपदेशमाला वृत्ति	टी.	सोमतिलकसूरि रुद्रपल्लीय	सं.			१२९४		आग.च. (४)	उपदेश		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४५६	१९३			योगशास्त्र	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		१२००			आग.च. (४)	उपदेश		प्रकाश-१२
४५७	१९३		१	योगशास्त्र वृत्ति	टी.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		१२३००			आग.च. (४)	उपदेश		
४५८	१९४			योगशास्त्र वृत्ति	टी.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		१०११?			आग.च. (४)	उपदेश		प्रकाश-४ पर
४५९	१९५			उपदेशपदसूत्र	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.	१०४०	१२३५			आग.च. (४)	उपदेश		
४६०	१९५		१	उपदेशपदसूत्र वृत्ति	टी.	मुनिचंद्रसूरि	सं.		१४२६५	११७४		आग.च. (४)	उपदेश		(जिन.को.में१४०००ग्रंथाग्र है।)
४६१	१९६			संवेगरंगशाला	मू.	जिनचंद्रसूरि खरतर	प्रा.	१००५३	११९३८	११७५		आग.च. (४)	उपदेश		
४६२	१९७			वंदनकुलक (चैत्यवंदन कुलक)	मू.	(जिनदत्त खरतर)	सं.					आग.च. (४)	उपदेश		(जिन.को.में ४४००ग्रंथाग्र है।)
४६३	१९७		१	वंदनकुलक वृत्ति	टी.	जिनकुशलसूरि	सं.		४३७०	(१३८३)		आग.च. (४)	उपदेश		पावात्र न (?),(जैनानंद सुरत के प्रत में पावात्र न पाठ नहीं है।)
४६४	१९८			विषयविनिग्रह कुलक	मू.	(अज्ञात)	सं.					आग.च. (४)	उपदेश		स्तंभनतीर्थ विना न
४६५	१९८		१	विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति	टी.	मालचंद्र	सं.		१०००८	१३३७		आग.च. (४)	उपदेश		स्तंभनतीर्थ विना न, (जिन.को. में मलयचंद्र है।)
४६६	१९९			नवपद	मू.	देवगुप्तसूरि	सं.	१३८	१६३			आग.च. (४)	आचार		
४६७	१९९			नवपद वृत्ति	टी.	देवगुप्तसूरि	सं.		२१७०	१०७३		आग.च. (४)	आचार		
४६८	२००			नवपद वृत्ति	टी.	जिनचंद्रसूरि खरतर	सं.		२२१०			आग.च. (४)	आचार		
४६९	२०१			नवपद वृत्ति	टी.	कुलचंद्र	सं.		२६००	१०७३		आग.च. (४)	आचार		
४७०	२०२			नवपद वृत्ति	टी.	यशोदेव उपा.	सं.		९५००	१९६५		आग.च. (४)	आचार		
४७१	२०३			अभिनवनवपद	मू.	देवेंद्रसूरि	सं.					आग.च. (४)	आचार		
४७२	२०३		१	अभिनवनवपद वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि	सं.		९०००	११८२		आग.च. (४)	आचार		
४७३	२०४			जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण (जयंति चरित)	मू.	मानतुंगसूरि	प्रा.	२९	३४			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		भगवतीद्वादशवृत्तिगततृतीयउद्दे-शसत्क
४७४	२०४		१	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		६६००	१२६०		आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
४७५	२०५			ठाणा प्रकरण (सिद्धांतसार)	मू.	प्रद्युम्नसूरि	प्रा.	१८६	२२१			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		
४७६	२०५		१	ठाणा प्रकरण वृत्ति	टी.	हेमसूरि	सं.		१३०००			आग.च. (४)	आगमिक प्रकरण		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४७७	२०६			धर्मोपदेश प्रकरण	मू.	यशोदेव उपा.	प्रा.		८३३२	१३०५		आग.च. (४)	उपदेश		प्राकृतमूल बहुकथा संग्रह (यह मूल है या टीका ?
४७८	२०७			पवज्जाविहाण (प्रव्रज्याविधान)	मू.	(पद्मानंदसूरि)	सं.	३४	४०			आग.च. (४)	उपदेश		
४७९	२०७		१	पवज्जाविहाण वृत्ति	टी.	प्रद्युम्नसूरि	सं.		४५००	१३३८		आग.च. (४)	उपदेश		
४८०	२०८			पवज्जाविहाण वृत्ति	टी.	जिनप्रभसूरि	सं.	२४८				आग.च. (४)	उपदेश		(कृति का श्लोक संदेहास्पद है.
४८१	२०९			धर्मविधि प्रकरण	मू.	श्रीप्रभसूरि	प्रा.	५१	६०	१२९६		आग.च. (४)	उपदेश		
४८२	२०९		१	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति	टी.	जयसिंहसूरि	सं.		१११४२			आग.च. (४)	उपदेश		
४८३	२१०			धर्मविधि प्रकरण वृत्ति	टी.	उदयसिंह	सं.		५५२०	१२९६		आग.च. (४)	उपदेश		(जिन.को.में १२८६संवत् है।)
४८४	२११			ऋषिमंडल स्तव	मू.	मेरुतुंगसूरि	सं.					आग.च. (४)	उपदेश		कारिका-७०
४८५	२१२			ऋषिमंडल स्तव	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	२७१	३२१			आग.च. (४)	उपदेश		(अनुसंधान में प्रकाशित।)
४८६	२१३			ऋषिमंडल स्तव वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		४६१४			आग.च. (४)	उपदेश		
४८७	२१४			भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र (ऋषिमंडल स्तोत्र)	मू.	(धर्मघोषसूरि)	प्रा.	२०८	२४७			आग.च. (४)	उपदेश		
४८८	२१४		१	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र वृत्ति	टी.	भुवनतुंगसूरि आंचलिक	सं.		४०००			आग.च. (४)	उपदेश		
४८९	२१५			गौतमपृच्छा	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	६४	७६			आग.च. (४)	उपदेश		
४९०	२१५		१	गौतमपृच्छा वृत्ति	टी.	श्रीतिलक उपा. खरतर	सं.		५६००			आग.च. (४)	उपदेश		
४९१	२१६			कथाकोशसूत्र	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	२३९	२८३			कथा. (५)	कथा संग्रह		
४९२	२१६		१	कथाकोशसूत्र वृत्ति	टी.	जिनेश्वरसूरि	सं.		६०००	११०८		कथा. (५)	कथा संग्रह		
४९३	२१७			कथामणिकोश (आख्यानकमणिकोश)	मू.	नेमिचंद्रसूरि	प्रा.	५२	६२?			कथा. (५)	कथा संग्रह		अधिकार-४१
४९४	२१७		१	कथामणिकोश व्याख्या	टी.	आम्रदेवसूरि	सं.		१४०००	११९०		कथा. (५)	कथा संग्रह		(उभय ग्रंथाग्र?)
४९५	२१८			शीलभावना	मू.	(अज्ञात)	सं.?					कथा. (५)	उपदेश		
४९६	२१८		१	शीलभावना वृत्ति	टी.	रविप्रभसूरि	सं.		९५७०	१२२९		कथा. (५)	उपदेश		
४९७	२१९			कथारत्नकोश	मू.	देवभद्रसूरि	सं.		१२३००	११५८		कथा. (५)	कथा संग्रह		अधिकार-५०, सम्यक्त्वादि

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
४९८	२२०			धर्माख्यानकोश	मू.	(अज्ञात)	प्रा.					कथा. (५)	कथा संग्रह		
४९९	२२०		१	धर्माख्यानकोश वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	प्रा.?					कथा. (५)	कथा संग्रह		प्राकृतबहुकथामयी, पत्तन विना न
५००	२२१			दानोपदेशमाला	मू.	(दिवाकर)	प्रा.	१०७	१२७			कथा. (५)	उपदेश		पत्र ७१(शा.सं.मा.में कर्ता देवेंद्रसूरि)
५०१	२२१		१	दानोपदेशमाला वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि	सं.					कथा. (५)	उपदेश		
५०२	२२२			प्रश्नोत्तरमाला (प्रश्नोत्तररत्नमाला)	मू.	(विमलसूरि)	सं.	२९	३४			कथा. (५)	उपदेश		
५०३	२२२		१	प्रश्नोत्तरमाला वृत्ति	टी.	देवेंद्रसूरि	सं.		७३२६	१४२९		कथा. (५)	उपदेश		
५०४	२२३			उपदेशचिंतामणि	मू.	जयशेखरसूरि अंचलगच्छ	सं.	५४०	६१४	१४३६		कथा. (५)	उपदेश		
५०५	२२३		१	उपदेशचिंतामणि वृत्ति	टी.	जयशेखरसूरि	सं.		१२०९३			कथा. (५)	उपदेश		जिन.को.में १२०६४ग्रंथाग्र है।
५०६	२२४			आदिनाथ चरित	मू.	वर्द्धमानसूरि	प्रा.	३५९२	११०००	११६०		कथा. (५)	चरित्र		जयसिंहराज्ये, ग्रंथाग्र-११०००-१२०००
५०७	२२५			आदिनाथ चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				संप्रति न	कथा. (५)	चरित्र		
५०८	२२६			अजित चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५०९	२२७			अजित चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५१०	२२८			संभव चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५११	२२९			अभिनंदन चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५१२	२३०			अभिनंदन चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५१३	२३१			सुमति चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५१४	२३२			सुमति चरित	मू.	सोमप्रभसूरि	प्रा.		९६२१			कथा. (५)	चरित्र		श्रीकुमारपालराज्ये
५१५	२३३			पद्मप्रभ चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५१६	२३४			सुपार्श्व चरित	मू.		सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५१७	२३५			सुपार्श्व चरित	मू.	लक्ष्मण गणी	प्रा.	८७००	१०९८८	११९९		कथा. (५)	चरित्र		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
५१८	२३६			चंद्रप्रभ चरित	मू.	सर्वानंदसूरि	सं.		६१४१	१३०२		कथा. (५)	चरित्र		
५१९	२३७			चंद्रप्रभ चरित	मू.	देवेंद्रसूरि	सं.+प्रा.		५३२५	१२६४		कथा. (५)	चरित्र		(केवल संस्कृत में है।)
५२०	२३८			चंद्रप्रभ चरित	मू.	यशोदेवसूरि	प्रा.		६४००			कथा. (५)	चरित्र		
५२१	२३९			चंद्रप्रभ चरित	मू.	हरिभद्रसूरि द्वि.	प्रा.		८०३२			कथा. (५)	चरित्र		श्रीकुमारपालराज्ये
५२२	२४०			सुविधि चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५२३	२४१			सुविधि चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५२४	२४२			शीतल चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५२५	२४३			शीतल चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५२६	२४४			श्रेयांस चरित	मू.	मानतुंगसूरि	सं.		५१२४	१३३२		कथा. (५)	चरित्र		स्तंभनतीर्थ विना न
५२७	२४५			श्रेयांस चरित	मू.	देवभद्रसूरि	सं.	११०००	१३०६२			कथा. (५)	चरित्र		स्तंभनतीर्थ विना न
५२८	२४६			श्रेयांस चरित	मू.	हरिभद्रसूरि द्वि.	प्रा.	६५८४	७८१८			कथा. (५)	चरित्र		जयसिंहदेवराज्ये, स्तंभनतीर्थ विना न
५२९	२४७			वासुपूज्य चरित	मू.	वर्द्धमानसूरि	सं.		५४९४	११९९		कथा. (५)	चरित्र		
५३०	२४८			वासुपूज्य चरित	मू.	चंद्रप्रभसूरि	प्रा.		८०००			कथा. (५)	चरित्र		हेमसूर्यादि शोधितं, स्तंभनतीर्थ विना न
५३१	२४९			विमल चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५३२	२५०			विमल चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५३३	२५१			अनंत चरित	मू.	नेमिचंद्रसूरि	प्रा.	१२०००	१४२५०	१२१६		कथा. (५)	चरित्र		
५३४	२५२			धर्म चरित	मू.	नेमिचंद्रसूरि	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५३५	२५३			धर्म चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५३६	२५४			शांति चरित	मू.	मुनिदेवसूरि	सं.		४८८५	१३३२		कथा. (५)	चरित्र		
५३७	२५५			शांति चरित	मू.	माणिक्यसूरि	सं.		५५७४			कथा. (५)	चरित्र		
५३८	२५६			शांति चरित	मू.	अजितप्रभसूरि पौर्ण.	सं.		४९११	१३१७		कथा. (५)	चरित्र		
५३९	२५७			शांति चरित	मू.	देवचंद्रसूरि	प्रा.		१२१००	११६०		कथा. (५)	चरित्र		गद्यपद्यमय

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
५४०	२५८			शांति चरित	मू.	मणिभद्रसूरि	सं.		६२७२			कथा. (५)	चरित्र		
५४१	२५९			कुंथु चरित	मू.	विबुधप्रभसूरि	सं.		५५५५			कथा. (५)	चरित्र		
५४२	२६०			कुंथु चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		न
५४३	२६१			अर चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		न
५४४	२६२			अर चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		न
५४५	२६३			मल्लि चरित	मू.	जिनेश्वरसूरि	प्रा.		५५५५	११७५		कथा. (५)	चरित्र		
५४६	२६४			मल्लि चरित	मू.	विनयचंद्रसूरि	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५४७	२६५			मल्लि चरित	मू.	हरिभद्रसूरि द्वि.	प्रा.+सं.		९०००			कथा. (५)	चरित्र		कुमारपालराज्ये
५४८	२६६			मुनिसुव्रत चरित	मू.	मुनिरत्नसूरि पौर्ण.	सं.		५१८५			कथा. (५)	चरित्र		वीशस्थानक कथा कलित
५४९	२६७			मुनिसुव्रत चरित	मू.	श्रीचंद्रसूरि	प्रा.	१०९९४	१३०५५	११९३		कथा. (५)	चरित्र		
५५०	२६८			मुनिसुव्रत चरित	मू.	विनयचंद्रसूरि	प्रा.		४५५२			कथा. (५)	चरित्र		नवभवं बहुकथानकं
५५१	२६९			नमि चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		न
५५२	२७०			नमि चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		न
५५३	२७१			नेमि चरित	मू.	हरिभद्रसूरि	प्रा.		८०३२	१२१६		कथा. (५)	चरित्र		
५५४	२७२			नेमि चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		५१०२			कथा. (५)	चरित्र		भवभावनावृत्त्यर्गतमन्तरंगवक्त-व्यतामिश्रम्, (भवभावना वृत्ति की अंश कृति)
५५५	२७३			नेमि चरित	मू.	रत्नप्रभसूरि	प्रा.		१२६००	१२३३		कथा. (५)	चरित्र		गद्यपद्यमय
५५६	२७४			पार्श्व चरित	मू.	सर्वानंदसूरि	सं.					कथा. (५)	चरित्र		(देवसूरि कृत-पद्मप्रभ चरित में उल्लिखित (जि.र.को.२४४))
५५७	२७५			पार्श्व चरित	मू.	भावदेवसूरि	सं.		६७७४-६४००	१२१८		कथा. (५)	चरित्र		
५५८	२७६			पार्श्व चरित	मू.	माणिक्यचंद्र	सं.		५२७८	१२७६		कथा. (५)	चरित्र		
५५९	२७७			पार्श्व चरित	मू.	देवभद्रसूरि	प्रा.		९०००	११६५		कथा. (५)	चरित्र		नवांग अभयदेव प्रथम शिष्य

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
५६०	२७८			पार्श्व चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	२५६४	३२००			कथा. (५)	चरित्र		दशभववाच्या
५६१	२७९			महावीर चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	चरित्र		
५६२	२८०			वीर चरित्र	मू.	गुणचंद्र गणी	प्रा.		१२०००	११३९		कथा. (५)	चरित्र		
५६३	२८१			वीर चरित्र	मू.	नेमिचंद्रसूरि	प्रा.		१२०००	११३९		कथा. (५)	चरित्र		(ग्रंथाग्र-३०००, रचना सं. ११४१ (जि.र.को. ३०६))
५६४	२८२			वीर चरित	मू.	नेमिचंद्रसूरि	प्रा.	२८१०	२८१०-२४००	११३९		कथा. (५)	चरित्र		
५६५	२८३			महापुरुष चरित	मू.	शीलाचार्य	प्रा.		१००००	१२५		कथा. (५)	चरित्र		शलाकापुरूषवृत्तवाच्य
५६६	२८४			महापुरुष चरित	मू.	आम्र कवि	प्रा.	८७९०	१००५०			कथा. (५)	चरित्र		६३ शलाकापुरूषवृत्तवाच्य
५६७	२८५			कथावली-प्रथम परिच्छेद	मू.	भद्रेश्वरसूरि	प्रा.		२३८००			कथा. (५)	चरित्र		प्रा.मु.? २४ जिन १२ चक्र्यादिहरिभद्रसूरिपर्यंत सत्पुरुषचरितवाच्य
५६८	२८६			त्रिषष्टि	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.					कथा. (५)	चरित्र		६३ महापुरुषवृत्तप्रतिबद्धा
५६९	२८७			आदि चरित	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		५०००			कथा. (५)	चरित्र		त्रिषष्टीगत, (त्रिषष्ठि की अंश कृति।) त्रिषष्ठिपर्व-१
५७०	२८८			रामायण	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		३७१४			कथा. (५)	चरित्र		त्रिषष्टीगत, (त्रिषष्ठि की अंश कृति।) त्रिषष्ठिपर्व-७
५७१	२८९			नेमि चरित	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		४९६५	(११७०)		कथा. (५)	चरित्र		त्रिषष्टीगत, (त्रिषष्ठि की अंश कृति।) त्रिषष्ठिपर्व-८
५७२	२९०			पार्श्व चरित	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		१६००			कथा. (५)	चरित्र		त्रिषष्टीगत, त्रिषष्ठि की अंश कृति।, (जि.र.को. में ९९९ ग्रंथाग्र है.) त्रिषष्ठिपर्व-९
५७३	२९१			महावीर चरित	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		३४९२			कथा. (५)	चरित्र		त्रिषष्टीगत, प्रत्यंतर ५१६२ देवगिरि (त्रिषष्ठि की अंश कृति।) त्रिषष्ठिपर्व-१०

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
५७४	२९२			परिशिष्ट पर्व	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		३४६०			कथा. (५)	चरित्र		जंबूप्रमुखार्यरक्षितपर्यंतपुरुषवाच्य।
५७५	२९३			नल चरित	मू.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		११७७			कथा. (५)	चरित्र		त्रिषष्टीगत, (त्रिषष्ठि की अंश कृति।)
५७६	२९४			पद्मानंद महाकाव्य (चतुर्विंशति चरित्र, जिनेश्वर चरित्र)	मू.	अमरचंद्र कवि	सं.	६२८१	८१९१			कथा. (५)	चरित्र		दिगंबरीय, चोवीसजिननिवृत्तिरूपं १८ सर्ग, (जि.र.को. में १९ सर्ग बताये है।)
५७७	२९५			पार्श्वदशगणधर चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		४३५०			कथा. (५)	चरित्र		
५७८	२९६			अममजिन चरित्र	मू.	मुनिरत्नसूरि	सं.			१२५२		कथा. (५)	चरित्र		भाविजिन चरित।
५७९	२९७			पुंडरीक चरित्र	मू.	कमलप्रभसूरि	सं.		३३००	१३७२		कथा. (५)	चरित्र		क्वचिद् अनागमिकार्थे
५८०	२९८			एकादशगणधर चरित्र	मू.	देवमति उपा. खरतर	सं.		६५००			कथा. (५)	चरित्र		
५८१	२९९			हरिवंश चरित	मू.	(अज्ञात)	सं.		९०००			कथा. (५)	चरित्र		नेम्यादिबहुवृत्तवाच्य, आद्यन्तरहित
५८२	३००			हरिवंश चरित	मू.	वंदिक कवि	सं.		९०००			कथा. (५)	चरित्र		पुराणभाषानिबद्ध, नेम्यादिवृत्तवाच्य
५८३	३०१			पद्म चरित	मू.	विमलसूरि	प्रा.		१०५५०	वीरात् ५३०		कथा. (५)	चरित्र		मुख्यवैराग्यरस
५८४	३०२			सीता चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		३१००			कथा. (५)	चरित्र		
५८५	३०३			सीता चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		३४००			कथा. (५)	चरित्र		धर्माधर्मशास्त्रगत
५८६	३०४			प्रत्येकबुद्ध चरित	मू.	श्रीतिलकसूरि	प्रा.		६०५०	१२६१		कथा. (५)	चरित्र		
५८७	३०५			जंबूस्वामी चरित	मू.	(अज्ञात)	प्रा.	१६४४	१९५२	८२?		कथा. (५)	चरित्र		
५८८	३०६			जंबूस्वामी चरित	मू.	सागरदत्त पं.	अप.		२६००	१०१६		कथा. (५)	चरित्र		संध्यादिबंधे
५८९	३०६		१	जंबूस्वामी चरित टिप्पन	टी.	(अज्ञात)	सं.		११००			कथा. (५)	चरित्र		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
५९०	३०७			पृथ्वीचंद्र चरित	मू.	शांतिसूरि	प्रा.	७५००	८९०६	११७१		कथा. (५)	चरित्र		गाथादिमय (जि.र.को. में सं. ११६१,वीर सं. १६३१ है.)
५९१	३०७		१	पृथ्वीचंद्र चरित्र टिप्पन	टी.	कनकचंद्र	सं.		११००	१२२६		कथा. (५)	चरित्र		
५९२	३०७		२	पृथ्वीचंद्र चरित्र संकेत	टी.	रत्नप्रभसूरि	सं.		५९५			कथा. (५)	चरित्र		विषमपदव्याख्यारूप, (जिन. को.में ग्रंथाग्र ५०० है।)
५९३	३०८			समरादित्य चरित्र	मू.	हरिभद्रसूरि	प्रा.		१००००			कथा. (५)	चरित्र		
५९४	३०९			समरादित्य चरित्र (समरादित्य संक्षेप)	मू.	प्रद्युम्नसूरि	सं.		४८७४	१३२४		कथा. (५)	चरित्र		
५९५	३१०			पांडव चरित्र	मू.	देवप्रभसूरि मल.	सं.		९८८४			कथा. (५)	चरित्र		
५९६	३११			प्रभावक चरित्र	मू.	प्रभाचंद्रसूरि	सं.		५७७४	१३३४		कथा. (५)	चरित्र		वज्रस्वामिप्रमुखप्रभावकाचार्य वृत्तवाच्यं
५९७	३१२			कुमारपाल प्रतिबोध	मू.	सोमप्रभसूरि	प्रा.		८८००	१२४१		कथा. (५)	चरित्र		बहुप्रा० शतार्थि
५९८	३१३			कुमारपाल प्रतिबोध	मू.	(अज्ञात)	सं.		१५७५			कथा. (५)	चरित्र		
५९९	३१४			मुनिपति चरित्र	मू.	हरिभद्रसूरि	प्रा.	६४४	८०५	११७२		कथा. (५)	चरित्र		
६००	३१५			मुनिपति चरित्र	मू.	जंबूनाग (जंबू कवि)	सं.		३२००	१००५		कथा. (५)	चरित्र		उद्धृत २७००
६०१	३१६			महीपाल चरित्र	मू.	(अज्ञात?)	प्रा.					कथा. (५)	चरित्र		स्तंभनतीर्थ विना न
६०२	३१७			उपमितभवप्रपंचोद्धार	मू.	देवसूरि	सं.		२३७०			कथा. (५)	चरित्र		(जिन.को.में ग्रंथाग्र२३२८ है।)
६०३	३१८			उपमितभवप्रपंचासारसमुच्चय	मू.	वर्द्धमानसूरि	सं.		१४६०			कथा. (५)	चरित्र		
६०४	३१९			उपमितसारोद्धार (उपमितभवकथासारोद्धार)	मू.	देवेंद्रसूरि (श्रीचंद्र शि.)	सं.		५७३०	१२९८		कथा. (५)	चरित्र		
६०५	३२०			कुवलयमाला	मू.	उद्योतनसूरि (दाक्षिण्यचिह्न)	प्रा.		१३०००	८३५		कथा. (५)	चरित्र		प्रा. मु., (जि.र.को. में ग्रंथाग्र १०००० है।)
६०६	३२१			कुवलयमाला (कुवलयमालाकथा संक्षेप)	मू.	रत्नप्रभसूरि	सं.		३८९४			कथा. (५)	चरित्र		(लगभग रचना वर्ष-१३००)
६०७	३२२			भुवनसुंदरी चरित्र	मू.	विजयसिंहसूरि	प्रा.	८९११	१०५८१	९७५		कथा. (५)	चरित्र		कर्ता-नाइनकुल

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६०८	३२३			हरिविक्रम चरित्र	मू.	जयतिलकसूरि आगमिक	सं.		५३५०			कथा. (५)	चरित्र		
६०९	३२४			सुलसा चरित	मू.	जयतिलकसूरि आगमिक	सं.		५४०			कथा. (५)	चरित्र		
६१०	३२५			मलयसुंदरी कथा	मू.	जयतिलक आगमिक	सं.		२४३०			कथा. (५)	चरित्र		
६११	३२६			मलयसुंदरी कथा	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	चरित्र		
६१२	३२७			मनोरमा चरित्र	मू.	वर्द्धमानसूरि	प्रा.		१५०००	११४०		कथा. (५)	चरित्र		अभयदेवसूरि शि.
६१३	३२८			सप्तक्षेत्रीनाम कथा	मू.	गुणाकरसूरि	सं.		७२००	११७८		कथा. (५)	कथा		
६१४	३२९			सुदर्शना चरित्र	मू.	देवेंद्रसूरि तपा.	प्रा.		४०५२			कथा. (५)	चरित्र		
६१५	३३०			मृगावती चरित्र	मू.	देवप्रभसूरि मल.	सं.	१८४८	१८७३			कथा. (५)	चरित्र		(जिन.को.में २४००ग्रंथाग्र है.)
६१६	३३१			सुरसुंदरी कथा	मू.	धनेश्वर मुनि	प्रा.	४०००	४७५०	१०९५		कथा. (५)	चरित्र		परिच्छेद-१६
६१७	३३२			बृहत् पूजाष्टक	मू.	(अज्ञात)	सं.					कथा. (५)	कथा		रत्नचूडकथयांकितम्
६१८	३३३			रत्नचूड कथा	मू.	नेमप्रभसूरि	(प्रा.)		३५००			कथा. (५)	कथा		पूजाफलवाच्या, (कर्ता नेमिचंद्रसूरि,सं.११३९ प्रायः)
६१९	३३४			पूजाष्टक कथा	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		१०६०			कथा. (५)	कथा		
६२०	३३५			पूजाष्टक कथा	मू.	(अज्ञात)	सं.				न	कथा. (५)	कथा		
६२१	३३६			विजयचंद्रकेवलि कथा	मू.	चंद्रप्रभसूरि	प्रा.	३९१०	४७००	११२७		कथा. (५)	कथा		पूजाष्टककथागर्भा.
६२२	३३७			पूजाष्टक कथा	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		१०८६			कथा. (५)	कथा		विजयचंद्रकेवलिकथा-रहितास्तद्गता. (यह स्वतंत्र कृति नहीं है।)
६२३	३३८			कौमुदी कथा	मू.	(अज्ञात)	सं.		१६००			कथा. (५)	कथा		जैनकृता
६२४	३३९			पंचमी कथा	मू.	महेश्वरसूरि	प्रा.		२००४			कथा. (५)	कथा		दशकथानकात्मिका
६२५	३४०			नर्मदासुंदरी कथा	मू.	(अज्ञात)	सं.		१७००			कथा. (५)	कथा		
६२६	३४१			जयसुंदरी कथा	मू.	(अज्ञात)	प्रा.				न	कथा. (५)	कथा		
६२७	३४२			सर्वांगसुंदरी कथा	मू.	(अज्ञात)	प्रा.		२६७५			कथा. (५)	कथा		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६२८	३४३			ऋषिदत्ता चरित्र	मू.	(गुणपाल)	प्रा.		१५५०		न	कथा. (५)	चरित्र		(इसकी प्रत भांडारकर में है (भाग-६ प्रत-१२९६) जिन. को. (५९)
६२९	३४४			कुसुमसार कथा	मू.	नेमिचंद्रसूरि	प्रा.	१७००	२०१९	१०९९		कथा. (५)	कथा		
६३०	३४५			दमयंती कथा	मू.	(अज्ञात)	सं.					कथा. (५)	कथा		श्लोकसंख्या २, ५०?
६३१	३४६			सौभाग्यसुंदरी कथा	मू.	(अज्ञात)	सं.		६७४			कथा. (५)	कथा		
६३२	३४७			जिनदत्त कथा	मू.	(सुमतिसूरि)	सं.		१२००			कथा. (५)	कथा		(जिन.को.में ग्रंथाग्र ९२०० है।)
६३३	३४८			कथारत्नसागर (कथारत्नाकर)	मू.	नरचंद्रसूरि मल.	सं.		२०९१			कथा. (५)	कथा संग्रह		तरंग-१५, कथा-१५
६३४	३४९			धन्यशालिभद्र चरित्र	मू.	पूर्णभद्र गणी	सं.		१४६०	१२८५		कथा. (५)	कथा		
६३५	३५०			स्थूलिभद्र चरित्र	मू.	जयानंदसूरि तपा.	सं.		६८४			कथा. (५)	कथा		
६३६	३५१			पंचाख्यानक (पंचतंत्र)	मू.	(अज्ञात)	सं.		४६००	१२५५		कथा. (५)	कथा		पूर्णभद्राचार्य संशोधित।
६३७	३५२		१	प्रद्युम्न चरित्र-शांब चरित्र (शांब प्रद्युम्न चरित्र)	मू.	(अज्ञात)	सं.		१०७०			कथा. (५)	चरित्र		
६३८	३५३			प्रबंधचूडामणि (प्रबंधचिंतामणि)	मू.	मेरुतुंगसूरि	सं.		३५०४	(१३६१)		कथा. (५)	कथा संग्रह, इतिहास		
६३९	३५४			चतुर्विंशति प्रबंध (प्रबंधकोश)	मू.	राजशेखरसूरि	सं.		४०००	(१४०५)		कथा. (५)	कथा संग्रह, इतिहास		८४ कथा
६४०	३५५			लीलावती कथा	मू.	भूषणभट्ट सुत	सं.	१४३९	१७०८			कथा. (५)	कथा	परसमय	आद्यरस मिश्रिता च परसमयगता
६४१	३५६			कथापुस्तिका	मू.							कथा. (५)	कथा संग्रह		अनेकविधकथाभिरनिर्दिष्टनामि काभिरुपेताः, (यह स्वतंत्र कृति नहीं है।)
६४२	३५७			कथापुस्तिका	मू.							कथा. (५)	कथा संग्रह		विविधा, (यह स्वतंत्र कृति नहीं है।)
६४३	३५८			सम्मतिसूत्र	मू.	सिद्धसेन दिवाकरसूरि	प्रा.	१७०	२०१			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		(मूद्रित में १६७ गाथा है।)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६४४	३५८		१	सम्मतिसूत्र वृत्ति	टी.	मल्लवादिसूरि	सं.		७००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६४५	३५८		२	सम्मतिसूत्र वृत्ति	टी.	अभवदेवसूरि (प्रद्युम्नसूरि शि.)	सं.		२५०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		कांड-३
६४६	३५८		३	सम्मतिसूत्र वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६४७	३५९			प्रमाणकलिका (विचारकलिका, प्रमाणवार्तिक)	मू.	शांत्याचार्य	सं.		६०			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६४८	३५९		१	प्रमाणकलिका वृत्ति	टी.	शांत्याचार्य	सं.		२८७३			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६४९	३६०			नयचक्रवाल (द्वादशार नयचक्र)	मू.	मल्लवादि	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६५०	३६०		१	नयचक्रवाल वृत्ति	टी.	सिंहसूरि	सं.		१८०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		यद्द्वादशारनयचक्रतुम्बसूत्रव्याख्यारूपा ससूत्रा-१८०००
६५१	३६१			अनेकांतजयपताका	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		३६००-३५००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		सदसदादि अधिकार-४
६५२	३६२			अनेकांतजयपताका वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		८२५०			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६५३	३६२		१	अनेकांतजयपताका वृत्ति टिप्पनक	टी.	मुनिचंद्रसूरि	सं.		२०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६५४	३६३			स्याद्वादरत्नाकर (प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार)	मू.	वादिदेवसूरि	सं.		१३०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		परिच्छेद-८
६५५	३६४			स्याद्वादरत्नाकर टीका (प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार टीका)	टी.	वादिदेवसूरि	सं.		३६०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		प्रथम खंड विना, आछणिया?
६५६	३६४		१	स्याद्वादरत्नाकर रत्नाकरावतारिका लघु टीका (प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार रत्नाकरावतारिका लघु टीका)	टी.	रत्नप्रभसूरि	सं.		५०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६५७	३६४		२	रत्नाकरावतारिका टिप्पण (प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार टिप्पन)	टी.	(अज्ञात)	सं.				न	न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६५८	३६४		३	रत्नाकरावतारिका टिप्पण (प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार टिप्पन)	टी.	(अज्ञात)	सं.				न	न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६५९	३६५			न्यायावतार	मू.	सिद्धसेन दिवाकरसूरि	सं.		३२			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६६०	३६५		१	न्यायावतार वृत्ति	टी.	हरिभद्रसू.	सं.		२०७३			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६६१	३६५		२	न्यायावतार वृत्ति	टी.	(सिद्धर्षि सिद्धव्याख्यानिक)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६६२	३६६			आप्तमीमांसालंकार (अष्टसहस्री)	टी.	विद्यानंद	सं.		८०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	(मूल-आप्तमीमांसा कर्ता समंतभद्रसूरि, श्लोक-११४, भाष्यकर्ता अकलंक श्लो-८००)
६६३	३६७			प्रमाणमीमांसा	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.	११८	१४०			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६६४	३६७		१	प्रमाणमीमांसा वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		२५००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		कुछ पाठ खंडित है।
६६५	३६८			अनेकांतवादप्रवेश	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		७००-७३०			न्या. (६)	दर्शन,जैन न्याय		
६६६	३६९			सर्वज्ञसिद्धि प्रकरण	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		३००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६६७	३७०			द्रव्यालंकार	मू.	रामचंद्र पं.+गुणचंद्र पं.	सं.		४००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६६८	३७१			प्रमाणसंग्रह	मू.	(अज्ञात)	सं.		७१२			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		९ प्रस्ताव
६६९	३७२			प्रमेयरत्नकोश	मू.	चंद्रप्रभसूरि	सं.		१६८०			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		सर्वज्ञसिद्ध्यादि २३ वादस्थल
६७०	३७३			षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६७१	३७४			षड्दर्शनसमुच्चय	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.	८६	१०२			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६७२	३७४		१	षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति	टी.	(गुणरत्नसूरि)	सं.		१२५२			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६७३	३७५			परिणामिवस्तुव्यवस्थापन	मू.	(अज्ञात)	सं.		१८०			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६७४	३७६			बोटिकनिषेध	मू.		सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		वस्त्रव्यवस्थापनरूप
६७५	३७७			सर्वार्थनिराकरणवादस्थल आदि	मू.		सं.		३१०			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		सर्वार्थप्रभावाद्यभावनिरासवादस्थलानि-४
६७६	३७८		१	केवलिमुक्ति प्रकरण	मू.	शाकटायन	सं.		९४			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		शब्दानुशासनकृत्
६७७	३७८		२	स्त्रीमुक्ति प्रकरण	मू.	शाकटायन	सं.		९४			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		उभय ग्रंथाग्र
६७८	३७९			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		हारिभद्रो नंदिवृत्त्याद्यनमस्कारसंबद्ध
६७९	३८०			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		योऽपि सोऽपि बहुरल्पो वा

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६८०	३८१			अपशब्दनिराकरण	मू.	(अज्ञात)	सं.		२१५			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६८१	३८२			अनेकांतव्यवस्थापन	मू.	(अज्ञात)	सं.		२००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		भेदाभेदाद्यनेकांतव्यवस्थापन
६८२	३८३			स्याद्वादमंजरी (अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका टीका)	टी.	मल्लिषेणसूरि	सं.		३०००	१३४९		न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६८३	३८४			वर्द्धमान स्तोत्र	मू.	समंतभद्र	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६८४	३८४		१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६८५	३८४	१	१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति विषमार्थ	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६८६	३८५			अपौरुषेयवेदनिराकरण	मू.	(यशोदेव)	सं.		५११			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		
६८७	३८६			प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण	मू.	यशोदेव साधु	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		आद्य तु त्रिवर्गपरिहारेण। आपौ. पत्राणि ११ प्रत्यन्तरे प. १४, कवर्ग-चवर्ग-टवर्ग इति वर्गत्रयगतव्यंजनानि परिहृत्यान्यैर्व्यञ्जनैरेतत् प्रकरणं रचितम्।
६८८	३८७			श्वेतांबरदर्शनसिद्धि	मू.		सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		पत्र १९
६८९	३८८			लोकतत्त्वनिर्णय	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		१७०			न्या. (६)	आगमिक प्रकरण		
६९०	३८९			न्यायकुमुदचंद्रसूत्र	मू.	अकलंकदेव	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	दिगंबरीय, (कारिका-७८)
६९१	३८९		१	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र वृत्ति	टी.	प्रभाचंद्रसूरि	सं.		१६०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	उभय ग्रंथाग्र
६९२	३९०			परीक्षामुख	मू.	(माणिक्यनंदिन्)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	(सूत्र-२०७)
६९३	३९०		१	परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला वृत्ति	टी.	प्रभाचंद्रसूरि	सं.		१५६७			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	सूत्र-१४०
६९४	३९१			न्यायविनिश्चय	मू.	(अकलंकदेव)	सं.	१७२	३००००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	दिगंबरीय
६९५	३९१		१	न्यायविनिश्चय वृत्ति	टी.	अनंतवीर्य	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	
६९६	३९२			आप्तपरीक्षा	मू.	(विद्यानंद)	सं.		१२४			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	दिगंबरीय
६९७	३९२		१	आप्तपरीक्षा वृत्ति	टी.	(विद्यानंद)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	तत्त्वार्थसूत्राद्यश्लोकव्याख्यारूपा
६९८	३९३			पत्रपरीक्षा	मू.	(विद्यानंद)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय		पत्रवाक्यप्रकारव्याख्या

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
६९९	३९४			प्रमेयकमलमार्तंड	मू.	प्रभाचंद्रसूरि	सं.		११०००			न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	दिगंबरीय
७००	३९५			अध्यात्मतरंगिणी	मू.	(सोमदेव)	सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	दिगंबरीय
७०१	३९५		१	अध्यात्मतरंगिणी टीका	टी.		सं.					न्या. (६)	दर्शन, जैन न्याय	दिगंबर	दिगंबरीयतर्करूपा
७०२	३९६			हेतुबिंदु	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन		
७०३	३९६		१	हेतुबिंदु टीका	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन		
७०४	३९७			प्रमाणवार्त्तिक	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	आद्यपरिच्छेदसूत्र बौद्धीयम्
७०५	३९७		१	प्रमाणवार्त्तिक वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	आद्यपत्र २-३ रहिता
७०६	३९८			तर्कभाषा	मू.	(मोक्षाकरगुप्त)	सं.		७१८*			न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	
७०७	३९८		१	तर्कभाषा टीका	टी.		सं.		८४०			न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	बौद्धमतवाच्या बालावबोधरूप परिच्छेद-३
७०८	३९९			न्यायबिंदुसूत्र	मू.	(धर्मकीर्ति)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	बौद्धमतवाच्या
७०९	३९९		१	न्यायबिंदुसूत्र वृत्ति	टी.	धर्मोत्तराचार्य	सं.		१४७७			न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	उभय ग्रंथाग्र
७१०	४००			न्यायप्रवेशक	मू.	हरिभद्रसूरि	सं.		१०८			न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	
७११	४००		१	न्यायप्रवेशक टीका	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		४८९			न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	उभय ग्रंथाग्र
७१२	४०१			न्यायप्रवेशक टिप्पन	टी.	श्रीचंद्रसूरि	सं.			११६९		न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	
७१३	४०२			तत्त्वसंग्रह	मू.	(शांतरक्षित)	सं.		३७१६			न्या. (६)	दर्शन	बौद्ध	प्रकृतीश्वरादिनिरासवाच्यो बौद्ध
७१४	४०३			न्यायकुसुमांजलि	मू.	(उदयन)	सं.		५०४६			न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७१५	४०४			न्यायतर्कसूत्र (न्यायसूत्र)	मू.	अक्षपाद	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७१६	४०४		१	न्यायसूत्रभाष्य	टी.	वात्स्यायन	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७१७	४०४		२	न्यायतर्कसूत्र वार्तिक	टी.	भारद्वाज	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७१८	४०४		३	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्य टीका	टी.	वाचस्पति मिश्र	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७१९	४०४		४	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्यपरिशुद्धि टीका	टी.	उदयन आ.	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७२०	४०४		५	न्यायतर्कसूत्र न्यायालंकार वृत्ति	टी.	श्रीकंठ	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७२१	४०४		६	न्यायतर्कसूत्र पंचप्रस्थानन्यायतर्काणि	टी.	अभयतिलक खर.	सं.		५३०००			न्या. (६)	दर्शन	न्याय	सर्व ग्रंथाग्र

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
७२२	४०५			न्यायकलिका टीका	टी.	(अज्ञात)	सं.		४०५			न्या. (६)	दर्शन	न्याय	नैयायिकी १६, पदार्थतत्त्वावाच्या
७२३	४०६			सारसंग्रह	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	नैयायिका १६ पदार्थवाच्य
७२४	४०७			न्यायभूषण (न्यायसार)	मू.	(भासर्वज्ञ)	सं.		४००			न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७२५	४०७		१	न्यायसार टीका (न्यायसार न्यायतात्पर्य टीका)	टी.	जयसिंहसूरि	सं.		२९००			न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७२६	४०७		२	न्यायसार टीका (न्यायसारविचाराख्या)	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७२७	४०७		३	न्यायसार पंजिका टीका	टी.	(वासुदेवसूरि)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	न्याय	
७२८	४०८			मतमनोहर	मू.	(अज्ञात)	सं.		७४०			न्या. (६)	दर्शन	न्याय	मतमनोहरग्रंथगतहेतुसाध्यगताशेषविशेषनिरूपणसूत्रव्याख्यारूपं
७२९	४०९			षट्पदार्थप्रवेश प्रकरण	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	
७३०	४१०			भास्करभूषण	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	सृष्ट्यादिवाच्य
७३१	४११			किरणावली	टी.	(उदयन)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	(मू.न्यायसूत्र प्रशस्तपादभाष्य)
७३२	४१२			न्यायतंत्र टीका	टी.		सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	व्याख्या खंडम्, (मूल मालुम नही है.)
७३३	४१३		१	किरणावली टिप्पनक	टी.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	द्रव्यपदार्थः
७३४	४१३		२	किरणावली टिप्पनक	टी.	(अज्ञात)	सं.		२३७३			न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	द्रव्यपदार्थः, उभयग्रंथाग्र
७३५	४१४			कंदली किरणावली	टी.	(उदयन)	सं.		७७७			न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	(किसकी टीका है या नहीं)
७३६	४१५			न्यायकंदली	टी.	श्रीधर	सं.		६०००	१०४८		न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	सर्वे कृता वैशे(षि)कमता, (मू. न्यायसूत्रप्रशस्तपादभाष्य)
७३७	४१६			न्यायकंदली टिप्पनक	टी.	नरचंद्र पं.	सं.		२५००			न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	
७३८	४१७			न्यायकंदली पंजिका	टी.	राजशेखर मल.	सं.		४०००	१३८५		न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	
७३९	४१८			न्यायलीलावती	मू.	(वल्लभाचार्य)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
७४०	४१९			सांख्यसप्तति (सांख्यकारिका)	मू.	(ईश्वरकृष्ण)	सं.	७६	९०			न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	
७४१	४१९		१	सांख्यसप्तति वृत्ति	टी.	(वाचस्पति मिश्र?)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	
७४२	४२०			वृद्धवादसार प्रकरण	मू.	श्रीविलास भट्ट	सं.		९००			न्या. (६)	दर्शन	वैशेषिक	
७४३	४२१			शास्त्रदर्पण	मू.	(अज्ञात)	सं.					न्या. (६)	दर्शन	वेदांत	ब्रह्माद्वैतसिद्ध्यादिवाच्य
७४४	४२२			खंडनखंडखाद्य	मू.	श्रीहर्ष कवि	सं.		५०००			न्या. (६)	दर्शन	वेदांत	परिच्छेद-४
७४५	४२२		१	खंडनखंडखाद्य टिप्पनक	टी.		सं.					न्या. (६)	दर्शन	वेदांत	
७४६	४२३			हेमव्याकरणसूत्र (सिद्धहेमशब्दानुशासन)	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		११००			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७४७	४२४			उणादिसूत्र	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		३००			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७४८	४२५			लिंगानुशासन	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		२००			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७४९	४२५		१	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्वृत्ति (सिद्धहेमशब्दानुशासन)	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		१८०००			व्या.को.(७)	व्याकरण		हेमचतुष्क बृ. हैमाख्यातबृह द्वृत्तिहैमतद्धितबृहद्वृत्तिहैमकृद्वृत् ति, (यह ४२५ की अंश कृति नहीं है।)
७५०	४२५		२	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्न्यास	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		८४०००			व्या.को.(७)	व्याकरण		१-३-४-५-६-७-८-१२-२७ पादे बृहन्न्यासः शब्दमहार्णवनामा
७५१	४२६			हेमव्याकरणसूत्र न्यास	टी.	धर्मघोषसूरि	सं.		९०००		न	व्या.को.(७)	व्याकरण		
७५२	४२७			हेमव्याकरणसूत्र न्यास	टी.	रामचंद्र गणी	सं.		५३०००		न	व्या.को.(७)	व्याकरण		
७५३	४२८			परिभाषा वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		४०००			व्या.को.(७)	व्याकरण		(मू. हेमव्याकरण)
७५४	४२९			लघुन्यास	टी.	कनकप्रभ	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण		हैमन्यासोद्धारो, २८ पादसत्कः, (यह लघुन्यास की दुर्गपदव्याख्या है।)
७५५	४३०			हैमव्याकरण कक्षापट वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		४८१८			व्या.को.(७)	व्याकरण		हैमबृहद्वृत्तिविषयपदव्याख्या-रूपः

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
७५६	४३१			हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात	टी.	(अज्ञात)	सं.		६०००			व्या.को.(७)	व्याकरण		२-कृ, ३ ढुंढिक
७५७	४३२			हैमप्राकृत वृत्ति (शब्दानुशासन प्राकृत वृत्ति)	टी.	(अज्ञात)	सं.		२४८५			व्या.को.(७)	व्याकरण		(मू. हेमव्याकरण)
७५८	४३२		१	प्राकृतदीपिका वृत्ति	टी.	हरिभद्रसूरि	सं.		१५००			व्या.को.(७)	व्याकरण		(मू. हेमव्याकरण)
७५९	४३२		२	प्राकृतरूपसिद्धि (प्राकृतप्रबोध, हैमप्राकृत वृत्ति अवचूरि)	टी.	नरचंद्रसूरि मल.	सं.		१६००			व्या.को.(७)	व्याकरण		हैमप्राकृतवृत्त्यवचूरिरूपा, (मू. हेमव्याकरण)
७६०	४३३			हैमचतुष्क लघु वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		६०००			व्या.को.(७)	व्याकरण		हैम चतुष्क आख्यात कृत तद्धित लघुवृत्ति
७६१	४३४			हैमचतुष्क लघु वृत्ति (ढुंढिकादीपिका)	टी.	काकलकायस्थ	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण		हैमलघुवृत्ति, चतुष्क, आख्यात कृत तद्धित ढुंढिका दीपिका वाच्या
७६२	४३५			हैमचतुष्क वृत्ति अवचूरि	टी.	(अज्ञात)	सं.		२२१३			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७६३	४३६			हैमलिंगानुशासन अवचूरि (लिंगानुशासन अवचूरि)	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		३६८४			व्या.को.(७)	कोश		
७६४	४३७			धातुपारायण	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण		
७६५	४३८			उणादिसूत्र वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		३२५०			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७६६	४३९			हैमन्याय वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि?	सं.		१७५			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७६७	४४०			हैमीनाममाला (अभिधानचिंतामणि)	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		१८००			व्या.को.(७)	कोश		
७६८	४४०		१	हैमीनाममाला वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		९९९७			व्या.को.(७)	कोश		कांड-६
७६९	४४१			हैमअनेकार्थनाममाला	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		१८२७			व्या.को.(७)	कोश		
७७०	४४१		१	हैमअनेकार्थनाममाला वृत्ति	टी.	महेंद्रसूरि	सं.		१०६६०			व्या.को.(७)	कोश		स्वरकांड-६, आदौ स्वर-व्यञ्जनक्रमेण बद्धनामान्तव्यञ्जनक्रमबद्धा
७७१	४४२			हैमदेशीनाममाला	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.					व्या.को.(७)	कोश		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
७७२	४४२		१	हैमदेशीनाममाला रत्नावली वृत्ति	टी.	(हेमचंद्रसूरि)	सं.		३३२०-३५००			व्या.को.(७)	कोश		(रत्नावली देशीनाममाला का अपरनाम है। (जि.र.को.))
७७३	४४३			समासतद्धितसार प्रकरण	मू.	(अज्ञात)	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण		
७७४	४४४			हेमविभ्रम	मू.	गुणचंद्र पं.	सं.		२१			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७७५	४४४		१	हेमविभ्रम वृत्ति	टी.	गुणचंद्र पं.	सं.		६००			व्या.को.(७)	व्याकरण		
७७६	४४५			कारकसमुच्चय	मू.	श्रीप्रभसूरि	सं.		१२८०			व्या.को.(७)	व्याकरण		अधिकारत्रयात्मक आद्यद्वयवृत्तियुग्, प्राथमिकार्यः
७७७	४४६			मुष्टिव्याकरण	मू.	मलयगिरिसूरि	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण		
७७८	४४७			कलापव्याकरण (कातंत्रव्याकरण)	मू.		सं.		२१००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
७७९	४४७		१	कलापव्याकरण वृत्ति	टी.	दुर्गसिंह	सं.		१०००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
७८०	४४८			कलापव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विषमपद व्याख्या	मू.	त्रिलोचनदास	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	कातंत्रचतुष्काख्यातकृद्पंजिका
७८१	४४९			आख्यात अवचूरि	टी.	(अज्ञात)	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	आख्यातावचूरिलौकिकव्याकर-णसम्बद्धा, पत्र ३६
७८२	४५०			लौकिककृद्वृत्ति टिप्पनक	टी.	(अज्ञात)	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	तद्सूत्रवृत्तिगर्भम्
७८३	४५१			कातंत्रलघु वृत्ति	टी.		सं.		८०००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
७८४	४५२			धातुपारायण	मू.	त्रिलोचनदास	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
७८५	४५३			कपालक विशेषव्याख्यान	टी.		सं.		३२५			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	न्यायरूपं धातुरूपं यावत्, (प्रायः कातंत्रव्याकरण)
७८६	४५४			उक्तिक (औक्तिक)	मू.		सं.					व्या.को.(७)	कोश		वृत्तित्रयोद्धाररूपम्
७८७	४५५			कौमारसारसमुच्चय	मू.		सं.		३१००			व्या.को.(७)	व्याकरण		श्लोकरूपो वृत्तिमयोद्धारसंग्रहात्मक
७८८	४५६			कलापक उणादि वृत्ति	टी.		सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	पाद-५, (प्रायः कातंत्रव्याकरण)
७८९	४५७			षड्भाषालक्षणपारायण	मू.		सं.		३४			व्या.को.(७)	व्याकरण		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
७९०	४५८			प्रमेयरत्नभांडागार विशेषविवरणं	टी.		सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण		कलापकाख्यातकृद्विषयम्, (प्रायः कातंत्रव्याकरण)
७९१	४५९			नामाख्यात वृत्ति	टी.		सं.		६२५			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	लक्षणकियत्पदसंग्रहत्मिका, (प्रायः कातंत्रव्याकरण)
७९२	४६०			कातंत्रप्रयोगसमुच्चय	मू.		सं.		५००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
७९३	४६१			कातंत्रोत्तर	मू.	विद्यानंदसूरि	सं.		७००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	समास प्रकरण यावत् कृ. व्याख्या
७९४	४६२			लिंगानुशासन (अमरकोश)	टी.	अमर	सं.		१४७०			व्या.को.(७)	कोश	जैनेतर	अमरकोशसंबद्धकाण्डत्रये
७९५	४६३			लिंगानुशासन	मू.	वामन	सं.	३४	४०			व्या.को.(७)	कोश	जैनेतर	आर्यामित ३४
७९६	४६४			अमरकोशशेष	मू.	(अज्ञात)	सं.					व्या.को.(७)	कोश	जैनेतर	
७९७	४६५			अमरकोश टिप्पनक	टी.	(अज्ञात)	सं.					व्या.को.(७)	कोश	जैनेतर	
७९८	४६६			स्यादिसमुच्चय	मू.	अमरचंद्र कवि पं.	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	(कर्ता-अमरचंद्रसूरि)
७९९	४६७			त्यादिसमुच्चय	मू.	अमरचंद्र कवि पं.	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	(कर्ता-अमरचंद्रसूरि)
८००	४६८			लौकिकत्यादिप्रक्रिया	मू.	सर्वधर	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
८०१	४६९			सारस्वतव्याकरण	मू.		सं.		१२२०			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
८०२	४७०			सारस्वतव्याकरण टिप्पनक	टी.		सं.		१२००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
८०३	४७१			सारस्वतव्याकरण प्रक्रिया	मू.	(अनुभूतिस्वरूपाचार्य)	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
८०४	४७२			गणरत्नमहोदधि	मू.	वर्धमान पं.	सं.			११९७		व्या.को.(७)	व्याकरण		
८०५	४७३			शाकटायनव्याख्या	मू.		सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	बह्व्यः
८०६	४७४			शब्दप्रभेदानुयायि नाममाला (शब्दप्रभेदनाममाला)	मू.	महेश्वर कवि	सं.					व्या.को.(७)	कोश		
८०७	४७५			पाणिनि व्याकरण	मू.	पाणिनि	सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	अष्टाध्यायिरूप
८०८	४७५		१	पाणिनि व्याकरण काशिका वृत्ति	टी.		सं.		१८०००			व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	
८०९	४७६			व्याकरणरत्नकोश	टी.		सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	पाणिनीय लघु वृत्ति रूप

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
८१०	४७७			पाणिनीय संक्षिप्त व्याकरण	मू.		सं.					व्या.को.(७)	व्याकरण	जैनेतर	रूपावतारकसंक्षिप्तव्याकरणं पाणिनीयसंग्रहात्मकं समासान् यावत्
८११	४७८			हलायुधछंदः	मू.	हलायुध	सं.					छ.सा.(८)	छंद		
८१२	४७८		१	हलायुधछंदोवृत्ति	टी.	हलायुध	सं.		१२३३			छ.सा.(८)	छंद		
८१३	४७९			छंदःप्रदीप	मू.	विप्र	सं.		९००			छ.सा.(८)	छंद		
८१४	४८०			वृत्तरत्नाकर	मू.	केदार भट्ट	सं.		५५०			छ.सा.(८)	छंद		
८१५	४८०		१	वृत्तरत्नाकर वृत्ति	टी.	श्रीकंठ	सं.		८२०			छ.सा.(८)	छंद		
८१६	४८१			जयदेवछंदःशास्त्र (छंदःशास्त्र)	मू.	जयदेव	सं.					छ.सा.(८)	छंद		
८१७	४८१		१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति	टी.	(वर्धमान)	सं.					छ.सा.(८)	छंद		
८१८	४८१	१	१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति टिप्पनक	टी.	श्रीचंद्रसूरि	सं.					छ.सा.(८)	छंद		
८१९	४८२			नंदिताढ्य (नंदिताढ्यछंदःसूत्र)	मू.	नंदिताढ्य	प्रा.		११६			छ.सा.(८)	छंद		
८२०	४८२		१	नंदिताढ्य वृत्ति	टी.	रत्नचंद्र गणी (देवाचार्य शि.)	सं.		४२१			छ.सा.(८)	छंद		प्रकरणसु (शत?) कारि
८२१	४८३			छंदोनुशासन	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		४१००			छ.सा.(८)	छंद		
८२२	४८३		१	छंदोनुशासन छंदश्चूडामणि वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		२९९९			छ.सा.(८)	छंद		
८२३	४८४			गाथारत्नकोश	मू.	(अज्ञात)	सं.		७३			छ.सा.(८)	छंद		
८२४	४८५			काव्यप्रकाश	मू.	मम्मट	सं.	१४१	१६८			छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	
८२५	४८५		१	काव्यप्रकाश वृत्ति	मू.	(अज्ञात)	सं.		१७३०			छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	
८२६	४८६			जयंतीदीपिका	मू.?	जयंतपुरोधस्	सं.		४७३०			छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	
८२७	४८७			काव्यप्रकाश संकेत टीका	टी.	माणिक्यचंद्रसूरि	सं.		३२४४	१२१६		छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	
८२८	४८८			काव्यप्रकाश विकाश	टी.	(अज्ञात)	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	कुछ पाठ खंडित है।
८२९	४८९			काव्यप्रकाश अवचूर्णि	टी.	(अज्ञात)	सं.		१२५०			छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	
८३०	४९०			काव्यप्रदीपिकासूत्र	मू.	पाल्हदेव	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	सूत्रवृत्ति गर्भ

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
८३१	४९०		१	काव्यप्रदीपिकासूत्र वृत्ति	टी.	पाल्हदेव	सं.		८०००			छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	उभय ग्रंथाग्र
८३२	४९१			काव्यानुशासन	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.		२८००			छ.सा.(८)	साहित्य		
८३३	४९१		१	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		४२००			छ.सा.(८)	साहित्य		अध्याय-८ (जि.र.को. में२८०० ग्रंथाग्र है।)
८३४	४९२			काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति विवेक	टी.	हेमचंद्रसूरि	सं.		४०००			छ.सा.(८)	साहित्य		(काव्यानुशासन की विवेक नाम की टीका(जि.र.को.९०))
८३५	४९३			दंड्यलंकार	मू.	(अज्ञात)	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	कुछ पाठ खंडित है। (कर्ता-दंडि?)
८३६	४९४			अलंकारमहोदधि	मू.	नरेंद्रप्रभसूरि	सं.			१२८७		छ.सा.(८)	साहित्य		
८३७	४९४		१	अलंकारमहोदधि वृत्ति	टी.	नरेंद्रप्रभसूरि	सं.		४५००	१२८७		छ.सा.(८)	साहित्य		उभय ग्रंथाग्र
८३८	४९५			काव्यकल्पलता	मू.	अमर कवि पं.	सं.		५००			छ.सा.(८)	साहित्य		(कर्ता-अमरचंद्रसूरि)
८३९	४९५		१	काव्यकल्पलता कविशिक्षा वृत्ति	टी.	अमर कवि पं.	सं.		३३५७			छ.सा.(८)	साहित्य		(कर्ता-अमरचंद्रसूरि)
८४०	४९६			वाग्भटालंकार	मू.	वाग्भट	सं.		२५७			छ.सा.(८)	साहित्य		परिच्छेद-५
८४१	४९६		१	वाग्भटालंकार वृत्ति (काव्यानुशासन)	टी.	वाग्भट	सं.		६००			छ.सा.(८)	साहित्य		(उभय ग्रंथाग्र-३००० अनुमानित)
८४२	४९७			रुद्रटालंकार (काव्यालंकार)	मू.	(रुद्रट)	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य	जैनेतर	अध्याय ६
८४३	४९८			कविशिक्षा	मू.	विनयचंद्र	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य		बप्पभट्टि शि.
८४४	४९९			अलंकारसर्वस्व	मू.	श्रीरुचक राजानक	सं.		१६००			छ.सा.(८)	साहित्य		
८४५	५००			काव्यकल्पलता वृत्ति परिमल	टी.	अमर कवि पं.	सं.		११२२			छ.सा.(८)	साहित्य		
८४६	५०१			अलंकार (सरस्वतीकंठाभरण)	मू.	भोजराज	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य		कुछ पाठ खंडित, (जि.र.को. में इस कृति को सरस्वतीकंठाभरण बताया है।)
८४७	५०१		१	अलंकार पदप्रकाश वृत्ति (सरस्वतीकंठाभरण पदप्रकाश वृत्ति)	टी.	आजड	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य		काव्यबन्धादिवाच्या, कुछ पाठ खंडित, (जि.र.को. में इस कृति को सरस्वतीकंठाभरण बताया है।)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
८४८	५०२			चंद्रालोकालंकार	मू.	अमर कवि पं.	सं.					छ.सा.(८)	साहित्य		पत्र-२०
८४९	५०३			द्व्याश्रय काव्य	मू.	हेमचंद्रसूरि	सं.	२८२८	३०२८			का.(९)	काव्य, व्याकरण		सर्ग-२०
८५०	५०४			द्व्याश्रय काव्य वृत्ति	टी.	अभयतिलक खर.	सं.		१७५७४	१३१२		का.(९)	काव्य, व्याकरण		पाद-२८ वृत्ति
८५१	५०५			प्राकृतद्व्याश्रयसूत्र	मू.	हेमचंद्रसूरि	प्रा.	९५०	११२८			का.(९)	काव्य, व्याकरण		
८५२	५०६			द्व्याश्रयप्राकृतसूत्र वृत्ति	टी.	पूर्णकलश खर.	सं.		४२३०	१३०७		का.(९)	काव्य, व्याकरण		पाद-४ वृत्ति
८५३	५०७			धर्माभ्युदय काव्य	मू.	उदयप्रभसूरि	सं.		५२००-५०४०			का.(९)	काव्य		वस्तुपालचरित्रवाच्य
८५४	५०८			शालेय काव्य (शालिभद्र चरित्र)	मू.	धर्मकुमार पं.	सं.		१२२४	१३३४		का.(९)	काव्य		
८५५	५०९			धर्मनाथ महाकाव्य	मू.	हरिचंद्र	सं.					का.(९)	काव्य	दिगंबर	सर्ग-२१, काव्यादिबंध
८५६	५१०			नेमि चरित्र महाकाव्य (नेमिऋषभद्विसंधानकाव्य)	मू.	सूराचार्य	सं.			१०९०		का.(९)	काव्य		गद्यपद्यमय, बहुखंडित, भोजराजराज्ये
८५७	५११			नेमि महाकाव्य टिप्पनक	टी.	(अज्ञात)	सं.		१४००			का.(९)	काव्य		
८५८	५१२			नेमिनिर्वाण काव्य	मू.	वाग्भट	सं.		१३६०			का.(९)	काव्य		सर्ग-१५
८५९	५१३			नेमिदूत काव्य	मू.	विक्रम	सं.					का.(९)	काव्य		कारिका-१३६
८६०	५१४			कुट्टिनीमत काव्य	मू.	दामोदर	सं.		११९०			का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८६१	५१५			विक्रमांकाभ्युदय	मू.	(विल्हण)	सं.		२५००			का.(९)	काव्य		
८६२	५१६			बालभारत	मू.	अमर कवि पं.	सं.		६७७४			का.(९)	काव्य	जैनेतर	परसमयवाच्य सर्ग-४३
८६३	५१७			अभिनंद काव्य (रामचरित्र)	मू.	(अज्ञात)	सं.					का.(९)	काव्य		सर्ग-३६
८६४	५१८			सोमपालविलास	मू.	(अज्ञात)	सं.					का.(९)	काव्य		
८६५	५१९			जल्हणकवि काव्य	मू.	जल्हण कवि	सं.		१०००			का.(९)	काव्य		
८६६	५२०			नरनारायणानंद काव्य	मू.	वस्तुपाल	सं.		१६००			का.(९)	काव्य		
८६७	५२१			तिलकमंजरी कथा	मू.	धनपाल पं.	सं.		८७१३			का.(९)	काव्य		चंपूरूपा वर्णनसारा
८६८	५२१		१	तिलकमंजरी कथा टिप्पनक	टी.	शांत्याचार्य	सं.		१२००			का.(९)	काव्य		(जिन.को.में१०५० ग्रंथाग्र है.)
८६९	५२२			तिलकमंजरीसारोद्धार	टी.	धनपाल पं. लघु	सं.		१२००			का.(९)	काव्य		(जिन.को.में१२२३ ग्रंथाग्र है.)

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
८७०	५२३			कादंबरी कथा	मू.	बाण कवि	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	पुलिद्रकृत संधाना
८७१	५२४			सौभाग्यमंजरी कथा	मू.	महेंद्र पं.	सं.		३१००			का.(९)	काव्य		परतीर्थ पं. महेंद्र कृता, गद्यपद्यमयी
८७२	५२५			वासवदत्ता कथा	मू.	सुबंधु कवि	सं.					का.(९)	काव्य		
८७३	५२५		१	वासवदत्ता कथा वृत्ति	टी.	नारायण कवि	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८७४	५२६			चंपूकथा (दमयंती कथा)	मू.	त्रिविक्रम भट्ट	सं.		२५००			का.(९)	काव्य		
८७५	५२६		१	चंपूकथा टिप्पनक	टी.	चंडपाल	सं.		१९००			का.(९)	काव्य		
८७६	५२७			गाथासप्तशती	टी.	सातवाहन	प्रा.	१०१	१२०			का.(९)	काव्य		कुछ पाठ खंडित है।
८७७	५२७		१	गाथासप्तशती टीका	टी.	भुवनपाल	सं.		४५००			का.(९)	काव्य		
८७८	५२७		२	गाथासप्तशती वृत्ति	टी.	आजड	सं.					का.(९)	काव्य		
८७९	५२७		३	गाथासप्तशती वृत्ति	टी.	जल्हणदेव	सं.					का.(९)	काव्य		
८८०	५२८			रघुवंश	मू.	(कालिदास)	सं.		१५७२			का.(९)	काव्य	जैनेतर	सर्ग-२०
८८१	५२९			माघ काव्य	मू.	(माघ)	सं.		२७००			का.(९)	काव्य	जैनेतर	सर्ग-२०
८८२	५२९		१	माघ काव्य टीका	टी.	वल्लभदेव	सं.		१२०००			का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८८३	५३०			कुमारसंभव	मू.	कालिदास	सं.		६१५			का.(९)	काव्य	जैनेतर	सर्ग-८
८८४	५३०		१	कुमारसंभव वृत्ति	टी.	धर्मकीर्त्ति	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	कर्ता दिगंबर है.
८८५	५३१			मेघदूत काव्य	मू.	(कालिदास)	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८८६	५३१		१	मेघदूत काव्य वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८८७	५३२			किरातकाव्य (किरातार्जुनीय)	मू.	भारवि	सं.	९८४	११६८			का.(९)	काव्य	जैनेतर	सर्ग-१८,कुछ पाठ खंडित है, ...वर्षे कृतं।
८८८	५३२		१	किरातार्जुनीय वृत्ति	मू.	प्रकाशवर्ष	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८८९	५३२		२	किरातार्जुनीय टीका	मू.	लोकानंद	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९०	५३३			गौडवध	मू.	(वाक्पतिराज)	प्रा.	११६८	१३८७			का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९१	५३४			नैषध महाकाव्य	मू.	श्रीहर्ष कवि	सं.		४००९			का.(९)	काव्य	जैनेतर	सर्ग-२२

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
८९२	५३४		१	नैषध काव्य टीका	टी.	चंड	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९३	५३४		२	नैषध काव्य टीका	टी.	गदाधर	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९४	५३४		३	नैषध काव्य टीका	टी.	विद्याधर	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९५	५३५			दशरूपालोक	मू.	(अज्ञात)	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९६	५३६			भारतशास्त्र	मू.	(अज्ञात)	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९७	५३७			धनुर्विद्या	मू.	(अज्ञात)	सं.					का.(९)	काव्य	जैनेतर	
८९८	५३८			रघुविलास नाटक	मू.	रामचंद्र पं.	सं.					नाट.(१०)	नाटक		(कर्ता-रामचंद्रसूरि)
८९९	५३९			नलविलास नाटक	मू.	रामचंद्र पं.	सं.					नाट.(१०)	नाटक		(कर्ता-रामचंद्रसूरि)
९००	५४०			चाणक्य नाटक	मू.	(अज्ञात)	सं.					नाट.(१०)	नाटक		
९०१	५४१			मोहपराजय नाटक	मू.	यशःपाल मंत्रि	सं.		१३२०			नाट.(१०)	नाटक		कुमारपाल नृपप्रतिबद्धं प्रायोऽन्तरंगवाच्यं, (श्लोक-१७००)
९०२	५४२			मानमुद्राभंजन नाटक	मू.	देवचंद्र गणी	सं.		१८००			नाट.(१०)	नाटक		सनत्कुमारविलासवती संबंध प्रतिबद्ध
९०३	५४३			प्रबुद्धरौहिणेय नाटक	मू.	रामचंद्रसूरि	सं.		१०००			नाट.(१०)	नाटक		
९०४	५४४			मुद्रितकुमुदचंद्र नाटक	मू.	यशश्चंद्र	सं.		५३५			नाट.(१०)	नाटक		
९०५	५४५			प्रबोधचंद्रोदय	मू.	(अज्ञात)	सं.		१०१०			नाट.(१०)	नाटक		
९०६	५४६			दूतांगद नाटक	मू.	(अज्ञात)	सं.					नाट.(१०)	नाटक		
९०७	५४७			शृंगारतिलक नाटक	मू.	(अज्ञात)	सं.					नाट.(१०)	नाटक		
९०८	५४८			मुरारि नाटक (अनर्घ्यराघव)	मू.	मुरारि	सं.					नाट.(१०)	नाटक	जैनेतर	
९०९	५४८		१	मुरारि नाटक टिप्पण	मू.	देवप्रभसूरि	सं.		७५००			नाट.(१०)	नाटक	जैनेतर	
९१०	५४८		२	मुरारि नाटक टिप्पण	मू.	नरचंद्र मल.	सं.		२३५०			नाट.(१०)	नाटक		
९११	५४९			अनर्घ्यराघव	मू.	(मुरारि)	सं.					नाट.(१०)	नाटक		(यह ५४८ की ही है।)
९१२	५५०			मुद्राराक्षस नाटक	मू.	विशाखदेव	सं.					नाट.(१०)	नाटक		चंद्रगुप्तचाणक्यसंबंद्ध

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
९१३	५५१			सुकृतमंडन नाटक	मू.		सं.					नाट.(१०)	नाटक		वस्तुपालसंबद्ध
९१४	५५२			राघवाभ्युदय नाटक	मू.	रामचंद्र पं.	सं.					नाट.(१०)	नाटक		अंक-१०
९१५	५५३			चंद्रलेखाविजय नाटक	मू.		सं.					नाट.(१०)	नाटक		
९१६	५५४			विक्रमोर्वशीय नाटक	मू.	कालिदास	सं.		७७०			नाट.(१०)	नाटक		
९१७	५५५			कर्पूरमंजरी नाटक	मू.		सं.					नाट.(१०)	नाटक		
९१८	५५६			रत्नावली नाटिका	मू.	हर्षदेव गणी	सं.		७३३			नाट.(१०)	नाटक		
९१९	५५७			वनमाला नाटिका	मू.	अमरचंद्र पं.	सं.					नाट.(१०)	नाटक		
९२०	५५८			आयज्ञानतिलकसूत्र	मू.	वोसरि भट्ट	सं.	७५०	८९०			ज्यो.आदि(११)	वास्तु		
९२१	५५८		१	आयज्ञानतिलकसूत्र वृत्ति	मू.	वोसरि भट्ट	सं.		१२००			ज्यो.आदि(११)	वास्तु		
९२२	५५९			आयसद्भाव	मू.		सं.		१९५			ज्यो.आदि(११)	वास्तु		
९२३	५५९		१	आयसद्भाव वृत्ति	मू.		सं.		१६००			ज्यो.आदि(११)	वास्तु		
९२४	५६०			कूरपर्वत?	मू.		?					ज्यो.आदि(११)	वास्तु		
९२५	५६१			प्रश्नव्याकरणज्योतिवृत्ति	मू.		सं.		२३००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		(जयपाहुड नाम से प्रचलित।)
९२६	५६२			चूडामणि	मू.		सं.		२३००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९२७	५६३			चूडामणिसार	मू.	लक्ष्मण भट्ट	सं.		६७२			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		प्रकरण-४१
९२८	५६४			त्रिशती	मू.	श्रीधर	सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९२९	५६५			गणितशास्त्र	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	गणित		
९३०	५६६			चंद्रोन्मीलनचूडामणिसार	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९३१	५६७			ज्ञानमंजरी	मू.		सं.		१००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९३२	५६८		१	वास्तुसार	मू.	ठक्कुर फेरु	प्रा.?	२०४	२४२	१३७२		ज्यो.आदि(११)	वास्तु		
९३३	५६८		२	ज्योतिःसार	मू.	ठक्कुर फेरु	सं.			१३७२		ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९३४	५६८		३	द्रव्यपरीक्षा	टी.	फेरु ठक्कर	सं.			१३७२		ज्यो.आदि(११)			
९३५	५६८		४	रत्नपरीक्षा	मू.	फेरु ठक्कर	सं.			१३७२		ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९३६	५६८		५	त्रिशती	मू.	फेरु ठक्कर	सं.			१३७२		ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
९३७	५६८	५	१	त्रिशती वृत्ति	मू.	फेरु ठक्कर	सं.			१३७२		ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९३८	५६९			गणिततिलक	मू.	(श्रीपति)	सं.					ज्यो.आदि(११)	गणित		
९३९	५६९		१	गणिततिलक वृत्ति	टी.	सिंहतिलकसूरि	सं.					ज्यो.आदि(११)	गणित		
९४०	५७०			प्रश्नप्रकाश	मू.	नरचंद्रसूरि	सं.		३६०			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		प्रकाश-२०
९४१	५७१			नरपतिजयचर्या	मू.		सं.		४८००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		चक्र-८४
९४२	५७२			नरपतिजयचर्यागतग्रहा	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९४३	५७३			नयनपूर्वांकपंचागतिथि विवरण (करणशेखर वृत्ति)	टी.		सं.		१९०			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		(मूल मालुम नहीं है.)
९४४	५७४			वाराहीसंहिता	मू.	वराहमिहिर	सं.					ज्यो.आदि(११)	निमित्त		
९४५	५७४		१	वाराहीसंहिता वृत्ति	टी.	वराहमिहिर	सं.		४०००			ज्यो.आदि(११)	निमित्त		उभय ग्रंथाग्र
९४६	५७५			भद्रबाहुसंहिता	मू.	(भद्रबाहुस्वामी)	सं.		१०६४			ज्यो.आदि(११)	निमित्त		कुछ पाठ खंडित।
९४७	५७६			सारावलीज्योतिष्क	मू.		सं.		२७००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९४८	५७७			ज्ञानदर्पणज्योतिष्क (त्रैलोक्यप्रकाश)	मू.	हेमप्रभसूरि	सं.		११४१			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९४९	५७८			भुवनदीपक (ग्रहभावप्रकाश)	मू.	पद्मप्रभसूरि	सं.		१६७	(१२२१)		ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९५०	५७८		१	भुवनदीपक वृत्ति	टी.	सिंहतिलकसूरि	सं.		१७००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९५१	५७९			रत्नकोशज्योतिष्क	मू.		सं.		१००?			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९५२	५८०			रत्नमालाज्योतिः	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९५३	५८१			षष्टिसंवत्सर	मू.	(क्षेमकीर्ति)	सं.		३००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		दैवग्रन्था अनेकविधा इह अनिर्दिष्टनामकाः
९५४	५८२			हर्षप्रकाशज्योतिष्क	मू.	हर्षदेव गणी	सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९५५	५८३			चंद्रार्कग्रहसार	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९५६	५८४			आशाधरीयपद्धति	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		यंत्रानि
९५७	५८५			बृहज्जातक	मू.	वराहमिहिर	सं.		४००			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		अध्याय-२५
९५८	५८६			जातकपद्धति	मू.	(श्रीधर)	सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
९५९	५८६		१	जातकपद्धति टीका	टी.		सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९६०	५८७			षट्पंचाशिका	मू.		सं.		५६			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		अध्याय-७
९६१	५८७		१	षट्पंचाशिका वृत्ति	टी.	(अज्ञात)	सं.		४९४			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९६२	५८८			प्रश्नज्ञानपद्धति	मू.	उत्पल भट्ट	सं.		१८०			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९६३	५८९			प्रश्नज्ञान (विद्वज्जनवल्लभ)	मू.	भोज	सं.					ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		अध्याय-१९
९६४	५९०			पुस्तकेंद्र ग्रंथ	मू.		?	११५	१३६			ज्यो.आदि(११)	ज्योतिष		
९६५	५९१			रुतज्ञान (पासाकेवली)	मू.		सं.		२१५			ज्यो.आदि(११)	निमित्त		पासाकेवलीविशेषरूप
९६६	५९२			मातृकाकेवली	मू.		सं.		५०			ज्यो.आदि(११)	शकुन		
९६७	५९३			कालज्ञान	मू.		सं.		२६४१			ज्यो.आदि(११)	शकुन		देवतादि ११ द्वारैः
९६८	५९४			पिपीलिकाज्ञान	मू.		प्रा.					ज्यो.आदि(११)	शकुन		
९६९	५९५			नाडीसंचारज्ञान	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	निमित्त		
९७०	५९६			सिद्धाज्ञापद्धति	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	निमित्त		
९७१	५९७			नाथपुस्तिका	मू.	खेलवाडिमाहुया	सं.	१३९७	१६५७			ज्यो.आदि(११)	निमित्त		योगिनामाम्नायग्रन्थसत्का हरीमेखलाजनाश्चर्यकराञ्जन-सिद्ध्यादियोगादिवाच्या
९७२	५९८			अर्धकांड	मू.	दुर्गदेव	सं.		१४७			ज्यो.आदि(११)	निमित्त		अ.१०-१४७
९७३	५९९			मंत्रमहोदधि	मू.	दुर्गदेव	प्रा.	३६	४२			ज्यो.आदि(११)	मंत्र		दिगंबरीय
९७४	६००			भैरवपद्मावतीकल्प	मू.	मल्लिषेणसूरि	सं.		४००			ज्यो.आदि(११)	मंत्र		
९७५	६०१			रुद्राक्षकल्प	मू.		सं.		७५			ज्यो.आदि(११)	मंत्र		
९७६	६०२			श्वेतार्ककल्प	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	मंत्र		
९७७	६०३			कामरूपपंचाशिका	मू.		सं.					ज्यो.आदि(११)	मंत्र		निमित्तवाच्या
९७८	६०३		१	कामरूपपंचाशिका वृत्ति	टी.		सं.	८८	१०४			ज्यो.आदि(११)	मंत्र		
९७९	६०४			वसंतराज	मू.	लवशर्मण	सं.		२३५०			ज्यो.आदि(११)	शकुन		
९८०	६०५			शकुनसारोद्धार	मू.	माणिक्यसूरि	सं.		५०८	१३३८		ज्यो.आदि(११)	शकुन		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
९८१	६०६			शकुनशास्त्र	मू.		प्रा.					ज्यो.आदि(११)	शकुन		वार्तामय, पत्र-१४
९८२	६०७			सामुद्रिक	मू.		सं.		६७			ज्यो.आदि(११)	सामुद्रिक		
९८३	६०८			शांतिनाथ चरित	मू.		सं.		२१९६			प्रकी.(१२)	चरित्र	दिगंबर	दिगंबरीय
९८४	६०९			यशोधर चरित	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	चरित्र	दिगंबर	दिगंबरीय
९८५	६१०			यशोधरकाव्यपंजिका	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	चरित्र		
९८६	६११			प्रतिक्रमणटीकासूत्र	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	आगम	दिगंबर	दिगंबर
९८७	६१२			आनंदसमुच्चय	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९८८	६१३			अध्यात्मशास्त्र	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		बहुप्रकरणमय
९८९	६१४			योगशास्त्र	मू.	(पतंजलि)	सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९९०	६१४		१	योगशास्त्र वृत्ति	टी.	भोजराज	सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९९१	६१५			आत्मावबोध	मू.	देवप्रभसूरि मल.	सं.		५५०			प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९९२	६१६			ज्ञानार्णव	मू.	शुभचंद्र	सं.		४०००			प्रकी.(१२)	अध्यात्म	दिगंबर	दिगंबरीय, अध्यात्मवाच्य, हैमयोगशास्त्रतुल्यवाच्यो बहुवैराग्य
९९३	६१७			ज्ञानदीपिका	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		पिण्डस्थादिध्यानवाच्या
९९४	६१८			तत्त्वार्थसार	मू.	अमृतचंद्रसूरि	सं.		७२४			प्रकी.(१२)	आगमिक प्रकरण	दिगंबर	दिगंबरीय
९९५	६१९			संवेगद्रुमकंदली	मू.	विमलाचार्य	सं.	५२	६२			प्रकी.(१२)	उपदेश		
९९६	६२०			ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्र	मू.	(अज्ञात)	सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९९७	६२१			ज्ञानांकुश	मू.		सं.	२८	३३			प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९९८	६२२			योगकल्पद्रुम	मू.	(विरूपाक्ष)	सं.		४१५			प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
९९९	६२३			अमृतसिद्धि	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
१०००	६२४			विरूपाक्षयोगशत	मू.		सं.		१०१			प्रकी.(१२)	अध्यात्म		अध्याय-६१
१००१	६२५			शाम्यशत	मू.	विजयसिंह	सं.		१०४			प्रकी.(१२)	अध्यात्म		
१००२	६२६			शमभावशत	मू.	धर्मघोषसूरि	सं.		१०२			प्रकी.(१२)	अध्यात्म		अंतरंगकथावाच्य

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१००३	६२७			गीता	मू.	(वेदव्यास)	सं.		७१६			प्रकी.(१२)	उपदेश	जैनेतर	भीष्मपर्वगीता भारते
१००४	६२८			धर्मपरीक्षा	मू.	अमितगति	सं.		१७३९	(१०७०)		प्रकी.(१२)	चर्चा	दिगंबर	परसमयाऽसंबद्धतावाच्या दिगम्बरीया
१००५	६२९			वज्रसूत्री	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	चर्चा		विप्रजात्यादिनिरासवाच्या
१००६	६३०			भविष्योत्तरोद्धार	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	पुराण		परसमयबहुस्वरूपवाच्यो जैनकृत परसमयज्ञानाय
१००७	६३१			द्विजवदनचपेटा	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	चर्चा		विप्रजात्यादिनिराकरणवाच्या
१००८	६३२			वनस्पतिसत्तरी (वनस्पतिसप्ततिका)	मू.	मुनिचंद्र	सं.	७०	८५			प्रकी.(१२)	आगमिक प्रकरण		
१००९	६३३			पाक्षिकसत्तरी (पाक्षिकसप्ततिका)	मू.	मुनिचंद्र	प्रा.	७०	८५			प्रकी.(१२)	आगमिक प्रकरण		
१०१०	६३४			अंगुलविचार	मू.	मुनिचंद्र	सं.	७०	८५			प्रकी.(१२)	आगमिक प्रकरण		
१०११	६३५			सम्यक्त्वस्वरूप	मू.	जिनचंद्र गणी	सं.	१०४	७५३			प्रकी.(१२)	आगमिक प्रकरण		
१०१२	६३६			जिनप्रतिष्ठा	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	विधि		
१०१३	६३७			यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल	मू.	जिनदेवसूरि	सं.			(११८५)		प्रकी.(१२)	विधि		पत्र-२६
१०१४	६३८			पर्वपंजिका	मू.	शांतिसूरि वादिवेताल	सं.					प्रकी.(१२)	विधि		स्वपनविध्यादिवाच्या
१०१५	६३९			धूमावल्यादिवृत्ति	टी.	शीलाचार्य	सं.					प्रकी.(१२)	विधि		मूल पता करे।
१०१६	६४०			कुसुमाञ्जलि	मू.	समुद्राचार्य	सं.		२५०			प्रकी.(१२)	विधि		कुसुमाञ्जल्यादिवाच्य
१०१७	६४१		१	ग्रहदोषज्ञानाध्याय	मू.	सिंहतिलक	सं.					प्रकी.(१२)	ज्योतिष		त्रयानां ग्रंथाग्र-१२४
१०१८	६४१		२	दोषशांतिक	मू.	सिंहतिलक	सं.					प्रकी.(१२)	विधि		जैन, त्रयानां ग्रंथाग्र-१२४
१०१९	६४१		३	दोषशांतिकलौकिक	मू.	सिंहतिलक	सं.		१२४			प्रकी.(१२)	विधि		त्रयानां ग्रंथाग्र-१२४
१०२०	६४२			आलोचनाविधान (आलोचनापदविधान)	मू.		सं.	८४	१००			प्रकी.(१२)	आचार		आलोचनापदसंग्रहादयो अनेके संग्रहा
१०२१	६४३		१	सूक्तरत्नाकर	मू.	धर्मकुमार	सं.					प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		
१०२२	६४३		२	सुभाषितसमुद्र	मू.	धर्मकुमार	सं.					प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		अनेकविधा सर्वे धर्मकुमारीया
१०२३	६४४			शुभावली	मू.		सं.					प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		

अ.क्र.	बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम	स्व.	कर्तानाम	भा.	गाथा	ग्रंथाग्र	र. वर्ष	अनु.	विषय बृ.टि	विषय	स्व-पर.	रिमार्क/रिसर्च रिमार्क
१०२४	६४५			दानादि प्रकरण	मू.	सूराचार्य	सं.					प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		सप्तावसर काव्यादिबन्ध, पत्र-३४
१०२५	६४६			सुधाकलश (सुभाषितकोश)	मू.	रामचंद्र पं.	सं.					प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		कुछ पाठ खंडित है.
१०२६	६४७			दीपालीकल्प	मू.		सं.		१४४			प्रकी.(१२)	उपदेश		
१०२७	६४८			दीपोत्सवकल्प	मू.	विनयचंद्र	सं.		२७४	१३८५		प्रकी.(१२)	उपदेश		
१०२८	६४९			दृष्टांतशत	मू.		सं.		१०४			प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		
१०२९	६५०			तत्त्वबिंदु	मू.	(देवभद्र)	सं.		७१			प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		
१०३०	६५१			बोधप्रदीपिका	मू.		सं.		५२			प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		
१०३१	६५२			सिंदूरप्रकर	मू.	(सोमप्रभसूरि)	सं.		९८			प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		
१०३२	६५३			इष्टोपदेश	मू.	(विद्यानंद)	सं.		५१			प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह	दिगंबर	दिगंबरीय
१०३३	६५४			सर्वेऽपि सूक्तरूपा	मू.		सं.		३८५			प्रकी.(१२)	सुभाषित संग्रह		

(परिशिष्ट २)

बृहट्टिप्पनिका

कृति वर्णानुक्रम सूचि

परिशिष्ट-२ बृहट्टिप्पनिका कृति वर्णानुक्रम सूचि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५१			अंगविद्या प्रकीर्णक
६३४			अंगुलविचार
८			अंतकृद्दशांगसूत्र
८		१	अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति
२२६			अजित चरित
२२७			अजित चरित
१३६			अजितशांति स्तव
१३६		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
१३७			अजितशांति स्तव वृत्ति
१३९		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
६०			अजीवकल्प प्रकीर्णक
३९५			अध्यात्मतरंगिणी
३९५		१	अध्यात्मतरंगिणी टीका
६१३			अध्यात्मशास्त्र
२५१			अनंत चरित
५४९			अनर्घ्यराघव
९			अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र
९		१	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र टीका
४२			अनुयोगद्वारसूत्र
४२		१	अनुयोगद्वारसूत्र चूर्णि
४२		३	अनुयोगद्वारसूत्र बृहद्वृत्ति
४२		२	अनुयोगद्वारसूत्र लघुवृत्ति
३६१			अनेकांतजयपताका
३६२			अनेकांतजयपताका वृत्ति
३६२		१	अनेकांतजयपताका वृत्ति टिप्पनक
३६८			अनेकांतवादप्रवेश
३८२			अनेकांतव्यवस्थापन
३८१			अपशब्दनिराकरण
३८५			अपौरुषेयवेदनिराकरण
५१७			अभिनंद काव्य
२२९			अभिनंदन चरित
२३०			अभिनंदन चरित
२०३			अभिनवनवपद
२०३		१	अभिनवनवपद वृत्ति
२९६			अममजिन चरित्र
४६५			अमरकोश टिप्पनक
४६४			अमरकोशशेष
६२३			अमृतसिद्धि
२६१			अर चरित
२६२			अर चरित
५९८			अर्धकांड
५०१			अलंकार
५०१		१	अलंकार पदप्रकाश वृत्ति
४९४			अलंकारमहोदधि
४९४		१	अलंकारमहोदधि वृत्ति
४९९			अलंकारसर्वस्व
७९			अष्टकसूत्र वृत्ति
४४९			आख्यात अवचूरि
१६२			आचरणशतक
१			आचारांगसूत्र
१		२	आचारांगसूत्र चूर्णि
१		३	आचारांगसूत्र टीका
१		१	आचारांगसूत्र निर्युक्ति
४३			आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
४३		१	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक वृत्ति
६१५			आत्मावबोध
२८७			आदि चरित
२२४			आदिनाथ चरित
२२५			आदिनाथ चरित
६१२			आनंदसमुच्चय
३९२			आप्तपरीक्षा
३९२		१	आप्तपरीक्षा वृत्ति
३६६			आप्तमीमांसालंकार
५५८			आयज्ञानतिलकसूत्र
५५८		१	आयज्ञानतिलकसूत्र वृत्ति
५५९			आयसद्भाव
५५९		१	आयसद्भाव वृत्ति
१४८			आराधनापताका
१४९			आराधनापताका

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४९			आराधनापताका प्रकीर्णक
१६४			आलापक
६४२			आलोचनाविधान
२४			आवश्यकसूत्र
२४		३५	आवश्यकसूत्र अवचूरि
२४		३०	आवश्यकसूत्र चूर्णि
२४		२९	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति
२४		३१	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३२	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति टिप्पनक
२४		३४	आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति
२४		३३	आवश्यकसूत्र वृत्ति
५८४			आशाधरीयपद्धति
६५३			इष्टोपदेश
२४	५	१	ईर्यापथिकीसूत्र
२४	६	१	ईर्यापथिकीसूत्र अवचूर्णि
४५४			उक्तिक
४२४			उणादिसूत्र
४३८			उणादिसूत्र वृत्ति
२९			उत्तराध्ययनसूत्र
२९		२	उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णि
२९		१	उत्तराध्ययनसूत्र निर्युक्ति
२९		४	उत्तराध्ययसूत्र बृहद्वृत्ति
२९		३	उत्तराध्ययसूत्र लघुवृत्ति
१९१			उपदेशकंदली
१९१		१	उपदेशकंदली वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२२३			उपदेशचिंतामणि
२२३		१	उपदेशचिंतामणि वृत्ति
१९५			उपदेशपदसूत्र
१९५		१	उपदेशपदसूत्र वृत्ति
१७०			उपदेशमाला
१७३			उपदेशमाला कर्णिका वृत्ति
१७४			उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति
१७५			उपदेशमाला लघु वृत्ति
१७०		१	उपदेशमाला वृत्ति
१७२			उपदेशमाला हेयोपदेया कथा
१७१			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१७६			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१६९			उपधानस्वरूप
३१८			उपमितभवप्रपंचासारसमुच्चय
३१७			उपमितभवप्रपंचोद्धार
३१९			उपमितसारोद्धार
७			उपासकदशांगसूत्र
७		१	उपासकदशांगसूत्र वृत्ति
१३९		७	उल्लासिक्कम
१३९	७	१	उल्लासिक्कम वृत्ति
१२			उववाइयसूत्र
१२		१	उववाइयसूत्र टीका
१४०		१	उवसग्गहर वृत्ति
१३९		३	उवसग्गहर स्तोत्र
१३९	३	१	उवसग्गहर स्तोत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३४३			ऋषिदत्ता चरित्र
६६			ऋषिभाषितानि
२११			ऋषिमंडल स्तव
२१२			ऋषिमंडल स्तव
२१३			ऋषिमंडल स्तव वृत्ति
२९८			एकादशगणधर चरित्र
१४१			ऐंद्रस्येव इत्यादि लघुवृत्ति
२५			ओघनिर्युक्ति
२५		१	ओघनिर्युक्ति चूर्णि
२५		३	ओघनिर्युक्ति टीका
२५		४	ओघनिर्युक्ति टीका
२५		२	ओघनिर्युक्ति भाष्य
४१४			कंदली किरणावली
२१६			कथाकोशसूत्र
२१६		१	कथाकोशसूत्र वृत्ति
३५६			कथापुस्तिका
३५७			कथापुस्तिका
२१७			कथामणिकोश
२१७		१	कथामणिकोश व्याख्या
२१९			कथारत्नकोश
३४८			कथारत्नसागर
२८५			कथावली-प्रथम परिच्छेद
४५३			कपालक विशेषव्याख्यान
५५५			कर्पूरमंजरी नाटक
९४			कर्मप्रकृतिसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९४		२	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि
९४	२	१	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि टिप्पनक
९४		१	कर्मप्रकृतिसूत्र वृत्ति
४५६			कलापक उणादि वृत्ति
४४७			कलापव्याकरण
४४८			कलापव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विषमपद व्याख्या
४४७		१	कलापव्याकरण वृत्ति
३२			कल्प चूर्णि
३१			कल्पविशेष चूर्णि
३३			कल्पवृत्ति
३५			कल्पसूत्र
३७		३	कल्पसूत्र कल्पनिरुक्तटिप्पनक
३७		२	कल्पसूत्र चूर्णि
३७		४	कल्पसूत्र टिप्पनक
३७		१	कल्पसूत्र निर्युक्ति
३५		१	कल्पसूत्र बृहद्भाष्य
३५		२	कल्पसूत्र विशेषचूर्णि
३७		५	कल्पसूत्र संदेहविषौषधिवृत्ति
२०			कल्पावतंसिकासूत्र
२०		१	कल्पावतंसिकासूत्र टीका
४९८			कविशिक्षा
४६०			कातंत्रप्रयोगसमुच्चय
४५१			कातंत्रलघु वृत्ति
४६१			कातंत्रोत्तर
५२३			कादंबरी कथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६०३			कामरूपपंचाशिका
६०३		१	कामरूपपंचाशिका वृत्ति
४४५			कारकसमुच्चय
५९३			कालज्ञान
४९५			काव्यकल्पलता
४९५		१	काव्यकल्पलता कविशिक्षा वृत्ति
५००			काव्यकल्पलता वृत्ति परिमल
४८५			काव्यप्रकाश
४८९			काव्यप्रकाश अवचूर्णि
४८८			काव्यप्रकाश विकाश
४८५		१	काव्यप्रकाश वृत्ति
४८७			काव्यप्रकाश संकेत टीका
४९०			काव्यप्रदीपिकासूत्र
४९०		१	काव्यप्रदीपिकासूत्र वृत्ति
४९१			काव्यानुशासन
४९१		१	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति
४९२			काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति विवेक
४११			किरणावली
४१३		१	किरणावली टिप्पनक
४१३		२	किरणावली टिप्पनक
५३२			किरातकाव्य
५३२		२	किरातार्जुनीय टीका
५३२		१	किरातार्जुनीय वृत्ति
२५९			कुंथु चरित
२६०			कुंथु चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५१४			कुट्टिनीमत काव्य
३१२			कुमारपाल प्रतिबोध
३१३			कुमारपाल प्रतिबोध
५३०			कुमारसंभव
५३०		१	कुमारसंभव वृत्ति
३२०			कुवलयमाला
३२१			कुवलयमाला
३४४			कुसुमसार कथा
६४०			कुसुमाञ्जलि
५६०			कूरपर्वत?
३७८		१	केवलिमुक्ति प्रकरण
४५५			कौमारसारसमुच्चय
३३८			कौमुदी कथा
१३५		८	क्षेत्रसमास
१२५			क्षेत्रसमाससूत्र
१२५		१	क्षेत्रसमाससूत्र वृत्ति
४२२			खंडनखंडखाद्य
४२२		१	खंडनखंडखाद्य टिप्पनक
६७		१	खंडषट्त्रिंशिका
६७	१	१	खंडषट्त्रिंशिका वृत्ति
६१			गच्छाचार प्रकीर्णक
४७२			गणरत्नमहोदधि
५६९			गणिततिलक
५६९		१	गणिततिलक वृत्ति
बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६५			गणितशास्त्र
५०			गणिविद्या प्रकीर्णक
४८४			गाथारत्नकोश
५२७			गाथासप्तशती
५२७		१	गाथासप्तशती टीका
५२७		२	गाथासप्तशती वृत्ति
५२७		३	गाथासप्तशती वृत्ति
६२७			गीता
५३३			गौडवध
२१५			गौतमपृच्छा
२१५		१	गौतमपृच्छा वृत्ति
१५७			गौतमभाषित
६४१		१	ग्रहदोषज्ञानाध्याय
१६			चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र
१६		१	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
२३६			चंद्रप्रभ चरित
२३७			चंद्रप्रभ चरित
२३८			चंद्रप्रभ चरित
२३९			चंद्रप्रभ चरित
५५३			चंद्रलेखाविजय नाटक
५९			चंद्रवेधक प्रकीर्णक
५८३			चंद्रार्कग्रहसार
५०२			चंद्रालोकालंकार
५६६			चंद्रोन्मीलनचूडामणिसार
५२६			चंपूकथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५२६		१	चंपूकथा टिप्पनक
५२			चतुःशरण प्रकीर्णक
५२		१	चतुःशरण प्रकीर्णक वृत्ति
३५४			चतुर्विंशति प्रबंध
१४४			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४५			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७		१	चतुर्विंशतिजिन स्तव वृत्ति
५४०			चाणक्य नाटक
५६२			चूडामणि
५६३			चूडामणिसार
२४	६	२	चैत्यवंदन अवचूर्णि
२४		४	चैत्यवंदन वृत्ति
२४		२६	चैत्यवंदन वृत्ति बालावबोध
२४		२५	चैत्यवंदनभाष्य संघाचारवृत्ति
२४	५	२	चैत्यवंदनसूत्र
२४	१५	१	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४		१८	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४	९	१	चैत्यवंदनसूत्र पदपर्याय
२४		२	चैत्यवंदनसूत्र ललितविस्तराटीका
२४	२४	१	चैत्यवंदनसूत्रभाष्य
२४		१४	चैत्यवंदनादि वृत्ति
२४		१२	चैत्यवंदनाभाष्य वृत्ति
२४		११	चैत्यवंदनामहाभाष्य
२४		२३	चैत्यवंदनाविचार

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४७९			छंदःप्रदीप
४८३			छंदोनुशासन
४८३		१	छंदोनुशासन छंदश्चूडामणि वृत्ति
१८			जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
१८		१	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र चूर्णि
१८		२	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र टीका
१२६			जंबूद्वीपसंग्रहणी
१२६		१	जंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति
३०५			जंबूस्वामी चरित
३०६			जंबूस्वामी चरित
३०६		१	जंबूस्वामी चरित टिप्पन
१३३			जनेन येन स्तुति
१३३			जनेन येन स्तुति वृत्ति
२०४			जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण
२०४		१	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण वृत्ति
४८६			जयंतीदीपिका
१३८		१	जयतिहुअण वृत्ति
१३८			जयतिहुअण स्तोत्र
४८१			जयदेवछंदःशास्त्र
४८१		१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति
४८१	१	१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति टिप्पनक
१३५		२	जयवृषभ स्तुति
३४१			जयसुंदरी कथा
५१९			जल्हणकवि काव्य
५८६			जातकपद्धति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५८६		१	जातकपद्धति टीका
३४७			जिनदत्त कथा
६३६			जिनप्रतिष्ठा
१४६			जिनशतक
१४६		१	जिनशतक वृत्ति
४०			जीतकल्पसूत्र
४०		२	जीतकल्पसूत्र चूर्णि
४०		३	जीतकल्पसूत्र टिप्पनक
४०		१	जीतकल्पसूत्र भाष्य
४०		५	जीतकल्पसूत्र विवरण
४०		४	जीतकल्पसूत्र वृत्ति
८६			जीवसमास
८६		१	जीवसमास वृत्ति
१४		३	जीवाजीवाभिगमसूत्र टीका
१४		२	जीवाजीवाभिगमसूत्र प्रदेशवृत्ति
१४			जीवाभिगमसूत्र
१४		१	जीवाभिगमसूत्र चूर्णि
६			ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र
६		१	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति
५७७			ज्ञानदर्पणज्योतिष्क
६१७			ज्ञानदीपिका
५६७			ज्ञानमंजरी
६२१			ज्ञानांकुश
६१६			ज्ञानार्णव
६२०			ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६८		२	ज्योतिःसार
५४			ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक
५४		१	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक टीका
२०५			ठाणा प्रकरण
२०५		१	ठाणा प्रकरण वृत्ति
१३९		४	तं जयउ स्तोत्र
१३९	४	१	तं जयउ स्तोत्र वृत्ति
४६			तंदुलवैचारिक प्रकीर्णक
६५०			तत्त्वबिंदु
१६१			तत्त्वबोध प्रकरण
४०२			तत्त्वसंग्रह
६१८			तत्त्वार्थसार
६८			तत्त्वार्थसूत्र
६८		१	तत्त्वार्थसूत्र भाष्य
६८		३	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति (लघु)
६८		२	तत्त्वार्थसूत्र व्याख्या
१६५			तपासमाचारी
३९८			तर्कभाषा
३९८		१	तर्कभाषा टीका
५२१			तिलकमंजरी कथा
५२१		१	तिलकमंजरी कथा टिप्पनक
५२२			तिलकमंजरीसारोद्धार
५६			तीर्थोद्गार प्रकीर्णक
४६७			त्यादिसमुच्चय
५६४			त्रिशती

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६८		५	त्रिशती
५६८	५	१	त्रिशती वृत्ति
२८६			त्रिषष्टि
१५४			त्रिषष्टितीर्थकल्प
४९३			दंड्यलंकार
३४५			दमयंती कथा
१८७			दर्शनशुद्धि
१८८			दर्शनशुद्धि
१८७		१	दर्शनशुद्धि वृत्ति
८५			दर्शनसत्तरी
५३५			दशरूपालोक
२६			दशवैकालिकसूत्र
२६		२	दशवैकालिकसूत्र चूर्णि
२६		१	दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति
२६		३	दशवैकालिकसूत्र बृहद्वृत्ति
२६		५	दशवैकालिकसूत्र लघुवृत्ति
२६		४	दशवैकालिकसूत्र वृत्ति
३६			दशाश्रुतस्कंधसूत्र
६४५			दानादि प्रकरण
२२१			दानोपदेशमाला
२२१		१	दानोपदेशमाला वृत्ति
१८२			दिनकृत्य
१८२		१	दिनकृत्य वृत्ति
९६			दीपकसंग्रह
९६		१	दीपकसंग्रह वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६४७			दीपालीकल्प
६४८			दीपोत्सवकल्प
५४६			दूतांगद नाटक
१५०			दूषमदंडिका
१५२			दूषमदंडिका
१५१			दूषमविच्छेददंडिका
६४९			दृष्टांतशत
४५			देवेंद्रस्तव प्रकीर्णक
१३५		६	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र
१३५	६	१	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र वृत्ति
६४१		२	दोषशांतिक
६४१		३	दोषशांतिकलौकिक
५६८		३	द्रव्यपरीक्षा
३७०			द्रव्यालंकार
६३१			द्विजवदनचपे.
५३			द्वीपसागरप्रज्ञप्ति संग्रहणी
५०३			द्व्याश्रय काव्य
५०४			द्व्याश्रय काव्य वृत्ति
५०६			द्व्याश्रयप्राकृतसूत्र वृत्ति
१२९			धनपालपंचाशिका
१२९		१	धनपालपंचाशिका वृत्ति
५३७			धनुर्विद्या
३४९			धन्यशालिभद्र चरित्र
१४२			धरणोरगेंद्र स्तव
१४२		१	धरणोरगेंद्र स्तव वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२५२			धर्म चरित
२५३			धर्म चरित
५०९			धर्मनाथ महाकाव्य
६२८			धर्मपरीक्षा
८१			धर्मबिंदु
८१		१	धर्मबिंदु वृत्ति
१८३			धर्मरत्न
१८३		१	धर्मरत्न वृत्ति
२०९			धर्मविधि प्रकरण
२०९		१	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
२१०			धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
७१		३	धर्मसंग्रहणी
७१	३	१	धर्मसंग्रहणी वृत्ति
८०			धर्मसूत्राष्टक
२२०			धर्माख्यानकोश
२२०		१	धर्माख्यानकोश वृत्ति
५०७			धर्माभ्युदय काव्य
२०६			धर्मोपदेश प्रकरण
१७८			धर्मोपदेशमाला
१७९			धर्मोपदेशमाला प्रकरण वृत्ति
१८०			धर्मोपदेशमाला विवरण
१७८		१	धर्मोपदेशमाला वृत्ति
४३७			धातुपारायण
४५२			धातुपारायण
६३९			धूमावल्यादिवृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४८२			नंदिताढ्य
४८२		१	नंदिताढ्य वृत्ति
४१			नंदीसूत्र
४१		१	नंदीसूत्र चूर्णि
४१		३	नंदीसूत्र बृहद्वृत्ति
४१		२	नंदीसूत्र वृत्ति
४१		४	नंदीसूत्र वृत्ति टिप्पनक
२६९			नमि चरित
२७०			नमि चरित
३६०			नयचक्रवाल
३६०		१	नयचक्रवाल वृत्ति
५७३			नयनपूर्वांकपंचागतिथि विवरण
५२०			नरनारायणानंद काव्य
५७१			नरपतिजयचर्या
५७२			नरपतिजयचर्यागतग्रहा
३४०			नर्मदासुंदरी कथा
२९३			नल चरित
५३९			नलविलास नाटक
८७			नवतत्त्व
८७		१	नवतत्त्व भाष्य
८७	१	१	नवतत्त्व भाष्य वृत्ति
१९९			नवपद
१९९			नवपद वृत्ति
२००			नवपद वृत्ति
२०१			नवपद वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२०२			नवपद वृत्ति
११३		१	नव्यकर्मविपाक
११३	१	१	नव्यकर्मविपाक वृत्ति
११३		२	नव्यकर्मस्तव
११३	२	१	नव्यकर्मस्तव वृत्ति
११३		३	नव्यबंधस्वामित्व
११३	३	१	नव्यबंधस्वामित्व अवचूर्णि
११३		५	नव्यशतक
११३	५	१	नव्यशतक वृत्ति
११३		४	नव्यषडशीति
११३	४	१	नव्यषडशीति वृत्ति
५९५			नाडीसंचारज्ञान
५९७			नाथपुस्तिका
४५९			नामाख्यात वृत्ति
६७		३	निगोदषट्त्रिंशिका
६७	३	१	निगोदषट्त्रिंशिका वृत्ति
५८			निरयविभक्ति
१९			निरयावलिकासूत्र
१९		१	निरयावलिकासूत्र वृत्ति
३०			निशीथसूत्र
३०		३	निशीथसूत्र चूर्णि
३०		४	निशीथसूत्र चूर्णिविंशोद्देशव्याख्या
३०		१	निशीथसूत्र बृहद्भाष्य
३०		२	निशीथसूत्र भाष्य
३०		५	निशीथसूत्र विंशोद्देशवृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२७१			नेमि चरित
२७२			नेमि चरित
२७३			नेमि चरित
२८९			नेमि चरित
५१०			नेमि चरित्र महाकाव्य
५११			नेमि महाकाव्य टिप्पनक
५१३			नेमिदूत काव्य
५१२			नेमिनिर्वाण काव्य
५३४		१	नैषध काव्य टीका
५३४		२	नैषध काव्य टीका
५३४		३	नैषध काव्य टीका
५३४			नैषध महाकाव्य
४१५			न्यायकंदली
४१६			न्यायकंदली टिप्पनक
४१७			न्यायकंदली पंजिका
४०५			न्यायकलिका टीका
३८९			न्यायकुमुदचंद्रसूत्र
३८९		१	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र वृत्ति
४०३			न्यायकुसुमांजलि
४१२			न्यायतंत्र टीका
४०४			न्यायतर्कसूत्र
४०४		३	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्य टीका
४०४		४	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्यपरिशुद्धि टीका
४०४		५	न्यायतर्कसूत्र न्यायालंकार वृत्ति
४०४		६	न्यायतर्कसूत्र पंचप्रस्थानन्यायतर्काणि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४०४		२	न्यायतर्कसूत्र वार्तिक
४००			न्यायप्रवेशक
४०१			न्यायप्रवेशक टिप्पन
४००		१	न्यायप्रवेशक टीका
३९९			न्यायबिंदुसूत्र
३९९		१	न्यायबिंदुसूत्र वृत्ति
४०७			न्यायभूषण
४१८			न्यायलीलावती
३९१			न्यायविनिश्चय
३९१		१	न्यायविनिश्चय वृत्ति
४०७		१	न्यायसार टीका
४०७		२	न्यायसार टीका
४०७		३	न्यायसार पंजिका टीका
४०४		१	न्यायसूत्रभाष्य
३६५			न्यायावतार
३६५		१	न्यायावतार वृत्ति
३६५		२	न्यायावतार वृत्ति
३९		२	पंचकल्पभाष्य
३९			पंचकल्पसूत्र
३९		३	पंचकल्पसूत्र चूर्णि
३९		१	पंचकल्पसूत्र निर्युक्ति
२४		२८	पंचपरमेष्ठि विवरण
३३९			पंचमी कथा
७६			पंचवस्तुक
७६		१	पंचवस्तुक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९५			पंचसंग्रह
९५		१	पंचसंग्रह वृत्ति
९५		२	पंचसंग्रह वृत्ति
७५			पंचसूत्र
७५		१	पंचसूत्र वृत्ति
३५१			पंचाख्यानक
७७			पंचाशक १९
७७		१	पंचाशक १९ वृत्ति
७७		२	पंचाशक-१ चूर्णि
७३			पंचास्तिकाय संग्रह
७३		१	पंचास्तिकाय संग्रह वृत्ति
३९३			पत्रपरीक्षा
३०१			पद्म चरित
२३३			पद्मप्रभ चरित
२९४			पद्मानंद महाकाव्य
३७५			परिणामिवस्तुव्यवस्थापन
४२८			परिभाषा वृत्ति
२९२			परिशिष्ट पर्व
३९०			परीक्षामुख
३९०		१	परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला वृत्ति
३७			पर्युषणाकल्पसूत्र
६३८			पर्वपंजिका
२०७			पवज्जाविहाण
२०७		१	पवज्जाविहाण वृत्ति
२०८			पवज्जाविहाण वृत्ति
९०			पवयणसंदोह
९०		१	पवयणसंदोह वृत्ति
३१०			पांडव चरित्र
६३३			पाक्षिकसत्तरी
२७			पाक्षिकसूत्र
२७		१	पाक्षिकसूत्र वृत्ति
४७५			पाणिनि व्याकरण
४७५		१	पाणिनि व्याकरण काशिका वृत्ति
४७७			पाणिनीय संक्षिप्त व्याकरण
२७४			पार्श्व चरित
२७५			पार्श्व चरित
२७६			पार्श्व चरित
२७७			पार्श्व चरित
२७८			पार्श्व चरित
२९०			पार्श्व चरित
२९५			पार्श्वदशगणधर चरित
२८			पिंडनिर्युक्ति
२८		२	पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति
२८		१	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
२८		३	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
९३		३	पिंडविशुद्धि अणुवृत्ति
९३		२	पिंडविशुद्धि दीपिका लघुवृत्ति
९३		१	पिंडविशुद्धि वृत्ति
९३			पिंडविशुद्धिसूत्र
५९४			पिपीलिकाज्ञान
२९७			पुंडरीक चरित्र
६७		२	पुद्गलषट्त्रिंशिका
६७	२	१	पुद्गलषट्त्रिंशिका वृत्ति
२२			पुष्पचूलिकासूत्र
२२		१	पुष्पचूलिकासूत्र टीका
१७७			पुष्पमाला
१७७		१	पुष्पमाला वृत्ति
२१			पुष्पिकासूत्र
२१		१	पुष्पिकासूत्र टीका
५९०			पुस्तकेंद्र ग्रंथ
३३४			पूजाष्टक कथा
३३५			पूजाष्टक कथा
३३७			पूजाष्टक कथा
३०७			पृथ्वीचंद्र चरित
३०७		१	पृथ्वीचंद्र चरित्र टिप्पन
३०७		२	पृथ्वीचंद्र चरित्र संकेत
१५			प्रज्ञापनासूत्र
१५		३	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी
१५	३	१	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी अवचूरि
१५		१	प्रज्ञापनासूत्र लघु वृत्ति
१५		२	प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति
६११			प्रतिक्रमणटीकासूत्र
३८६			प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण
२४	२४	३	प्रत्याख्यानभाष्य
२४		१५	प्रत्याख्यानसूत्र टीका

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		८	प्रत्याख्यानसूत्र वृत्ति
२४		७	प्रत्याख्यानस्वरूप प्रकरण
३०४			प्रत्येकबुद्ध चरित
३५२		१	प्रद्युम्न चरित्र-शांब चरित्र
३५३			प्रबंधचूडामणि
५४३			प्रबुद्धरौहिणेय नाटक
५४५			प्रबोधचंद्रोदय
३११			प्रभावक चरित्र
३५९			प्रमाणकलिका
३५९		१	प्रमाणकलिका वृत्ति
३६७			प्रमाणमीमांसा
३६७		१	प्रमाणमीमांसा वृत्ति
३९७			प्रमाणवार्त्तिक
३९७		१	प्रमाणवार्त्तिक वृत्ति
३७१			प्रमाणसंग्रह
३९४			प्रमेयकमलमार्तंड
३७२			प्रमेयरत्नकोश
४५८			प्रमेयरत्नभांडागार विशेषविवरणं
७४			प्रवचनसार
७४		१	प्रवचनसार वृत्ति
७१			प्रवचनसारोद्धार
७१		२	प्रवचनसारोद्धार विषमपद टीका
७१		१	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति
८३			प्रशमरति
८३		१	प्रशमरति वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५८९			प्रश्नज्ञान
५८८			प्रश्नज्ञानपद्धति
५७०			प्रश्नप्रकाश
५६१			प्रश्नव्याकरणज्योतिवृत्ति
१०			प्रश्नव्याकरणसूत्र
१०		१	प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति
२२२			प्रश्नोत्तरमाला
२२२		१	प्रश्नोत्तरमाला वृत्ति
४३२		१	प्राकृतदीपिका वृत्ति
५०५			प्राकृतद्व्याश्रयसूत्र
४३२		२	प्राकृतरूपसिद्धि
६७		४	बंधषट्त्रिंशिका
६७	४	१	बंधषट्त्रिंशिका वृत्ति
१३४			बप्पभट्टि स्तुति
१३४		१	बप्पभट्टि स्तुति वृत्ति
५१६			बालभारत
५८५			बृहज्जातक
३३२			बृहत् पूजाष्टक
९७			बृहत्कर्मविपाक
९८			बृहत्कर्मविपाक टिप्पनक
९७		१	बृहत्कर्मविपाक वृत्ति
९९			बृहत्कर्मस्तव
१००			बृहत्कर्मस्तव टिप्पन
९९		१	बृहत्कर्मस्तव वृत्ति
१२०			बृहत्क्षेत्रसमास

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१२३			बृहत्क्षेत्रसमास लघु वृत्ति
१२०		१	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२१			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२२			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१०४			बृहत्शतक
१०७			बृहत्शतक चूर्णि
१०८			बृहत्शतक टिप्पनक
१०४		१	बृहत्शतक वृत्ति
१०२			बृहत्षडशीति
१०२		१	बृहत्षडशीति वृत्ति
१०३			बृहत्षडशीति वृत्ति
१०९			बृहत्षडशीति वृत्ति
११९			बृहत्संग्रहणी
११९		१	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
११९		२	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
१०१			बृहद्बंधस्वामित्व
१०१		१	बृहद्बंधस्वामित्व वृत्ति
३७६			बोटिकनिषेध
६५१			बोधप्रदीपिका
४८			भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
१३१			भक्तामर स्तव
१३१		१	भक्तामर स्तव प्रदीपिका
१३२			भक्तामर स्तव वृत्ति
५			भगवतीसूत्र
५		२	भगवतीसूत्र अवचूरि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५		१	भगवतीसूत्र चूर्णि
५		३	भगवतीसूत्र वृत्ति
२१४			भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र
२१४		१	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र वृत्ति
५७५			भद्रबाहुसंहिता
१४०		२	भयहर (नमिऊण) वृत्ति
१३९		२	भयहर स्तोत्र
१३९	२	१	भयहर स्तोत्र वृत्ति
१८१			भवभावना
१८१		१	भवभावना वृत्ति
६३०			भविष्योत्तरोद्धार
५३६			भारतशास्त्र
४१०			भास्करभूषण
५७८			भुवनदीपक
५७८		१	भुवनदीपक वृत्ति
३२२			भुवनसुंदरी चरित्र
६००			भैरवपद्मावतीकल्प
५९९			मंत्रमहोदधि
४०८			मतमनोहर
३२७			मनोरमा चरित्र
१३९		६	मयरहियं स्तोत्र
१३९	६	१	मयरहियं स्तोत्र वृत्ति
५५			मरणसमाधि प्रकीर्णक
३२५			मलयसुंदरी कथा
३२६			मलयसुंदरी कथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२६३			मल्लि चरित
२६४			मल्लि चरित
२६५			मल्लि चरित
३८		२	महानिशीथसूत्र बृहद्वाचना
३८		१	महानिशीथसूत्र मध्यमवाचना
३८			महानिशीथसूत्र लघुवाचना
२८३			महापुरुष चरित
२८४			महापुरुष चरित
४४			महाप्रत्याख्यानसूत्र प्रकीर्णक
२७९			महावीर चरित
२९१			महावीर चरित
३१६			महीपाल चरित्र
५२९			माघ काव्य
५२९		१	माघ काव्य टीका
५९२			मातृकाकेवली
५४२			मानमुद्राभंजन नाटक
५५०			मुद्राराक्षस नाटक
५४४			मुद्रितकुमुदचंद्र नाटक
३१४			मुनिपति चरित्र
३१५			मुनिपति चरित्र
२६७			मुनिसुव्रत चरित
२६८			मुनिसुव्रत चरित
२६६			मुनिसुव्रत चरित
५४८			मुरारि नाटक
५४८		१	मुरारि नाटक टिप्पण

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५४८		२	मुरारि नाटक टिप्पण
४४६			मुष्टिव्याकरण
३३०			मृगावती चरित्र
५३१			मेघदूत काव्य
५३१		१	मेघदूत काव्य वृत्ति
५४१			मोहपराजय नाटक
४०		७	यतिजीतकल्प
४०	७	१	यतिजीतकल्प वृत्ति
६३७			यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल
१३५	१	२	यत्राखिल स्तुति
६०९			यशोधर चरित
६१०			यशोधरकाव्यपंजिका
१३५		५	यूयं यूयं स्तोत्र
१३५	५	१	यूयं यूयं स्तोत्र वृत्ति
६२२			योगकल्पद्रुम
८२			योगबिंदु
८२		१	योगबिंदु वृत्ति
१९३			योगशास्त्र
६१४			योगशास्त्र
१९३		१	योगशास्त्र वृत्ति
१९४			योगशास्त्र वृत्ति
६१४		१	योगशास्त्र वृत्ति
९२			योनिप्राभृत
५२८			रघुवंश
५३८			रघुविलास नाटक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५७९			रत्नकोशज्योतिष्क
३३३			रत्नचूड कथा
५६८		४	रत्नपरीक्षा
५८०			रत्नमालाज्योतिः
३६४		२	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
३६४		३	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
५५६			रत्नावली नाटिका
५५२			राघवाभ्युदय नाटक
१३			राजप्रश्नीयसूत्र
१३		१	राजप्रश्नीयसूत्र टीका
२८८			रामायण
५९१			रुतज्ञान
४९७			रुद्रटालंकार
६०१			रुद्राक्षकल्प
१२४			लघुक्षेत्रसमास
१२४		१	लघुक्षेत्रसमास वृत्ति
४२९			लघुन्यास
११९		३	लघुसंग्रहणी
११९	३	१	लघुसंग्रहणी वृत्ति
२४		३	ललितविस्तराटीका की पंजिकाटीका
४२५			लिंगानुशासन
४६२			लिंगानुशासन
४६३			लिंगानुशासन
३५५			लीलावती कथा
३८८			लोकतत्त्वनिर्णय

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४५०			लौकिककृद्वृत्ति टिप्पनक
४६८			लौकिकत्यादिप्रक्रिया
२४	६	३	वंदनक अवचूर्णि
२४	२४	२	वंदनकभाष्य
२४	५	३	वंदनकसूत्र
२४	१५	२	वंदनकसूत्र टीका
१९७			वंदनकुलक
१९७		१	वंदनकुलक वृत्ति
६२९			वज्रसूत्री
५५७			वनमाला नाटिका
६३२			वनस्पतिसत्तरी
३८४			वर्द्धमान स्तोत्र
३८४		१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति
३८४	१	१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति विषमार्थ
६०४			वसंतराज
६५			वसुदेवमध्यम खंड
६५		१	वसुदेवमध्यम खंड संग्रहणी
६४			वसुदेवहिंडी-द्वितीय खंड
६३			वसुदेवहिंडी-प्रथम खंड
४९६			वाग्भटालंकार
४९६		१	वाग्भटालंकार वृत्ति
५७४			वाराहीसंहिता
५७४		१	वाराहीसंहिता वृत्ति
५२५			वासवदत्ता कथा
५२५		१	वासवदत्ता कथा वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४७			वासुपूज्य चरित
२४८			वासुपूज्य चरित
५६८		१	वास्तुसार
१४३			विंशतिद्वात्रिंशिका
५१५			विक्रमांकाभ्युदय
५५४			विक्रमोर्वशीय नाटक
८९			विचारसार प्रकरण
३३६			विजयचंद्रकेवलि कथा
११			विपाकसूत्र
११		१	विपाकसूत्र टीका
२४९			विमल चरित
२५०			विमल चरित
६२४			विरूपाक्षयोगशत
१८९			विवेकमंजरी
१९०			विवेकमंजरी
१८९		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१९०		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१५८			विवेकविलास
७०			विशेषणवतीसूत्र
७०		१	विशेषणवतीसूत्र वृत्ति
२४		३६	विशेषावश्यकसूत्र
२४		३७	विशेषावश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३८	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति
२४		३९	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति (जीर्णा)
१९८			विषयविनिग्रह कुलक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१९८		१	विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति
१२७			वीतराग स्तव
१२७		१	वीतराग स्तव वृत्ति
२८२			वीर चरित
२८०			वीर चरित्र
२८१			वीर चरित्र
१३०			वीर स्तव
१३०		१	वीर स्तव वृत्ति
६२			वीरस्तव प्रकीर्णक
४८०			वृत्तरत्नाकर
४८०		१	वृत्तरत्नाकर वृत्ति
४२०			वृद्धवादसार प्रकरण
२३			वृष्णिदशासूत्र
२३		१	वृष्णिदशासूत्र टीका
३४			व्यवहारसूत्र
३४		२	व्यवहारसूत्र चूर्णि
३४		१	व्यवहारसूत्र भाष्य
३४		३	व्यवहारसूत्र वृत्ति
४७६			व्याकरणरत्नकोश
१५३			व्युच्छेददंडिका
६०६			शकुनशास्त्र
६०५			शकुनसारोद्धार
१६०			शतपदी
१५६			शत्रुंजयकल्प
१५५			शत्रुंजयमाहात्म्य
४७४			शब्दप्रभेदानुयायि नाममाला
६२६			शमभावशत
१३५		४	शस्ता शमा स्तोत्र
१३५	४	१	शस्ता शमा स्तोत्र वृत्ति
२५४			शांति चरित
२५५			शांति चरित
२५६			शांति चरित
२५७			शांति चरित
२५८			शांति चरित
६०८			शांतिनाथ चरित
४७३			शाकटायनव्याख्या
६२५			शाम्यशत
५०८			शालेय काव्य
४२१			शास्त्रदर्पण
२४२			शीतल चरित
२४३			शीतल चरित
२१८			शीलभावना
२१८		१	शीलभावना वृत्ति
१९२			शीलोपदेशमाला
१९२		१	शीलोपदेशमाला वृत्ति
६४४			शुभावली
५४७			शृंगारतिलक नाटक
१२८			शोभन स्तुति
१२८		१	शोभन स्तुति वृत्ति
४०		८	श्राद्धजीतकल्प
४०		६	श्राद्धजीतकल्प
४०	६	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
४०	८	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
२४	९	३	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४		१६	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र लघु वृत्ति
२४		१०	श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्र व्याख्याप्रकरण
६९			श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र
६९		१	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
२४		२१	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि
२४	४	२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
८४			श्रावकभंगकादिविचारगाथा
८४		१	श्रावकभंगकादिविचारगाथा वृत्ति
१६३			श्रावकसामाचारी
१६३		१	श्रावकसामाचारी वृत्ति
१३५		२	श्रीतीर्थराज स्तुति
१३५		९	श्रीशैवैयं
२४४			श्रेयांस चरित
२४५			श्रेयांस चरित
२४६			श्रेयांस चरित
३८७			श्वेतांबरदर्शनसिद्धि
६०२			श्वेतार्ककल्प
५८७			षट्पंचाशिका
५८७		१	षट्पंचाशिका वृत्ति
४०९			षट्पदार्थप्रवेश प्रकरण

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		१३	षडावश्यक चैत्यवंदनादिसर्वसूत्रव्याख्यारूप
३७३			षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार
३७४			षड्दर्शनसमुच्चय
३७४		१	षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति
४५७			षड्भाषालक्षणपारायण
५८१			षष्टिसंवत्सर
७८			षोडशक
७८		१	षोडशक वृत्ति
२२८			संभव चरित
६१९			संवेगद्रुमकंदली
१९६			संवेगरंगशाला
४७			संस्तारक प्रकीर्णक
१३५		७	सत्तरिसयठाण
११४			सत्तरी
११४		१	सत्तरी चूर्णि
११६			सत्तरी टिप्पनक
११५			सत्तरी टीका
११७			सत्तरी वृत्ति
११८			सत्तरीभाष्य
३२८			सप्तक्षेत्रीनाम कथा
७२			समयसार प्रकरण
७२		१	समयसार प्रकरण टीका
३०८			समरादित्य चरित्र
३०९			समरादित्य चरित्र
४			समवायांगसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४		१	समवायांगसूत्र टीका
४४३			समासतद्धितसार प्रकरण
३५८			सम्मतिसूत्र
३५८		१	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३५८		२	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३५८		३	सम्मतिसूत्र वृत्ति
१८५			सम्यक्त्व
८८			सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि
८८		१	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि वृत्ति
१८५		१	सम्यक्त्व वृत्ति
१८६			सम्यक्त्व वृत्ति
६३५			सम्यक्त्वस्वरूप
३७९			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३८०			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३६९			सर्वज्ञसिद्धि प्रकरण
३४२			सर्वांगसुंदरी कथा
३७७			सर्वार्थनिराकरणवादस्थल आदि
६५४			सर्वेऽपि सूक्तरूपा
४१९			सांख्यसप्तति
४१९		१	सांख्यसप्तति वृत्ति
२४		१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र
२४	९	२	साधुप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४	४	१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१७	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१९	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		२०	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२७	साधुप्रतिक्रमाणादि षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति
१६६			सामाचारी
१६७			सामाचारी
१६८			सामाचारी
६०७			सामुद्रिक
४०६			सारसंग्रह
४६९			सारस्वतव्याकरण
४७०			सारस्वतव्याकरण टिप्पनक
४७१			सारस्वतव्याकरण प्रक्रिया
५७६			सारावलीज्योतिष्क
१०५			सार्धशतक
१११			सार्धशतक वृत्ति
११२			सार्धशतक वृत्ति
११०			सार्धशतक टिप्पन
१०५		१	सार्धशतक वृत्ति
१०६			सार्धशतक वृत्ति
६५२			सिंदूरप्रकर
१३९		५	सिग्घभव
१३९	५	१	सिग्घभव वृत्ति
५७		१	सिद्धप्राभृत प्रकीर्णक वृत्ति
५७			सिद्धप्राभृतसूत्र प्रकीर्णक
५९६			सिद्धाज्ञापद्धति
९१		१	सिद्धिपंचाशिका वृत्ति
९१			सिद्धिपंचाशिकासूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३०२			सीता चरित
३०३			सीता चरित
५५१			सुकृतमंडन नाटक
३२९			सुदर्शना चरित्र
६४६			सुधाकलश
२३४			सुपार्श्व चरित
२३५			सुपार्श्व चरित
६४३		२	सुभाषितसमुद्र
२३१			सुमति चरित
२३२			सुमति चरित
३३१			सुरसुंदरी कथा
३२४			सुलसा चरित
२४०			सुविधि चरित
२४१			सुविधि चरित
६४३		१	सूक्तरत्नाकर
२			सूत्रकृतांगसूत्र
२		२	सूत्रकृतांगसूत्र चूर्णि
२		३	सूत्रकृतांगसूत्र टीका
२		१	सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति
१७			सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
१७		१	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
१५९			सोमनीति
५१८			सोमपालविलास
५२४			सौभाग्यमंजरी कथा
३४६			सौभाग्यसुंदरी कथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३७८		२	स्त्रीमुक्ति प्रकरण
३			स्थानांगसूत्र
३		१	स्थानांगसूत्र टीका
३५०			स्थूलिभद्र चरित्र
४६६			स्यादिसमुच्चय
३८३			स्याद्वादमंजरी
३६३			स्याद्वादरत्नाकर
३६४			स्याद्वादरत्नाकर टीका
३६४		१	स्याद्वादरत्नाकर रत्नाकरावतारिका लघु टीका
२९९			हरिवंश चरित
३००			हरिवंश चरित
३२३			हरिविक्रम चरित्र
५८२			हर्षप्रकाशज्योतिष्क
४७८			हलायुधछंदः
४७८		१	हलायुधछंदोवृत्ति
१८४			हितोपदेशमाला
१८४		१	हितोपदेशमाला वृत्ति
३९६			हेतुबिंदु
३९६		१	हेतुबिंदु टीका
४४४			हेमविभ्रम
४४४		१	हेमविभ्रम वृत्ति
४२३			हेमव्याकरणसूत्र
४२६			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२७			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२५		२	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्न्यास

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४२५		१	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्वृत्ति
४४१			हैमअनेकार्थनाममाला
४४१		१	हैमअनेकार्थनाममाला वृत्ति
४३३			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३४			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३५			हैमचतुष्क वृत्ति अवचूरि
४४२			हैमदेशीनाममाला
४४२		१	हैमदेशीनाममाला रत्नावली वृत्ति
४३९			हैमन्याय वृत्ति
४३२			हैमप्राकृत वृत्ति
४३१			हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात
४३६			हैमलिंगानुशासन अवचूरि
४३०			हैमव्याकरण कक्षापट वृत्ति
४४०			हैमीनाममाला
४४०		१	हैमीनाममाला वृत्ति

(परिशिष्ट ३)

बृहट्टिप्पनिका

कर्ता वर्णानुक्रम सूचि

परिशिष्ट-३ बृहट्टिप्पनिका कर्ता वर्णानुक्रम सूचि

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३९१			(अकलंकदेव)	न्यायविनिश्चय
२२६			(अज्ञात)	अजित चरित
२२७			(अज्ञात)	अजित चरित
३८२			(अज्ञात)	अनेकांतव्यवस्थापन
३८१			(अज्ञात)	अपशब्दनिराकरण
५१७			(अज्ञात)	अभिनंद काव्य
२२९			(अज्ञात)	अभिनंदन चरित
२३०			(अज्ञात)	अभिनंदन चरित
४६५			(अज्ञात)	अमरकोश टिप्पनक
४६४			(अज्ञात)	अमरकोशशेष
२६१			(अज्ञात)	अर चरित
२६२			(अज्ञात)	अर चरित
४४९			(अज्ञात)	आख्यात अवचूरि
१६२			(अज्ञात)	आचरणशतक
२२५			(अज्ञात)	आदिनाथ चरित
१४०		१	(अज्ञात)	उवसग्गहर वृत्ति
२१२			(अज्ञात)	ऋषिमंडल स्तव
२१३			(अज्ञात)	ऋषिमंडल स्तव वृत्ति
२१६			(अज्ञात)	कथाकोशसूत्र
४८९			(अज्ञात)	काव्यप्रकाश अवचूर्णि
४८८			(अज्ञात)	काव्यप्रकाश विकाश
४८५		१	(अज्ञात)	काव्यप्रकाश वृत्ति
४१३		१	(अज्ञात)	किरणावली टिप्पनक
४१३		२	(अज्ञात)	किरणावली टिप्पनक
२६०			(अज्ञात)	कुंथु चरित
३१३			(अज्ञात)	कुमारपाल प्रतिबोध
३३८			(अज्ञात)	कौमुदी कथा
४८४			(अज्ञात)	गाथारत्नकोश
२१५			(अज्ञात)	गौतमपृच्छा
१५७			(अज्ञात)	गौतमभाषित
१४४			(अज्ञात)	चतुर्विंशतिजिन स्तव
५४०			(अज्ञात)	चाणक्य नाटक
२४		१२	(अज्ञात)	चैत्यवंदनाभाष्य वृत्ति
१२६		१	(अज्ञात)	जंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति
३०५			(अज्ञात)	जंबूस्वामी चरित
३०६		१	(अज्ञात)	जंबूस्वामी चरित टिप्पन
२०४		१	(अज्ञात)	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण वृत्ति
३४१			(अज्ञात)	जयसुंदरी कथा
४०		३	(अज्ञात)	जीतकल्पसूत्र टिप्पनक
४०		१	(अज्ञात)	जीतकल्पसूत्र भाष्य
४०		५	(अज्ञात)	जीतकल्पसूत्र विवरण
६२०			(अज्ञात)	ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्र
१६५			(अज्ञात)	तपासमाचारी
४९३			(अज्ञात)	दंड्यलंकार
३४५			(अज्ञात)	दमयंती कथा
१८८			(अज्ञात)	दर्शनशुद्धि
५३५			(अज्ञात)	दशरूपालोक
५४६			(अज्ञात)	दूतांगद नाटक
५३७			(अज्ञात)	धनुर्विद्या
१४२		१	(अज्ञात)	धरणोरगेंद्र स्तव वृत्ति
२५३			(अज्ञात)	धर्म चरित
२२०			(अज्ञात)	धर्माख्यानकोश
२२०		१	(अज्ञात)	धर्माख्यानकोश वृत्ति
४१		२	(अज्ञात)	नंदीसूत्र वृत्ति
२६९			(अज्ञात)	नमि चरित
२७०			(अज्ञात)	नमि चरित
३४०			(अज्ञात)	नर्मदासुंदरी कथा
२७२			(अज्ञात)	नेमि चरित
५११			(अज्ञात)	नेमि महाकाव्य टिप्पनक
४०५			(अज्ञात)	न्यायकलिका टीका
४०७		२	(अज्ञात)	न्यायसार टीका
७५			(अज्ञात)	पंचसूत्र
३५१			(अज्ञात)	पंचाख्यानक
२३३			(अज्ञात)	पद्मप्रभ चरित
३७५			(अज्ञात)	परिणामिवस्तुव्यवस्थापन
४२८			(अज्ञात)	परिभाषा वृत्ति
२७८			(अज्ञात)	पार्श्व चरित
२९५			(अज्ञात)	पार्श्वदशगणधर चरित
२८		१	(अज्ञात)	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३३४			(अज्ञात)	पूजाष्टक कथा
३३५			(अज्ञात)	पूजाष्टक कथा
३३७			(अज्ञात)	पूजाष्टक कथा
१५	३	१	(अज्ञात)	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी अवचूरि
३५२		१	(अज्ञात)	प्रद्युम्न चरित्र-शांब चरित्र
५४५			(अज्ञात)	प्रबोधचंद्रोदय
३९७			(अज्ञात)	प्रमाणवार्त्तिक
३९७		१	(अज्ञात)	प्रमाणवार्त्तिक वृत्ति
३७१			(अज्ञात)	प्रमाणसंग्रह
३३२			(अज्ञात)	बृहत् पूजाष्टक
१४०		२	(अज्ञात)	भयहर (नमिऊण) वृत्ति
५३६			(अज्ञात)	भारतशास्त्र
४१०			(अज्ञात)	भास्करभूषण
४०८			(अज्ञात)	मतमनोहर
३२६			(अज्ञात)	मलयसुंदरी कथा
२७९			(अज्ञात)	महावीर चरित
५३१		१	(अज्ञात)	मेघदूत काव्य वृत्ति
३६४		२	(अज्ञात)	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
३६४		३	(अज्ञात)	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
१२४			(अज्ञात)	लघुक्षेत्रसमास
४५०			(अज्ञात)	लौकिककृद्वृत्ति टिप्पनक
३८४		१	(अज्ञात)	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति
३८४	१	१	(अज्ञात)	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति विषमार्थ
२४९			(अज्ञात)	विमल चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
२५०			(अज्ञात)	विमल चरित
१९८			(अज्ञात)	विषयविनिग्रह कुलक
४२१			(अज्ञात)	शास्त्रदर्पण
२४२			(अज्ञात)	शीतल चरित
२४३			(अज्ञात)	शीतल चरित
२१८			(अज्ञात)	शीलभावना
५४७			(अज्ञात)	शृंगारतिलक नाटक
१६३			(अज्ञात)	श्रावकसामाचारी
५८७		१	(अज्ञात)	षट्पंचाशिका वृत्ति
४०९			(अज्ञात)	षट्पदार्थप्रवेश प्रकरण
३७३			(अज्ञात)	षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार
२२८			(अज्ञात)	संभव चरित
४४३			(अज्ञात)	समासतद्धितसार प्रकरण
३५८		३	(अज्ञात)	सम्मतिसूत्र वृत्ति
१८६			(अज्ञात)	सम्यक्त्व वृत्ति
३८०			(अज्ञात)	सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३४२			(अज्ञात)	सर्वांगसुंदरी कथा
४०६			(अज्ञात)	सारसंग्रह
३०२			(अज्ञात)	सीता चरित
३०३			(अज्ञात)	सीता चरित
२३१			(अज्ञात)	सुमति चरित
२४०			(अज्ञात)	सुविधि चरित
२४१			(अज्ञात)	सुविधि चरित
५१८			(अज्ञात)	सोमपालविलास
३४६			(अज्ञात)	सौभाग्यसुंदरी कथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
२९९			(अज्ञात)	हरिवंश चरित
३९६			(अज्ञात)	हेतुबिंदु
३९६		१	(अज्ञात)	हेतुबिंदु टीका
४३३			(अज्ञात)	हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३५			(अज्ञात)	हैमचतुष्क वृत्ति अवचूरि
४३२			(अज्ञात)	हैमप्राकृत वृत्ति
४३१			(अज्ञात)	हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात
४३०			(अज्ञात)	हैमव्याकरण कक्षापट वृत्ति
३१६			(अज्ञात?)	महीपाल चरित्र
३९५		१	(अनवगत)	अध्यात्मतरंगिणी टीका
६१३			(अनवगत)	अध्यात्मशास्त्र
४२		२	(अनवगत)	अनुयोगद्वारसूत्र लघुवृत्ति
६२३			(अनवगत)	अमृतसिद्धि
६१२			(अनवगत)	आनंदसमुच्चय
५५९			(अनवगत)	आयसद्भाव
५५९		१	(अनवगत)	आयसद्भाव वृत्ति
६४२			(अनवगत)	आलोचनाविधान
२४		३५	(अनवगत)	आवश्यकसूत्र अवचूरि
२४		३०	(अनवगत)	आवश्यकसूत्र चूर्णि
५८४			(अनवगत)	आशाधरीयपद्धति
२४	५	१	(अनवगत)	ईर्यापथिकीसूत्र
४५४			(अनवगत)	उक्तिक
२५		१	(अनवगत)	ओघनिर्युक्ति चूर्णि
२५		२	(अनवगत)	ओघनिर्युक्ति भाष्य
३५६			(अनवगत)	कथापुस्तिका

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३५७			(अनवगत)	कथापुस्तिका
४५३			(अनवगत)	कपालक विशेषव्याख्यान
५५५			(अनवगत)	कर्पूरमंजरी नाटक
४५६			(अनवगत)	कलापक उणादि वृत्ति
४४७			(अनवगत)	कलापव्याकरण
३२			(अनवगत)	कल्प चूर्णि
३१			(अनवगत)	कल्पविशेष चूर्णि
३५		१	(अनवगत)	कल्पसूत्र बृहद्भाष्य
३५		२	(अनवगत)	कल्पसूत्र विशेषचूर्णि
४६०			(अनवगत)	कातंत्रप्रयोगसमुच्चय
४५१			(अनवगत)	कातंत्रलघु वृत्ति
६०३			(अनवगत)	कामरूपपंचाशिका
६०३		१	(अनवगत)	कामरूपपंचाशिका वृत्ति
५९३			(अनवगत)	कालज्ञान
५६०			(अनवगत)	कूरपर्वत?
४५५			(अनवगत)	कौमारसारसमुच्चय
१२५		१	(अनवगत)	क्षेत्रसमाससूत्र वृत्ति
४२२		१	(अनवगत)	खंडनखंडखाद्य टिप्पनक
५६५			(अनवगत)	गणितशास्त्र
५५३			(अनवगत)	चंद्रलेखाविजय नाटक
५८३			(अनवगत)	चंद्रार्कग्रहसार
५६६			(अनवगत)	चंद्रोन्मीलनचूडामणिसार
५६२			(अनवगत)	चूडामणि
२४	५	२	(अनवगत)	चैत्यवंदनसूत्र
२४		२३	(अनवगत)	चैत्यवंदनाविचार

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१८		१	(अनवगत)	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र चूर्णि
१३३			(अनवगत)	जनेन येन स्तुति वृत्ति
५८६		१	(अनवगत)	जातकपद्धति टीका
६३६			(अनवगत)	जिनप्रतिष्ठा
६१७			(अनवगत)	ज्ञानदीपिका
५६७			(अनवगत)	ज्ञानमंजरी
६२१			(अनवगत)	ज्ञानांकुश
६८		३	(अनवगत)	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति (लघु)
३९८		१	(अनवगत)	तर्कभाषा टीका
६४७			(अनवगत)	दीपालीकल्प
६४९			(अनवगत)	दृष्टांतशत
६३१			(अनवगत)	द्विजवदनचपेटा
५७३			(अनवगत)	नयनपूर्वांकपंचागतिथि विवरण
५७१			(अनवगत)	नरपतिजयचर्या
५७२			(अनवगत)	नरपतिजयचर्यागतग्रहा
५९५			(अनवगत)	नाडीसंचारज्ञान
४५९			(अनवगत)	नामाख्यात वृत्ति
४१२			(अनवगत)	न्यायतंत्र टीका
४७५		१	(अनवगत)	पाणिनि व्याकरण काशिका वृत्ति
४७७			(अनवगत)	पाणिनीय संक्षिप्त व्याकरण
५९४			(अनवगत)	पिपीलिकाज्ञान
५९०			(अनवगत)	पुस्तकेंद्र ग्रंथ
६११			(अनवगत)	प्रतिक्रमणटीकासूत्र
४५८			(अनवगत)	प्रमेयरत्नभांडागार विशेषविवरणं

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५६१			(अनवगत)	प्रश्नव्याकरणज्योतिवृत्ति
३७६			(अनवगत)	बोटिकनिषेध
६५१			(अनवगत)	बोधप्रदीपिका
६३०			(अनवगत)	भविष्योत्तरोद्धार
५९२			(अनवगत)	मातृकाकेवली
६०९			(अनवगत)	यशोधर चरित
६१०			(अनवगत)	यशोधरकाव्यपंजिका
५७९			(अनवगत)	रत्नकोशज्योतिष्क
५८०			(अनवगत)	रत्नमालाज्योतिः
५९१			(अनवगत)	रुतज्ञान
६०१			(अनवगत)	रुद्राक्षकल्प
२४	५	३	(अनवगत)	वंदनकसूत्र
६२९			(अनवगत)	वज्रसूत्री
६२४			(अनवगत)	विरूपाक्षयोगशत
४७६			(अनवगत)	व्याकरणरत्नकोश
६०६			(अनवगत)	शकुनशास्त्र
६०८			(अनवगत)	शांतिनाथ चरित
४७३			(अनवगत)	शाकटायनव्याख्या
६४४			(अनवगत)	शुभावली
३८७			(अनवगत)	श्वेतांबरदर्शनसिद्धि
६०२			(अनवगत)	श्वेतार्ककल्प
५८७			(अनवगत)	षट्पंचाशिका
४५७			(अनवगत)	षड्भाषालक्षणपारायण
११८			(अनवगत)	सत्तरीभाष्य
३७७			(अनवगत)	सर्वार्थनिराकरणवादस्थल आदि

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
६५४			(अनवगत)	सर्वेऽपि सूक्तरूपा
२४		१	(अनवगत)	साधुप्रतिक्रमणसूत्र
२४		१९	(अनवगत)	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
१६८			(अनवगत)	सामाचारी
६०७			(अनवगत)	सामुद्रिक
४६९			(अनवगत)	सारस्वतव्याकरण
४७०			(अनवगत)	सारस्वतव्याकरण टिप्पनक
५७६			(अनवगत)	सारावलीज्योतिष्क
५९६			(अनवगत)	सिद्धाज्ञापद्धति
५५१			(अनवगत)	सुकृतमंडन नाटक
२३४			(अनवगत)	सुपार्श्व चरित
४७१			(अनुभूतिस्वरूपाचार्य)	सारस्वतव्याकरण प्रक्रिया
२९			(अनेक स्थविर)	उत्तराध्ययनसूत्र
८		१	(अभयदेवसूरि)	अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति
९		१	(अभयदेवसूरि)	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र टीका
७		१	(अभयदेवसूरि)	उपासकदशांगसूत्र वृत्ति
१३८			(अभयदेवसूरि)	जयतिहुअण स्तोत्र
६		१	(अभयदेवसूरि)	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति
१०		१	(अभयदेवसूरि)	प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति
११		१	(अभयदेवसूरि)	विपाकसूत्र टीका
४२			(आर्यरक्षित)	अनुयोगद्वारसूत्र
१९१			(आसड)	उपदेशकंदली
१९०			(आसड)	विवेकमंजरी
४१९			(ईश्वरकृष्ण)	सांख्यसप्तति
४१४			(उदयन)	कंदली किरणावली

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
४११			(उदयन)	किरणावली
४०३			(उदयन)	न्यायकुसुमांजलि
५३१			(कालिदास)	मेघदूत काव्य
५२८			(कालिदास)	रघुवंश
७३			(कुंदकुदाचार्य)	पंचास्तिकाय संग्रह
७४			(कुंदकुदाचार्य)	प्रवचनसार
७२			(कुंदकुदाचार्य)	समयसार प्रकरण
२४		३९	(कोट्याचार्य)	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति (जीर्णा)
५८१			(क्षेमकीर्ति)	षष्टिसंवत्सर
३९			(गणधर)	पंचकल्पसूत्र
३८		२	(गणधर)	महानिशीथसूत्र बृहद्वाचना
३८		१	(गणधर)	महानिशीथसूत्र मध्यमवाचना
३८			(गणधर)	महानिशीथसूत्र लघुवाचना
९७			(गर्गर्षि)	बृहत्कर्मविपाक
३४३			(गुणपाल)	ऋषिदत्ता चरित्र
३७४		१	(गुणरत्नसूरि)	षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति
११४			(चंद्रर्षि महत्तर)	सत्तरी
१९२			(जयकीर्तिसूरि)	शीलोपदेशमाला
१९७			(जिनदत्त खरतर)	वंदनकुलक
१३९		७	(जिनदत्त)	उल्लासिक्कम
१३९		४	(जिनदत्तसूरि)	तं जयउ स्तोत्र
१३९		५	(जिनदत्तसूरि)	सिग्घभव
४१		१	(जिनदास गणी महत्तर)	नंदीसूत्र चूर्णि
३०		३	(जिनदास गणी महत्तर)	निशीथसूत्र चूर्णि

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१२०			(जिनभद्रगणिक्षमा-श्रमण)	बृहत्क्षेत्रसमास
९९			(जिनवल्लभसूरि)	बृहत्कर्मस्तव
२२१			(दिवाकर)	दानोपदेशमाला
६५०			(देवभद्र)	तत्त्वबिंदु
१८७			(देवभद्रसूरि)	दर्शनशुद्धि
४१			(देववाचक)	नंदीसूत्र
३९९			(धर्मकीर्ति)	न्यायबिंदुसूत्र
६७		३	(धर्मघोषसूरि)	निगोदषट्त्रिंशिका
६७		२	(धर्मघोषसूरि)	पुद्गलषट्त्रिंशिका
६७		४	(धर्मघोषसूरि)	बंधषट्त्रिंशिका
२१४			(धर्मघोषसूरि)	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र
१७०			(धर्मदास गणी)	उपदेशमाला
१३६			(नंदिषेण मुनि)	अजितशांति स्तव
६१४			(पतंजलि)	योगशास्त्र
१८९			(पद्मदेवसूरि)	विवेकमंजरी
२०७			(पद्मानंदसूरि)	पवज्जाविहाण
५४			(पादलिप्तसूरि)	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक
२४		२९	(भद्रबाहुस्वामी)	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति
२९		१	(भद्रबाहुस्वामी)	उत्तराध्ययनसूत्र निर्युक्ति
१३९		३	(भद्रबाहुस्वामी)	उवसग्गहर स्तोत्र
३५			(भद्रबाहुस्वामी)	कल्पसूत्र
३७		१	(भद्रबाहुस्वामी)	कल्पसूत्र निर्युक्ति
२६		१	(भद्रबाहुस्वामी)	दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति
३६			(भद्रबाहुस्वामी)	दशाश्रुतस्कंधसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३७			(भद्रबाहुस्वामी)	पर्युषणाकल्पसूत्र
२८			(भद्रबाहुस्वामी)	पिंडनिर्युक्ति
५७५			(भद्रबाहुस्वामी)	भद्रबाहुसंहिता
३४			(भद्रबाहुस्वामी)	व्यवहारसूत्र
४०७			(भासर्वज्ञ)	न्यायभूषण
१३		१	(मलयगिरिसूरि)	राजप्रश्नीयसूत्र टीका
५२९			(माघ)	माघ काव्य
३९०			(माणिक्यनंदिन्)	परीक्षामुख
१३१			(मानतुंगसूरि)	भक्तामर स्तव
१३९		२	(मानतुंगसूरि)	भयहर स्तोत्र
५४९			(मुरारि)	अनर्घ्यराघव
३९८			(मोक्षाकरगुप्त)	तर्कभाषा
३८५			(यशोदेव)	अपौरुषेयवेदनिराकरण
४९७			(रुद्रट)	रुद्रटालंकार
४८१		१	(वर्धमान)	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति
१७२			(वर्धमानसूरि)	उपदेशमाला हेयोपदेया कथा
४१८			(वल्लभाचार्य)	न्यायलीलावती
५३३			(वाक्पतिराज)	गौडवध
४१९		१	(वाचस्पति मिश्र?)	सांख्यसप्तति वृत्ति
१४२			(वादिदेवसूरि)	धरणोरगेंद्र स्तव
४०७		३	(वासुदेवसूरि)	न्यायसार पंजिका टीका
३९२			(विद्यानंद)	आप्तपरीक्षा
३९२		१	(विद्यानंद)	आप्तपरीक्षा वृत्ति
६५३			(विद्यानंद)	इष्टोपदेश
३९३			(विद्यानंद)	पत्रपरीक्षा

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१५०			(विमलप्रभसूरि)	दूषमदंडिका
२२२			(विमलसूरि)	प्रश्नोत्तरमाला
६२२			(विरूपाक्ष)	योगकल्पद्रुम
५१५			(विल्हण)	विक्रमांकाभ्युदय
४३			(वीरभद्र गणी)	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
५२			(वीरभद्र गणी)	चतुःशरण प्रकीर्णक
४८			(वीरभद्र गणी)	भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
६२७			(वेदव्यास)	गीता
४०२			(शांतरक्षित)	तत्त्वसंग्रह
१८३			(शांतिसूरि)	धर्मरत्न
९४			(शिवशर्मसूरि)	कर्मप्रकृतिसूत्र
१०४			(शिवशर्मसूरि)	बृहत्शतक
१२८			(शोभनमुनि)	शोभन स्तुति
१५			(श्यामाचार्य)	प्रज्ञापनासूत्र
२०		१	(श्रीचंद्रसूरि)	कल्पावतंसिकासूत्र टीका
१९		१	(श्रीचंद्रसूरि)	निरयावलिकासूत्र वृत्ति
२२		१	(श्रीचंद्रसूरि)	पुष्पचूलिकासूत्र टीका
२१		१	(श्रीचंद्रसूरि)	पुष्पिकासूत्र टीका
११९		३	(श्रीचंद्रसूरि)	लघुसंग्रहणी
२३		१	(श्रीचंद्रसूरि)	वृष्णिदशासूत्र टीका
५८६			(श्रीधर)	जातकपद्धति
५६९			(श्रीपति)	गणिततिलक
३६५		२	(सिद्धर्षि सिद्धव्याख्यानिक)	न्यायावतार वृत्ति
८			(सुधर्मास्वामी)	अंतकृद्दशांगसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
९			(सुधर्मास्वामी)	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र
७			(सुधर्मास्वामी)	उपासकदशांगसूत्र
६			(सुधर्मास्वामी)	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र
१०			(सुधर्मास्वामी)	प्रश्नव्याकरणसूत्र
५			(सुधर्मास्वामी)	भगवतीसूत्र
११			(सुधर्मास्वामी)	विपाकसूत्र
४			(सुधर्मास्वामी)	समवायांगसूत्र
२			(सुधर्मास्वामी)	सूत्रकृतांगसूत्र
३			(सुधर्मास्वामी)	स्थानांगसूत्र
३४७			(सुमतिसूरि)	जिनदत्त कथा
१४१			(सोमतिलकसूरि)	ऐंद्रस्येव इत्यादि लघुवृत्ति
३९५			(सोमदेव)	अध्यात्मतरंगिणी
१३३			(सोमप्रभसूरि)	जनेन येन स्तुति
६५२			(सोमप्रभसूरि)	सिंदूर प्रकर
५१			(स्थविर)	अंगविद्या प्रकीर्णक
६०			(स्थविर)	अजीवकल्प प्रकीर्णक
१२			(स्थविर)	उववाइयसूत्र
२०			(स्थविर)	कल्पावतंसिकासूत्र
६१			(स्थविर)	गच्छाचार प्रकीर्णक
५०			(स्थविर)	गणिविद्या प्रकीर्णक
१६			(स्थविर)	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र
५९			(स्थविर)	चंद्रवेधक प्रकीर्णक
१८			(स्थविर)	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
१४			(स्थविर)	जीवाभिगमसूत्र
४६			(स्थविर)	तंदुलवैचारिक प्रकीर्णक

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५६			(स्थविर)	तीर्थोद्गार प्रकीर्णक
५३			(स्थविर)	द्वीपसागरप्रज्ञप्ति संग्रहणी
१९			(स्थविर)	निरयावलिकासूत्र
३०			(स्थविर)	निशीथसूत्र
२७			(स्थविर)	पाक्षिकसूत्र
२२			(स्थविर)	पुष्पचूलिकासूत्र
२१			(स्थविर)	पुष्पिकासूत्र
५५			(स्थविर)	मरणसमाधि प्रकीर्णक
४४			(स्थविर)	महाप्रत्याख्यानसूत्र प्रकीर्णक
१३			(स्थविर)	राजप्रश्नीयसूत्र
६२			(स्थविर)	वीरस्तव प्रकीर्णक
२३			(स्थविर)	वृष्णिदशासूत्र
४७			(स्थविर)	संस्तारक प्रकीर्णक
१७			(स्थविर)	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
१२६			(हरिभद्रसूरि)	जंबूद्वीपसंग्रहणी
२८७			(हेमचंद्रसूरि)	आदि चरित
२९३			(हेमचंद्रसूरि)	नल चरित
२८९			(हेमचंद्रसूरि)	नेमि चरित
२९२			(हेमचंद्रसूरि)	परिशिष्ट पर्व
२९०			(हेमचंद्रसूरि)	पार्श्व चरित
२९१			(हेमचंद्रसूरि)	महावीर चरित
१९३			(हेमचंद्रसूरि)	योगशास्त्र
१९३		१	(हेमचंद्रसूरि)	योगशास्त्र वृत्ति
१९४			(हेमचंद्रसूरि)	योगशास्त्र वृत्ति
२८८			(हेमचंद्रसूरि)	रामायण

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१२७			(हेमचंद्रसूरि)	वीतराग स्तव
४४२		१	(हेमचंद्रसूरि)	हैमदेशीनाममाला रत्नावली वृत्ति
७८		१	?	षोडशक वृत्ति
३८९			अकलंकदेव	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र
१८९		१	अकलंकदेव	विवेकमंजरी वृत्ति
२४	९	१	अकलंकदेवसूरि	चैत्यवंदनसूत्र पदपर्याय
२४	९	३	अकलंकदेवसूरि	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४	९	२	अकलंकदेवसूरि	साधुप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
४०४			अक्षपाद	न्यायतर्कसूत्र
२५६			अजितप्रभसूरि पौर्ण.	शांति चरित
१३७			अज्ञात	अजितशांति स्तव वृत्ति
१		२	अज्ञात	आचारांगसूत्र चूर्णि
९४		२	अज्ञात	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि
३७		२	अज्ञात	कल्पसूत्र चूर्णि
६७		१	अज्ञात	खंडषट्त्रिंशिका
१३८		१	अज्ञात	जयतिहुअण वृत्ति
८६			अज्ञात	जीवसमास
१४		१	अज्ञात	जीवाभिगमसूत्र चूर्णि
२६		२	अज्ञात	दशवैकालिकसूत्र चूर्णि
१५२			अज्ञात	दूषमदंडिका
१५१			अज्ञात	दूषमविच्छेददंडिका
१८०			अज्ञात	धर्मोपदेशमाला विवरण
५८			अज्ञात	निरयविभक्ति
३०		१	अज्ञात	निशीथसूत्र बृहद्भाष्य
३०		२	अज्ञात	निशीथसूत्र भाष्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३९		३	अज्ञात	पंचकल्पसूत्र चूर्णि
३९		१	अज्ञात	पंचकल्पसूत्र निर्युक्ति
९०			अज्ञात	पवयणसंदोह
९०		१	अज्ञात	पवयणसंदोह वृत्ति
९३		२	अज्ञात	पिंडविशुद्धि दीपिका लघुवृत्ति
२४		८	अज्ञात	प्रत्याख्यानसूत्र वृत्ति
७१		२	अज्ञात	प्रवचनसारोद्धार विषमपद टीका
१२३			अज्ञात	बृहत्क्षेत्रसमास लघु वृत्ति
१०७			अज्ञात	बृहत्शतक चूर्णि
१०१			अज्ञात	बृहद्बंधस्वामित्व
१३१		१	अज्ञात	भक्तामर स्तव प्रदीपिका
५		२	अज्ञात	भगवतीसूत्र अवचूरि
५		१	अज्ञात	भगवतीसूत्र चूर्णि
६५			अज्ञात	वसुदेवमध्यम खंड
६५		१	अज्ञात	वसुदेवमध्यम खंड संग्रहणी
६४			अज्ञात	वसुदेवहिंडी-द्वितीय खंड
७०		१	अज्ञात	विशेषणवतीसूत्र वृत्ति
३४		२	अज्ञात	व्यवहारसूत्र चूर्णि
३४		१	अज्ञात	व्यवहारसूत्र भाष्य
८४			अज्ञात	श्रावकभंगकादिविचारगाथा
११४		१	अज्ञात	सत्तरी चूर्णि
८८			अज्ञात	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि
८८		१	अज्ञात	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि वृत्ति
१११			अज्ञात	सार्धशतक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
११०			अज्ञात	सार्धशतक टिप्पन
५७		१	अज्ञात	सिद्धप्राभृत प्रकीर्णक वृत्ति
२		२	अज्ञात	सूत्रकृतांगसूत्र चूर्णि
३९१		१	अनंतवीर्य	न्यायविनिश्चय वृत्ति
५०४			अभयतिलक खर.	द्व्याश्रय काव्य वृत्ति
४०४		६	अभयतिलक खर.	न्यायतर्कसूत्र पंचप्रस्थानन्यायतर्काणि
७७		१	अभयदेव नवांगी	पंचाशक १९ वृत्ति
१२		१	अभयदेवसूरि	उववाइयसूत्र टीका
१५		३	अभयदेवसूरि	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी
५		३	अभयदेवसूरि	भगवतीसूत्र वृत्ति
४		१	अभयदेवसूरि	समवायांगसूत्र टीका
३		१	अभयदेवसूरि	स्थानांगसूत्र टीका
८७		१	अभयदेवसूरि नवांगी	नवतत्त्व भाष्य
३५८		२	अभवदेवसूरि (प्रद्युम्नसूरि शि.)	सम्मतिसूत्र वृत्ति
४६२			अमर	लिंगानुशासन
४९५			अमर कवि पं.	काव्यकल्पलता
४९५		१	अमर कवि पं.	काव्यकल्पलता कविशिक्षा वृत्ति
५००			अमर कवि पं.	काव्यकल्पलता वृत्ति परिमल
५०२			अमर कवि पं.	चंद्रालोकालंकार
५१६			अमर कवि पं.	बालभारत
२९४			अमरचंद्र कवि	पद्मानंद महाकाव्य
४६७			अमरचंद्र कवि पं.	त्यादिसमुच्चय
४६६			अमरचंद्र कवि पं.	स्यादिसमुच्चय

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५५७			अमरचंद्र पं.	वनमाला नाटिका
६२८			अमितगति	धर्मपरीक्षा
७३		१	अमृतचंद्र	पंचास्तिकाय संग्रह वृत्ति
७४		१	अमृतचंद्र	प्रवचनसार वृत्ति
७२		१	अमृतचंद्र	समयसार प्रकरण टीका
६१८			अमृतचंद्रसूरि	तत्त्वार्थसार
१४९			आंचलिक	आराधनापताका
५०१		१	आजड	अलंकार पदप्रकाश वृत्ति
५२७		२	आजड	गाथासप्तशती वृत्ति
२८४			आम्र कवि	महापुरुष चरित
२१७		१	आम्रदेवसूरि	कथामणिकोश व्याख्या
५८८			उत्पल भट्ट	प्रश्नज्ञानपद्धति
४०४		४	उदयन आ.	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्यपरिशुद्धि टीका
१७३			उदयप्रभसूरि	उपदेशमाला कर्णिका वृत्ति
५०७			उदयप्रभसूरि	धर्माभ्युदय काव्य
९८			उदयप्रभसूरि	बृहत्कर्मविपाक टिप्पनक
१००			उदयप्रभसूरि	बृहत्कर्मस्तव टिप्पन
१०८			उदयप्रभसूरि	बृहत्शतक टिप्पनक
२१०			उदयसिंह	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
३२०			उद्योतनसूरि (दाक्षिण्यचिह्न)	कुवलयमाला
६८			उमास्वाति	तत्त्वार्थसूत्र
६८		१	उमास्वाति	तत्त्वार्थसूत्र भाष्य
८३			उमास्वाति	प्रशमरति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
६९			उमास्वाति	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र
१२५			उमास्वाति वाचक	क्षेत्रसमाससूत्र
४५			ऋषिपालित	देवेंद्रस्तव प्रकीर्णक
३०७		१	कनकचंद्र	पृथ्वीचंद्र चरित्र टिप्पन
४२९			कनकप्रभ	लघुन्यास
२९७			कमलप्रभसूरि	पुंडरीक चरित्र
४३४			काकलकायस्थ	हैमचतुष्क लघु वृत्ति
५३०			कालिदास	कुमारसंभव
५५४			कालिदास	विक्रमोर्वशीय नाटक
२०१			कुलचंद्र	नवपद वृत्ति
२४		१४	कुलप्रदीप	चैत्यवंदनादि वृत्ति
१६४			कुलमंडन गणी	आलापक
४८०			केदार भट्ट	वृत्तरत्नाकर
५९७			खेलवाडिमाहुया	नाथपुस्तिका
२४			गणधर	आवश्यकसूत्र
५३४		२	गदाधर	नैषध काव्य टीका
२८०			गुणचंद्र गणी	वीर चरित्र
४४४			गुणचंद्र पं.	हेमविभ्रम
४४४		१	गुणचंद्र पं.	हेमविभ्रम वृत्ति
१३२			गुणाकर आ. (गुणसुंदर)	भक्तामर स्तव वृत्ति
३२८			गुणाकरसूरि	सप्तक्षेत्रीनाम कथा
२९		२	गोवालिय महत्तर शिष्य	उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णि
१३६		१	गोविंदाचार्य	अजितशांति स्तव वृत्ति
९९		१	गोविंदाचार्य	बृहत्कर्मस्तव वृत्ति
५३४		१	चंड	नैषध काव्य टीका

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५२६		१	चंडपाल	चंपूकथा टिप्पनक
३७२			चंद्रप्रभसूरि	प्रमेयरत्नकोश
२४८			चंद्रप्रभसूरि	वासुपूज्य चरित
३३६			चंद्रप्रभसूरि	विजयचंद्रकेवलि कथा
१८५			चंद्रप्रभसूरि	सम्यक्त्व
९५			चंद्रर्षि (महत्तर)	पंचसंग्रह
९५		१	चंद्रर्षि (महत्तर)	पंचसंग्रह वृत्ति
१४६			जंबू कवि	जिनशतक
३१५			जंबूनाग (जंबू कवि)	मुनिपति चरित्र
४८६			जयंतपुरोधस्	जयंतीदीपिका
३२५			जयतिलक आगमिक	मलयसुंदरी कथा
३२४			जयतिलकसूरि आगमिक	सुलसा चरित
३२३			जयतिलकसूरि आगमिक	हरिविक्रम चरित्र
४८१			जयदेव	जयदेवछंदःशास्त्र
२२३		१	जयशेखरसूरि	उपदेशचिंतामणि वृत्ति
२२३			जयशेखरसूरि अंचलगच्छ	उपदेशचिंतामणि
२०९		१	जयसिंहसूरि	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
१७८			जयसिंहसूरि	धर्मोपदेशमाला
१७९			जयसिंहसूरि	धर्मोपदेशमाला प्रकरण वृत्ति
४०७		१	जयसिंहसूरि	न्यायसार टीका
१७०		१	जयसिंहसूरि (कृष्णर्षि शि.)	उपदेशमाला वृत्ति
३५०			जयानंदसूरि तपा.	स्थूलिभद्र चरित्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५१९			जल्हण कवि	जल्हणकवि काव्य
५२७		३	जल्हणदेव	गाथासप्तशती वृत्ति
१९७		१	जिनकुशलसूरि	वंदनकुलक वृत्ति
६३५			जिनचंद्र गणी	सम्यक्त्वस्वरूप
२००			जिनचंद्रसूरि खरतर	नवपद वृत्ति
१९६			जिनचंद्रसूरि खरतर	संवेगरंगशाला
१५८			जिनदत्तसूरि	विवेकविलास
१३९		६	जिनदत्तसूरि (खरतर)	मयरहियं स्तोत्र
४२		१	जिनदासगणिमहत्तर	अनुयोगद्वारसूत्र चूर्णि
६३७			जिनदेवसूरि	यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल
२४		१०	जिनदेवसूरि	श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्र व्याख्याप्रकरण
३७		५	जिनप्रभसूरि	कल्पसूत्र संदेहविषौषधिवृत्ति
१५४			जिनप्रभसूरि	त्रिषष्ठितीर्थकल्प
२०८			जिनप्रभसूरि	पवज्जाविहाण वृत्ति
२४		२०	जिनप्रभसूरि	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
१३९		१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	अजितशांति स्तव वृत्ति
१३९	७	१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	उल्लासिक्कम वृत्ति
१३९	३	१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	उवसग्गहर स्तोत्र वृत्ति
१३९	४	१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	तं जयउ स्तोत्र वृत्ति
१३९	२	१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	भयहर स्तोत्र वृत्ति
१३९	६	१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	मयरहियं स्तोत्र वृत्ति
१३९	५	१	जिनप्रभसूरि (खरतर)	सिग्घभव वृत्ति
४०			जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	जीतकल्पसूत्र
११९			जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	बृहत्संग्रहणी

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
७०			जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	विशेषणवतीसूत्र
२४		३६	जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण	विशेषावश्यकसूत्र
१०२			जिनवल्लभ गणी	बृहत्षडशीति
१०५			जिनवल्लभ गणी	सार्धशतक
९३			जिनवल्लभसूरि	पिंडविशुद्धिसूत्र
७९			जिनेश्वरसूरि	अष्टकसूत्र वृत्ति
२१६		१	जिनेश्वरसूरि	कथाकोशसूत्र वृत्ति
२६३			जिनेश्वरसूरि	मल्लि चरित
५६८		२	ठक्कुर फेरु	ज्योतिःसार
५६८		१	ठक्कुर फेरु	वास्तुसार
२४		२६	तरुणप्रभसूरि खरतर	चैत्यवंदन वृत्ति बालावबोध
४४८			त्रिलोचनदास	कलापव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विषमपद व्याख्या
४५२			त्रिलोचनदास	धातुपारायण
५२६			त्रिविक्रम भट्ट	चंपूकथा
५१४			दामोदर	कुट्टिनीमत काव्य
५९८			दुर्गदेव	अर्धकांड
५९९			दुर्गदेव	मंत्रमहोदधि
४४७		१	दुर्गसिंह	कलापव्याकरण वृत्ति
१९९			देवगुप्तसूरि	नवपद
१९९			देवगुप्तसूरि	नवपद वृत्ति
१६३		१	देवगुप्तसूरि	श्रावकसामाचारी वृत्ति
८७			देवगुप्तसू.(जिनचंद्र)	नवतत्त्व
५४२			देवचंद्र गणी	मानमुद्राभंजन नाटक
२५७			देवचंद्रसूरि	शांति चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५४८		१	देवप्रभसूरि	मुरारि नाटक टिप्पण
६१५			देवप्रभसूरि मल.	आत्मावबोध
१४५			देवप्रभसूरि मल.	चतुर्विंशतिजिन स्तव
३१०			देवप्रभसूरि मल.	पांडव चरित्र
३३०			देवप्रभसूरि मल.	मृगावती चरित्र
१६६			देवप्रभसूरि मल.	सामाचारी
२१९			देवभद्रसूरि	कथारत्नकोश
२७७			देवभद्रसूरि	पार्श्व चरित
१२२			देवभद्रसूरि	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
२४५			देवभद्रसूरि	श्रेयांस चरित
११९	३	१	देवभद्रसूरि मल.	लघुसंग्रहणी वृत्ति
१८७		१	देवभद्रसूरि(+शांतिचंद्र)	दर्शनशुद्धि वृत्ति
२९८			देवमति उपा. खरतर	एकादशगणधर चरित्र
१६९			देवसूरि	उपधानस्वरूप
३१७			देवसूरि	उपमितभवप्रपंचोद्धार
१८३		१	देवेंद्र तपा.	धर्मरत्न वृत्ति
२०३			देवेंद्रसूरि	अभिनवनवपद
२०३		१	देवेंद्रसूरि	अभिनवनवपद वृत्ति
२३७			देवेंद्रसूरि	चंद्रप्रभ चरित
२४	२४	१	देवेंद्रसूरि	चैत्यवंदनसूत्रभाष्य
२२१		१	देवेंद्रसूरि	दानोपदेशमाला वृत्ति
२४	२४	३	देवेंद्रसूरि	प्रत्याख्यानभाष्य
२२२		१	देवेंद्रसूरि	प्रश्नोत्तरमाला वृत्ति
२४	२४	२	देवेंद्रसूरि	वंदनकभाष्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
२४		१३	देवेंद्रसूरि	षडावश्यक चैत्यवंदनादिसर्वसूत्र व्याख्यारूप
३१९			देवेंद्रसूरि (श्रीचंद्र शि.)	उपमितसारोद्धार
१८२			देवेंद्रसूरि तपा.	दिनकृत्य
१८२		१	देवेंद्रसूरि तपा.	दिनकृत्य वृत्ति
११३		१	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यकर्मविपाक
११३	१	१	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यकर्मविपाक वृत्ति
११३		२	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यकर्मस्तव
११३	२	१	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यकर्मस्तव वृत्ति
११३		३	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यबंधस्वामित्व
११३	३	१	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यबंधस्वामित्व अवचूर्णि
११३		५	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यशतक
११३	५	१	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यशतक वृत्ति
११३		४	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यषडशीति
११३	४	१	देवेंद्रसूरि तपा.	नव्यषडशीति वृत्ति
९१		१	देवेंद्रसूरि तपा.	सिद्धिपंचाशिका वृत्ति
९१			देवेंद्रसूरि तपा.	सिद्धिपंचाशिकासूत्र
३२९			देवेंद्रसूरि तपा.	सुदर्शना चरित्र
२५		३	द्रोणसूरि	ओघनिर्युक्ति टीका
५२१			धनपाल पं.	तिलकमंजरी कथा
१२९			धनपाल पं.	धनपालपंचाशिका
१३०			धनपाल पं.	वीर स्तव
१२८		१	धनपाल पं.	शोभन स्तुति वृत्ति
५२२			धनपाल पं. लघु	तिलकमंजरीसारोद्धार
३३१			धनेश्वर मुनि	सुरसुंदरी कथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१५५			धनेश्वरसूरि	शत्रुंजयमाहात्म्य
१०६			धनेश्वरसूरि	सार्धशतक वृत्ति
९२			धरसेन आ.	योनिप्राभृत
५३०		१	धर्मकीर्त्ति	कुमारसंभव वृत्ति
६४३		२	धर्मकुमार	सुभाषितसमुद्र
६४३		१	धर्मकुमार	सूक्तरत्नाकर
५०८			धर्मकुमार पं.	शालेय काव्य
६२६			धर्मघोषसूरि	शमभावशत
४०		८	धर्मघोषसूरि	श्राद्धजीतकल्प
४२६			धर्मघोषसूरि	हेमव्याकरणसूत्र न्यास
२४		२५	धर्मघोषसूरि तपा.	चैत्यवंदनभाष्य संघाचारवृत्ति
३९९		१	धर्मोत्तराचार्य	न्यायबिंदुसूत्र वृत्ति
४८२			नंदिताढ्य	नंदिताढ्य
४१६			नरचंद्र पं.	न्यायकंदली टिप्पनक
५४८		२	नरचंद्र मल.	मुरारि नाटक टिप्पण
५७०			नरचंद्रसूरि	प्रश्नप्रकाश
३४८			नरचंद्रसूरि मल.	कथारत्नसागर
४३२		२	नरचंद्रसूरि मल.	प्राकृतरूपसिद्धि
४९४			नरेंद्रप्रभसूरि	अलंकारमहोदधि
४९४		१	नरेंद्रप्रभसूरि	अलंकारमहोदधि वृत्ति
५२५		१	नारायण कवि	वासवदत्ता कथा वृत्ति
३३३			नेमप्रभसूरि	रत्नचूड कथा
२४		२७	नेमि साधु	साधुप्रतिक्रमाणादि षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति
२५१			नेमिचंद्रसूरि	अनंत चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
२१७			नेमिचंद्रसूरि	कथामणिकोश
३४४			नेमिचंद्रसूरि	कुसुमसार कथा
२५२			नेमिचंद्रसूरि	धर्म चरित
७१			नेमिचंद्रसूरि	प्रवचनसारोद्धार
२८२			नेमिचंद्रसूरि	वीर चरित
२८१			नेमिचंद्रसूरि	वीर चरित्र
२९		३	नेमिचंद्रसूरि (देवेंद्र गणी)	उत्तराध्ययसूत्र लघुवृत्ति
५७८			पद्मप्रभसूरि	भुवनदीपक
९७		१	परमानंदसूरि	बृहत्कर्मविपाक वृत्ति
१८४		१	परमानंदसूरि	हितोपदेशमाला वृत्ति
४७५			पाणिनि	पाणिनि व्याकरण
१५६			पादलिप्तसूरि	शत्रुंजयकल्प
२४		४	पार्श्वदेव गणी	चैत्यवंदन वृत्ति
३०		४	पार्श्वदेव गणी	निशीथसूत्र चूर्णिविंशोद्देशव्याख्या
२४	४	२	पार्श्वदेव गणी	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४	४	१	पार्श्वदेव गणी	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
४९०			पाल्हदेव	काव्यप्रदीपिकासूत्र
४९०		१	पाल्हदेव	काव्यप्रदीपिकासूत्र वृत्ति
५०६			पूर्णकलश खर.	द्व्याश्रयप्राकृतसूत्र वृत्ति
३४९			पूर्णभद्र गणी	धन्यशालिभद्र चरित्र
३७		४	पृथ्वीचंद्रसूरि	कल्पसूत्र टिप्पनक
५३२		१	प्रकाशवर्ष	किरातार्जुनीय वृत्ति
२०५			प्रद्युम्नसूरि	ठाणा प्रकरण
२०७		१	प्रद्युम्नसूरि	पवज्जाविहाण वृत्ति
८९			प्रद्युम्नसूरि	विचारसार प्रकरण
३०९			प्रद्युम्नसूरि	समरादित्य चरित्र
१४७		१	प्रभाचंद्र	चतुर्विंशतिजिन स्तव वृत्ति
३८९		१	प्रभाचंद्रसूरि	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र वृत्ति
३९०		१	प्रभाचंद्रसूरि	परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला वृत्ति
३११			प्रभाचंद्रसूरि	प्रभावक चरित्र
३९४			प्रभाचंद्रसूरि	प्रमेयकमलमार्तंड
१२९		१	प्रभानंदसूरि	धनपालपंचाशिका वृत्ति
१२७		१	प्रभानंदसूरि	वीतराग स्तव वृत्ति
१८४			प्रभानंदसूरि	हितोपदेशमाला
५६८		५	फेरु ठक्कर	त्रिशती
५६८	५	१	फेरु ठक्कर	त्रिशती वृत्ति
५६८		३	फेरु ठक्कर	द्रव्यपरीक्षा
५६८		४	फेरु ठक्कर	रत्नपरीक्षा
१३४			बप्पभट्टि	बप्पभट्टि स्तुति
५२३			बाण कवि	कादंबरी कथा
१९१		१	बालचंद्रसूरि	उपदेशकंदली वृत्ति
१९०		१	बालचंद्रसूरि	विवेकमंजरी वृत्ति
१		१	भद्रबाहुस्वामी	आचारांगसूत्र निर्युक्ति
२५			भद्रबाहुस्वामी	ओघनिर्युक्ति
२		१	भद्रबाहुस्वामी	सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति
२८५			भद्रेश्वरसूरि	कथावली-प्रथम परिच्छेद
४०४		२	भारद्वाज	न्यायतर्कसूत्र वार्तिक
५३२			भारवि	किरातकाव्य
२७५			भावदेवसूरि	पार्श्व चरित
४३		१	भुवनतुंगसूरि आंचलिक	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक वृत्ति
५२		१	भुवनतुंगसूरि आंचलिक	चतुःशरण प्रकीर्णक वृत्ति
२१४		१	भुवनतुंगसूरि आंचलिक	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र वृत्ति
५२७		१	भुवनपाल	गाथासप्तशती टीका
३५५			भूषणभट्ट सुत	लीलावती कथा
५८९			भोज	प्रश्नज्ञान
५०१			भोजराज	अलंकार
६१४		१	भोजराज	योगशास्त्र वृत्ति
२५८			मणिभद्रसूरि	शांति चरित
२४		२८	मतिसागर	पंचपरमेष्ठि विवरण
४८५			मम्मट	काव्यप्रकाश
९४		१	मलयगिरि	कर्मप्रकृतिसूत्र वृत्ति
७१	३	१	मलयगिरि	धर्मसंग्रहणी वृत्ति
१०३			मलयगिरि	बृहत्षडशीति वृत्ति
२४		३३	मलयगिरिसूरि	आवश्यकसूत्र वृत्ति
२५		४	मलयगिरिसूरि	ओघनिर्युक्ति टीका
१६		१	मलयगिरिसूरि	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
१८		२	मलयगिरिसूरि	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र टीका
१४		३	मलयगिरिसूरि	जीवाजीवाभिगमसूत्र टीका
५४		१	मलयगिरिसूरि	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक टीका
४१		३	मलयगिरिसूरि	नंदीसूत्र बृहद्वृत्ति
९५		२	मलयगिरिसूरि	पंचसंग्रह वृत्ति
२८		३	मलयगिरिसूरि	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
१५		२	मलयगिरिसूरि	प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१२०		१	मलयगिरिसूरि	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
११९		२	मलयगिरिसूरि	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
४४६			मलयगिरिसूरि	मुष्टिव्याकरण
२४		३८	मलयगिरिसूरि	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति
३४		३	मलयगिरिसूरि	व्यवहारसूत्र वृत्ति
११७			मलयगिरिसूरि	सत्तरी वृत्ति
१७		१	मलयगिरिसूरि	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
३३			मलयगिरिसूरि + क्षेमकीर्तिसूरि	कल्पवृत्ति
९६			मलयदीपक?	दीपकसंग्रह
९६		१	मलयदीपक?	दीपकसंग्रह वृत्ति
३६०			मल्लवादि	नयचक्रवाल
३५८		१	मल्लवादिसूरि	सम्मतिसूत्र वृत्ति
६००			मल्लिषेणसूरि	भैरवपद्मावतीकल्प
३८३			मल्लिषेणसूरि	स्याद्वादमंजरी
५२४			महेंद्र पं.	सौभाग्यमंजरी कथा
१६०			महेंद्रसिंहसूरि आंचलिक	शतपदी
४४१		१	महेंद्रसूरि	हैमअनेकार्थनाममाला वृत्ति
४७४			महेश्वर कवि	शब्दप्रभेदानुयायि नाममाला
३३९			महेश्वरसूरि	पंचमी कथा
२७६			माणिक्यचंद्र	पार्श्व चरित
४८७			माणिक्यचंद्रसूरि	काव्यप्रकाश संकेत टीका
६०५			माणिक्यसूरि	शकुनसारोद्धार
२५५			माणिक्यसूरि	शांति चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
२०४			मानतुंगसूरि	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण
२४४			मानतुंगसूरि	श्रेयांस चरित
१९८		१	मालचंद्र	विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति
६३४			मुनिचंद्र	अंगुलविचार
६३३			मुनिचंद्र	पाक्षिकसत्तरी
६३२			मुनिचंद्र	वनस्पतिसत्तरी
३६२		१	मुनिचंद्रसूरि	अनेकांतजयपताका वृत्ति टिप्पनक
१९५		१	मुनिचंद्रसूरि	उपदेशपदसूत्र वृत्ति
९४	२	१	मुनिचंद्रसूरि	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि टिप्पनक
८१		१	मुनिचंद्रसूरि	धर्मबिंदु वृत्ति
२४		३	मुनिचंद्रसूरि	ललितविस्तराटीका की पंजिकाटीका
१७८		१	मुनिदेवसूरि	धर्मोपदेशमाला वृत्ति
२५४			मुनिदेवसूरि	शांति चरित
२९६			मुनिरत्नसूरि	अममजिन चरित्र
२६६			मुनिरत्नसूरि पौर्ण.	मुनिसुव्रत चरित
५४८			मुरारि	मुरारि नाटक
२११			मेरुतुंगसूरि	ऋषिमंडल स्तव
३५३			मेरुतुंगसूरि	प्रबंधचूडामणि
५४१			यशःपाल मंत्रि	मोहपराजय नाटक
५४४			यशश्चंद्र	मुद्रितकुमुदचंद्र नाटक
२०६			यशोदेव उपा.	धर्मोपदेश प्रकरण
२०२			यशोदेव उपा.	नवपद वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३८६			यशोदेव साधु	प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण
२४	६	१	यशोदेवसूरि	ईर्यापथिकीसूत्र अवचूर्णि
२३८			यशोदेवसूरि	चंद्रप्रभ चरित
२४	६	२	यशोदेवसूरि	चैत्यवंदन अवचूर्णि
८७	१	१	यशोदेवसूरि	नवतत्त्व भाष्य वृत्ति
७७		२	यशोदेवसूरि	पंचाशक-१ चूर्णि
२७		१	यशोदेवसूरि	पाक्षिकसूत्र वृत्ति
९३		१	यशोदेवसूरि	पिंडविशुद्धि वृत्ति
२४		७	यशोदेवसूरि	प्रत्याख्यानस्वरूप प्रकरण
२४	६	३	यशोदेवसूरि	वंदनक अवचूर्णि
१०९			यशोभद्रसूरि	बृहत्षडशीति वृत्ति
१५३			योगसार गणी	व्युच्छेददंडिका
४८२		१	रत्नचंद्र गणी (देवाचार्य शि.)	नंदिताढ्य वृत्ति
१७४			रत्नप्रभसूरि	उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति
३२१			रत्नप्रभसूरि	कुवलयमाला
२७३			रत्नप्रभसूरि	नेमि चरित
३०७		२	रत्नप्रभसूरि	पृथ्वीचंद्र चरित्र संकेत
३६४		१	रत्नप्रभसूरि	स्याद्वादरत्नाकर रत्नाकरावतारिका लघु टीका
६७	१	१	रत्नसिंहसूरि	खंडषट्त्रिंशिका वृत्ति
६७	३	१	रत्नसिंहसूरि	निगोदषट्त्रिंशिका वृत्ति
६७	२	१	रत्नसिंहसूरि	पुद्गलषट्त्रिंशिका वृत्ति
६७	४	१	रत्नसिंहसूरि	बंधषट्त्रिंशिका वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
२१८		१	रविप्रभसूरि	शीलभावना वृत्ति
४१७			राजशेखर मल.	न्यायकंदली पंजिका
३५४			राजशेखरसूरि	चतुर्विंशति प्रबंध
४२७			रामचंद्र गणी	हेमव्याकरणसूत्र न्यास
५३९			रामचंद्र पं.	नलविलास नाटक
५३८			रामचंद्र पं.	रघुविलास नाटक
५५२			रामचंद्र पं.	राघवाभ्युदय नाटक
६४६			रामचंद्र पं.	सुधाकलश
३७०			रामचंद्र पं.+गुणचंद्र पं.	द्रव्यालंकार
५४३			रामचंद्रसूरि	प्रबुद्धरौहिणेय नाटक
१०२		१	रामदेव	बृहत्षडशीति वृत्ति
११६			रामदेव गणी खर.	सत्तरी टिप्पनक
२३५			लक्ष्मण गणी	सुपार्श्व चरित
५६३			लक्ष्मण भट्ट	चूडामणिसार
६०४			लवशर्मण	वसंतराज
५३२		२	लोकानंद	किरातार्जुनीय टीका
३००			वंदिक कवि	हरिवंश चरित
५८५			वराहमिहिर	बृहज्जातक
५७४			वराहमिहिर	वाराहीसंहिता
५७४		१	वराहमिहिर	वाराहीसंहिता वृत्ति
२२४			वर्द्धमानसूरि	आदिनाथ चरित
३१८			वर्द्धमानसूरि	उपमितभवप्रपंचासारसमुच्चय
२४७			वर्द्धमानसूरि	वासुपूज्य चरित
३२७			वर्द्धमानसूरि (अभयदेवसूरि शि.)	मनोरमा चरित्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
४७२			वर्धमान पं.	गणरत्नमहोदधि
५२९		१	वल्लभदेव	माघ काव्य टीका
५२०			वस्तुपाल	नरनारायणानंद काव्य
५१२			वाग्भट	नेमिनिर्वाण काव्य
४९६			वाग्भट	वाग्भटालंकार
४९६		१	वाग्भट	वाग्भटालंकार वृत्ति
४०४		३	वाचस्पति मिश्र	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्य टीका
४०४		१	वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य
३६३			वादिदेवसूरि	स्याद्वादरत्नाकर
३६४			वादिदेवसूरि	स्याद्वादरत्नाकर टीका
४६३			वामन	लिंगानुशासन
५१३			विक्रम	नेमिदूत काव्य
८४		१	विजयदेवसूरि	श्रावकभंगकादिविचारगाथा वृत्ति
६२५			विजयसिंह	शाम्यशत
३२२			विजयसिंहसूरि	भुवनसुंदरी चरित्र
२४		२१	विजयसिंहसूरि	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि
५३४		३	विद्याधर	नैषध काव्य टीका
३६६			विद्यानंद	आप्तमीमांसालंकार
४६१			विद्यानंदसूरि	कातंत्रोत्तर
६४८			विनयचंद्र	दीपोत्सवकल्प
४९८			विनयचंद्र (बप्पभट्टि शि.)	कविशिक्षा
३७		३	विनयचंद्रसूरि	कल्पसूत्र कल्पनिरुक्तटिप्पनक
२६४			विनयचंद्रसूरि	मल्लि चरित
२६८			विनयचंद्रसूरि	मुनिसुव्रत चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
४७९			विप्र	छंदःप्रदीप
२५९			विबुधप्रभसूरि	कुंथु चरित
३०१			विमलसूरि	पद्म चरित
६१९			विमलाचार्य	संवेगद्रुमकंदली
५५०			विशाखदेव	मुद्राराक्षस नाटक
४९			वीरभद्राचार्य	आराधनापताका प्रकीर्णक
५५८			वोसरि भट्ट	आयज्ञानतिलकसूत्र
५५८		१	वोसरि भट्ट	आयज्ञानतिलकसूत्र वृत्ति
२६			शय्यंभवसूरि	दशवैकालिकसूत्र
२४		११	शांतिसूरि	चैत्यवंदनामहाभाष्य
३०७			शांतिसूरि	पृथ्वीचंद्र चरित
६३८			शांतिसूरि वादिवेताल	पर्वपंजिका
२९		४	शांतिसूरि(वादिवेताल)	उत्तराध्ययसूत्र बृहद्वृत्ति
५२१		१	शांत्याचार्य	तिलकमंजरी कथा टिप्पनक
३५९			शांत्याचार्य	प्रमाणकलिका
३५९		१	शांत्याचार्य	प्रमाणकलिका वृत्ति
१४६		१	शांबमुनि (नागेंद्रगच्छ)	जिनशतक वृत्ति
३७८		१	शाकटायन	केवलिमुक्ति प्रकरण
३७८		२	शाकटायन	स्त्रीमुक्ति प्रकरण
११९		१	शालिभद्रसूरि	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
१		३	शीलांकाचार्य	आचारांगसूत्र टीका
२		३	शीलांकाचार्य	सूत्रकृतांगसूत्र टीका
६३९			शीलाचार्य	धूमावल्यादिवृत्ति
२८३			शीलाचार्य	महापुरुष चरित
६१६			शुभचंद्र	ज्ञानार्णव

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
४०४		५	श्रीकंठ	न्यायतर्कसूत्र न्यायालंकार वृत्ति
४८०		१	श्रीकंठ	वृत्तरत्नाकर वृत्ति
११५			श्रीचंद्र गणी महत्तर	सत्तरी टीका
४८१	१	१	श्रीचंद्रसूरि	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति टिप्पनक
४१		४	श्रीचंद्रसूरि	नंदीसूत्र वृत्ति टिप्पनक
३०		५	श्रीचंद्रसूरि	निशीथसूत्र विंशोद्देशवृत्ति
४०१			श्रीचंद्रसूरि	न्यायप्रवेशक टिप्पन
९३		३	श्रीचंद्रसूरि	पिंडविशुद्धि अणुवृत्ति
२६७			श्रीचंद्रसूरि	मुनिसुव्रत चरित
२४		२२	श्रीचंद्रसूरि	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
१६७			श्रीचंद्रसूरि (धनेश्वर शि.)	सामाचारी
२१५		१	श्रीतिलक उपा. खरतर	गौतमपृच्छा वृत्ति
२४		३४	श्रीतिलकसूरि	आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति
२४	१५	१	श्रीतिलकसूरि	चैत्यवंदनसूत्र टीका
४०		४	श्रीतिलकसूरि	जीतकल्पसूत्र वृत्ति
२६		४	श्रीतिलकसूरि	दशवैकालिकसूत्र वृत्ति
२४		१५	श्रीतिलकसूरि	प्रत्याख्यानसूत्र टीका
३०४			श्रीतिलकसूरि	प्रत्येकबुद्ध चरित
२४	१५	२	श्रीतिलकसूरि	वंदनकसूत्र टीका
४०		६	श्रीतिलकसूरि	श्राद्धजीतकल्प
४०	६	१	श्रीतिलकसूरि	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
२४		१६	श्रीतिलकसूरि	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र लघु वृत्ति
१८५		१	श्रीतिलकसूरि	सम्यक्त्व वृत्ति
२४		१७	श्रीतिलकसूरि	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
५६४			श्रीधर	त्रिशती
४१५			श्रीधर	न्यायकंदली
४४५			श्रीप्रभसूरि	कारकसमुच्चय
२०९			श्रीप्रभसूरि	धर्मविधि प्रकरण
४९९			श्रीरुचक राजानक	अलंकारसर्वस्व
४२०			श्रीविलास भट्ट	वृद्धवादसार प्रकरण
४२२			श्रीहर्ष कवि	खंडनखंडखाद्य
५३४			श्रीहर्ष कवि	नैषध महाकाव्य
३९		२	संघदास गणी	पंचकल्पभाष्य
६३			संघदास वाचक	वसुदेवहिंडी-प्रथम खंड
१४७			समंतभद्र	चतुर्विंशतिजिन स्तव
३८४			समंतभद्र	वर्द्धमान स्तोत्र
६४०			समुद्राचार्य	कुसुमाञ्जलि
४६८			सर्वधर	लौकिकत्यादिप्रक्रिया
२३६			सर्वानंदसूरि	चंद्रप्रभ चरित
२७४			सर्वानंदसूरि	पार्श्व चरित
१३४		१	सहदेव	बप्पभट्टि स्तुति वृत्ति
३०६			सागरदत्त पं.	जंबूस्वामी चरित
५२७			सातवाहन	गाथासप्तशती
४०	७	१	साधुरत्नसूरि	यतिजीतकल्प वृत्ति
६४१		१	सिंहतिलक	ग्रहदोषज्ञानाध्याय
६४१		२	सिंहतिलक	दोषशांतिक
६४१		३	सिंहतिलक	दोषशांतिकलौकिक
५६९		१	सिंहतिलकसूरि	गणिततिलक वृत्ति
५७८		१	सिंहतिलकसूरि	भुवनदीपक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३६०		१	सिंहसूर	नयचक्रवाल वृत्ति
१७५			सिद्धर्षि गणी	उपदेशमाला लघु वृत्ति
१७१			सिद्धर्षि गणी	उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१७६			सिद्धर्षि गणी	उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
६८		२	सिद्धसेन गणी	तत्त्वार्थसूत्र व्याख्या
३६५			सिद्धसेन दिवाकरसूरि	न्यायावतार
३५८			सिद्धसेन दिवाकरसूरि	सम्मतिसूत्र
१४३			सिद्धसेनदिवाकरसूरि	विंशतिद्वात्रिंशिका
४०		२	सिद्धसेनसूरि	जीतकल्पसूत्र चूर्णि
७१		१	सिद्धसेनसूरि	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति
१२१			सिद्धिसूरि	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१			सुधर्मास्वामी	आचारांगसूत्र
५२५			सुबंधु कवि	वासवदत्ता कथा
२६		५	सुमतिसूरि	दशवैकालिकसूत्र लघुवृत्ति
६४५			सूराचार्य	दानादि प्रकरण
५१०			सूराचार्य	नेमि चरित्र महाकाव्य
१३०		१	सूराचार्य	वीर स्तव वृत्ति
१३५		८	सोमतिलकसूरि	क्षेत्रसमास
१३५		२	सोमतिलकसूरि	जयवृषभ स्तुति
१३५		६	सोमतिलकसूरि	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र
१३५	६	१	सोमतिलकसूरि	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र वृत्ति
१३५	१	२	सोमतिलकसूरि	यत्राखिल स्तुति
१३५		५	सोमतिलकसूरि	यूयं यूयं स्तोत्र
१३५	५	१	सोमतिलकसूरि	यूयं यूयं स्तोत्र वृत्ति
१३५		४	सोमतिलकसूरि	शस्ता शमा स्तोत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१३५	४	१	सोमतिलकसूरि	शस्ता शमा स्तोत्र वृत्ति
४०	८	१	सोमतिलकसूरि	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
१३५		२	सोमतिलकसूरि	श्रीतीर्थराज स्तुति
१३५		९	सोमतिलकसूरि	श्रीशैवैयं
१३५		७	सोमतिलकसूरि	सत्तरिसयठाण
१९२		१	सोमतिलकसूरि रुद्रपल्लीय	शीलोपदेशमाला वृत्ति
१५९			सोमदेवसूरि	सोमनीति
१४८			सोमप्रभ	आराधनापताका
३१२			सोमप्रभसूरि	कुमारपाल प्रतिबोध
४०		७	सोमप्रभसूरि	यतिजीतकल्प
२३२			सोमप्रभसूरि	सुमति चरित
६६			स्थविर	ऋषिभाषितानि
५७			स्थविर	सिद्धप्राभृतसूत्र प्रकीर्णक
५०९			हरिचंद्र	धर्मनाथ महाकाव्य
३६५		१	हरिभद्रसूरि	न्यायावतार वृत्ति
३६१			हरिभद्रसूरि	अनेकांतजयपताका
३६२			हरिभद्रसूरि	अनेकांतजयपताका वृत्ति
३६८			हरिभद्रसूरि	अनेकांतवादप्रवेश
२४		३१	हरिभद्रसूरि	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
१९५			हरिभद्रसूरि	उपदेशपदसूत्र
२४		१८	हरिभद्रसूरि	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४		२	हरिभद्रसूरि	चैत्यवंदनसूत्र ललितविस्तराटीका
१४		२	हरिभद्रसूरि	जीवाजीवाभिगमसूत्र प्रदेशवृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१६१			हरिभद्रसूरि	तत्त्वबोध प्रकरण
८५			हरिभद्रसूरि	दर्शनसत्तरी
२६		३	हरिभद्रसूरि	दशवैकालिकसूत्र बृहद्वृत्ति
८१			हरिभद्रसूरि	धर्मबिंदु
७१		३	हरिभद्रसूरि	धर्मसंग्रहणी
८०			हरिभद्रसूरि	धर्मसूत्राष्टक
२७१			हरिभद्रसूरि	नेमि चरित
४००			हरिभद्रसूरि	न्यायप्रवेशक
४००		१	हरिभद्रसूरि	न्यायप्रवेशक टीका
७६			हरिभद्रसूरि	पंचवस्तुक
७६		१	हरिभद्रसूरि	पंचवस्तुक वृत्ति
७५		१	हरिभद्रसूरि	पंचसूत्र वृत्ति
७७			हरिभद्रसूरि	पंचाशक १९
१५		१	हरिभद्रसूरि	प्रज्ञापनासूत्र लघु वृत्ति
८३		१	हरिभद्रसूरि	प्रशमरति वृत्ति
४३२		१	हरिभद्रसूरि	प्राकृतदीपिका वृत्ति
१०१		१	हरिभद्रसूरि	बृहद्बंधस्वामित्व वृत्ति
३१४			हरिभद्रसूरि	मुनिपति चरित्र
८२			हरिभद्रसूरि	योगबिंदु
८२		१	हरिभद्रसूरि	योगबिंदु वृत्ति
१२४		१	हरिभद्रसूरि	लघुक्षेत्रसमास वृत्ति
३८८			हरिभद्रसूरि	लोकतत्त्वनिर्णय
६९		१	हरिभद्रसूरि	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
३७४			हरिभद्रसूरि	षड्दर्शनसमुच्चय
७८			हरिभद्रसूरि	षोडशक

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
३०८			हरिभद्रसूरि	समरादित्य चरित्र
३७९			हरिभद्रसूरि	सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३६९			हरिभद्रसूरि	सर्वज्ञसिद्धि प्रकरण
११२			हरिभद्रसूरि	सार्धशतक वृत्ति
१०५		१	हरिभद्रसूरि	सार्धशतक वृत्ति
२३९			हरिभद्रसूरि द्वि.	चंद्रप्रभ चरित
२६५			हरिभद्रसूरि द्वि.	मल्लि चरित
२४६			हरिभद्रसूरि द्वि.	श्रेयांस चरित
२८		२	हरिभद्रसूरि+वीराचार्य	पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति
५५६			हर्षदेव गणी	रत्नावली नाटिका
५८२			हर्षदेव गणी	हर्षप्रकाशज्योतिष्क
४७८			हलायुध	हलायुधछंदः
४७८		१	हलायुध	हलायुधछंदोवृत्ति
१०४		१	हेमचंद्र मल.	बृहत्शतक वृत्ति
४२४			हेमचंद्रसूरि	उणादिसूत्र
४३८			हेमचंद्रसूरि	उणादिसूत्र वृत्ति
४९१			हेमचंद्रसूरि	काव्यानुशासन
४९१		१	हेमचंद्रसूरि	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति
४९२			हेमचंद्रसूरि	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति विवेक
४८३			हेमचंद्रसूरि	छंदोनुशासन
४८३		१	हेमचंद्रसूरि	छंदोनुशासन छंदश्चूडामणि वृत्ति
२८६			हेमचंद्रसूरि	त्रिषष्टि
५०३			हेमचंद्रसूरि	द्व्याश्रय काव्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
४३७			हेमचंद्रसूरि	धातुपारायण
३६७			हेमचंद्रसूरि	प्रमाणमीमांसा
३६७		१	हेमचंद्रसूरि	प्रमाणमीमांसा वृत्ति
५०५			हेमचंद्रसूरि	प्राकृतद्व्याश्रयसूत्र
४२५			हेमचंद्रसूरि	लिंगानुशासन
४२३			हेमचंद्रसूरि	हेमव्याकरणसूत्र
४२५		२	हेमचंद्रसूरि	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्न्यास
४२५		१	हेमचंद्रसूरि	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
४४१			हेमचंद्रसूरि	हैमअनेकार्थनाममाला
४४२			हेमचंद्रसूरि	हैमदेशीनाममाला
४३६			हेमचंद्रसूरि	हैमलिंगानुशासन अवचूरि
४४०			हेमचंद्रसूरि	हैमीनाममाला
४४०		१	हेमचंद्रसूरि	हैमीनाममाला वृत्ति
८६		१	हेमचंद्रसूरि मल.	जीवसमास वृत्ति
१७७			हेमचंद्रसूरि मल.	पुष्पमाला
१७७		१	हेमचंद्रसूरि मल.	पुष्पमाला वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	कर्तानाम	ग्रंथनाम
१८१			हेमचंद्रसूरि मल.	भवभावना
१८१		१	हेमचंद्रसूरि मल.	भवभावना वृत्ति
४२		३	हेमचंद्रसूरि मल.	अनुयोगद्वारसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३२	हेमचंद्रसूरि मल.	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति टिप्पनक
२४		३७	हेमचंद्रसूरि मल.	विशेषावश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
४३९			हेमचंद्रसूरि?	हैमन्याय वृत्ति
५७७			हेमप्रभसूरि	ज्ञानदर्पणज्योतिष्क
२०५		१	हेमसूरि	ठाणा प्रकरण वृत्ति

(परिशिष्ट ४)

बृहट्टिप्पनिका

कृति स्वरूपद्वारा वर्गीकृत सूचि
(टीका तथा मूल)

परिशिष्ट-४ बृहट्टिप्पनिका कृति स्वरूप द्वारा वर्गीकृत सूचि (टीका तथा मूल)

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
			टीका
८		१	अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति
१३६		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
१३७			अजितशांति स्तव वृत्ति
१३९		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
३९५		१	अध्यात्मतरंगिणी टीका
९		१	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र टीका
४२		१	अनुयोगद्वारसूत्र चूर्णि
४२		३	अनुयोगद्वारसूत्र बृहद्वृत्ति
४२		२	अनुयोगद्वारसूत्र लघुवृत्ति
३६२			अनेकांतजयपताका वृत्ति
३६२		१	अनेकांतजयपताका वृत्ति टिप्पनक
२०३		१	अभिनवनवपद वृत्ति
४६५			अमरकोश टिप्पनक
५०१		१	अलंकार पदप्रकाश वृत्ति
४९४		१	अलंकारमहोदधि वृत्ति
७९			अष्टकसूत्र वृत्ति
४४९			आख्यात अवचूरि
१		२	आचारांगसूत्र चूर्णि
१		३	आचारांगसूत्र टीका
१		१	आचारांगसूत्र निर्युक्ति
४३		१	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक वृत्ति
३९२		१	आप्तपरीक्षा वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३६६			आप्तमीमांसालंकार
२४		३५	आवश्यकसूत्र अवचूरि
२४		३०	आवश्यकसूत्र चूर्णि
२४		२९	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति
२४		३१	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३२	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति टिप्पनक
२४		३४	आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति
२४		३३	आवश्यकसूत्र वृत्ति
२४	६	१	ईर्यापथिकीसूत्र अवचूर्णि
४३८			उणादिसूत्र वृत्ति
२९		२	उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णि
२९		१	उत्तराध्ययनसूत्र निर्युक्ति
२९		४	उत्तराध्ययसूत्र बृहद्वृत्ति
२९		३	उत्तराध्ययसूत्र लघुवृत्ति
१९१		१	उपदेशकंदली वृत्ति
२२३		१	उपदेशचिंतामणि वृत्ति
१९५		१	उपदेशपदसूत्र वृत्ति
१७३			उपदेशमाला कर्णिका वृत्ति
१७४			उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति
१७५			उपदेशमाला लघु वृत्ति
१७०		१	उपदेशमाला वृत्ति
१७१			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१७६			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
७		१	उपासकदशांगसूत्र वृत्ति
१३९	७	१	उल्लासिक्कम वृत्ति
१२		१	उववाइयसूत्र टीका
१४०		१	उवसग्गहर वृत्ति
१३९	३	१	उवसग्गहर स्तोत्र वृत्ति
२१३			ऋषिमंडल स्तव वृत्ति
२५		१	ओघनिर्युक्ति चूर्णि
२५		३	ओघनिर्युक्ति टीका
२५		४	ओघनिर्युक्ति टीका
२५		२	ओघनिर्युक्ति भाष्य
४१४			कंदली किरणावली
२१६		१	कथाकोशसूत्र वृत्ति
२१७		१	कथामणिकोश व्याख्या
४५३			कपालक विशेषव्याख्यान
९४		२	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि
९४	२	१	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि टिप्पनक
९४		१	कर्मप्रकृतिसूत्र वृत्ति
४५६			कलापक उणादि वृत्ति
४४७		१	कलापव्याकरण वृत्ति
३२			कल्प चूर्णि
३१			कल्पविशेष चूर्णि
३३			कल्पवृत्ति
३७		३	कल्पसूत्र कल्पनिरुक्तटिप्पनक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३७		२	कल्पसूत्र चूर्णि
३७		४	कल्पसूत्र टिप्पनक
३७		१	कल्पसूत्र निर्युक्ति
३५		१	कल्पसूत्र बृहद्भाष्य
३५		२	कल्पसूत्र विशेषचूर्णि
३७		५	कल्पसूत्र संदेहविषौषधिवृत्ति
२०		१	कल्पावतंसिकासूत्र टीका
४५१			कातंत्रलघु वृत्ति
६०३		१	कामरूपपंचाशिका वृत्ति
४९५		१	काव्यकल्पलता कविशिक्षा वृत्ति
५००			काव्यकल्पलता वृत्ति परिमल
४८९			काव्यप्रकाश अवचूर्णि
४८८			काव्यप्रकाश विकाश
४८७			काव्यप्रकाश संकेत टीका
४९०		१	काव्यप्रदीपिकासूत्र वृत्ति
४९१		१	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति
४९२			काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति विवेक
४११			किरणावली
४१३		१	किरणावली टिप्पनक
४१३		२	किरणावली टिप्पनक
५३०		१	कुमारसंभव वृत्ति
१२५		१	क्षेत्रसमाससूत्र वृत्ति
४२२		१	खंडनखंडखाद्य टिप्पनक
६७	१	१	खंडषट्त्रिंशिका वृत्ति
५६९		१	गणिततिलक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५२७			गाथासप्तशती
५२७		१	गाथासप्तशती टीका
५२७		२	गाथासप्तशती वृत्ति
५२७		३	गाथासप्तशती वृत्ति
२१५		१	गौतमपृच्छा वृत्ति
१६		१	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
५२६		१	चंपूकथा टिप्पनक
५२		१	चतुःशरण प्रकीर्णक वृत्ति
१४७		१	चतुर्विंशतिजिन स्तव वृत्ति
२४	६	२	चैत्यवंदन अवचूर्णि
२४		४	चैत्यवंदन वृत्ति
२४		२६	चैत्यवंदन वृत्ति बालावबोध
२४		२५	चैत्यवंदनभाष्य संघाचारवृत्ति
२४	१५	१	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४		१८	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४	९	१	चैत्यवंदनसूत्र पदपर्याय
२४		२	चैत्यवंदनसूत्र ललितविस्तराटीका
२४		१४	चैत्यवंदनादि वृत्ति
२४		१२	चैत्यवंदनाभाष्य वृत्ति
२४		११	चैत्यवंदनामहाभाष्य
२४		२३	चैत्यवंदनाविचार
४८३		१	छंदोनुशासन छंदश्चूडामणि वृत्ति
१८		२	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र टीका
१२६		१	जंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति
३०६		१	जंबूस्वामी चरित टिप्पन

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३३			जनेन येन स्तुति वृत्ति
२०४		१	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण वृत्ति
१३८		१	जयतिहुअण वृत्ति
४८१		१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति
४८१	१	१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति टिप्पनक
५८६		१	जातकपद्धति टीका
१४६		१	जिनशतक वृत्ति
४०		२	जीतकल्पसूत्र चूर्णि
४०		३	जीतकल्पसूत्र टिप्पनक
४०		१	जीतकल्पसूत्र भाष्य
४०		५	जीतकल्पसूत्र विवरण
४०		४	जीतकल्पसूत्र वृत्ति
८६		१	जीवसमास वृत्ति
१४		३	जीवाजीवाभिगमसूत्र टीका
१४		२	जीवाजीवाभिगमसूत्र प्रदेशवृत्ति
१४		१	जीवाभिगमसूत्र चूर्णि
६		१	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति
५४		१	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक टीका
२०५		१	ठाणा प्रकरण वृत्ति
१३९	४	१	तं जयउ स्तोत्र वृत्ति
६८		१	तत्त्वार्थसूत्र भाष्य
६८		३	(तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति (लघु
६८		२	तत्त्वार्थसूत्र व्याख्या
३९८		१	तर्कभाषा टीका
५२१		१	तिलकमंजरी कथा टिप्पनक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५२२			तिलकमंजरीसारोद्धार
१८७		१	दर्शनशुद्धि वृत्ति
२६		२	दशवैकालिकसूत्र चूर्णि
२६		१	दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति
२६		३	दशवैकालिकसूत्र बृहद्वृत्ति
२६		५	दशवैकालिकसूत्र लघुवृत्ति
२६		४	दशवैकालिकसूत्र वृत्ति
२२१		१	दानोपदेशमाला वृत्ति
१८२		१	दिनकृत्य वृत्ति
९६		१	दीपकसंग्रह वृत्ति
१३५	६	१	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र वृत्ति
५६८		३	द्रव्यपरीक्षा
५०४			द्व्याश्रय काव्य वृत्ति
५०६			द्व्याश्रयप्राकृतसूत्र वृत्ति
१२९		१	धनपालपंचाशिका वृत्ति
१४२		१	धरणोरगेंद्र स्तव वृत्ति
८१		१	धर्मबिंदु वृत्ति
१८३		१	धर्मरत्न वृत्ति
२०९		१	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
२१०			धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
७१	३	१	धर्मसंग्रहणी वृत्ति
२२०		१	धर्माख्यानकोश वृत्ति
१७९			धर्मोपदेशमाला प्रकरण वृत्ति
१८०			धर्मोपदेशमाला विवरण
१७८		१	धर्मोपदेशमाला वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६३९			धूमावल्यादिवृत्ति
४८२		१	नंदिताढ्य वृत्ति
४१		१	नंदीसूत्र चूर्णि
४१		३	नंदीसूत्र बृहद्वृत्ति
४१		२	नंदीसूत्र वृत्ति
४१		४	नंदीसूत्र वृत्ति टिप्पनक
३६०		१	नयचक्रवाल वृत्ति
५७३			नयनपूर्वांकपंचागतिथि विवरण
८७		१	नवतत्त्व भाष्य
८७	१	१	नवतत्त्व भाष्य वृत्ति
१९९			नवपद वृत्ति
२००			नवपद वृत्ति
२०१			नवपद वृत्ति
२०२			नवपद वृत्ति
११३	१	१	नव्यकर्मविपाक वृत्ति
११३	२	१	नव्यकर्मस्तव वृत्ति
११३	३	१	नव्यबंधस्वामित्व अवचूर्णि
११३	५	१	नव्यशतक वृत्ति
११३	४	१	नव्यषडशीति वृत्ति
४५९			नामाख्यात वृत्ति
६७	३	१	निगोदषट्त्रिंशिका वृत्ति
१९		१	निरयावलिकासूत्र वृत्ति
३०		३	निशीथसूत्र चूर्णि
३०		४	निशीथसूत्र चूर्णिविंशोद्देशव्याख्या
३०		१	निशीथसूत्र बृहद्भाष्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३०		२	निशीथसूत्र भाष्य
३०		५	निशीथसूत्र विंशोद्देशवृत्ति
५११			नेमि महाकाव्य टिप्पनक
५३४		१	नैषध काव्य टीका
५३४		२	नैषध काव्य टीका
५३४		३	नैषध काव्य टीका
४१५			न्यायकंदली
४१६			न्यायकंदली टिप्पनक
४१७			न्यायकंदली पंजिका
४०५			न्यायकलिका टीका
३८९		१	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र वृत्ति
४१२			न्यायतंत्र टीका
४०४		३	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्य टीका
४०४		४	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्यपरिशुद्धि टीका
४०४		५	न्यायतर्कसूत्र न्यायालंकार वृत्ति
४०४		६	न्यायतर्कसूत्र पंचप्रस्थानन्यायतर्काणि
४०४		२	न्यायतर्कसूत्र वार्तिक
४०१			न्यायप्रवेशक टिप्पन
४००		१	न्यायप्रवेशक टीका
३९९		१	न्यायबिंदुसूत्र वृत्ति
३९१		१	न्यायविनिश्चय वृत्ति
४०७		१	न्यायसार टीका
४०७		२	न्यायसार टीका
४०७		३	न्यायसार पंजिका टीका
४०४		१	न्यायसूत्रभाष्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३६५		१	न्यायावतार वृत्ति
३६५		२	न्यायावतार वृत्ति
३९		२	पंचकल्पभाष्य
३९		३	पंचकल्पसूत्र चूर्णि
३९		१	पंचकल्पसूत्र निर्युक्ति
२४		२८	पंचपरमेष्ठि विवरण
७६		१	पंचवस्तुक वृत्ति
९५		१	पंचसंग्रह वृत्ति
९५		२	पंचसंग्रह वृत्ति
७५		१	पंचसूत्र वृत्ति
७७		१	पंचाशक १९ वृत्ति
७७		२	पंचाशक-१ चूर्णि
७३		१	पंचास्तिकाय संग्रह वृत्ति
४२८			परिभाषा वृत्ति
३९०		१	परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला वृत्ति
२०७		१	पवज्जाविहाण वृत्ति
२०८			पवज्जाविहाण वृत्ति
९०		१	पवयणसंदोह वृत्ति
२७		१	पाक्षिकसूत्र वृत्ति
४७५		१	पाणिनि व्याकरण काशिका वृत्ति
२८		२	पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति
२८		१	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
२८		३	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
९३		३	पिंडविशुद्धि अणुवृत्ति
९३		२	पिंडविशुद्धि दीपिका लघुवृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९३		१	पिंडविशुद्धि वृत्ति
६७	२	१	पुद्गलषट्त्रिंशिका वृत्ति
२२		१	पुष्पचूलिकासूत्र टीका
१७७		१	पुष्पमाला वृत्ति
२१		१	पुष्पिकासूत्र टीका
३०७		१	पृथ्वीचंद्र चरित्र टिप्पन
३०७		२	पृथ्वीचंद्र चरित्र संकेत
१५	३	१	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी अवचूरि
१५		१	प्रज्ञापनासूत्र लघु वृत्ति
१५		२	प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति
२४		१५	प्रत्याख्यानसूत्र टीका
२४		८	प्रत्याख्यानसूत्र वृत्ति
३५९		१	प्रमाणकलिका वृत्ति
३६७		१	प्रमाणमीमांसा वृत्ति
३९७		१	प्रमाणवार्त्तिक वृत्ति
४५८			प्रमेयरत्नभांडागार विशेषविवरणं
७४		१	प्रवचनसार वृत्ति
७१		२	प्रवचनसारोद्धार विषमपद टीका
७१		१	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति
८३		१	प्रशमरति वृत्ति
१०		१	प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति
२२२		१	प्रश्नोत्तरमाला वृत्ति
४३२		१	प्राकृतदीपिका वृत्ति
४३२		२	प्राकृतरूपसिद्धि
६७	४	१	बंधषट्त्रिंशिका वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३४		१	बप्पभट्टि स्तुति वृत्ति
९८			बृहत्कर्मविपाक टिप्पनक
९७		१	बृहत्कर्मविपाक वृत्ति
१००			बृहत्कर्मस्तव टिप्पन
९९		१	बृहत्कर्मस्तव वृत्ति
१२३			बृहत्क्षेत्रसमास लघु वृत्ति
१२०		१	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२१			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२२			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१०७			बृहत्शतक चूर्णि
१०८			बृहत्शतक टिप्पनक
१०४		१	बृहत्शतक वृत्ति
१०२		१	बृहत्षडशीति वृत्ति
१०९			बृहत्षडशीति वृत्ति
११९		१	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
११९		२	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
१०१		१	बृहद्बंधस्वामित्व वृत्ति
१३१		१	भक्तामर स्तव प्रदीपिका
१३२			भक्तामर स्तव वृत्ति
५		२	भगवतीसूत्र अवचूरि
५		१	भगवतीसूत्र चूर्णि
५		३	भगवतीसूत्र वृत्ति
२१४		१	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र वृत्ति
१४०		२	भयहर (नमिऊण) वृत्ति
१३९	२	१	भयहर स्तोत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१८१		१	भवभावना वृत्ति
५७८		१	भुवनदीपक वृत्ति
१३९	६	१	मयरहियं स्तोत्र वृत्ति
३८		२	महानिशीथसूत्र बृहद्वाचना
३८		१	महानिशीथसूत्र मध्यमवाचना
५२९		१	माघ काव्य टीका
५३१		१	मेघदूत काव्य वृत्ति
४०	७	१	यतिजीतकल्प वृत्ति
१३५	५	१	यूयं यूयं स्तोत्र वृत्ति
८२		१	योगबिंदु वृत्ति
१९३		१	योगशास्त्र वृत्ति
१९४			योगशास्त्र वृत्ति
६१४		१	योगशास्त्र वृत्ति
३६४		२	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
३६४		३	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
१३		१	राजप्रश्नीयसूत्र टीका
१२४		१	लघुक्षेत्रसमास वृत्ति
४२९			लघुन्यास
११९	३	१	लघुसंग्रहणी वृत्ति
२४		३	ललितविस्तराटीका की पंजिकाटीका
४६२			लिंगानुशासन
४५०			लौकिककृद्वृत्ति टिप्पनक
२४	६	३	वंदनक अवचूर्णि
२४	१५	२	वंदनकसूत्र टीका
१९७		१	वंदनकुलक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३८४		१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति
३८४	१	१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति विषमार्थ
६५		१	वसुदेवमध्यम खंड संग्रहणी
४९६		१	वाग्भटालंकार वृत्ति
५७४		१	वाराहीसंहिता वृत्ति
५२५		१	वासवदत्ता कथा वृत्ति
११		१	विपाकसूत्र टीका
१८९		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१९०		१	विवेकमंजरी वृत्ति
७०		१	विशेषणवतीसूत्र वृत्ति
२४		३६	विशेषावश्यकसूत्र
२४		३७	विशेषावश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३८	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति
२४		३९	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति (जीर्णा)
१९८		१	विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति
१२७		१	वीतराग स्तव वृत्ति
१३०		१	वीर स्तव वृत्ति
४८०		१	वृत्तरत्नाकर वृत्ति
२३		१	वृष्णिदशासूत्र टीका
३४		२	व्यवहारसूत्र चूर्णि
३४		१	व्यवहारसूत्र भाष्य
३४		३	व्यवहारसूत्र वृत्ति
४७६			व्याकरणरत्नकोश
१३५	४	१	शस्ता शमा स्तोत्र वृत्ति
२१८		१	शीलभावना वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१९२		१	शीलोपदेशमाला वृत्ति
१२८		१	शोभन स्तुति वृत्ति
४०	६	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
४०	८	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
२४	९	३	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४		१६	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र लघु वृत्ति
२४		१०	श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्र व्याख्याप्रकरण
६९		१	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
२४		२१	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि
२४	४	२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
८४		१	श्रावकभंगकादिविचारगाथा वृत्ति
१६३		१	श्रावकसामाचारी वृत्ति
५८७		१	षट्पंचाशिका वृत्ति
२४		१३	षडावश्यक चैत्यवंदनादिसर्वसूत्रव्याख्यारूप
३७४		१	षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति
७८		१	षोडशक वृत्ति
११४		१	सत्तरी चूर्णि
११६			सत्तरी टिप्पनक
११५			सत्तरी टीका
११७			सत्तरी वृत्ति
११८			सत्तरीभाष्य
७२		१	समयसार प्रकरण टीका
४		१	समवायांगसूत्र टीका
३५८		१	सम्मतिसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३५८		२	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३५८		३	सम्मतिसूत्र वृत्ति
८८		१	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि वृत्ति
१८५		१	सम्यक्त्व वृत्ति
१८६			सम्यक्त्व वृत्ति
४१९		१	सांख्यसप्तति वृत्ति
२४	९	२	साधुप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४	४	१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१७	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१९	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२०	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२७	साधुप्रतिक्रमाणादि षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति
४७०			सारस्वतव्याकरण टिप्पनक
१११			सार्धशतक वृत्ति
११२			सार्धशतक वृत्ति
११०			सार्धशतक टिप्पन
१०५		१	सार्धशतक वृत्ति
१०६			सार्धशतक वृत्ति
१३९	५	१	सिग्घभव वृत्ति
५७		१	सिद्धप्राभृत प्रकीर्णक वृत्ति
९१		१	सिद्धिपंचाशिका वृत्ति
२		२	सूत्रकृतांगसूत्र चूर्णि
२		३	सूत्रकृतांगसूत्र टीका
२		१	सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति
१७		१	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३		१	स्थानांगसूत्र टीका
३८३			स्याद्वादमंजरी
३६४			स्याद्वादरत्नाकर टीका
३६४		१	स्याद्वादरत्नाकर रत्नाकरावतारिका लघु टीका
४७८		१	हलायुधछंदोवृत्ति
१८४		१	हितोपदेशमाला वृत्ति
३९६		१	हेतुबिंदु टीका
४४४		१	हेमविभ्रम वृत्ति
४२६			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२७			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२५		२	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्न्यास
४२५		१	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्वृत्ति
४४१		१	हैमअनेकार्थनाममाला वृत्ति
४३३			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३४			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३५			हैमचतुष्क वृत्ति अवचूरि
४४२		१	हैमदेशीनाममाला रत्नावली वृत्ति
४३९			हैमन्याय वृत्ति
४३२			हैमप्राकृत वृत्ति
४३१			हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात
४३६			हैमलिंगानुशासन अवचूरि
४३०			हैमव्याकरण कक्षापट वृत्ति
४४०		१	हैमीनाममाला वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
			मूल
५१			अंगविद्या प्रकीर्णक
६३४			अंगुलविचार
८			अंतकृद्दशांगसूत्र
२२६			अजित चरित
२२७			अजित चरित
१३६			अजितशांति स्तव
६०			अजीवकल्प प्रकीर्णक
३९५			अध्यात्मतरंगिणी
६१३			अध्यात्मशास्त्र
२५१			अनंत चरित
५४९			अनर्घ्यराघव
९			अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र
४२			अनुयोगद्वारसूत्र
३६१			अनेकांतजयपताका
३६८			अनेकांतवादप्रवेश
३८२			अनेकांतव्यवस्थापन
३८१			अपशब्दनिराकरण
३८५			अपौरुषेयवेदनिराकरण
५१७			अभिनंद काव्य
२२९			अभिनंदन चरित
२३०			अभिनंदन चरित
२०३			अभिनवनवपद
२९६			अममजिन चरित्र
४६४			अमरकोशशेष

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६२३			अमृतसिद्धि
२६१			अर चरित
२६२			अर चरित
५९८			अर्धकांड
५०१			अलंकार
४९४			अलंकारमहोदधि
४९९			अलंकारसर्वस्व
१६२			आचरणशतक
१			आचारांगसूत्र
४३			आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
६१५			आत्मावबोध
२८७			आदि चरित
२२४			आदिनाथ चरित
२२५			आदिनाथ चरित
६१२			आनंदसमुच्चय
३९२			आप्तपरीक्षा
५५८			आयज्ञानतिलकसूत्र
५५८		१	आयज्ञानतिलकसूत्र वृत्ति
५५९			आयसद्भाव
५५९		१	आयसद्भाव वृत्ति
१४८			आराधनापताका
१४९			आराधनापताका
४९			आराधनापताका प्रकीर्णक
१६४			आलापक
६४२			आलोचनाविधान

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४			आवश्यकसूत्र
५८४			आशाधरीयपद्धति
६५३			इष्टोपदेश
२४	५	१	ईर्यापथिकीसूत्र
४५४			उक्तिक
४२४			उणादिसूत्र
२९			उत्तराध्ययनसूत्र
१९१			उपदेशकंदली
२२३			उपदेशचिंतामणि
१९५			उपदेशपदसूत्र
१७०			उपदेशमाला
१७२			उपदेशमाला हेयोपदेया कथा
१६९			उपधानस्वरूप
३१८			उपमितभवप्रपंचासारसमुच्चय
३१७			उपमितभवप्रपंचोद्धार
३१९			उपमितसारोद्धार
७			उपासकदशांगसूत्र
१३९		७	उल्लासिक्कम
१२			उववाइयसूत्र
१३९		३	उवसग्गहर स्तोत्र
३४३			ऋषिदत्ता चरित्र
६६			ऋषिभाषितानि
२११			ऋषिमंडल स्तव
२१२			ऋषिमंडल स्तव
२९८			एकादशगणधर चरित्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१४१			ऐंद्रस्येव इत्यादि लघुवृत्ति
२५			ओघनिर्युक्ति
२१६			कथाकोशसूत्र
३५६			कथापुस्तिका
३५७			कथापुस्तिका
२१७			कथामणिकोश
२१९			कथारत्नकोश
३४८			कथारत्नसागर
२८५			कथावली-प्रथम परिच्छेद
५५५			कर्पूरमंजरी नाटक
९४			कर्मप्रकृतिसूत्र
४४७			कलापव्याकरण
४४८			कलापव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विषमपद व्याख्या
३५			कल्पसूत्र
२०			कल्पावतंसिकासूत्र
४९८			कविशिक्षा
४६०			कातंत्रप्रयोगसमुच्चय
४६१			कातंत्रोत्तर
५२३			कादंबरी कथा
६०३			कामरूपपंचाशिका
४४५			कारकसमुच्चय
५९३			कालज्ञान
४९५			काव्यकल्पलता
४८५			काव्यप्रकाश
४८५		१	काव्यप्रकाश वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४९०			काव्यप्रदीपिकासूत्र
४९१			काव्यानुशासन
५३२			किरातकाव्य
५३२		२	किरातार्जुनीय टीका
५३२		१	किरातार्जुनीय वृत्ति
२५९			कुंथु चरित
२६०			कुंथु चरित
५१४			कुट्टिनीमत काव्य
३१२			कुमारपाल प्रतिबोध
३१३			कुमारपाल प्रतिबोध
५३०			कुमारसंभव
३२०			कुवलयमाला
३२१			कुवलयमाला
३४४			कुसुमसार कथा
६४०			कुसुमाञ्जलि
५६०			?कूरपर्वत
३७८		१	केवलिमुक्ति प्रकरण
४५५			कौमारसारसमुच्चय
३३८			कौमुदी कथा
१३५		८	क्षेत्रसमास
१२५			क्षेत्रसमाससूत्र
४२२			खंडनखंडखाद्य
६७		१	खंडषट्त्रिंशिका
६१			गच्छाचार प्रकीर्णक
४७२			गणरत्नमहोदधि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६९			गणिततिलक
५६५			गणितशास्त्र
५०			गणिविद्या प्रकीर्णक
४८४			गाथारत्नकोश
६२७			गीता
५३३			गौडवध
२१५			गौतमपृच्छा
१५७			गौतमभाषित
६४१		१	ग्रहदोषज्ञानाध्याय
१६			चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र
२३६			चंद्रप्रभ चरित
२३७			चंद्रप्रभ चरित
२३८			चंद्रप्रभ चरित
२३९			चंद्रप्रभ चरित
५५३			चंद्रलेखाविजय नाटक
५९			चंद्रवेधक प्रकीर्णक
५८३			चंद्रार्कग्रहसार
५०२			चंद्रालोकालंकार
५६६			चंद्रोन्मीलनचूडामणिसार
५२६			चंपूकथा
५२			चतुःशरण प्रकीर्णक
३५४			चतुर्विंशति प्रबंध
१४४			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४५			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७			चतुर्विंशतिजिन स्तव

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५४०			चाणक्य नाटक
५६२			चूडामणि
५६३			चूडामणिसार
२४	५	२	चैत्यवंदनसूत्र
२४	२४	१	चैत्यवंदनसूत्रभाष्य
४७९			छंदःप्रदीप
४८३			छंदोनुशासन
१८			जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
१८		१	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र चूर्णि
१२६			जंबूद्वीपसंग्रहणी
३०५			जंबूस्वामी चरित
३०६			जंबूस्वामी चरित
१३३			जनेन येन स्तुति
२०४			जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण
१३८			जयतिहुअण स्तोत्र
४८१			जयदेवछंदःशास्त्र
१३५		२	जयवृषभ स्तुति
३४१			जयसुंदरी कथा
५१९			जल्हणकवि काव्य
५८६			जातकपद्धति
३४७			जिनदत्त कथा
६३६			जिनप्रतिष्ठा
१४६			जिनशतक
४०			जीतकल्पसूत्र
८६			जीवसमास

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१४			जीवाभिगमसूत्र
६			ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र
५७७			ज्ञानदर्पणज्योतिष्क
६१७			ज्ञानदीपिका
५६७			ज्ञानमंजरि
६२१			ज्ञानांकुश
६१६			ज्ञानार्णव
६२०			ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्र
५६८		२	ज्योतिःसार
५४			ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक
२०५			ठाणा प्रकरण
१३९		४	तं जयउ स्तोत्र
४६			तंदुलवैचारिक प्रकीर्णक
६५०			तत्त्वबिंदु
१६१			तत्त्वबोध प्रकरण
४०२			तत्त्वसंग्रह
६१८			तत्त्वार्थसार
६८			तत्त्वार्थसूत्र
१६५			तपासमाचारी
३९८			तर्कभाषा
५२१			तिलकमंजरी कथा
५६			तीर्थोद्गार प्रकीर्णक
४६७			त्यादिसमुच्चय
५६४			त्रिशती
५६८		५	त्रिशती

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६८	५	१	त्रिशती वृत्ति
२८६			त्रिषष्टि
१५४			त्रिषष्ठितीर्थकल्प
४९३			दंड्यलंकार
३४५			दमयंती कथा
१८७			दर्शनशुद्धि
१८८			दर्शनशुद्धि
८५			दर्शनसत्तरी
५३५			दशरूपालोक
२६			दशवैकालिकसूत्र
३६			दशाश्रुतस्कंधसूत्र
६४५			दानादि प्रकरण
२२१			दानोपदेशमाला
१८२			दिनकृत्य
९६			दीपकसंग्रह
६४७			दीपालीकल्प
६४८			दीपोत्सवकल्प
५४६			दूतांगद नाटक
१५०			दूषमदंडिका
१५२			दूषमदंडिका
१५१			दूषमविच्छेददंडिका
६४९			दृष्टांतशत
४५			देवेंद्रस्तव प्रकीर्णक
१३५		६	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र
६४१		२	दोषशांतिक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६४१		३	दोषशांतिकलौकिक
३७०			द्रव्यालंकार
६३१			द्विजवदनचपेटा
५३			द्वीपसागरप्रज्ञप्ति संग्रहणी
५०३			द्व्याश्रय काव्य
१२९			धनपालपंचाशिका
५३७			धनुर्विद्या
३४९			धन्यशालिभद्र चरित्र
१४२			धरणोरगेंद्र स्तव
२५२			धर्म चरित
२५३			धर्म चरित
५०९			धर्मनाथ महाकाव्य
६२८			धर्मपरीक्षा
८१			धर्मबिंदु
१८३			धर्मरत्न
२०९			धर्मविधि प्रकरण
७१		३	धर्मसंग्रहणी
८०			धर्मसूत्राष्टक
२२०			धर्माख्यानकोश
५०७			धर्माभ्युदय काव्य
२०६			धर्मोपदेश प्रकरण
१७८			धर्मोपदेशमाला
४३७			धातुपारायण
४५२			धातुपारायण
४८२			नंदिताढ्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४१			नंदीसूत्र
२६९			नमि चरित
२७०			नमि चरित
३६०			नयचक्रवाल
५२०			नरनारायणानंद काव्य
५७१			नरपतिजयचर्या
५७२			नरपतिजयचर्यागतग्रहा
३४०			नर्मदासुंदरी कथा
२९३			नल चरित
५३९			नलविलास नाटक
८७			नवतत्त्व
१९९			नवपद
११३		१	नव्यकर्मविपाक
११३		२	नव्यकर्मस्तव
११३		३	नव्यबंधस्वामित्व
११३		५	नव्यशतक
११३		४	नव्यषडशीति
५९५			नाडीसंचारज्ञान
५९७			नाथपुस्तिका
६७		३	निगोदषट्त्रिंशिका
५८			निरयविभक्ति
१९			निरयावलिकासूत्र
३०			निशीथसूत्र
२७१			नेमि चरित
२७२			नेमि चरित
२७३			नेमि चरित
२८९			नेमि चरित
५१०			नेमि चरित्र महाकाव्य
५१३			नेमिदूत काव्य
५१२			नेमिनिर्वाण काव्य
५३४			नैषध महाकाव्य
३८९			न्यायकुमुदचंद्रसूत्र
४०३			न्यायकुसुमांजलि
४०४			न्यायतर्कसूत्र
४००			न्यायप्रवेशक
३९९			न्यायबिंदुसूत्र
४०७			न्यायभूषण
४१८			न्यायलीलावती
३९१			न्यायविनिश्चय
३६५			न्यायावतार
३९			पंचकल्पसूत्र
३३९			पंचमी कथा
७६			पंचवस्तुक
९५			पंचसंग्रह
७५			पंचसूत्र
३५१			पंचाख्यानक
७७			पंचाशक १९
७३			पंचास्तिकाय संग्रह
३९३			पत्रपरीक्षा
३०१			पद्म चरित
२३३			पद्मप्रभ चरित
२९४			पद्मानंद महाकाव्य
३७५			परिणामिवस्तुव्यवस्थापन
२९२			परिशिष्ट पर्व
३९०			परीक्षामुख
३७			पर्युषणाकल्पसूत्र
६३८			पर्वपंजिका
२०७			पवज्जाविहाण
९०			पवयणसंदोह
३१०			पांडव चरित्र
६३३			पाक्षिकसत्तरी
२७			पाक्षिकसूत्र
४७५			पाणिनि व्याकरण
४७७			पाणिनीय संक्षिप्त व्याकरण
२७४			पार्श्व चरित
२७५			पार्श्व चरित
२७६			पार्श्व चरित
२७७			पार्श्व चरित
२७८			पार्श्व चरित
२९०			पार्श्व चरित
२९५			पार्श्वदशगणधर चरित
२८			पिंडनिर्युक्ति
९३			पिंडविशुद्धिसूत्र
५९४			पिपीलिकाज्ञान
२९७			पुंडरीक चरित्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६७		२	पुद्गलषट्त्रिंशिका
२२			पुष्पचूलिकासूत्र
१७७			पुष्पमाला
२१			पुष्पिकासूत्र
५९०			पुस्तकेंद्र ग्रंथ
३३४			पूजाष्टक कथा
३३५			पूजाष्टक कथा
३३७			पूजाष्टक कथा
३०७			पृथ्वीचंद्र चरित
१५			प्रज्ञापनासूत्र
१५		३	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी
६११			प्रतिक्रमणटीकासूत्र
३८६			प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण
२४	२४	३	प्रत्याख्यानभाष्य
२४		७	प्रत्याख्यानस्वरूप प्रकरण
३०४			प्रत्येकबुद्ध चरित
३५२		१	प्रद्युम्न चरित्र-शांब चरित्र
३५३			प्रबंधचूडामणि
५४३			प्रबुद्धरौहिणेय नाटक
५४५			प्रबोधचंद्रोदय
३११			प्रभावक चरित्र
३५९			प्रमाणकलिका
३६७			प्रमाणमीमांसा
३९७			प्रमाणवार्त्तिक
३७१			प्रमाणसंग्रह

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३९४			प्रमेयकमलमार्तंड
३७२			प्रमेयरत्नकोश
७४			प्रवचनसार
७१			प्रवचनसारोद्धार
८३			प्रशमरति
५८९			प्रश्नज्ञान
५८८			प्रश्नज्ञानपद्धति
५७०			प्रश्नप्रकाश
५६१			प्रश्नव्याकरणज्योतिवृत्ति
१०			प्रश्नव्याकरणसूत्र
२२२			प्रश्नोत्तरमाला
५०५			प्राकृतद्व्याश्रयसूत्र
६७		४	बंधषट्त्रिंशिका
१३४			बप्पभट्टि स्तुति
५१६			बालभारत
५८५			बृहज्जातक
३३२			बृहत् पूजाष्टक
९७			बृहत्कर्मविपाक
९९			बृहत्कर्मस्तव
१२०			बृहत्क्षेत्रसमास
१०४			बृहत्शतक
१०२			बृहत्षडशीति
१०३			बृहत्षडशीति वृत्ति
११९			बृहत्संग्रहणी
१०१			बृहद्बंधस्वामित्व

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३७६			बोटिकनिषेध
६५१			बोधप्रदीपिका
४८			भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
१३१			भक्तामर स्तव
५			भगवतीसूत्र
२१४			भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र
५७५			भद्रबाहुसंहिता
१३९		२	भयहर स्तोत्र
१८१			भवभावना
६३०			भविष्योत्तरोद्धार
५३६			भारतशास्त्र
४१०			भास्करभूषण
५७८			भुवनदीपक
३२२			भुवनसुंदरी चरित्र
६००			भैरवपद्मावतीकल्प
५९९			मंत्रमहोदधि
४०८			मतमनोहर
३२७			मनोरमा चरित्र
१३९		६	मयरहियं स्तोत्र
५५			मरणसमाधि प्रकीर्णक
३२५			मलयसुंदरी कथा
३२६			मलयसुंदरी कथा
२६३			मल्लि चरित
२६४			मल्लि चरित
२६५			मल्लि चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३८			महानिशीथसूत्र लघुवाचना
२८३			महापुरुष चरित
२८४			महापुरुष चरित
४४			महाप्रत्याख्यानसूत्र प्रकीर्णक
२७९			महावीर चरित
२९१			महावीर चरित
३१६			महीपाल चरित्र
५२९			माघ काव्य
५९२			मातृकाकेवली
५४२			मानमुद्राभंजन नाटक
५५०			मुद्राराक्षस नाटक
५४४			मुद्रितकुमुदचंद्र नाटक
३१४			मुनिपति चरित्र
३१५			मुनिपति चरित्र
२६७			मुनिसुव्रत चरित
२६८			मुनिसुव्रत चरित
२६६			मुनिसुव्रत चरित
५४८			मुरारि नाटक
५४८		१	मुरारि नाटक टिप्पण
५४८		२	मुरारि नाटक टिप्पण
४४६			मुष्टिव्याकरण
३३०			मृगावती चरित्र
५३१			मेघदूत काव्य
५४१			मोहपराजय नाटक
४०		७	यतिजीतकल्प
६३७			यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल
१३५	१	२	यत्राखिल स्तुति
६०९			यशोधर चरित
६१०			यशोधरकाव्यपंजिका
१३५		५	यूयं यूयं स्तोत्र
६२२			योगकल्पद्रुम
८२			योगबिंदु
१९३			योगशास्त्र
६१४			योगशास्त्र
९२			योनिप्राभृत
५२८			रघुवंश
५३८			रघुविलास नाटक
५७९			रत्नकोशज्योतिष्क
३३३			रत्नचूड कथा
५६८		४	रत्नपरीक्षा
५८०			रत्नमालाज्योतिः
५५६			रत्नावली नाटिका
५५२			राघवाभ्युदय नाटक
१३			राजप्रश्नीयसूत्र
२८८			रामायण
५९१			रुतज्ञान
४९७			रुद्रटालंकार
६०१			रुद्राक्षकल्प
१२४			लघुक्षेत्रसमास
११९		३	लघुसंग्रहणी
४२५			लिंगानुशासन
४६३			लिंगानुशासन
३५५			लीलावती कथा
३८८			लोकतत्त्वनिर्णय
४६८			लौकिकत्यादिप्रक्रिया
२४	२४	२	वंदनकभाष्य
२४	५	३	वंदनकसूत्र
१९७			वंदनकुलक
६२९			वज्रसूत्री
५५७			वनमाला नाटिका
६३२			वनस्पतिसत्तरी
३८४			वर्द्धमान स्तोत्र
६०४			वसंतराज
६५			वसुदेवमध्यम खंड
६४			वसुदेवहिंडी-द्वितीय खंड
६३			वसुदेवहिंडी-प्रथम खंड
४९६			वाग्भटालंकार
५७४			वाराहीसंहिता
५२५			वासवदत्ता कथा
२४७			वासुपूज्य चरित
२४८			वासुपूज्य चरित
५६८		१	वास्तुसार
१४३			विंशतिद्वात्रिंशिका
५१५			विक्रमांकाभ्युदय
५५४			विक्रमोर्वशीय नाटक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
८९			विचारसार प्रकरण
३३६			विजयचंद्रकेवलि कथा
११			विपाकसूत्र
२४९			विमल चरित
२५०			विमल चरित
६२४			विरूपाक्षयोगशत
१८९			विवेकमंजरी
१९०			विवेकमंजरी
१५८			विवेकविलास
७०			विशेषणवतीसूत्र
१९८			विषयविनिग्रह कुलक
१२७			वीतराग स्तव
२८२			वीर चरित
२८०			वीर चरित्र
२८१			वीर चरित्र
१३०			वीर स्तव
६२			वीरस्तव प्रकीर्णक
४८०			वृत्तरत्नाकर
४२०			वृद्धवादसार प्रकरण
२३			वृष्णिदशासूत्र
३४			व्यवहारसूत्र
१५३			व्युच्छेददंडिका
६०६			शकुनशास्त्र
६०५			शकुनसारोद्धार
१६०			शतपदी

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१५६			शत्रुंजयकल्प
१५५			शत्रुंजयमाहात्म्य
४७४			शब्दप्रभेदानुयायि नाममाला
६२६			शमभावशत
१३५		४	शस्ता शमा स्तोत्र
२५४			शांति चरित
२५५			शांति चरित
२५६			शांति चरित
२५७			शांति चरित
२५८			शांति चरित
६०८			शांतिनाथ चरित
४७३			शाकटायनव्याख्या
६२५			शाम्यशत
५०८			शालेय काव्य
४२१			शास्त्रदर्पण
२४२			शीतल चरित
२४३			शीतल चरित
२१८			शीलभावना
१९२			शीलोपदेशमाला
६४४			शुभावली
५४७			शृंगारतिलक नाटक
१२८			शोभन स्तुति
४०		८	श्राद्धजीतकल्प
४०		६	श्राद्धजीतकल्प
६९			श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
८४			श्रावकभंगकादिविचारगाथा
१६३			श्रावकसामाचारी
१३५		२	श्रीतीर्थराज स्तुति
१३५		९	श्रीशैवेयं
२४४			श्रेयांस चरित
२४५			श्रेयांस चरित
२४६			श्रेयांस चरित
३८७			श्वेतांबरदर्शनसिद्धि
६०२			श्वेतार्ककल्प
५८७			षट्पंचाशिका
४०९			षट्पदार्थप्रवेश प्रकरण
३७३			षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार
३७४			षड्दर्शनसमुच्चय
४५७			षड्भाषालक्षणपारायण
५८१			षष्टिसंवत्सर
७८			षोडशक
२२८			संभव चरित
६१९			संवेगद्रुमकंदली
१९६			संवेगरंगशाला
४७			संस्तारक प्रकीर्णक
१३५		७	सत्तरिसयठाण
११४			सत्तरी
३२८			सप्तक्षेत्रीनाम कथा
७२			समयसार प्रकरण
३०८			समरादित्य चरित्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३०९			समरादित्य चरित्र
४			समवायांगसूत्र
४४३			समासतद्धितसार प्रकरण
३५८			सम्मतिसूत्र
१८५			सम्यक्त्व
८८			सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि
६३५			सम्यक्त्वस्वरूप
३७९			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३८०			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३६९			सर्वज्ञसिद्धि प्रकरण
३४२			सर्वांगसुंदरी कथा
३७७			सर्वार्थनिराकरणवादस्थल आदि
६५४			सर्वेऽपि सूक्तरूपा
४१९			सांख्यसप्तति
२४		१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र
१६६			सामाचारी
१६७			सामाचारी
१६८			सामाचारी
६०७			सामुद्रिक
४०६			सारसंग्रह
४६९			सारस्वतव्याकरण
४७१			सारस्वतव्याकरण प्रक्रिया
५७६			सारावलीज्योतिष्क

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१०५			सार्धशतक
६५२			सिंदूर प्रकर
१३९		५	सिग्घभव
५७			सिद्धप्राभृतसूत्र प्रकीर्णक
५९६			सिद्धाज्ञापद्धति
९१			सिद्धिपंचाशिकासूत्र
३०२			सीता चरित
३०३			सीता चरित
५५१			सुकृतमंडन नाटक
३२९			सुदर्शना चरित्र
६४६			सुधाकलश
२३४			सुपार्श्व चरित
२३५			सुपार्श्व चरित
६४३		२	सुभाषितसमुद्र
२३१			सुमति चरित
२३२			सुमति चरित
३३१			सुरसुंदरी कथा
३२४			सुलसा चरित
२४०			सुविधि चरित
२४१			सुविधि चरित
६४३		१	सूक्तरत्नाकर
२			सूत्रकृतांगसूत्र
१७			सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१५९			सोमनीति
५१८			सोमपालविलास
५२४			सौभाग्यमंजरी कथा
३४६			सौभाग्यसुंदरी कथा
३७८		२	स्त्रीमुक्ति प्रकरण
३			स्थानांगसूत्र
३५०			स्थूलिभद्र चरित्र
४६६			स्यादिसमुच्चय
३६३			स्याद्वादरत्नाकर
२९९			हरिवंश चरित
३००			हरिवंश चरित
३२३			हरिविक्रम चरित्र
५८२			हर्षप्रकाशज्योतिष्क
४७८			हलायुधछंदः
१८४			हितोपदेशमाला
३९६			हेतुबिंदु
४४४			हेमविभ्रम
४२३			हेमव्याकरणसूत्र
४४१			हैमअनेकार्थनाममाला
४४२			हैमदेशीनाममाला
४४०			हैमीनाममाला
			मूल?
४८६			जयंतीदीपिका

(परिशिष्ट ५)

बृहट्टिप्पनिका

भाषाद्वारा वर्गीकृत कृति सूचि

परिशिष्ट-५ बृहट्टिप्पनिका भाषा द्वारा वर्गीकृत कृति सूचि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
			अन्य
५६०			कूरपर्वत?
५९०			पुस्तकेंद्र ग्रंथ
३५६			कथापुस्तिका
३५७			कथापुस्तिका
			अपभ्रंश
३०६			जंबूस्वामी चरित
			प्राकृत
३३३			रत्नचूड कथा
५१			अंगविद्या प्रकीर्णक
८			अंतकृद्दशांगसूत्र
२२७			अजित चरित
६०			अजीवकल्प प्रकीर्णक
२५१			अनंत चरित
९			अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र
४२			अनुयोगद्वारसूत्र
२३०			अभिनंदन चरित
२६१			अर चरित
१			आचारांगसूत्र
१		१	आचारांगसूत्र निर्युक्ति
४३			आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
२२४			आदिनाथ चरित
४९			आराधनापताका प्रकीर्णक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४			आवश्यकसूत्र
२४		३०	आवश्यकसूत्र चूर्णि
२४		२९	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति
२४	५	१	ईर्यापथिकीसूत्र
२४	६	१	ईर्यापथिकीसूत्र अवचूर्णि
२९			उत्तराध्ययनसूत्र
२९		१	उत्तराध्ययनसूत्र निर्युक्ति
१९१			उपदेशकंदली
१७०		१	उपदेशमाला वृत्ति
७			उपासकदशांगसूत्र
१३९		७	उल्लासिक्कम
१२			उववाइयसूत्र
१३९		३	उवसग्गहर स्तोत्र
३४३			ऋषिदत्ता चरित्र
६६			ऋषिभाषितानि
२१२			ऋषिमंडल स्तव
२५			ओघनिर्युक्ति
२५		१	ओघनिर्युक्ति चूर्णि
२५		२	ओघनिर्युक्ति भाष्य
२१६			कथाकोशसूत्र
२१७			कथामणिकोश
२८५			कथावली-प्रथम परिच्छेद
९४			कर्मप्रकृतिसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९४		२	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि
३५			कल्पसूत्र
३७		१	कल्पसूत्र निर्युक्ति
३५		१	कल्पसूत्र बृहद्भाष्य
२०			कल्पावतंसिकासूत्र
२६०			कुंथु चरित
३१२			कुमारपाल प्रतिबोध
३२०			कुवलयमाला
३४४			कुसुमसार कथा
१३५		८	क्षेत्रसमास
६७		१	खंडषट्त्रिंशिका
६१			गच्छाचार प्रकीर्णक
५०			गणिविद्या प्रकीर्णक
५२७			गाथासप्तशती
५३३			गौडवध
२१५			गौतमपृच्छा
१५७			गौतमभाषित
१६			चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र
२३८			चंद्रप्रभ चरित
२३९			चंद्रप्रभ चरित
५९			चंद्रवेधक प्रकीर्णक
५२			चतुःशरण प्रकीर्णक
२४	६	२	चैत्यवंदन अवचूर्णि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४	५	२	चैत्यवंदनसूत्र
२४		११	चैत्यवंदनामहाभाष्य
१८			जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
१२६			जंबूद्वीपसंग्रहणी
३०५			जंबूस्वामी चरित
२०४			जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण
१३८			जयतिहुअण स्तोत्र
३४१			जयसुंदरी कथा
४०			जीतकल्पसूत्र
४०		२	जीतकल्पसूत्र चूर्णि
४०		३	जीतकल्पसूत्र टिप्पनक
४०		१	जीतकल्पसूत्र भाष्य
१४			जीवाभिगमसूत्र
६			ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र
५४			ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक
२०५			ठाणा प्रकरण
१३९		४	तं जयउ स्तोत्र
४६			तंदुलवैचारिक प्रकीर्णक
५६			तीर्थोद्गार प्रकीर्णक
१८७			दर्शनशुद्धि
१८८			दर्शनशुद्धि
२६			दशवैकालिकसूत्र
२६		१	दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति
३६			दशाश्रुतस्कंधसूत्र
२२१			दानोपदेशमाला

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१८२			दिनकृत्य
१५०			दूषमदंडिका
१५२			दूषमदंडिका
१५१			दूषमविच्छेददंडिका
४५			देवेंद्रस्तव प्रकीर्णक
५३			द्वीपसागरप्रज्ञप्ति संग्रहणी
१२९			धनपालपंचाशिका
२५३			धर्म चरित
१८३			धर्मरत्न
२०९			धर्मविधि प्रकरण
७१		३	धर्मसंग्रहणी
२२०			धर्माख्यानकोश
२०६			धर्मोपदेश प्रकरण
१७८			धर्मोपदेशमाला
१७९			धर्मोपदेशमाला प्रकरण वृत्ति
४८२			नंदिताढ्य
४१			नंदीसूत्र
२७०			नमि चरित
८७			नवतत्त्व
११३		१	नव्यकर्मविपाक
११३		२	नव्यकर्मस्तव
११३		३	नव्यबंधस्वामित्व
११३		५	नव्यशतक
११३		४	नव्यषडशीति
६७		३	निगोदषट्त्रिंशिका

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१९			निरयावलिकासूत्र
३०			निशीथसूत्र
३०		१	निशीथसूत्र बृहद्भाष्य
३०		२	निशीथसूत्र भाष्य
२७१			नेमि चरित
२७२			नेमि चरित
२७३			नेमि चरित
३९		२	पंचकल्पभाष्य
३९			पंचकल्पसूत्र
३९		१	पंचकल्पसूत्र निर्युक्ति
२४		२८	पंचपरमेष्ठि विवरण
३३९			पंचमी कथा
७६			पंचवस्तुक
९५			पंचसंग्रह
७५			पंचसूत्र
७७			पंचाशक १९
७३			पंचास्तिकाय संग्रह
३०१			पद्म चरित
२३३			पद्मप्रभ चरित
३७			पर्युषणाकल्पसूत्र
९०			पवयणसंदोह
६३३			पाक्षिकसत्तरी
२७			पाक्षिकसूत्र
२७७			पार्श्व चरित
२७८			पार्श्व चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२९५			पार्श्वदशगणधर चरित
२८			पिंडनिर्युक्ति
९३			पिंडविशुद्धिसूत्र
५९४			पिपीलिकाज्ञान
६७		२	पुद्गलषट्त्रिंशिका
२२			पुष्पचूलिकासूत्र
१७७			पुष्पमाला
२१			पुष्पिकासूत्र
३३४			पूजाष्टक कथा
३३७			पूजाष्टक कथा
३०७			पृथ्वीचंद्र चरित
१५			प्रज्ञापनासूत्र
१५		३	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी
१५	३	१	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी अवचूरि
२४		७	प्रत्याख्यानस्वरूप प्रकरण
३०४			प्रत्येकबुद्ध चरित
७४			प्रवचनसार
७१			प्रवचनसारोद्धार
१०			प्रश्नव्याकरणसूत्र
५०५			प्राकृतद्व्याश्रयसूत्र
६७		४	बंधषट्त्रिंशिका
९७			बृहत्कर्मविपाक
९९			बृहत्कर्मस्तव
१२०			बृहत्क्षेत्रसमास
१०४			बृहत्शतक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१०७			बृहत्शतक चूर्णि
१०२			बृहत्षडशीति
१०२		१	बृहत्षडशीति वृत्ति
११९			बृहत्संग्रहणी
१०१			बृहद्बंधस्वामित्व
४८			भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
५			भगवतीसूत्र
२१४			भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र
१८१			भवभावना
३२२			भुवनसुंदरी चरित्र
५९९			मंत्रमहोदधि
३२७			मनोरमा चरित्र
१३९		६	मयरहियं स्तोत्र
५५			मरणसमाधि प्रकीर्णक
३२६			मलयसुंदरी कथा
२६३			मल्लि चरित
३८			महानिशीथसूत्र लघुवाचना
२८३			महापुरुष चरित
२८४			महापुरुष चरित
४४			महाप्रत्याख्यानसूत्र प्रकीर्णक
३१६			महीपाल चरित्र
३१४			मुनिपति चरित्र
२६७			मुनिसुव्रत चरित
२६८			मुनिसुव्रत चरित
४०		७	यतिजीतकल्प

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९२			योनिप्राभृत
१३			राजप्रश्नीयसूत्र
१२४			लघुक्षेत्रसमास
११९		३	लघुसंग्रहणी
२४	६	३	वंदनक अवचूर्णि
२४	५	३	वंदनकसूत्र
६५			वसुदेवमध्यम खंड
६५		१	वसुदेवमध्यम खंड संग्रहणी
६४			वसुदेवहिंडी-द्वितीय खंड
६३			वसुदेवहिंडी-प्रथम खंड
२४८			वासुपूज्य चरित
८९			विचारसार प्रकरण
३३६			विजयचंद्रकेवलि कथा
११			विपाकसूत्र
२५०			विमल चरित
१८९			विवेकमंजरी
७०			विशेषणवतीसूत्र
२८२			वीर चरित
२८०			वीर चरित्र
२८१			वीर चरित्र
१३०			वीर स्तव
६२			वीरस्तव प्रकीर्णक
२३			वृष्णिदशासूत्र
३४			व्यवहारसूत्र
३४		१	व्यवहारसूत्र भाष्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१५३			व्युच्छेददंडिका
६०६			शकुनशास्त्र
२५७			शांति चरित
२४३			शीतल चरित
४०		८	श्राद्धजीतकल्प
४०		६	श्राद्धजीतकल्प
४०	६	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
६९			श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र
८४			श्रावकभंगकादिविचारगाथा
१६३			श्रावकसामाचारी
२४६			श्रेयांस चरित
१९६			संवेगरंगशाला
४७			संस्तारक प्रकीर्णक
१३५		७	सत्तरिसयठाण
११४			सत्तरी
११६			सत्तरी टिप्पनक
११५			सत्तरी टीका
११८			सत्तरीभाष्य
७२			समयसार प्रकरण
३०८			समरादित्य चरित्र
४			समवायांगसूत्र
३५८			सम्मतिसूत्र
१८५			सम्यक्त्व
८८			सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि
३४२			सर्वांगसुंदरी कथा

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र
१०५			सार्धशतक
१३९		५	सिग्घभव
५७			सिद्धप्राभृतसूत्र प्रकीर्णक
९१			सिद्धिपंचाशिकासूत्र
३०२			सीता चरित
३०३			सीता चरित
३२९			सुदर्शना चरित्र
२३५			सुपार्श्व चरित
२३२			सुमति चरित
३३१			सुरसुंदरी कथा
२४०			सुविधि चरित
२			सूत्रकृतांगसूत्र
२		१	सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति
१७			सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
३			स्थानांगसूत्र
१८४			हितोपदेशमाला
२४	२४	३	प्रत्याख्यानभाष्य
२४	२४	२	वंदनकभाष्य
२२०		१	धर्माख्यानकोश वृत्ति
५६८		१	वास्तुसार
			प्राकृत+संस्कृत
१		२	आचारांगसूत्र चूर्णि
५		१	भगवतीसूत्र चूर्णि
२		२	सूत्रकृतांगसूत्र चूर्णि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४२		१	अनुयोगद्वारसूत्र चूर्णि
२९		२	उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णि
३२			कल्प चूर्णि
३१			कल्पविशेष चूर्णि
३७		२	कल्पसूत्र चूर्णि
३५		२	कल्पसूत्र विशेषचूर्णि
१८		१	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र चूर्णि
१४		१	जीवाभिगमसूत्र चूर्णि
१५४			त्रिषष्ठितीर्थकल्प
२६		२	दशवैकालिकसूत्र चूर्णि
४१		१	नंदीसूत्र चूर्णि
३०		३	निशीथसूत्र चूर्णि
३९		३	पंचकल्पसूत्र चूर्णि
२६५			मल्लि चरित
३४		२	व्यवहारसूत्र चूर्णि
२४		२१	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि
			संस्कृत
६३४			अंगुलविचार
८		१	अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति
२२६			अजित चरित
१३६			अजितशांति स्तव
१३६		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
१३७			अजितशांति स्तव वृत्ति
१३९		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
३९५			अध्यात्मतरंगिणी

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३९५		१	अध्यात्मतरंगिणी टीका
६१३			अध्यात्मशास्त्र
५४९			अनर्घ्यराघव
९		१	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र टीका
४२		३	अनुयोगद्वारसूत्र बृहद्वृत्ति
४२		२	अनुयोगद्वारसूत्र लघुवृत्ति
३६१			अनेकांतजयपताका
३६२			अनेकांतजयपताका वृत्ति
३६२		१	अनेकांतजयपताका वृत्ति टिप्पनक
३६८			अनेकांतवादप्रवेश
३८२			अनेकांतव्यवस्थापन
३८१			अपशब्दनिराकरण
३८५			अपौरुषेयवेदनिराकरण
५१७			अभिनंद काव्य
२२९			अभिनंदन चरित
२०३			अभिनवनवपद
२०३		१	अभिनवनवपद वृत्ति
२९६			अममजिन चरित्र
४६५			अमरकोश टिप्पनक
४६४			अमरकोशशेष
६२३			अमृतसिद्धि
२६२			अर चरित
५९८			अर्धकांड
५०१			अलंकार
५०१		१	अलंकार पदप्रकाश वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४९४			अलंकारमहोदधि
४९४		१	अलंकारमहोदधि वृत्ति
४९९			अलंकारसर्वस्व
७९			अष्टकसूत्र वृत्ति
४४९			आख्यात अवचूरि
१६२			आचरणशतक
१		३	आचारांगसूत्र टीका
४३		१	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक वृत्ति
६१५			आत्मावबोध
२८७			आदि चरित
२२५			आदिनाथ चरित
६१२			आनंदसमुच्चय
३९२			आप्तपरीक्षा
३९२		१	आप्तपरीक्षा वृत्ति
३६६			आप्तमीमांसालंकार
५५८			आयज्ञानतिलकसूत्र
५५८		१	आयज्ञानतिलकसूत्र वृत्ति
५५९			आयसद्भाव
५५९		१	आयसद्भाव वृत्ति
१४८			आराधनापताका
१४९			आराधनापताका
१६४			आलापक
६४२			आलोचनाविधान
२४		३५	आवश्यकसूत्र अवचूरि
२४		३१	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		३२	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति टिप्पनक
२४		३४	आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति
२४		३३	आवश्यकसूत्र वृत्ति
५८४			आशाधरीयपद्धति
६५३			इष्टोपदेश
४५४			उक्तिक
४२४			उणादिसूत्र
४३८			उणादिसूत्र वृत्ति
२९		३	उत्तराध्ययसूत्र लघुवृत्ति
१९१		१	उपदेशकंदली वृत्ति
२२३			उपदेशचिंतामणि
२२३		१	उपदेशचिंतामणि वृत्ति
१९५			उपदेशपदसूत्र
१९५		१	उपदेशपदसूत्र वृत्ति
१७०			उपदेशमाला
१७३			उपदेशमाला कर्णिका वृत्ति
१७४			उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति
१७५			उपदेशमाला लघु वृत्ति
१७२			उपदेशमाला हेयोपदेया कथा
१७१			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१७६			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१६९			उपधानस्वरूप
३१८			उपमितभवप्रपंचासारसमुच्चय
३१७			उपमितभवप्रपंचोद्धार
३१९			उपमितसारोद्धार

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
७		१	उपासकदशांगसूत्र वृत्ति
१३९	७	१	उल्लासिक्कम वृत्ति
१२		१	उववाइयसूत्र टीका
१४०		१	उवसग्गहर वृत्ति
१३९	३	१	उवसग्गहर स्तोत्र वृत्ति
२११			ऋषिमंडल स्तव
२१३			ऋषिमंडल स्तव वृत्ति
२९८			एकादशगणधर चरित्र
१४१			ऐंद्रस्येव इत्यादि लघुवृत्ति
२५		३	ओघनिर्युक्ति टीका
२५		४	ओघनिर्युक्ति टीका
४१४			कंदली किरणावली
२१६		१	कथाकोशसूत्र वृत्ति
२१७		१	कथामणिकोश व्याख्या
२१९			कथारत्नकोश
३४८			कथारत्नसागर
४५३			कपालक विशेषव्याख्यान
५५५			कर्पूरमंजरी नाटक
९४	२	१	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि टिप्पनक
९४		१	कर्मप्रकृतिसूत्र वृत्ति
४५६			कलापक उणादि वृत्ति
४४७			कलापव्याकरण
४४८			कलापव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विषमपद व्याख्या
४४७		१	कलापव्याकरण वृत्ति
३३			कल्पवृत्ति
३७		३	कल्पसूत्र कल्पनिरुक्तटिप्पनक
३७		४	कल्पसूत्र टिप्पनक
३७		५	कल्पसूत्र संदेहविषौषधिवृत्ति
२०		१	कल्पावतंसिकासूत्र टीका
४९८			कविशिक्षा
४६०			कातंत्रप्रयोगसमुच्चय
४५१			कातंत्रलघु वृत्ति
४६१			कातंत्रोत्तर
५२३			कादंबरी कथा
६०३			कामरूपपंचाशिका
६०३		१	कामरूपपंचाशिका वृत्ति
४४५			कारकसमुच्चय
५९३			कालज्ञान
४९५			काव्यकल्पलता
४९५		१	काव्यकल्पलता कविशिक्षा वृत्ति
५००			काव्यकल्पलता वृत्ति परिमल
४८५			काव्यप्रकाश
४८९			काव्यप्रकाश अवचूर्णि
४८८			काव्यप्रकाश विकाश
४८५		१	काव्यप्रकाश वृत्ति
४८७			काव्यप्रकाश संकेत टीका
४९०			काव्यप्रदीपिकासूत्र
४९०		१	काव्यप्रदीपिकासूत्र वृत्ति
४९१			काव्यानुशासन
४९१		१	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति
४९२			काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति विवेक
४११			किरणावली
४१३		१	किरणावली टिप्पनक
४१३		२	किरणावली टिप्पनक
५३२			किरातकाव्य
५३२		२	किरातार्जुनीय टीका
५३२		१	किरातार्जुनीय वृत्ति
२५९			कुंथु चरित
५१४			कुट्टिनीमत काव्य
३१३			कुमारपाल प्रतिबोध
५३०			कुमारसंभव
५३०		१	कुमारसंभव वृत्ति
३२१			कुवलयमाला
६४०			कुसुमाञ्जलि
३७८		१	केवलिमुक्ति प्रकरण
४५५			कौमारसारसमुच्चय
३३८			कौमुदी कथा
१२५			क्षेत्रसमाससूत्र
१२५		१	क्षेत्रसमाससूत्र वृत्ति
४२२			खंडनखंडखाद्य
४२२		१	खंडनखंडखाद्य टिप्पनक
६७	१	१	खंडषट्त्रिंशिका वृत्ति
४७२			गणरत्नमहोदधि
५६९			गणिततिलक
५६९		१	गणिततिलक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६५			गणितशास्त्र
४८४			गाथारत्नकोश
५२७		१	गाथासप्तशती टीका
५२७		२	गाथासप्तशती वृत्ति
५२७		३	गाथासप्तशती वृत्ति
६२७			गीता
२१५		१	गौतमपृच्छा वृत्ति
६४१		१	ग्रहदोषज्ञानाध्याय
१६		१	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
२३६			चंद्रप्रभ चरित
५५३			चंद्रलेखाविजय नाटक
५८३			चंद्रार्कग्रहसार
५०२			चंद्रालोकालंकार
५६६			चंद्रोन्मीलनचूडामणिसार
५२६			चंपूकथा
५२६		१	चंपूकथा टिप्पनक
५२		१	चतुःशरण प्रकीर्णक वृत्ति
३५४			चतुर्विंशति प्रबंध
१४४			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४५			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७		१	चतुर्विंशतिजिन स्तव वृत्ति
५४०			चाणक्य नाटक
५६२			चूडामणि
५६३			चूडामणिसार

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		४	चैत्यवंदन वृत्ति
२४		२६	चैत्यवंदन वृत्ति बालावबोध
२४		२५	चैत्यवंदनभाष्य संघाचारवृत्ति
२४	१५	१	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४		१८	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४	९	१	चैत्यवंदनसूत्र पदपर्याय
२४		२	चैत्यवंदनसूत्र ललितविस्तराटीका
२४	२४	१	चैत्यवंदनसूत्रभाष्य
२४		१४	चैत्यवंदनादि वृत्ति
२४		१२	चैत्यवंदनाभाष्य वृत्ति
२४		२३	चैत्यवंदनाविचार
४७९			छंदःप्रदीप
४८३			छंदोनुशासन
४८३		१	छंदोनुशासन छंदश्चूडामणि वृत्ति
१८		२	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र टीका
१२६		१	जंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति
३०६		१	जंबूस्वामी चरित टिप्पन
१३३			जनेन येन स्तुति
१३३			जनेन येन स्तुति वृत्ति
२०४		१	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण वृत्ति
४८६			जयंतीदीपिका
१३८		१	जयतिहुअण वृत्ति
४८१			जयदेवछंदःशास्त्र
४८१		१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति
४८१	१	१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति टिप्पनक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३५		२	जयवृषभ स्तुति
५१९			जल्हणकवि काव्य
५८६			जातकपद्धति
५८६		१	जातकपद्धति टीका
३४७			जिनदत्त कथा
६३६			जिनप्रतिष्ठा
१४६			जिनशतक
१४६		१	जिनशतक वृत्ति
४०		५	जीतकल्पसूत्र विवरण
४०		४	जीतकल्पसूत्र वृत्ति
८६			जीवसमास
८६		१	जीवसमास वृत्ति
१४		३	जीवाजीवाभिगमसूत्र टीका
१४		२	जीवाजीवाभिगमसूत्र प्रदेशवृत्ति
६		१	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति
५७७			ज्ञानदर्पणज्योतिष्क
६१७			ज्ञानदीपिका
५६७			ज्ञानमंजरि
६२१			ज्ञानांकुश
६१६			ज्ञानार्णव
६२०			ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्र
५६८		२	ज्योतिःसार
५४		१	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक टीका
२०५		१	ठाणा प्रकरण वृत्ति
१३९	४	१	तं जयउ स्तोत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६५०			तत्त्वबिंदु
१६१			तत्त्वबोध प्रकरण
४०२			तत्त्वसंग्रह
६१८			तत्त्वार्थसार
६८			तत्त्वार्थसूत्र
६८		१	तत्त्वार्थसूत्र भाष्य
६८		३	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति (लघु)
६८		२	तत्त्वार्थसूत्र व्याख्या
१६५			तपासमाचारी
३९८			तर्कभाषा
३९८		१	तर्कभाषा टीका
५२१			तिलकमंजरी कथा
५२१		१	तिलकमंजरी कथा टिप्पनक
५२२			तिलकमंजरीसारोद्धार
४६७			त्यादिसमुच्चय
५६४			त्रिशती
५६८		५	त्रिशती
५६८	५	१	त्रिशती वृत्ति
२८६			त्रिषष्टि
४९३			दंड्यलंकार
३४५			दमयंती कथा
१८७		१	दर्शनशुद्धि वृत्ति
८५			दर्शनसत्तरी
५३५			दशरूपालोक
२६		३	दशवैकालिकसूत्र बृहद्वृत्ति
२६		५	दशवैकालिकसूत्र लघुवृत्ति
२६		४	दशवैकालिकसूत्र वृत्ति
६४५			दानादि प्रकरण
२२१		१	दानोपदेशमाला वृत्ति
१८२		१	दिनकृत्य वृत्ति
९६			दीपकसंग्रह
९६		१	दीपकसंग्रह वृत्ति
६४७			दीपालीकल्प
६४८			दीपोत्सवकल्प
५४६			दूतांगद नाटक
६४९			दृष्टांतशत
१३५		६	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र
१३५	६	१	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र वृत्ति
६४१		२	दोषशांतिक
६४१		३	दोषशांतिकलौकिक
५६८		३	द्रव्यपरीक्षा
३७०			द्रव्यालंकार
६३१			द्विजवदनचपेटा
५०३			द्व्याश्रय काव्य
५०४			द्व्याश्रय काव्य वृत्ति
५०६			द्व्याश्रयप्राकृतसूत्र वृत्ति
१२९		१	धनपालपंचाशिका वृत्ति
५३७			धनुर्विद्या
३४९			धन्यशालिभद्र चरित्र
१४२			धरणोरगेंद्र स्तव
१४२		१	धरणोरगेंद्र स्तव वृत्ति
२५२			धर्म चरित
५०९			धर्मनाथ महाकाव्य
६२८			धर्मपरीक्षा
८१			धर्मबिंदु
८१		१	धर्मबिंदु वृत्ति
१८३		१	धर्मरत्न वृत्ति
२०९		१	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
२१०			धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
७१	३	१	धर्मसंग्रहणी वृत्ति
८०			धर्मसूत्राष्टक
५०७			धर्माभ्युदय काव्य
१८०			धर्मोपदेशमाला विवरण
१७८		१	धर्मोपदेशमाला वृत्ति
४३७			धातुपारायण
४५२			धातुपारायण
६३९			धूमावल्यादिवृत्ति
४८२		१	नंदिताढ्य वृत्ति
४१		३	नंदीसूत्र बृहद्वृत्ति
४१		२	नंदीसूत्र वृत्ति
४१		४	नंदीसूत्र वृत्ति टिप्पनक
२६९			नमि चरित
३६०			नयचक्रवाल
३६०		१	नयचक्रवाल वृत्ति
५७३			नयनपूर्वांकपंचागतिथि विवरण

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५२०			नरनारायणानंद काव्य
५७१			नरपतिजयचर्या
५७२			नरपतिजयचर्यागतग्रहा
३४०			नर्मदासुंदरी कथा
२९३			नल चरित
५३९			नलविलास नाटक
८७		१	नवतत्त्व भाष्य
८७	१	१	नवतत्त्व भाष्य वृत्ति
१९९			नवपद
१९९			नवपद वृत्ति
२००			नवपद वृत्ति
२०१			नवपद वृत्ति
२०२			नवपद वृत्ति
११३	१	१	नव्यकर्मविपाक वृत्ति
११३	२	१	नव्यकर्मस्तव वृत्ति
११३	३	१	नव्यबंधस्वामित्व अवचूर्णि
११३	५	१	नव्यशतक वृत्ति
११३	४	१	नव्यषडशीति वृत्ति
५९५			नाडीसंचारज्ञान
५९७			नाथपुस्तिका
४५९			नामाख्यात वृत्ति
६७	३	१	निगोदषट्त्रिंशिका वृत्ति
५८			निरयविभक्ति
१९		१	निरयावलिकासूत्र वृत्ति
३०		४	निशीथसूत्र चूर्णिविंशोद्देशव्याख्या

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३०		५	निशीथसूत्र विंशोद्देशवृत्ति
२८९			नेमि चरित
५१०			नेमि चरित्र महाकाव्य
५११			नेमि महाकाव्य टिप्पनक
५१३			नेमिदूत काव्य
५१२			नेमिनिर्वाण काव्य
५३४		१	नैषध काव्य टीका
५३४		२	नैषध काव्य टीका
५३४		३	नैषध काव्य टीका
५३४			नैषध महाकाव्य
४१५			न्यायकंदली
४१६			न्यायकंदली टिप्पनक
४१७			न्यायकंदली पंजिका
४०५			न्यायकलिका टीका
३८९			न्यायकुमुदचंद्रसूत्र
३८९		१	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र वृत्ति
४०३			न्यायकुसुमांजलि
४१२			न्यायतंत्र टीका
४०४			न्यायतर्कसूत्र
४०४		३	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्य टीका
४०४		४	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्यपरिशुद्धि टीका
४०४		५	न्यायतर्कसूत्र न्यायालंकार वृत्ति
४०४		६	न्यायतर्कसूत्र पंचप्रस्थानन्यायतर्काणि
४०४		२	न्यायतर्कसूत्र वार्तिक
४००			न्यायप्रवेशक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४०१			न्यायप्रवेशक टिप्पन
४००		१	न्यायप्रवेशक टीका
३९९			न्यायबिंदुसूत्र
३९९		१	न्यायबिंदुसूत्र वृत्ति
४०७			न्यायभूषण
४१८			न्यायलीलावती
३९१			न्यायविनिश्चय
३९१		१	न्यायविनिश्चय वृत्ति
४०७		१	न्यायसार टीका
४०७		२	न्यायसार टीका
४०७		३	न्यायसार पंजिका टीका
४०४		१	न्यायसूत्रभाष्य
३६५			न्यायावतार
३६५		१	न्यायावतार वृत्ति
३६५		२	न्यायावतार वृत्ति
७६		१	पंचवस्तुक वृत्ति
९५		१	पंचसंग्रह वृत्ति
९५		२	पंचसंग्रह वृत्ति
७५		१	पंचसूत्र वृत्ति
३५१			पंचाख्यानक
७७		१	पंचाशक १९ वृत्ति
७७		२	पंचाशक-१ चूर्णि
७३		१	पंचास्तिकाय संग्रह वृत्ति
३९३			पत्रपरीक्षा
२९४			पद्मानंद महाकाव्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३७५			परिणामिवस्तुव्यवस्थापन
४२८			परिभाषा वृत्ति
२९२			परिशिष्ट पर्व
३९०			परीक्षामुख
३९०		१	परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला वृत्ति
६३८			पर्वपंजिका
२०७			पवज्जाविहाण
२०७		१	पवज्जाविहाण वृत्ति
२०८			पवज्जाविहाण वृत्ति
९०		१	पवयणसंदोह वृत्ति
३१०			पांडव चरित्र
२७		१	पाक्षिकसूत्र वृत्ति
४७५			पाणिनि व्याकरण
४७५		१	पाणिनि व्याकरण काशिका वृत्ति
४७७			पाणिनीय संक्षिप्त व्याकरण
२७४			पार्श्व चरित
२७५			पार्श्व चरित
२७६			पार्श्व चरित
२९०			पार्श्व चरित
२८		२	पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति
२८		१	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
२८		३	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
९३		३	पिंडविशुद्धि अणुवृत्ति
९३		२	पिंडविशुद्धि दीपिका लघुवृत्ति
९३		१	पिंडविशुद्धि वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२९७			पुंडरीक चरित्र
६७	२	१	पुद्गलषट्त्रिंशिका वृत्ति
२२		१	पुष्पचूलिकासूत्र टीका
१७७		१	पुष्पमाला वृत्ति
२१		१	पुष्पिकासूत्र टीका
३३५			पूजाष्टक कथा
३०७		१	पृथ्वीचंद्र चरित्र टिप्पन
३०७		२	पृथ्वीचंद्र चरित्र संकेत
१५		१	प्रज्ञापनासूत्र लघु वृत्ति
१५		२	प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति
६११			प्रतिक्रमणटीकासूत्र
३८६			प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण
२४		१५	प्रत्याख्यानसूत्र टीका
२४		८	प्रत्याख्यानसूत्र वृत्ति
३५२		१	प्रद्युम्न चरित्र-शांब चरित्र
३५३			प्रबंधचूडामणि
५४३			प्रबुद्धरौहिणेय नाटक
५४५			प्रबोधचंद्रोदय
३११			प्रभावक चरित्र
३५९			प्रमाणकलिका
३५९		१	प्रमाणकलिका वृत्ति
३६७			प्रमाणमीमांसा
३६७		१	प्रमाणमीमांसा वृत्ति
३९७			प्रमाणवार्त्तिक
३९७		१	प्रमाणवार्त्तिक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३७१			प्रमाणसंग्रह
३९४			प्रमेयकमलमार्तंड
३७२			प्रमेयरत्नकोश
४५८			प्रमेयरत्नभांडागार विशेषविवरणं
७४		१	प्रवचनसार वृत्ति
७१		२	प्रवचनसारोद्धार विषमपद टीका
७१		१	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति
८३			प्रशमरति
८३		१	प्रशमरति वृत्ति
५८९			प्रश्नज्ञान
५८८			प्रश्नज्ञानपद्धति
५७०			प्रश्नप्रकाश
५६१			प्रश्नव्याकरणज्योतिवृत्ति
१०		१	प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति
२२२			प्रश्नोत्तरमाला
२२२		१	प्रश्नोत्तरमाला वृत्ति
४३२		१	प्राकृतदीपिका वृत्ति
४३२		२	प्राकृतरूपसिद्धि
६७	४	१	बंधषट्त्रिंशिका वृत्ति
१३४			बप्पभट्टि स्तुति
१३४		१	बप्पभट्टि स्तुति वृत्ति
५१६			बालभारत
५८५			बृहज्जातक
३३२			बृहत् पूजाष्टक
९८			बृहत्कर्मविपाक टिप्पनक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९७		१	बृहत्कर्मविपाक वृत्ति
१००			बृहत्कर्मस्तव टिप्पन
९९		१	बृहत्कर्मस्तव वृत्ति
१२३			बृहत्क्षेत्रसमास लघु वृत्ति
१२०		१	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२१			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२२			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१०८			बृहत्शतक टिप्पनक
१०४		१	बृहत्शतक वृत्ति
१०३			बृहत्षडशीति वृत्ति
१०९			बृहत्षडशीति वृत्ति
११९		१	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
११९		२	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
१०१		१	बृहद्बंधस्वामित्व वृत्ति
३७६			बोटिकनिषेध
६५१			बोधप्रदीपिका
१३१			भक्तामर स्तव
१३१		१	भक्तामर स्तव प्रदीपिका
१३२			भक्तामर स्तव वृत्ति
५		२	भगवतीसूत्र अवचूरि
५		३	भगवतीसूत्र वृत्ति
२१४		१	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र वृत्ति
५७५			भद्रबाहुसंहिता
१४०		२	भयहर (नमिऊण) वृत्ति
१३९		२	भयहर स्तोत्र
१३९	२	१	भयहर स्तोत्र वृत्ति
१८१		१	भवभावना वृत्ति
६३०			भविष्योत्तरोद्धार
५३६			भारतशास्त्र
४१०			भास्करभूषण
५७८			भुवनदीपक
५७८		१	भुवनदीपक वृत्ति
६००			भैरवपद्मावतीकल्प
४०८			मतमनोहर
१३९	६	१	मयरहियं स्तोत्र वृत्ति
३२५			मलयसुंदरी कथा
२६४			मल्लि चरित
३८		२	महानिशीथसूत्र बृहद्वाचना
३८		१	महानिशीथसूत्र मध्यमवाचना
२७९			महावीर चरित
२९१			महावीर चरित
५२९			माघ काव्य
५२९		१	माघ काव्य टीका
५९२			मातृकाकेवली
५४२			मानमुद्राभंजन नाटक
५५०			मुद्राराक्षस नाटक
५४४			मुद्रितकुमुदचंद्र नाटक
३१५			मुनिपति चरित्र
२६६			मुनिसुव्रत चरित
५४८			मुरारि नाटक
५४८		१	मुरारि नाटक टिप्पण
५४८		२	मुरारि नाटक टिप्पण
४४६			मुष्टिव्याकरण
३३०			मृगावती चरित्र
५३१			मेघदूत काव्य
५३१		१	मेघदूत काव्य वृत्ति
५४१			मोहपराजय नाटक
४०	७	१	यतिजीतकल्प वृत्ति
६३७			यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल
१३५	१	२	यत्राखिल स्तुति
६०९			यशोधर चरित
६१०			यशोधरकाव्यपंजिका
१३५		५	यूयं यूयं स्तोत्र
१३५	५	१	यूयं यूयं स्तोत्र वृत्ति
६२२			योगकल्पद्रुम
८२			योगबिंदु
८२		१	योगबिंदु वृत्ति
१९३			योगशास्त्र
६१४			योगशास्त्र
१९३		१	योगशास्त्र वृत्ति
१९४			योगशास्त्र वृत्ति
६१४		१	योगशास्त्र वृत्ति
५२८			रघुवंश
५३८			रघुविलास नाटक
५७९			रत्नकोशज्योतिष्क

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५६८		४	रत्नपरीक्षा
५८०			रत्नमालाज्योतिः
३६४		२	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
३६४		३	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
५५६			रत्नावली नाटिका
५५२			राघवाभ्युदय नाटक
१३		१	राजप्रश्नीयसूत्र टीका
२८८			रामायण
५९१			रुतज्ञान
४९७			रुद्रटालंकार
६०१			रुद्राक्षकल्प
१२४		१	लघुक्षेत्रसमास वृत्ति
४२९			लघुन्यास
११९	३	१	लघुसंग्रहणी वृत्ति
२४		३	ललितविस्तराटीका की पंजिकाटीका
४२५			लिंगानुशासन
४६२			लिंगानुशासन
४६३			लिंगानुशासन
३५५			लीलावती कथा
३८८			लोकतत्त्वनिर्णय
४५०			लौकिककृद्वृत्ति टिप्पनक
४६८			लौकिकत्यादिप्रक्रिया
२४	१५	२	वंदनकसूत्र टीका
१९७			वंदनकुलक
१९७		१	वंदनकुलक वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६२९			वज्रसूत्री
५५७			वनमाला नाटिका
६३२			वनस्पतिसत्तरी
३८४			वर्द्धमान स्तोत्र
३८४		१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति
३८४	१	१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति विषमार्थ
६०४			वसंतराज
४९६			वाग्भटालंकार
४९६		१	वाग्भटालंकार वृत्ति
५७४			वाराहीसंहिता
५७४		१	वाराहीसंहिता वृत्ति
५२५			वासवदत्ता कथा
५२५		१	वासवदत्ता कथा वृत्ति
२४७			वासुपूज्य चरित
१४३			विंशतिद्वात्रिंशिका
५१५			विक्रमांकाभ्युदय
५५४			विक्रमोर्वशीय नाटक
११		१	विपाकसूत्र टीका
२४९			विमल चरित
६२४			विरूपाक्षयोगशत
१९०			विवेकमंजरी
१८९		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१९०		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१५८			विवेकविलास
७०		१	विशेषणवतीसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		३६	विशेषावश्यकसूत्र
२४		३७	विशेषावश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३८	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति
२४		३९	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति (जीर्णा)
१९८			विषयविनिग्रह कुलक
१९८		१	विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति
१२७			वीतराग स्तव
१२७		१	वीतराग स्तव वृत्ति
१३०		१	वीर स्तव वृत्ति
४८०			वृत्तरत्नाकर
४८०		१	वृत्तरत्नाकर वृत्ति
४२०			वृद्धवादसार प्रकरण
२३		१	वृष्णिदशासूत्र टीका
३४		३	व्यवहारसूत्र वृत्ति
४७६			व्याकरणरत्नकोश
६०५			शकुनसारोद्धार
१६०			शतपदी
१५६			शत्रुंजयकल्प
१५५			शत्रुंजयमाहात्म्य
४७४			शब्दप्रभेदानुयायि नाममाला
६२६			शमभावशत
१३५		४	शस्ता शमा स्तोत्र
१३५	४	१	शस्ता शमा स्तोत्र वृत्ति
२५४			शांति चरित
२५५			शांति चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२५६			शांति चरित
२५८			शांति चरित
६०८			शांतिनाथ चरित
४७३			शाकटायनव्याख्या
६२५			शाम्यशत
५०८			शालेय काव्य
४२१			शास्त्रदर्पण
२४२			शीतल चरित
२१८		१	शीलभावना वृत्ति
१९२			शीलोपदेशमाला
१९२		१	शीलोपदेशमाला वृत्ति
६४४			शुभावली
५४७			शृंगारतिलक नाटक
१२८			शोभन स्तुति
१२८		१	शोभन स्तुति वृत्ति
४०	८	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
२४	९	३	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४		१६	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र लघु वृत्ति
२४		१०	श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्र व्याख्याप्रकरण
६९		१	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
२४	४	२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
८४		१	श्रावकभंगकादिविचारगाथा वृत्ति
१६३		१	श्रावकसामाचारी वृत्ति
१३५		२	श्रीतीर्थराज स्तुति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३५		९	श्रीशैवैयं
२४४			श्रेयांस चरित
२४५			श्रेयांस चरित
३८७			श्वेतांबरदर्शनसिद्धि
६०२			श्वेतार्ककल्प
५८७			षट्पंचाशिका
५८७		१	षट्पंचाशिका वृत्ति
४०९			षट्पदार्थप्रवेश प्रकरण
२४		१३	षडावश्यक चैत्यवंदनादिसर्वसूत्रव्याख्यारूप
३७३			षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार
३७४			षड्दर्शनसमुच्चय
३७४		१	षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति
४५७			षड्भाषालक्षणपारायण
५८१			षष्टिसंवत्सर
७८			षोडशक
७८		१	षोडशक वृत्ति
२२८			संभव चरित
६१९			संवेगद्रुमकंदली
११४		१	सत्तरी चूर्णि
११७			सत्तरी वृत्ति
३२८			सप्तक्षेत्रीनाम कथा
७२		१	समयसार प्रकरण टीका
३०९			समरादित्य चरित्र
४		१	समवायांगसूत्र टीका
४४३			समासतद्धितसार प्रकरण

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३५८		१	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३५८		२	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३५८		३	सम्मतिसूत्र वृत्ति
८८		१	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि वृत्ति
१८५		१	सम्यक्त्व वृत्ति
१८६			सम्यक्त्व वृत्ति
६३५			सम्यक्त्वस्वरूप
३७९			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३८०			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३६९			सर्वज्ञसिद्धि प्रकरण
३७७			सर्वार्थनिराकरणवादस्थल आदि
६५४			सर्वेऽपि सूक्तरूपा
४१९			सांख्यसप्तति
४१९		१	सांख्यसप्तति वृत्ति
२४	९	२	साधुप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४	४	१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१७	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१९	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२०	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२७	साधुप्रतिक्रमाणादि षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति
१६६			सामाचारी
१६७			सामाचारी
१६८			सामाचारी
६०७			सामुद्रिक
४०६			सारसंग्रह

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४६९			सारस्वतव्याकरण
४७०			सारस्वतव्याकरण टिप्पनक
४७१			सारस्वतव्याकरण प्रक्रिया
५७६			सारावलीज्योतिष्क
१११			सार्धशतक वृत्ति
११२			सार्धशतक वृत्ति
११०			सार्धशतक टिप्पन
१०५		१	सार्धशतक वृत्ति
१०६			सार्धशतक वृत्ति
६५२			सिंदूर प्रकर
१३९	५	१	सिग्घभव वृत्ति
५७		१	सिद्धप्राभृत प्रकीर्णक वृत्ति
५९६			सिद्धाज्ञापद्धति
९१		१	सिद्धिपंचाशिका वृत्ति
५५१			सुकृतमंडन नाटक
६४६			सुधाकलश
२३४			सुपार्श्व चरित
६४३		२	सुभाषितसमुद्र
२३१			सुमति चरित
३२४			सुलसा चरित
२४१			सुविधि चरित
६४३		१	सूक्तरत्नाकर
२		३	सूत्रकृतांगसूत्र टीका
१७		१	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१५९			सोमनीति
५१८			सोमपालविलास
५२४			सौभाग्यमंजरी कथा
३४६			सौभाग्यसुंदरी कथा
३७८		२	स्त्रीमुक्ति प्रकरण
३		१	स्थानांगसूत्र टीका
३५०			स्थूलिभद्र चरित्र
४६६			स्यादिसमुच्चय
३८३			स्याद्वादमंजरी
३६३			स्याद्वादरत्नाकर
३६४			स्याद्वादरत्नाकर टीका
३६४		१	स्याद्वादरत्नाकर रत्नाकरावतारिका लघु टीका
२९९			हरिवंश चरित
३००			हरिवंश चरित
३२३			हरिविक्रम चरित्र
५८२			हर्षप्रकाशज्योतिष्क
४७८			हलायुधछंदः
४७८		१	हलायुधछंदोवृत्ति
१८४		१	हितोपदेशमाला वृत्ति
३९६			हेतुबिंदु
३९६		१	हेतुबिंदु टीका
४४४			हेमविभ्रम
४४४		१	हेमविभ्रम वृत्ति
४२३			हेमव्याकरणसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४२६			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२७			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२५		२	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्न्यास
४२५		१	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्वृत्ति
४४१			हैमअनेकार्थनाममाला
४४१		१	हैमअनेकार्थनाममाला वृत्ति
४३३			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३४			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३५			हैमचतुष्क वृत्ति अवचूरि
४४२			हैमदेशीनाममाला
४४२		१	हैमदेशीनाममाला रत्नावली वृत्ति
४३९			हैमन्याय वृत्ति
४३२			हैमप्राकृत वृत्ति
४३१			हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात
४३६			हैमलिंगानुशासन अवचूरि
४३०			हैमव्याकरण कक्षापट वृत्ति
४४०			हैमीनाममाला
४४०		१	हैमीनाममाला वृत्ति
			संस्कृत
२१८			शीलभावना
			संस्कृत+ प्राकृत
२३७			चंद्रप्रभ चरित
२९		४	उत्तराध्ययसूत्र बृहद्वृत्ति

(परिशिष्ट ६)

बृहट्टिप्पनिका

विषयद्वारा वर्गीकृत सूचि

परिशिष्ट-६ बृहट्टिप्पनिका विषयद्वारा वर्गीकृत सूचि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
			अध्यात्म
६१३			अध्यात्मशास्त्र
६२३			अमृतसिद्धि
६१५			आत्मावबोध
६१२			आनंदसमुच्चय
६१७			ज्ञानदीपिका
६२१			ज्ञानांकुश
६१६			ज्ञानार्णव
६२०			ज्ञानार्णवशुद्धोपयोगसूत्र
६२२			योगकल्पद्रुम
६१४			योगशास्त्र
६१४		१	योगशास्त्र वृत्ति
६२४			विरूपाक्षयोगशत
६२६			शमभावशत
६२५			शाम्यशत
			आगम
६११			प्रतिक्रमणटीकासूत्र
८			अंतकृद्दशांगसूत्र
८		१	अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति
९			अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र
९		१	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र टीका
१			आचारांगसूत्र
१		२	आचारांगसूत्र चूर्णि
१		३	आचारांगसूत्र टीका
१		१	आचारांगसूत्र निर्युक्ति
७			उपासकदशांगसूत्र
७		१	उपासकदशांगसूत्र वृत्ति
६			ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र
६		१	ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति
१०			प्रश्नव्याकरणसूत्र
१०		१	प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति
५			भगवतीसूत्र
५		२	भगवतीसूत्र अवचूरि
५		१	भगवतीसूत्र चूर्णि
५		३	भगवतीसूत्र वृत्ति
११			विपाकसूत्र
११		१	विपाकसूत्र टीका
४			समवायांगसूत्र
४		१	समवायांगसूत्र टीका
२			सूत्रकृतांगसूत्र
२		२	सूत्रकृतांगसूत्र चूर्णि
२		३	सूत्रकृतांगसूत्र टीका
२		१	सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति
३			स्थानांगसूत्र
३		१	स्थानांगसूत्र टीका
			आगम आवश्यक
२४			आवश्यकसूत्र
२४		३५	आवश्यकसूत्र अवचूरि
२४		३०	आवश्यकसूत्र चूर्णि
२४		२९	आवश्यकसूत्र निर्युक्ति
२४		३१	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३२	आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति टिप्पनक
२४		३४	आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति
२४		३३	आवश्यकसूत्र वृत्ति
२४	५	१	ईर्यापथिकीसूत्र
२४	६	१	ईर्यापथिकीसूत्र अवचूर्णि
२४	६	२	चैत्यवंदन अवचूर्णि
२४		४	चैत्यवंदन वृत्ति
२४		२६	चैत्यवंदन वृत्ति बालावबोध
२४		२५	चैत्यवंदनभाष्य संघाचारवृत्ति
२४	५	२	चैत्यवंदनसूत्र
२४	१५	१	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४		१८	चैत्यवंदनसूत्र टीका
२४	९	१	चैत्यवंदनसूत्र पदपर्याय
२४		२	चैत्यवंदनसूत्र ललितविस्तराटीका
२४	२४	१	चैत्यवंदनसूत्रभाष्य
२४		१४	चैत्यवंदनादि वृत्ति
२४		१२	चैत्यवंदनाभाष्य वृत्ति
२४		११	चैत्यवंदनामहाभाष्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४		२३	चैत्यवंदनाविचार
२४		२८	पंचपरमेष्ठि विवरण
२७			पाक्षिकसूत्र
२७		१	पाक्षिकसूत्र वृत्ति
२४	२४	३	प्रत्याख्यानभाष्य
२४		१५	प्रत्याख्यानसूत्र टीका
२४		८	प्रत्याख्यानसूत्र वृत्ति
२४		७	प्रत्याख्यानस्वरूप प्रकरण
२४		३	ललितविस्तराटीका की पंजिकाटीका
२४	६	३	वंदनक अवचूर्णि
२४	२४	२	वंदनकभाष्य
२४	५	३	वंदनकसूत्र
२४	१५	२	वंदनकसूत्र टीका
२४		३६	विशेषावश्यकसूत्र
२४		३७	विशेषावश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति
२४		३८	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति
२४		३९	विशेषावश्यकसूत्र वृत्ति (जीर्णा)
२४	९	३	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४		१६	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र लघु वृत्ति
२४		१०	श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्र व्याख्याप्रकरण
२४		२१	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि
२४	४	२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१३	षडावश्यक चैत्यवंदनादिसर्वसूत्रव्याख्यारूप
२४		१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२४	९	२	साधुप्रतिक्रमणसूत्र पदपर्याय
२४	४	१	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१७	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		१९	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२०	साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति
२४		२७	साधुप्रतिक्रमाणादि षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति
			आगम उपांग
१२			उववाइयसूत्र
१२		१	उववाइयसूत्र टीका
२०			कल्पावतंसिकासूत्र
२०		१	कल्पावतंसिकासूत्र टीका
१६			चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र
१६		१	चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
१८			जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
१८		१	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र चूर्णि
१८		२	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र टीका
१४		३	जीवाजीवाभिगमसूत्र टीका
१४		२	जीवाजीवाभिगमसूत्र प्रदेशवृत्ति
१४			जीवाभिगमसूत्र
१४		१	जीवाभिगमसूत्र चूर्णि
१९			निरयावलिकासूत्र
१९		१	निरयावलिकासूत्र वृत्ति
२२			पुष्पचूलिकासूत्र
२२		१	पुष्पचूलिकासूत्र टीका
२१			पुष्पिकासूत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२१		१	पुष्पिकासूत्र टीका
१५			प्रज्ञापनासूत्र
१५		३	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी
१५	३	१	प्रज्ञापनासूत्र तृतीयपदसंग्रहणी अवचूरि
१५		१	प्रज्ञापनासूत्र लघु वृत्ति
१५		२	प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति
१३			राजप्रश्नीयसूत्र
१३		१	राजप्रश्नीयसूत्र टीका
२३			वृष्णिदशासूत्र
२३		१	वृष्णिदशासूत्र टीका
१७			सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
१७		१	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
			आगम चूलिका
४२			अनुयोगद्वारसूत्र
४२		१	अनुयोगद्वारसूत्र चूर्णि
४२		३	अनुयोगद्वारसूत्र बृहद्वृत्ति
४२		२	अनुयोगद्वारसूत्र लघुवृत्ति
४१			नंदीसूत्र
४१		१	नंदीसूत्र चूर्णि
४१		३	नंदीसूत्र बृहद्वृत्ति
४१		२	नंदीसूत्र वृत्ति
४१		४	नंदीसूत्र वृत्ति टिप्पनक
			आगम छेद
३२			कल्प चूर्णि
३१			कल्पविशेष चूर्णि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३३			कल्पवृत्ति
३५			कल्पसूत्र
३७		३	कल्पसूत्र कल्पनिरुक्तटिप्पनक
३७		२	कल्पसूत्र चूर्णि
३७		४	कल्पसूत्र टिप्पनक
३७		१	कल्पसूत्र निर्युक्ति
३५		१	कल्पसूत्र बृहद्भाष्य
३५		२	कल्पसूत्र विशेषचूर्णि
३७		५	कल्पसूत्र संदेहविषौषधिवृत्ति
४०			जीतकल्पसूत्र
४०		२	जीतकल्पसूत्र चूर्णि
४०		३	जीतकल्पसूत्र टिप्पनक
४०		१	जीतकल्पसूत्र भाष्य
४०		५	जीतकल्पसूत्र विवरण
४०		४	जीतकल्पसूत्र वृत्ति
३६			दशाश्रुतस्कंधसूत्र
३०			निशीथसूत्र
३०		३	निशीथसूत्र चूर्णि
३०		४	निशीथसूत्र चूर्णिविंशोद्देशव्याख्या
३०		१	निशीथसूत्र बृहद्भाष्य
३०		२	निशीथसूत्र भाष्य
३०		५	निशीथसूत्र विंशोद्देशवृत्ति
३९		२	पंचकल्पभाष्य
३९			पंचकल्पसूत्र
३९		३	पंचकल्पसूत्र चूर्णि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३९		१	पंचकल्पसूत्र निर्युक्ति
३७			पर्युषणाकल्पसूत्र
३८		२	महानिशीथसूत्र बृहद्वाचना
३८		१	महानिशीथसूत्र मध्यमवाचना
३८			महानिशीथसूत्र लघुवाचना
४०		७	यतिजीतकल्प
४०	७	१	यतिजीतकल्प वृत्ति
३४			व्यवहारसूत्र
३४		२	व्यवहारसूत्र चूर्णि
३४		१	व्यवहारसूत्र भाष्य
३४		३	व्यवहारसूत्र वृत्ति
४०		८	श्राद्धजीतकल्प
४०		६	श्राद्धजीतकल्प
४०	६	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
४०	८	१	श्राद्धजीतकल्प वृत्ति
			आगम प्रकीर्णक
५१			अंगविद्या प्रकीर्णक
६०			अजीवकल्प प्रकीर्णक
४३			आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
४३		१	आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक वृत्ति
४९			आराधनापताका प्रकीर्णक
६६			ऋषिभाषितानि
६१			गच्छाचार प्रकीर्णक
५०			गणिविद्या प्रकीर्णक
५९			चंद्रवेधक प्रकीर्णक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५२			चतुःशरण प्रकीर्णक
५२		१	चतुःशरण प्रकीर्णक वृत्ति
५४			ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक
५४		१	ज्योतिष्करंडक प्रकीर्णक टीका
४६			तंदुलवैचारिक प्रकीर्णक
५६			तीर्थोद्गार प्रकीर्णक
४५			देवेंद्रस्तव प्रकीर्णक
५३			द्वीपसागरप्रज्ञप्ति संग्रहणी
५८			निरयविभक्ति
४८			भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
५५			मरणसमाधि प्रकीर्णक
४४			महाप्रत्याख्यानसूत्र प्रकीर्णक
६२			वीरस्तव प्रकीर्णक
४७			संस्तारक प्रकीर्णक
५७		१	सिद्धप्राभृत प्रकीर्णक वृत्ति
५७			सिद्धप्राभृतसूत्र प्रकीर्णक
			आगम मूल
२९			उत्तराध्ययनसूत्र
२९		२	उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णि
२९		१	उत्तराध्ययनसूत्र निर्युक्ति
२९		४	उत्तराध्ययसूत्र बृहद्वृत्ति
२९		३	उत्तराध्ययसूत्र लघुवृत्ति
२५			ओघनिर्युक्ति
२५		१	ओघनिर्युक्ति चूर्णि
२५		३	ओघनिर्युक्ति टीका

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२५		४	ओघनिर्युक्ति टीका
२५		२	ओघनिर्युक्ति भाष्य
२६			दशवैकालिकसूत्र
२६		२	दशवैकालिकसूत्र चूर्णि
२६		१	दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति
२६		३	दशवैकालिकसूत्र बृहद्वृत्ति
२६		५	दशवैकालिकसूत्र लघुवृत्ति
२६		४	दशवैकालिकसूत्र वृत्ति
२८			पिंडनिर्युक्ति
२८		२	पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति
२८		१	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
२८		३	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति
			आगमिक प्रकरण
६३४			अंगुलविचार
१२५			क्षेत्रसमाससूत्र
१२५		१	क्षेत्रसमाससूत्र वृत्ति
१२६			जंबूद्वीपसंग्रहणी
१२६		१	जंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति
२०४			जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण
२०४		१	जयंतिप्रश्नोत्तर संग्रह प्रकरण वृत्ति
८६			जीवसमास
८६		१	जीवसमास वृत्ति
२०५			ठाणा प्रकरण
२०५		१	ठाणा प्रकरण वृत्ति
१६१			तत्त्वबोध प्रकरण

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६१८			तत्त्वार्थसार
१५०			दूषमदंडिका
१५२			दूषमदंडिका
१५१			दूषमविच्छेददंडिका
८७			नवतत्त्व
८७		१	नवतत्त्व भाष्य
८७	१	१	नवतत्त्व भाष्य वृत्ति
७३			पंचास्तिकाय संग्रह
७३		१	पंचास्तिकाय संग्रह वृत्ति
९०			पवयणसंदोह
९०		१	पवयणसंदोह वृत्ति
६३३			पाक्षिकसत्तरी
७४			प्रवचनसार
७४		१	प्रवचनसार वृत्ति
७१			प्रवचनसारोद्धार
७१		२	प्रवचनसारोद्धार विषमपद टीका
७१		१	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति
१२०			बृहत्क्षेत्रसमास
१२३			बृहत्क्षेत्रसमास लघु वृत्ति
१२०		१	बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२१			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
१२२			बृहत्क्षेत्रसमास वृत्ति
११९			बृहत्संग्रहणी
११९		१	बृहत्संग्रहणी वृत्ति
११९		२	बृहत्संग्रहणी वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९२			योनिप्राभृत
१२४			लघुक्षेत्रसमास
१२४		१	लघुक्षेत्रसमास वृत्ति
११९		३	लघुसंग्रहणी
११९	३	१	लघुसंग्रहणी वृत्ति
३८८			लोकतत्त्वनिर्णय
६३२			वनस्पतिसत्तरी
८९			विचारसार प्रकरण
१५३			व्युच्छेददंडिका
७२			समयसार प्रकरण
७२		१	समयसार प्रकरण टीका
८८			सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि
८८		१	सम्यक्त्व गाथा एगविहं इत्यादि वृत्ति
६३५			सम्यक्त्वस्वरूप
१०५			सार्धशतक
१११			सार्धशतक वृत्ति
११२			सार्धशतक वृत्ति
११०			सार्धशतक टिप्पन
१०५		१	सार्धशतक वृत्ति
१०६			सार्धशतक वृत्ति
९१		१	सिद्धिपंचाशिका वृत्ति
९१			सिद्धिपंचाशिकासूत्र
			आगमिक प्रकरण, आचार
९३		३	पिंडविशुद्धि अणुवृत्ति
९३		२	पिंडविशुद्धि दीपिका लघुवृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
९३		१	पिंडविशुद्धि वृत्ति
९३			पिंडविशुद्धिसूत्र
			आचार
२०३			अभिनवनवपद
२०३		१	अभिनवनवपद वृत्ति
६४२			आलोचनाविधान
१६९			उपधानस्वरूप
१६५			तपासमाचारी
१८२			दिनकृत्य
१८२		१	दिनकृत्य वृत्ति
१९९			नवपद
१९९			नवपद वृत्ति
२००			नवपद वृत्ति
२०१			नवपद वृत्ति
२०२			नवपद वृत्ति
७६			पंचवस्तुक
७६		१	पंचवस्तुक वृत्ति
८४			श्रावकभंगकादिविचारगाथा
८४		१	श्रावकभंगकादिविचारगाथा वृत्ति
१६३			श्रावकसामाचारी
१६३		१	श्रावकसामाचारी वृत्ति
१६६			सामाचारी
१६७			सामाचारी
१६८			सामाचारी
			इतिहास

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१५४			त्रिषष्ठितीर्थकल्प
			उपदेश
७९			अष्टकसूत्र वृत्ति
१४८			आराधनापताका
१४९			आराधनापताका
१९१			उपदेशकंदली
१९१		१	उपदेशकंदली वृत्ति
२२३			उपदेशचिंतामणि
२२३		१	उपदेशचिंतामणि वृत्ति
१९५			उपदेशपदसूत्र
१९५		१	उपदेशपदसूत्र वृत्ति
१७०			उपदेशमाला
१७३			उपदेशमाला कर्णिका वृत्ति
१७४			उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति
१७५			उपदेशमाला लघु वृत्ति
१७०		१	उपदेशमाला वृत्ति
१७२			उपदेशमाला हेयोपदेया कथा
१७१			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
१७६			उपदेशमाला हेयोपादेया वृत्ति
२११			ऋषिमंडल स्तव
२१२			ऋषिमंडल स्तव
२१३			ऋषिमंडल स्तव वृत्ति
६२७			गीता
२१५			गौतमपृच्छा
२१५		१	गौतमपृच्छा वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१५७			गौतमभाषित
१८७			दर्शनशुद्धि
१८८			दर्शनशुद्धि
१८७		१	दर्शनशुद्धि वृत्ति
८५			दर्शनसत्तरी
२२१			दानोपदेशमाला
२२१		१	दानोपदेशमाला वृत्ति
६४७			दीपालीकल्प
६४८			दीपोत्सवकल्प
१८३			धर्मरत्न
१८३		१	धर्मरत्न वृत्ति
२०९			धर्मविधि प्रकरण
२०९		१	धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
२१०			धर्मविधि प्रकरण वृत्ति
८०			धर्मसूत्राष्टक
२०६			धर्मोपदेश प्रकरण
१७८			धर्मोपदेशमाला
१७९			धर्मोपदेशमाला प्रकरण वृत्ति
१८०			धर्मोपदेशमाला विवरण
१७८		१	धर्मोपदेशमाला वृत्ति
७५			पंचसूत्र
७५		१	पंचसूत्र वृत्ति
७७			पंचाशक १९
७७		१	पंचाशक १९ वृत्ति
७७		२	पंचाशक-१ चूर्णि

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२०७			पवज्जाविहाण
२०७		१	पवज्जाविहाण वृत्ति
२०८			पवज्जाविहाण वृत्ति
१७७			पुष्पमाला
१७७		१	पुष्पमाला वृत्ति
२२२			प्रश्नोत्तरमाला
२२२		१	प्रश्नोत्तरमाला वृत्ति
२१४			भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र
२१४		१	भत्तिभरेति ऋषिमंडलसूत्र वृत्ति
१८१			भवभावना
१८१		१	भवभावना वृत्ति
१९३			योगशास्त्र
१९३		१	योगशास्त्र वृत्ति
१९४			योगशास्त्र वृत्ति
१९७			वंदनकुलक
१९७		१	वंदनकुलक वृत्ति
१८९			विवेकमंजरी
१९०			विवेकमंजरी
१८९		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१९०		१	विवेकमंजरी वृत्ति
१५८			विवेकविलास
१९८			विषयविनिग्रह कुलक
१९८		१	विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति
१५५			शत्रुंजयमाहात्म्य
२१८			शीलभावना
२१८		१	शीलभावना वृत्ति
१९२			शीलोपदेशमाला
१९२		१	शीलोपदेशमाला वृत्ति
६१९			संवेगद्रुमकंदली
१९६			संवेगरंगशाला
१८५			सम्यक्त्व
१८५		१	सम्यक्त्व वृत्ति
१८६			सम्यक्त्व वृत्ति
१८४			हितोपदेशमाला
१८४		१	हितोपदेशमाला वृत्ति
			उपदेश, अध्यात्म
८२			योगबिंदु
८२		१	योगबिंदु वृत्ति
७८			षोडशक
७८		१	षोडशक वृत्ति
			उपदेश, आचार
८१			धर्मबिंदु
८१		१	धर्मबिंदु वृत्ति
६९			श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र
६९		१	श्रावकप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति
			उपदेश, तत्त्वज्ञान
८३			प्रशमरति
८३		१	प्रशमरति वृत्ति
			कथा
३४४			कुसुमसार कथा
३३८			कौमुदी कथा
३४१			जयसुंदरी कथा
३४७			जिनदत्त कथा
३४५			दमयंती कथा
३४९			धन्यशालिभद्र चरित्र
३४०			नर्मदासुंदरी कथा
३३९			पंचमी कथा
३५१			पंचाख्यानक
३३४			पूजाष्टक कथा
३३५			पूजाष्टक कथा
३३७			पूजाष्टक कथा
३३२			बृहत् पूजाष्टक
३३३			रत्नचूड कथा
३५५			लीलावती कथा
३३६			विजयचंद्रकेवलि कथा
३२८			सप्तक्षेत्रीनाम कथा
३४२			सर्वांगसुंदरी कथा
३४६			सौभाग्यसुंदरी कथा
३५०			स्थूलिभद्र चरित्र
२१६			कथाकोशसूत्र
२१६		१	कथाकोशसूत्र वृत्ति
३५६			कथापुस्तिका
३५७			कथापुस्तिका
२१७			कथामणिकोश
२१७		१	कथामणिकोश व्याख्या

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२१९			कथारत्नकोश
३४८			कथारत्नसागर
२२०			धर्माख्यानकोश
२२०		१	धर्माख्यानकोश वृत्ति
३५४			चतुर्विंशति प्रबंध
३५३			प्रबंधचूडामणि
			कर्मग्रंथ
९४			कर्मप्रकृतिसूत्र
९४		२	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि
९४	२	१	कर्मप्रकृतिसूत्र चूर्णि टिप्पनक
९४		१	कर्मप्रकृतिसूत्र वृत्ति
११३		१	नव्यकर्मविपाक
११३	१	१	नव्यकर्मविपाक वृत्ति
११३		२	नव्यकर्मस्तव
११३	२	१	नव्यकर्मस्तव वृत्ति
११३		३	नव्यबंधस्वामित्व
११३	३	१	नव्यबंधस्वामित्व अवचूर्णि
११३		५	नव्यशतक
११३	५	१	नव्यशतक वृत्ति
११३		४	नव्यषडशीति
११३	४	१	नव्यषडशीति वृत्ति
९५			पंचसंग्रह
९५		१	पंचसंग्रह वृत्ति
९५		२	पंचसंग्रह वृत्ति
६७		४	बंधषट्त्रिंशिका

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६७	४	१	बंधषट्त्रिंशिका वृत्ति
९७			बृहत्कर्मविपाक
९८			बृहत्कर्मविपाक टिप्पनक
९७		१	बृहत्कर्मविपाक वृत्ति
९९			बृहत्कर्मस्तव
१००			बृहत्कर्मस्तव टिप्पन
९९		१	बृहत्कर्मस्तव वृत्ति
१०४			बृहत्शतक
१०७			बृहत्शतक चूर्णि
१०८			बृहत्शतक टिप्पनक
१०४		१	बृहत्शतक वृत्ति
१०२			बृहत्षडशीति
१०२		१	बृहत्षडशीति वृत्ति
१०३			बृहत्षडशीति वृत्ति
१०९			बृहत्षडशीति वृत्ति
१०१			बृहद्बंधस्वामित्व
१०१		१	बृहद्बंधस्वामित्व वृत्ति
११४			सत्तरी
११४		१	सत्तरी चूर्णि
११६			सत्तरी टिप्पनक
११५			सत्तरी टीका
११७			सत्तरी वृत्ति
११८			सत्तरीभाष्य
			काव्य
५१७			अभिनंद काव्य

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५२३			कादंबरी कथा
५३२			किरातकाव्य
५३२		२	किरातार्जुनीय टीका
५३२		१	किरातार्जुनीय वृत्ति
५१४			कुट्टिनीमत काव्य
५३०			कुमारसंभव
५३०		१	कुमारसंभव वृत्ति
५२७			गाथासप्तशती
५२७		१	गाथासप्तशती टीका
५२७		२	गाथासप्तशती वृत्ति
५२७		३	गाथासप्तशती वृत्ति
५३३			गौडवध
५२६			चंपूकथा
५२६		१	चंपूकथा टिप्पनक
५१९			जल्हणकवि काव्य
५२१			तिलकमंजरी कथा
५२१		१	तिलकमंजरी कथा टिप्पनक
५२२			तिलकमंजरीसारोद्धार
५३५			दशरूपालोक
५३७			धनुर्विद्या
५०९			धर्मनाथ महाकाव्य
५०७			धर्माभ्युदय काव्य
५२०			नरनारायणानंद काव्य
५१०			नेमि चरित्र महाकाव्य
५११			नेमि महाकाव्य टिप्पनक

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५१३			नेमिदूत काव्य
५१२			नेमिनिर्वाण काव्य
५३४		१	नैषध काव्य टीका
५३४		२	नैषध काव्य टीका
५३४		३	नैषध काव्य टीका
५३४			नैषध महाकाव्य
५१६			बालभारत
५३६			भारतशास्त्र
५२९			माघ काव्य
५२९		१	माघ काव्य टीका
५३१			मेघदूत काव्य
५३१		१	मेघदूत काव्य वृत्ति
५२८			रघुवंश
५२५			वासवदत्ता कथा
५२५		१	वासवदत्ता कथा वृत्ति
५१५			विक्रमांकाभ्युदय
५०८			शालेय काव्य
५१८			सोमपालविलास
५२४			सौभाग्यमंजरी कथा
			काव्य, व्याकरण
५०३			द्व्याश्रय काव्य
५०४			द्व्याश्रय काव्य वृत्ति
५०६			द्व्याश्रयप्राकृतसूत्र वृत्ति
५०५			प्राकृतद्व्याश्रयसूत्र
			कोश

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४६५			अमरकोश टिप्पनक
४६४			अमरकोशशेष
४५४			उक्तिक
४६२			लिंगानुशासन
४६३			लिंगानुशासन
४७४			शब्दप्रभेदानुयायि नाममाला
४४१			हैमअनेकार्थनाममाला
४४१		१	हैमअनेकार्थनाममाला वृत्ति
४४२			हैमदेशीनाममाला
४४२		१	हैमदेशीनाममाला रत्नावली वृत्ति
४३६			हैमलिंगानुशासन अवचूरि
४४०			हैमीनाममाला
४४०		१	हैमीनाममाला वृत्ति
			गणित
५६९			गणिततिलक
५६९		१	गणिततिलक वृत्ति
५६५			गणितशास्त्र
			चरित्र
२२६			अजित चरित
२२७			अजित चरित
२५१			अनंत चरित
२२९			अभिनंदन चरित
२३०			अभिनंदन चरित
२९६			अममजिन चरित्र
२६१			अर चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२६२			अर चरित
२८७			आदि चरित
२२४			आदिनाथ चरित
२२५			आदिनाथ चरित
३१८			उपमितभवप्रपंचासारसमुच्चय
३१७			उपमितभवप्रपंचोद्धार
३१९			उपमितसारोद्धार
३४३			ऋषिदत्ता चरित्र
२९८			एकादशगणधर चरित्र
२८५			कथावली-प्रथम परिच्छेद
२५९			कुंथु चरित
२६०			कुंथु चरित
३१२			कुमारपाल प्रतिबोध
३१३			कुमारपाल प्रतिबोध
३२०			कुवलयमाला
३२१			कुवलयमाला
२३६			चंद्रप्रभ चरित
२३७			चंद्रप्रभ चरित
२३८			चंद्रप्रभ चरित
२३९			चंद्रप्रभ चरित
३०५			जंबूस्वामी चरित
३०६			जंबूस्वामी चरित
३०६		१	जंबूस्वामी चरित टिप्पन
२८६			त्रिषष्टि
२५२			धर्म चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
२५३			धर्म चरित
२६९			नमि चरित
२७०			नमि चरित
२९३			नल चरित
२७१			नेमि चरित
२७२			नेमि चरित
२७३			नेमि चरित
२८९			नेमि चरित
३०१			पद्म चरित
२३३			पद्मप्रभ चरित
२९४			पद्मानंद महाकाव्य
२९२			परिशिष्ट पर्व
३१०			पांडव चरित्र
२७४			पार्श्व चरित
२७५			पार्श्व चरित
२७६			पार्श्व चरित
२७७			पार्श्व चरित
२७८			पार्श्व चरित
२९०			पार्श्व चरित
२९५			पार्श्वदशगणधर चरित
२९७			पुंडरीक चरित्र
३०७			पृथ्वीचंद्र चरित
३०७		१	पृथ्वीचंद्र चरित्र टिप्पन
३०७		२	पृथ्वीचंद्र चरित्र संकेत
३०४			प्रत्येकबुद्ध चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३५२		१	प्रद्युम्न चरित्र-शांब चरित्र
३११			प्रभावक चरित्र
३२२			भुवनसुंदरी चरित्र
३२७			मनोरमा चरित्र
३२५			मलयसुंदरी कथा
३२६			मलयसुंदरी कथा
२६३			मल्लि चरित
२६४			मल्लि चरित
२६५			मल्लि चरित
२८३			महापुरुष चरित
२८४			महापुरुष चरित
२७९			महावीर चरित
२९१			महावीर चरित
३१६			महीपाल चरित्र
३१४			मुनिपति चरित्र
३१५			मुनिपति चरित्र
२६७			मुनिसुव्रत चरित
२६८			मुनिसुव्रत चरित
२६६			मुनिसुव्रत चरित
३३०			मृगावती चरित्र
६०९			यशोधर चरित
६१०			यशोधरकाव्यपंजिका
२८८			रामायण
६५			वसुदेवमध्यम खंड
६५		१	वसुदेवमध्यम खंड संग्रहणी

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६४			वसुदेवहिंडी-द्वितीय खंड
६३			वसुदेवहिंडी-प्रथम खंड
२४७			वासुपूज्य चरित
२४८			वासुपूज्य चरित
२४९			विमल चरित
२५०			विमल चरित
२८२			वीर चरित
२८०			वीर चरित्र
२८१			वीर चरित्र
२५४			शांति चरित
२५५			शांति चरित
२५६			शांति चरित
२५७			शांति चरित
२५८			शांति चरित
६०८			शांतिनाथ चरित
२४२			शीतल चरित
२४३			शीतल चरित
२४४			श्रेयांस चरित
२४५			श्रेयांस चरित
२४६			श्रेयांस चरित
२२८			संभव चरित
३०८			समरादित्य चरित्र
३०९			समरादित्य चरित्र
३०२			सीता चरित
३०३			सीता चरित

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३२९			सुदर्शना चरित्र
२३४			सुपार्श्व चरित
२३५			सुपार्श्व चरित
२३१			सुमति चरित
२३२			सुमति चरित
३३१			सुरसुंदरी कथा
३२४			सुलसा चरित
२४०			सुविधि चरित
२४१			सुविधि चरित
२९९			हरिवंश चरित
३००			हरिवंश चरित
३२३			हरिविक्रम चरित्र
			चर्चा
१६२			आचरणशतक
१६४			आलापक
६३१			द्विजवदनचपेटा
६२८			धर्मपरीक्षा
६२९			वज्रसूत्री
७०			विशेषणवतीसूत्र
७०		१	विशेषणवतीसूत्र वृत्ति
१६०			शतपदी
			छंद
४८४			गाथारत्नकोश
४७९			छंदःप्रदीप
४८३			छंदोनुशासन

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४८३		१	छंदोनुशासन छंदश्चूडामणि वृत्ति
४८१			जयदेवछंदःशास्त्र
४८१		१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति
४८१	१	१	जयदेवछंदःशास्त्र वृत्ति टिप्पनक
४८२			नंदिताढ्य
४८२		१	नंदिताढ्य वृत्ति
४८०			वृत्तरत्नाकर
४८०		१	वृत्तरत्नाकर वृत्ति
४७८			हलायुधछंदः
४७८		१	हलायुधछंदोवृत्ति
			ज्योतिष
५८४			आशाधरीयपद्धति
६४१		१	ग्रहदोषज्ञानाध्याय
५८३			चंद्रार्कग्रहसार
५६६			चंद्रोन्मीलनचूडामणिसार
५६२			चूडामणि
५६३			चूडामणिसार
५८६			जातकपद्धति
५८६		१	जातकपद्धति टीका
५७७			ज्ञानदर्पणज्योतिष्क
५६७			ज्ञानमंजरि
५६८		२	ज्योतिःसार
५६४			त्रिशती
५६८		५	त्रिशती
५६८	५	१	त्रिशती वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५७३			नयनपूर्वांकपंचागतिथि विवरण
५७१			नरपतिजयचर्या
५७२			नरपतिजयचर्यागतग्रहा
५९०			पुस्तकेंद्र ग्रंथ
५८९			प्रश्नज्ञान
५८८			प्रश्नज्ञानपद्धति
५७०			प्रश्नप्रकाश
५६१			प्रश्नव्याकरणज्योतिवृत्ति
५८५			बृहज्जातक
५७८			भुवनदीपक
५७८		१	भुवनदीपक वृत्ति
५७९			रत्नकोशज्योतिष्क
५६८		४	रत्नपरीक्षा
५८०			रत्नमालाज्योतिः
५८७			षट्पंचाशिका
५८७		१	षट्पंचाशिका वृत्ति
५८१			षष्टिसंवत्सर
५७६			सारावलीज्योतिष्क
५८२			हर्षप्रकाशज्योतिष्क
			तत्त्वज्ञान
६७		१	खंडषट्त्रिंशिका
६७	१	१	खंडषट्त्रिंशिका वृत्ति
६८			तत्त्वार्थसूत्र
६८		१	तत्त्वार्थसूत्र भाष्य
६८		३	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति (लघु)

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६८		२	तत्त्वार्थसूत्र व्याख्या
७१		३	धर्मसंग्रहणी
७१	३	१	धर्मसंग्रहणी वृत्ति
६७		३	निगोदषट्त्रिंशिका
६७	३	१	निगोदषट्त्रिंशिका वृत्ति
६७		२	पुद्गलषट्त्रिंशिका
६७	२	१	पुद्गलषट्त्रिंशिका वृत्ति
			दर्शन
४१४			कंदली किरणावली
४११			किरणावली
४१३		१	किरणावली टिप्पनक
४१३		२	किरणावली टिप्पनक
४२२			खंडनखंडखाद्य
४२२		१	खंडनखंडखाद्य टिप्पनक
४०२			तत्त्वसंग्रह
३९८			तर्कभाषा
३९८		१	तर्कभाषा टीका
४१५			न्यायकंदली
४१६			न्यायकंदली टिप्पनक
४१७			न्यायकंदली पंजिका
४०५			न्यायकलिका टीका
४०३			न्यायकुसुमांजलि
४१२			न्यायतंत्र टीका
४०४			न्यायतर्कसूत्र
४०४		३	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्य टीका

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४०४		४	न्यायतर्कसूत्र तात्पर्यपरिशुद्धि टीका
४०४		५	न्यायतर्कसूत्र न्यायालंकार वृत्ति
४०४		६	न्यायतर्कसूत्र पंचप्रस्थानन्यायतर्काणि
४०४		२	न्यायतर्कसूत्र वार्तिक
४००			न्यायप्रवेशक
४०१			न्यायप्रवेशक टिप्पन
४००		१	न्यायप्रवेशक टीका
३९९			न्यायबिंदुसूत्र
३९९		१	न्यायबिंदुसूत्र वृत्ति
४०७			न्यायभूषण
४१८			न्यायलीलावती
४०७		१	न्यायसार टीका
४०७		२	न्यायसार टीका
४०७		३	न्यायसार पंजिका टीका
४०४		१	न्यायसूत्रभाष्य
३९७			प्रमाणवार्त्तिक
३९७		१	प्रमाणवार्त्तिक वृत्ति
४१०			भास्करभूषण
४०८			मतमनोहर
४२०			वृद्धवादसार प्रकरण
४२१			शास्त्रदर्पण
४०९			षट्पदार्थप्रवेश प्रकरण
४१९			सांख्यसप्तति
४१९		१	सांख्यसप्तति वृत्ति
४०६			सारसंग्रह

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३९६			हेतुबिंदु
३९६		१	हेतुबिंदु टीका
			दर्शन, जैन न्याय
३९५			अध्यात्मतरंगिणी
३९५		१	अध्यात्मतरंगिणी टीका
३६१			अनेकांतजयपताका
३६२			अनेकांतजयपताका वृत्ति
३६२		१	अनेकांतजयपताका वृत्ति टिप्पनक
३६८			अनेकांतवादप्रवेश
३८२			अनेकांतव्यवस्थापन
३८१			अपशब्दनिराकरण
३८५			अपौरुषेयवेदनिराकरण
३९२			आप्तपरीक्षा
३९२		१	आप्तपरीक्षा वृत्ति
३६६			आप्तमीमांसालंकार
३७८		१	केवलिमुक्ति प्रकरण
३७०			द्रव्यालंकार
३६०			नयचक्रवाल
३६०		१	नयचक्रवाल वृत्ति
३८९			न्यायकुमुदचंद्रसूत्र
३८९		१	न्यायकुमुदचंद्रसूत्र वृत्ति
३९१			न्यायविनिश्चय
३९१		१	न्यायविनिश्चय वृत्ति
३६५			न्यायावतार
३६५		१	न्यायावतार वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३६५		२	न्यायावतार वृत्ति
३९३			पत्रपरीक्षा
३७५			परिणामिवस्तुव्यवस्थापन
३९०			परीक्षामुख
३९०		१	परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला वृत्ति
३८६			प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण
३५९			प्रमाणकलिका
३५९		१	प्रमाणकलिका वृत्ति
३६७			प्रमाणमीमांसा
३६७		१	प्रमाणमीमांसा वृत्ति
३७१			प्रमाणसंग्रह
३९४			प्रमेयकमलमार्तंड
३७२			प्रमेयरत्नकोश
३७६			बोटिकनिषेध
३६४		२	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
३६४		३	रत्नाकरावतारिका टिप्पण
३८४			वर्द्धमान स्तोत्र
३८४		१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति
३८४	१	१	वर्द्धमान स्तोत्र वृत्ति विषमार्थ
३८७			श्वेतांबरदर्शनसिद्धि
३७३			षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार
३७४			षड्दर्शनसमुच्चय
३७४		१	षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति
३५८			सम्मतिसूत्र
३५८		१	सम्मतिसूत्र वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
३५८		२	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३५८		३	सम्मतिसूत्र वृत्ति
३७९			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३८०			सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद
३६९			सर्वज्ञसिद्धि प्रकरण
३७७			सर्वार्थनिराकरणवादस्थल आदि
३७८		२	स्त्रीमुक्ति प्रकरण
३८३			स्याद्वादमंजरी
३६३			स्याद्वादरत्नाकर
३६४			स्याद्वादरत्नाकर टीका
३६४		१	स्याद्वादरत्नाकर रत्नाकरावतारिका लघु टीका
			नाटक
५४९			अनर्घ्यराघव
५५५			कर्पूरमंजरी नाटक
५५३			चंद्रलेखाविजय नाटक
५४०			चाणक्य नाटक
५४६			दूतांगद नाटक
५३९			नलविलास नाटक
५४३			प्रबुद्धरौहिणेय नाटक
५४५			प्रबोधचंद्रोदय
५४२			मानमुद्राभंजन नाटक
५५०			मुद्राराक्षस नाटक
५४४			मुद्रितकुमुदचंद्र नाटक
५४८			मुरारि नाटक
५४८		१	मुरारि नाटक टिप्पण

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५४८		२	मुरारि नाटक टिप्पण
५४१			मोहपराजय नाटक
५३८			रघुविलास नाटक
५५६			रत्नावली नाटिका
५५२			राघवाभ्युदय नाटक
५५७			वनमाला नाटिका
५५४			विक्रमोर्वशीय नाटक
५४७			शृंगारतिलक नाटक
५५१			सुकृतमंडन नाटक
५९८			अर्धकांड
५९५			नाडीसंचारज्ञान
५९७			नाथपुस्तिका
५७५			भद्रबाहुसंहिता
५९१			रुतज्ञान
५७४			वाराहीसंहिता
५७४		१	वाराहीसंहिता वृत्ति
५९६			सिद्धाज्ञापद्धति
			नीति
१५९			सोमनीति
			पुराण
६३०			भविष्योत्तरोद्धार
			मंत्र
६०३			कामरूपपंचाशिका
६०३		१	कामरूपपंचाशिका वृत्ति
६००			भैरवपद्मावतीकल्प

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
५९९			मंत्रमहोदधि
६०१			रुद्राक्षकल्प
६०२			श्वेतार्ककल्प
			वास्तु
५५८			आयज्ञानतिलकसूत्र
५५८		१	आयज्ञानतिलकसूत्र वृत्ति
५५९			आयसद्भाव
५५९		१	आयसद्भाव वृत्ति
५६०			कूरपर्वत?
५६८		१	वास्तुसार
६४०			कुसुमाञ्जलि
६३६			जिनप्रतिष्ठा
६४१		२	दोषशांतिक
६४१		३	दोषशांतिकलौकिक
६३९			धूमावल्यादिवृत्ति
६३८			पर्वपंजिका
६३७			यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल
			व्याकरण
४४९			आख्यात अवचूरि
४२४			उणादिसूत्र
४३८			उणादिसूत्र वृत्ति
४५३			कपालक विशेषव्याख्यान
४५६			कलापक उणादि वृत्ति
४४७			कलापव्याकरण
४४८			कलापव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विषमपद व्याख्या

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४४७		१	कलापव्याकरण वृत्ति
४६०			कातंत्रप्रयोगसमुच्चय
४५१			कातंत्रलघु वृत्ति
४६१			कातंत्रोत्तर
४४५			कारकसमुच्चय
४५५			कौमारसारसमुच्चय
४७२			गणरत्नमहोदधि
४६७			त्यादिसमुच्चय
४३७			धातुपारायण
४५२			धातुपारायण
४५९			नामाख्यात वृत्ति
४२८			परिभाषा वृत्ति
४७५			पाणिनि व्याकरण
४७५		१	पाणिनि व्याकरण काशिका वृत्ति
४७७			पाणिनीय संक्षिप्त व्याकरण
४५८			प्रमेयरत्नभांडागार विशेषविवरणं
४३२		१	प्राकृतदीपिका वृत्ति
४३२		२	प्राकृतरूपसिद्धि
४४६			मुष्टिव्याकरण
४२९			लघुन्यास
४२५			लिंगानुशासन
४५०			लौकिककृद्वृत्ति टिप्पनक
४६८			लौकिकत्यादिप्रक्रिया
४७६			व्याकरणरत्नकोश
४७३			शाकटायनव्याख्या

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४५७			षड्भाषालक्षणपारायण
४४३			समासतद्धितसार प्रकरण
४६९			सारस्वतव्याकरण
४७०			सारस्वतव्याकरण टिप्पनक
४७१			सारस्वतव्याकरण प्रक्रिया
४६६			स्यादिसमुच्चय
४४४			हेमविभ्रम
४४४		१	हेमविभ्रम वृत्ति
४२३			हेमव्याकरणसूत्र
४२६			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२७			हेमव्याकरणसूत्र न्यास
४२५		२	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्न्यास
४२५		१	हेमव्याकरणसूत्र बृहद्वृत्ति
४३३			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३४			हैमचतुष्क लघु वृत्ति
४३५			हैमचतुष्क वृत्ति अवचूरि
४३९			हैमन्याय वृत्ति
४३२			हैमप्राकृत वृत्ति
४३१			हैमबृहद्वृत्तिचतुष्काख्यात
४३०			हैमव्याकरण कक्षापट वृत्ति
			शकुन
५९३			कालज्ञान
५९४			पिपीलिकाज्ञान
५९२			मातृकाकेवली
६०४			वसंतराज

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
६०६			शकुनशास्त्र
६०५			शकुनसारोद्धार
			सामुद्रिक
६०७			सामुद्रिक
			साहित्य
५०१			अलंकार
५०१		१	अलंकार पदप्रकाश वृत्ति
४९४			अलंकारमहोदधि
४९४		१	अलंकारमहोदधि वृत्ति
४९९			अलंकारसर्वस्व
४९८			कविशिक्षा
४९५			काव्यकल्पलता
४९५		१	काव्यकल्पलता कविशिक्षा वृत्ति
५००			काव्यकल्पलता वृत्ति परिमल
४८५			काव्यप्रकाश
४८९			काव्यप्रकाश अवचूर्णि
४८८			काव्यप्रकाश विकाश
४८५		१	काव्यप्रकाश वृत्ति
४८७			काव्यप्रकाश संकेत टीका
४९०			काव्यप्रदीपिकासूत्र
४९०		१	काव्यप्रदीपिकासूत्र वृत्ति
४९१			काव्यानुशासन
४९१		१	काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति
४९२			काव्यानुशासन अलंकारचूडामणि वृत्ति विवेक
५०२			चंद्रालोकालंकार

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
४८६			जयंतीदीपिका
४९३			दंड्यलंकार
४९७			रुद्रटालंकार
४९६			वाग्भटालंकार
४९६		१	वाग्भटालंकार वृत्ति
			सुभाषित संग्रह
६५३			इष्टोपदेश
६५०			तत्त्वबिंदु
६४५			दानादि प्रकरण
६४९			दृष्टांतशत
६५१			बोधप्रदीपिका
६४४			शुभावली
६५४			सर्वेऽपि सूक्तरूपा
६५२			सिंदूर प्रकर
६४६			सुधाकलश
६४३		२	सुभाषितसमुद्र
६४३		१	सूक्तरत्नाकर
			स्तोत्र
१३६			अजितशांति स्तव
१३६		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
१३७			अजितशांति स्तव वृत्ति
१३९		१	अजितशांति स्तव वृत्ति
१३९		७	उल्लासिक्कम
१३९	७	१	उल्लासिक्कम वृत्ति
१४०		१	उवसग्गहर वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३९		३	उवसग्गहर स्तोत्र
१३९	३	१	उवसग्गहर स्तोत्र वृत्ति
१४१			ऐंद्रस्येव इत्यादि लघुवृत्ति
१३५		८	क्षेत्रसमास
१४४			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४५			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७			चतुर्विंशतिजिन स्तव
१४७		१	चतुर्विंशतिजिन स्तव वृत्ति
१३३			जनेन येन स्तुति
१३३			जनेन येन स्तुति वृत्ति
१३८		१	जयतिहुअण वृत्ति
१३८			जयतिहुअण स्तोत्र
१३५		२	जयवृषभ स्तुति
१४६			जिनशतक
१४६		१	जिनशतक वृत्ति
१३९		४	तं जयउ स्तोत्र
१३९	४	१	तं जयउ स्तोत्र वृत्ति
१३५		६	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र
१३५	६	१	देवेंद्रैरनिशं स्तोत्र वृत्ति
१२९			धनपालपंचाशिका
१२९		१	धनपालपंचाशिका वृत्ति
१४२			धरणोरगेंद्र स्तव
१४२		१	धरणोरगेंद्र स्तव वृत्ति
१३४			बप्पभट्टि स्तुति
१३४		१	बप्पभट्टि स्तुति वृत्ति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३१			भक्तामर स्तव
१३१		१	भक्तामर स्तव प्रदीपिका
१३२			भक्तामर स्तव वृत्ति
१४०		२	भयहर (नमिऊण) वृत्ति
१३९		२	भयहर स्तोत्र
१३९	२	१	भयहर स्तोत्र वृत्ति
१३९		६	मयरहियं स्तोत्र
१३९	६	१	मयरहियं स्तोत्र वृत्ति
१३५	१	२	यत्राखिल स्तुति
१३५		५	यूयं यूयं स्तोत्र

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१३५	५	१	यूयं यूयं स्तोत्र वृत्ति
१४३			विंशतिद्वात्रिंशिका
१२७			वीतराग स्तव
१२७		१	वीतराग स्तव वृत्ति
१३०			वीर स्तव
१३०		१	वीर स्तव वृत्ति
१५६			शत्रुंजयकल्प
१३५		४	शस्ता शमा स्तोत्र
१३५	४	१	शस्ता शमा स्तोत्र वृत्ति
१२८			शोभन स्तुति

बृ.क्र.	पे.	चा.	ग्रंथनाम
१२८		१	शोभन स्तुति वृत्ति
१३५		२	श्रीतीर्थराज स्तुति
१३५		९	श्रीशैवैयं
१३५		७	सत्तरिसयठाण
१३९		५	सिग्घभव
१३९	५	१	सिग्घभव वृत्ति
९६			दीपकसंग्रह
९६		१	दीपकसंग्रह वृत्ति
५६८		३	द्रव्यपरीक्षा

(परिशिष्ट ७)

पं.दीपविजयकृत
सूत्रादिश्लोकमान

परिशिष्ट-७

पं.श्रीदीपविजयकृत

सूत्रादिश्लोकमान

प्रथम[१] **आचारांगसूत्र** मूल सुधर्मास्वामिकृत अढार हजार पद आज श्लोक २५५४ बाकी विच्छेद छैं। खंध १ अध्ययन २५६ उदेसा ८५।
आचारांगनी निर्युक्ति भद्रबाहुस्वामीकृत वीरथी १७० वर्षे। आज गाथा ३६८ श्लोक ४५०। बाकी विच्छेद छैं।
आचारांगनी भाष्य आज नथी।
आचारांगनी संग्रहणी टीका श्लोक १२००० सेलगाचार्यकृत।
आचारांगनी चूर्णी। श्लोक ८३०० जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणकृत।

सुगडांगसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। बत्रीस हजार पद। आज २१०० बाकी विच्छेद छैं। खंध २ अध्ययन २३।
सूगडांगनी निर्युक्ति भद्रबाहुकृत वीरथी १७० वर्षे आज गाथा ३०८ श्लोक २५० बाकी विच्छैंद।
सूगडांगनी भास आज नथी।
सूगडांग चस्स(संग्रहणी) टीका श्लोक १३८५० सेलगाचार्यकृत।
सुगडांगनी चूर्णी जणाती नथी।

ठाणांगसूत्र मूल सुधर्मास्वामीकृत। ४२ हजार पद आज ३७०० बाकी विच्छेद छैं। खंध १ उदेसा ४ अध्ययन १।
ठाणांगनी निर्युक्ति नथी।
ठाणंगनी भाष्य नथी।
ठाणंगनी[२] **टीका** १४२५० अभयदेवसूरिकृत।
ठांणगनी चूर्णी नथी।
समवायांगसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। चौसठ हजार पदो आज श्लोक १६६७ बाकी विच्छेद छैं। खंध१
समवायांगनी निर्युक्ति नथी।
समवायांगनी टीका श्लोक ३७०० अभयदेवसूरिकृत
समवायांगनी भाष्य नथी।

१ पत्र ४ब
२ पत्र ५अ

समवायांगनी चूर्णी श्लोक ४००। मलयगिरिकृत।

भगवतीसूत्र सुधर्मास्वामिकृत। बे लाख अठावीस हजार पद आज श्लोक १५७५२ बाकी विच्छेद छैं। सतक ४२ प्रश्न ३६०००।
भगवतीसूत्र निर्युक्ति नथी।
भगवतीनी भाष्य नथी।
भगवती टीका श्लोक अभयदेवसूरिकृत।
भगवतीसूत्रनी चूर्णी श्लोक ३१००।

ज्ञातासूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। ५ लाख ५६ हजार पद आज १९ कथा श्लोक ५४६४ बाकी
विच्छेद छैं। खंध २ अध्ययन १९ वर्ग १० कथा २०६।
ज्ञातासूत्रनी निर्युक्ति नथी।
ज्ञातासूत्रनी भाष्य नथी।
ज्ञातासूत्रनी टीका श्लोक ३३५५ अभयदेवसूरिकृत।
ज्ञातासूत्रनी चूर्णि नथी।

उपासकसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। इग्यार लाख सितेर हजार पद लाखो करोडो उपासक श्रावकनी कथा हती ते विच्छैंद जाते जाते दस श्रावकनी कथा रही तिवारें सूत्र पुस्तक लखानारा देवड्ढि पूज्ये उपादसांग[३] एहवुं नांम लख्यु विच्छेद जातें आज १० कथा १० अध्ययने श्लोक ८२० बाकी विच्छेद छै।

उपासकनी भाष्य नथी।
उपासकनी टीका सलो(श्लो)क ९०० अभयदेवसूरिकृत।
उपासकनी चूर्णी नथी।
अंतगडसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। २३ लाख २८ हजार पद तेहमां लाखो करोडो मुनी अंतगड केवली थया तेहनी वातो हती पण

३ पत्र ५ब

विच्छैंद जातें जाते १० कथा दस अध्ययन रह्यां ते लख्यां। तिवारें देवड्ढी पूज्यें अंतगडदशांग नाम लख्युं विच्छेद जातें अध्ययन १० छें। श्लोक ८९० बाकी विच्छेद छैं।
अंतगडसूत्र निर्युक्ति नथी।
अंतगडदसांगनी भाष्य नथी।
अंतगडदसांगनी टीका श्लोक ३०० अभयदेवसूरिकृत अध्ययन १० खंध १
अंतगडदसांगनी चूर्णि नथी।

अनुत्तरोवाईसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। ९२ लाख ४४ हजार पद। तेहमां लाखो करोडो मुनी अनुत्तरविमानें सिद्धा तेह कथा लाखो करोडनी ते विच्छैंद जातें आजे श्लोक ७९० वर्ग ३ खंध २ अध्ययन ३३ बाकी विच्छेद छैं।
अनुत्तरोवाई निर्युक्ति नथी।
अनुत्तरोवाईनी भाष्य नथी।
अनुत्तरोवाईनी टीका श्लोक १०० अभयदेवसूरिकृत।
अनुत्तरोवाईनी चूर्णि नथी।

प्रश्नव्याकरणसूत्र[1] सुधर्मास्वामिकृत। ९३ लाख सोल हजार पद एमे आश्रव संवरना घणा उदेंसा घणी कथा हती पण विच्छेंद जाते जातें २ खंध १० अध्ययन आज छैं श्लोक १२००।
प्रश्नव्याकरणनी निर्युक्ति नथी।
प्रश्नव्याकरणनी भाष्य नथी।
प्रश्नव्याकरणनी टीका श्लोक ४६००
अभयदेवसूरिकृत।
प्रश्नव्याकरणनी चूर्णी नथी।

विपाकसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। १ कोड ८४ लाख पद एमें पुन्यविपाक पापवि[पा]क फलना उदेसाऽध्ययन कथा हति पण विच्छेंद जाते जातें खंध २ अध्ययन १० श्लोक १२१६ एतलुं रह्युं बीजुं विच्छेंद।
विपाकसुत्रनी निर्युक्ति नथी।
विपाकसूत्रनी भाष्य नथी।
विपाकसूत्रनी टीका श्लोक ९०० अभयदेवसूरिकृत।
विपाकसूत्रनी चूर्णि नथी।

१ पत्र ६अ

दृष्टिवादसूत्र मूल सुधर्मास्वामिकृत। एकसो कोड, ८ कोड, ६८ लाख, ५६ हजार, पांचसेंह पद प्रमाणें मोटु सुत्र हतु। परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत चउदें पूर्व ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ए पांच चीज मलीने आखो दृष्टिवाद ते हगीगत पाछल लखी छैं। पांच चीज माहेंथी ४ चीज तो वीरथी अट्ठाणु वर्षे विच्छैंद गई एक चीज १४ पूर्व रहां ते विच्छैंद जातें जातें हजार वर्ष लगें पेहलों पूर्व रह्युं। सत्यमित्रसूरि एक पूर्वधर पछैं विच्छैंद गयां ते पूर्व मांहेंलां केईक आमनाय रह्यां। तथा नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो० विशाललोचनदलं ए स्तोत्र तथा नमोऽस्तु वर्द्धमानाय० ए स्तोत्र तथा सुह(य)यदेवीयाय(ए) भगवई ए गाथा प्रमुख छुटां रह्या। बाकी विच्छेद छैं.।

दृष्टिवादनी[2] **निर्युक्ति** नथी विच्छैद।
दृष्टिवादनी भाष्य नथी विच्छैद।
दृष्टिवादनी टीका नथी वीच्छैंद।
दृष्टिवादनी चूर्णि नथी विच्छैंद।
ए द्वादसांगीना पद वीस कोडाकोडि, छियासी कोड, अडसठ लाख, पांच हजार, पांचसें छ। एतलां पद द्वादसांगीनां हतां ते विच्छैंद जातें जातें आज श्लोक ३५४९७ पांत्रीस हजार च्यारसें संताणुं श्लोकसंख्यां। इग्यार अंग आज छैं। बाकी विच्छेद छैं। इग्यारे अंगमे अध्ययन २४० उद्देसा २०२९ सं(खं)ध १६ वर्ग २१ सतक ४२ बाकी विच्छेद छैं.। उपांग रह्या ते लखे छैं।

उवाईयं उवाईसूत्र चउदपूर्वधर आचार्यकृत आचारांगनु उपांग तें उवाई खंध १ श्लो ११६७ बाकी विच्छेद छैं।
उवाई निर्युक्ति नथी।
उवाईनी भाष्य नथी।
उवाईनी टीका श्लोक ३१२५ मलयगिरिकृत।
उवाईनी चूर्णि नथी।

रायपसेणीयं रायपसेणी सूगडांगनुं उपांग खंध १ श्लोक २०७८ पूर्वधरकृत बाकी विच्छेद छैं।
रायपसेणीनी निर्युक्ति नथी।
रायपसेणी भाष्य नथी।
रायपसेणीनी टीका श्लोक ३७०० मलयगिरिकृत।
रायपसेणीनी चूर्णि नथी।

जीवाभिगमो जीवाभिगम ते ठाणंगनु उपांग पूर्वधरकृत श्लोक ४७०० खंध १ बाकी विच्छेद छैं।
जीवाभिगम निर्युक्ति नथी।

२ पत्र ६ब

जीवाभिगम भाष्य नथी।
जीवाभीगमनी[1] **टीका** ११०० हरिभद्रकृत, १४०० मलयगिरिकृत।
जीवाभिगमनी चूर्णी श्लोक १५००।

पन्नवणा ते समवायांगनु उपांग वीरथी ३७६ वर्षे चउदमा पाटवी कालिकाचार्य पूर्वधरे गुंथ्युं। आर्य महागिरि १। बलिस्सह २ उमांसाती ३ कालिकाचार्य स्यामाचार्य ४। श्लोक ७७८७ बाकी विच्छेद छैं।

पन्नवणा निर्युक्ति नथी
पन्नवणानी भाष्य नथी।
पन्नवणानी टीका श्लोक ३७२८ हरिभद्रसूरिकृत १४००० मलयगिरिकृत।
पन्नवणानी चूर्णी नथी।

जंबूदीपपन्नती भगवतीसूत्र उपांग लखै छैं पण ए वात मलती नथी। स्यामाटें जे जंबूदीवपन्नती १ चंदपन्नती २ सूरपन्नती ३ दीवसागरपन्नती ४ वाख्यानपन्नती ५। ए पांचे पन्नती दृष्टीवादनुं उपांग मोटा आचार्य लखे छैं माटें विचारवुं। जंबूदीपपन्नती तीन लाख पांचीस हजार पद हतां ते वीच्छैंद जातें आज खंध १ श्लोक ४१४६ बाकी विच्छेद छैं.। पूर्वधरकृत।

जंबूदीपपन्नती निर्युक्ति नथी।
जंबूदीपपन्नती भाष्य नथी।

चंदपन्नतीनी टीका श्लोक ९४११ मलयगिरिकृत।
चंदपन्नतीनि चूर्णी नथी।

सूरपन्नती उपांगनुं उपांग पूर्वधरकृत। तीन लाख पांच हजार पद। आज खंध १ श्लोक २२०० बाकी विच्छेद छैं।
सुरपन्नत्ती निर्युक्ति वीरथी १७० वर्षे भद्रबाहुकृत आज गाथा (नथी)।
सूरपन्नती भाष्य नथी।
सूरपन्नती टीका श्लोक ९०० मलयगिरिकृत।
सूरपन्नतीनी चूर्णि नथी।

१ पत्र ७अ

निरयावलि[2] उपांग में ५। अंतगडसूत्रनुं ते कप्पियाउपांग १ अनुत्तरोवाईअंगनुं ते कल्पवतंसिकासूत्र २ प्रश्नव्याकरणअंगनुं पुप्फियासूत्र ३ विपागअंगनुंउपांग पुप्फचूलासूत्रउपांग ४ दृष्टिवादअंग उपांग ते वह्निदशाउपांगसूत्र ५। ए रीते पांचे अंगनां ए पांचे उपांग। एहनुं नाम नेरयावलिसूत्र। ए रीते मलिनें आज श्लोक ११० बाकी विच्छेद छैं.।

नीरयावली आदेई पांचे निर्युक्ति नथी।
नीरयावली आदे ५चेनी भाष्य नथी।
निरयावली आदे ए पांचेंनी टीका श्लोक ७०० चंद्रसूरिकृत।
नीरयावली आदे पांचेंनी चूर्णी नथी एवं १२ उपांगनुं ग्रंथमान श्लोक २४९८७ थाइ छैं। नीश्चे ज
हवे छ ६ छैंदसूत्र कहें छें।

निसीथसूत्र श्रीआर्यसूरिहस्तिसूरिने पटोधर आचार्यकृत आज श्लोक ८०१५ बाकी विच्छेद छैं।

निसीथनी निर्युक्ती नथी।
निसीथनी भाष्य छैं श्लोक।
निसीथनी टीका श्लोक १२००।
निसिथनी चूर्णी श्लोक २८००।

महानिसिथसूत्र श्लोक ४५०० आज छैं बाकि विच्छैंद आज सुहस्तिसूरि पटोधर कृत।
माहानिसीथनी निर्युक्ति नथी।
माहानिसीथनी भाष्य नथी।
माहानिसीथनी टीका नथी।
माहानिसीथनी चूर्णी नथी।

महाकप्पसुयं[3] ते **बृहत्कल्प** महागिरिना पटोधरकृत आज श्लोक ४७० आलावा २१२ बाकी विच्छेद छैं।

बृहत्कल्पनी निर्युक्ति नथी।
बृहत्कल्पनी भाष्य श्लोक ७००० तथा लघु भाष्य श्लोक।

२ पत्र ७ब
३ पत्र ८अ

बृहत्कल्पनी टीका श्लोक १२००० परं ४२००० खिमकित्तीकृत।
बृहत्कल्पनी चूर्णि श्लोक १४३२५।

व्यवहारसुयं ते **व्यवहारसूत्र** आर्यसुहस्ति-महागिरि पटोधरकृत। आज तो श्लोक ६०० बाकी विच्छेद छैं।
व्यवहारसूत्रनी निर्युक्ति नथी।
व्यवहारसूत्रनी टीका श्लोक ३३६२५ मलयगिरिकृत।
व्यवहारसूत्रनी भाष्य नथी।
व्यवहारसूत्रनी चूर्णी १०६६०।

दसाकप्पो ते **दसाकल्पसूत्र** आज श्लोक १८३० बाकी विछेद छैं। महागिरि पटोधरकृत
दसाकल्प निर्युक्ति नथी।
दसाकल्पनी भाष्य नथी।
दसाकल्पनी टीका नथी।
दसाकल्पनी चूर्णी श्लोक २२००।

पंचकप्पसुयं १ **चुल्लकप्पसूयं** २ **पंचकल्पे** ते **कल्पसूत्र** ऋषभदेवना अधिकार लगें १ अनें चुल्लकप्प तें नांहनो कल्प आलावा ६५ कल्पसूत्रने पाछल सामाचारि ६५ आलाबा छें ते चुल्लकप्पसूत्र २ एतलें पंचकल्प १ अनें चुल्लकप्प २ भेला देवड्ढी पूज्यजीने सीष्यें लख्या। ते पंचकल्प आज श्लोक ११३३ छैं। बाकी विच्छेद छैं। पहेली कल्पसूत्र प्रगट वंचातो नहि माटें ६ छेंदमां लीधों पछे बहुश्रुत केहे ते प्रमा।

पंचकल्पनी[१] **निर्युक्ति** वीरथी १७० वर्षे भद्रबाहुस्वामिकृत गाथा १६८ छें बाकी विच्छेद छैं।
पंचकल्पनी भाष्य श्लोक ३१००० संग्रहणी श्लोक २००।
पंचकल्पनी टीका श्लोक ६७० चंद्रसूरिकृत।
पंचकल्प चूर्णी श्लोक ३३००।

एवं ६ छेदसूत्रग्रंथ ७९६० सात हजार नवसें साठ श्लोक छैं।

आवस्सयं तें **आवस्सकसूत्र** १ पूर्वधरकृत श्लोक ३९२५। बीजु ओघनिर्युक्ति भद्रबाहुस्वामिकृत गाथा ११६० श्लोक १४५० ए बेंहूं मूलसूत्र। आज ए संख्या बाकी विच्छेद छैं।
आवस्यक निर्युक्ति वीरथी १७० वर्षे भद्रबाहुकृत गाथा ३००० बाकी विच्छेद छैं।

ओघ निर्युक्ति नथी। आवस्यकनी भाष्य नथी १ **ओघनियुर्क्तिनी भाष्य** २७०० श्लोक छैं।

आवस्यकनी टीका २२००० लघु १२००० १ **ओघनिर्युक्तिनी** टीका ३०००।

आवस्यकसूत्रनी टीका चूर्णी १०००० १ **ओघनिर्युक्तिनी चूर्णी** श्लोक ३००० छें।

दसविकालीक मूलसूत्र १ बीजूं मूलसूत्र पाखीसूत्र २ ए बेहुं मूलसूत्र २ ते मध्यें प्रथम दसवीकालीक वीरने चोथे पाटें वीरथी अठाणुं वर्षे सजंभवसूरि पूर्वधर आचार्ये गुंथ्युं, श्लोक ७००। बीजू पखीसूत्र श्लोक ३००।
दसविकालीक निर्युक्ति पोतरा चेला भद्रबाहुस्वामीइं वीरथी १७० वर्षे करिं अनैं गाथा ४४५। पाखीसूत्रनी निर्युक्ति नथी।
दसवीकालीकनी भाष्य नथी १।
पाखीसूत्रनी चूर्णी श्लोक ४७०० तथा १५००।
दसवीकालीकनी चूर्णी श्लो २००० पाखीसूत्रनी चूर्णी श्लोक ४०० चंद्रसूरिकृत।

उतरज्झयणा मूलसूत्र पूर्वधरकृत आज तें २००० बाकी विच्छेद छैं।
उत्तराध्ययनें निर्युक्ति वीरथी १७० वर्षे भद्रबाहुकृत आज गाथा ५६४ बाकी विछेद छैं.।
उत्तराध्ययननी[२] **भाष्य** नथी।
उत्तराध्ययननी टीका श्लोक १६०० मलयगिरि पुनः १७६४५ शांतिवेतालसूरिकृत।
उत्तराध्ययन निर्युक्ति चूर्णी श्लोक ५८५२ हरिभद्रसूरिकृत छैं।

पिंडनिर्युक्तिसूत्र वीरथी १७० वर्षे भद्रबाहुकृत।
पिंडनिर्युक्तीनी निर्युक्ति नथी।
पिंडनिर्युक्तिनी भाष्य नथी छै।
पिंडनिर्युक्तिनी टीका श्लोक ४००० पुन ६६०० पुनः ७५००।
पिंडनिर्युक्तिनी चूर्णी श्लोक ४००।

१ पत्र ८ब

२ पत्र ९अ

नंदि ते **नंदीसूत्र** वीरथी ३२मे पाटे देवगणीवाचककृत मूलश्लोक ७००।
नंदिनी निर्युक्ति नथी।
नंदिनी टीका श्लोक ३०० पुनः ७७३२ पुनः२३००।
नंदीनी भाष्य नथी।
नंदीनी चूर्णी नथी श्लोक १५००।

अनुयोगसूत्र। **अनुयोगद्वारसूत्र** पूर्वधरकृत। आज तो श्लोक १९०० श्लोक १६०० खंध १।
अनुयोगद्वारनी निर्युक्ति नथी।
अनुयोगद्वारनी भाष्य नथी।
अनुयोगद्वारनी टीका श्लोक लघु २७०० हरिभद्रकृत पुनः ५७०० मलयगिरिकृत।
अनुयोगद्वारनी चूर्णी श्लोक २००० जिनभद्रगणिकृत क्षमाश्रमणकृत एवं मूलसूत्र ग्रंथ श्लोक ७९३५ सात हजार नवसे पांत्रिसनो छें।

जीतकप्पसूत्र चउदमे पाटे जीतधरस्वामीकृत मूल १०५ बीजुं नाम कप्पिया। कप्पियं सुयं १।
जीतकप्प निर्युक्ति नथी।
जीतकप्पनी भाष्य छे। श्लोक ३१२५।
जीतकप्पनी टीका श्लोक १५०० तिलकाचार्यकृत।
जीतकप्पनी चूर्णी श्लो १०००।

(परिशिष्ट ८)

अज्ञातकृत
सिद्धांतश्लोक

परिशिष्ट-८

अज्ञातकृत

॥सिद्धांतश्लोक॥

श्रीदशवैकालिक[१] ७००।

श्रीआवश्यक २५००।

श्रीउत्तराध्ययन २०००।

श्रीआचारांगसूत्रं २५००, वृत्ति १२००० श्रीशीलसूरिविरचिता, चूर्णि ८३००, निर्युक्ति ४५०। सर्वसंख्या २३२५०।

सूगडांगसूत्रं २१००, वृत्ति १२८५० चूर्णि १०००(१००५०), निर्युक्ति २५०। सर्वसंख्या २५२५०।

ठाणांगसूत्रं ३७७०, वृत्ति १५२४० खरतरश्रीअभयदेवसूरिविरचित। सर्वसंख्या १९०१०।

समवायांगसूत्र १६६७, वृत्ति ३७७६, चूर्णि ४००। सर्वसंख्या ५८४३।

भगवतीसूत्र १५७५२, वृत्ति १८६१६, चूर्णि ४०००। सर्वसंख्या ३८३६८।

ज्ञाताधर्मकथासूत्रं ५५००{०}, वृत्ति ४२५५ सर्वसंख्या ९७५५।

उपाशकदशासूत्रं ८१२।

अंतगडदशासूत्रं ७९०।

अणुत्तरोववाईदशासूत्रं १९२। तिसृणां वृत्तीनां १३००। सर्वसंख्या ३०९४।

प्रश्नव्याकरणसूत्रं १२५०, वृत्ति ४६००। सर्वसंख्या ५८५०।

विपाकसूत्रं १२१६, वृत्ति ९००। सर्वसंख्या २११६।

औपपातिकसूत्रं ११६७, वृत्ति ३१५०(३१२५)। सर्वसंख्या ४२९२।

रायपसेणियं सूत्रं २०००, वृत्ति ३७००(३७७८)। सर्वसंख्या ५७७८।

जीवाभिगमसूत्रं ४७००, वृत्ति ११०००, मलयगिरिवृत्ति १४०००, चूर्णि १५००। सर्वसंख्या ३१२००।

प्रज्ञापनासूत्रं ७७८०, श्यामार्यकृतं लघुवृत्ति ३७२८, बृहद्वृत्ति १६००० मलयगिरिकृता। सर्वसंख्या २७५०८।

चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रं ४४००, वृत्ति ९००० (९०४०) मलयगिरिविरचिता। एवं संख्या १३४४०।

१ पत्र १अ

जंबूदीवप्रज्ञप्तिसूत्रं ४१४६, चूर्णि १८६०। सर्वसंख्या ६००६।

दीवसागरपन्नतिसूत्रं २५००।

निरावलीयाश्रुतस्कंधसूत्रं ११०९, वृत्ति १८०९। सर्वसंख्या २९१८।

निशीथसूत्रं ८१५ अथवा ६३६, भाष्य ७४००, चूर्णि २८०००।

आवश्यकलघुवृत्ति १२००० श्रीतिलकसूरिकृता, टिप्पनकं ४६०० मलधारिहेमचंद्रसूरि विरचितं।

षडावश्यक वृत्ति १५५०, चूर्णि १८००० आद्यऋषिविरचिता।

विशेषावश्यकसूत्रं वृत्ति १४००० द्रोणाचार्यविरचिता[२], भाष्यं ५०००, बृहद्वृत्ति २८००० हैमसूरिविरचिता।

पाक्षिकसूत्रं ३००, वृत्ति ३००० बात्राउ(?)लासूरिविरचिता।

प्रतिक्रमणभाष्यं १५००। सर्वसंख्या १२८४५०(?)।

ओघनिर्युक्तिसूत्रं ११५०, वृत्ति ९०००, चूर्णि ७०००, नास्ति ओघभाष्यं। सर्वसंख्या १५१८०(१७१५०)।

दशवैकालिकसूत्रं ७००, निर्युक्ति ४००, लघुवृत्ति ३५००, बृहद्वृत्ति ७०००, आचार्यश्री हरिभद्रसूरि-विरचितावचूर्णि ७०००। एवं संख्या ११(८)६००।

श्रीउत्तराध्ययननिर्युक्ति ५००, चूर्णि ६०००, लघुवृत्ति ६०००, द्वितीय लघुवृत्ति १२०००, वादिवेताल श्रीशांतिसूरिविरचिता बृहद्वृत्ति १७६४५। सर्वसंख्या ४४(२)१४५।

पिंडनिर्युक्तिसूत्रं ७००, लघुवृत्ति ४००० श्रीमहासूरिविरचिता, बृहद्वृत्ति ७०००
श्रीहेमाचार्यगुरुभ्रातृ-एकांतरोपवासी मलयगिरिरचिता। एवं सर्वसंख्या ११७००।

नंदिसूत्रं ७००, चूर्णि २०००, लघुवृत्ति २३१३, बृहद्वृत्ति ७३५३।

अनुयोगद्वारसूत्रं १८९९, चूर्णि ६०००, लघुवृत्ति ३००५, बृहद्वृत्ति ७००[०]। एवं १७९०४।

जोइसकरंडक १८५०।

वसुदेवहिंडि ११०००।

२ पत्र १ब

चउसरण गाथा ६३, वृत्ति १००।

आउरपच्चखाण गाथा ८४, वृत्ति ९००।

तर्क(भक्त)परिज्ञा १७०।

संस्तारक १२१, वृत्ति [९००]।

चंदाविज्जयं ३१०।

देविंदत्थओ २००।

तंदुलवेयालीयं ४००।

मरणसमाधि ७२०।

महापच्चक्खाण १३४।

गणिविज्जा १००।

नरयविभत्ति २५०।

गच्छाचार वीरस्तव।

एवं अंगेषु सर्वेषु १३२४८६। उपांगेषु सर्वेषु ९००१३। छेदग्रंथेषु सर्वेषु १४८३६३। मूलग्रंथेषु सर्वेषु २२८७५।
वसुदेवहिंडजोयसकरंडनंदि-अनुयोगद्वारेषु ग्रंथेषु एतेषु ३६८०८। प्रकीर्णक सर्वसंग्रहः २४१९। सर्वग्रंथसमुच्चये ६३२९६४।

कर्मस्तव गाथा ५०, वृत्ति १०९०, भाष्य १२१।

कर्मविपाक गाथा १६८, वृत्ति ९००।

शतक गाथा १११, वृत्ति ३७००।

सत्तरी गाथा ९०, वृत्ति ३७८०।

कर्मपयडिसूत्रं ५००, वृत्ति ७०००।

पंचसंग्रह गाथा ११००, वृत्ति १००००।

क्षेत्रसमास ७००, लघुवृत्ति[1] ३००, मलयगिरिरचित वृत्ति ७०००।

संग्रहणि ५००, वृत्ति ५०००।

अथ प्रकरणानि

मलधारि संग्रहणि गाथा २७३, वृत्ति ३५००।

१ पत्र २अ

सार्द्धशतक कर्मग्रंथसूत्रं १५२, भाष्य गाथा १११, वृत्ति[2].... चूर्णि[3]....।

षडशीति गाथा ९२, वृत्ति १६३७, चूर्णि[4]....।

बंधस्वामित्व गाथा ५४, वृत्ति ५६ण(०)।

जीवसमाससूत्रं गाथा २८७, तट्टीका ६०००।

मनःस्थिरीकरण गाथा १६७, वृत्ति २६६०।

आयुसंग्रहण गाथा ८२।

विचारसत्तरी गाथा ७०।

पिंडविशुद्धि गाथा १०३, लघुवृत्ति २८००, बृहद्वृत्ति[5]....।

अजितशांतिछंद ४४, वृत्ति ३००।

उपदेशमाला ५४०, लघुवृत्ति ९००० सिद्धर्षिविरचिता।

धर्मोपदेशमाला १००, वृत्ति।

तिलकमंजरी गाथा ९०००।

उपदेशचिंतामणिसूत्रं ४१६, वृत्ति १२००० श्रीजयशेखरसूरिविरचिता।

चतुष्क वृत्ति ११००।

आख्यात वृत्ति १४०० दुर्गसिंहाचार्य प्रणीता।

कुमारसंभव ७००, **मेघदूत** २६०, **रघुमहाकाव्य** २०००। एतानि महाकाव्यानि कविश्री-कालिदासविरचितानि।

माघमहाकाव्य २५०० माघपंडितविरचितटीका ९०००।

किरातमहाकाव्य भारविविरचित १५५०, टीका ६७००।

नैषध ४५०० श्रीहर्षकविविरचित।

अनर्घ्यसूत्र ३२०००।

नारचंद्रटिप्पनकं २५००, टीका ७०००।

हैमनाममाला हैमअनेकार्थकविशिष्या वृत्ति ३३५७।

२ ग्रंथाग्र का पाठ भ्रष्ट है।
३ ग्रंथाग्र का पाठ भ्रष्ट है।
४ ग्रंथाग्र का पाठ भ्रष्ट है।
५ ग्रंथाग्र का पाठ भ्रष्ट है।

उक्तवृत्ति ५०९।

आख्यातवृत्ति ४८०।

कृतवृत्ति २२९।

वुकढूंढू(ढुंढिका?) १७५०। आख्यातढूंढू(ढुंढिका?) १४३४। कृतढूंढू(ढुंढिका?) ७६७।

जैनश्रीमेघदूतकाव्य ४१८। श्रीमेरुतुंगसूरिविरचिता वृत्तित्रया काव्यमेतच्च।

जैनश्रीकुमारसंभव १२०० श्रीजयशेखरसूरि-विरचितः।

वृत्तरत्नाकरच्छंदः १८०।

वाग्भट्टालंकार २२८।

विदु(द)ग्धमुखमंडनमाणिक्यांक १८०० श्रीमाणिक्यस्तरिदसूरिप्रणीतः।

अथ पुराण संख्या

ब्रह्मपुराण १००००।

वामन पुराण १००००।

भविष्योत्तरपुराण ११०००।

लिंगपुराण १०००।

ब्रह्मांडपुराण १२०००।

मत्स्यपुराण १४०००।

मार्कंडेयपुराण १५०००।

कूर्मपुराण १७०००।

भागवतपुराण[1] १८०००।

ब्रह्मवैवर्तपुराण १८०००।

सौपर्णपुराण १९०००।

विष्णुपुराण २३०००।

वराहपुराण २४०००।

शिवपुराण २४०००।

नारदपुराण २५०००।

पद्मपुराण ५५०००।

स्कंदपुराण १०००।

आग्नेयपुराण १३०००।

इति पुराणसंख्या।

---

१ पत्र २ब

(परिशिष्ट ९)

आलेखचित्र (चार्टस्)

परिशिष्ट-९ आलेखचित्र (चार्टस्)

९.१ कृति संख्या आलेख

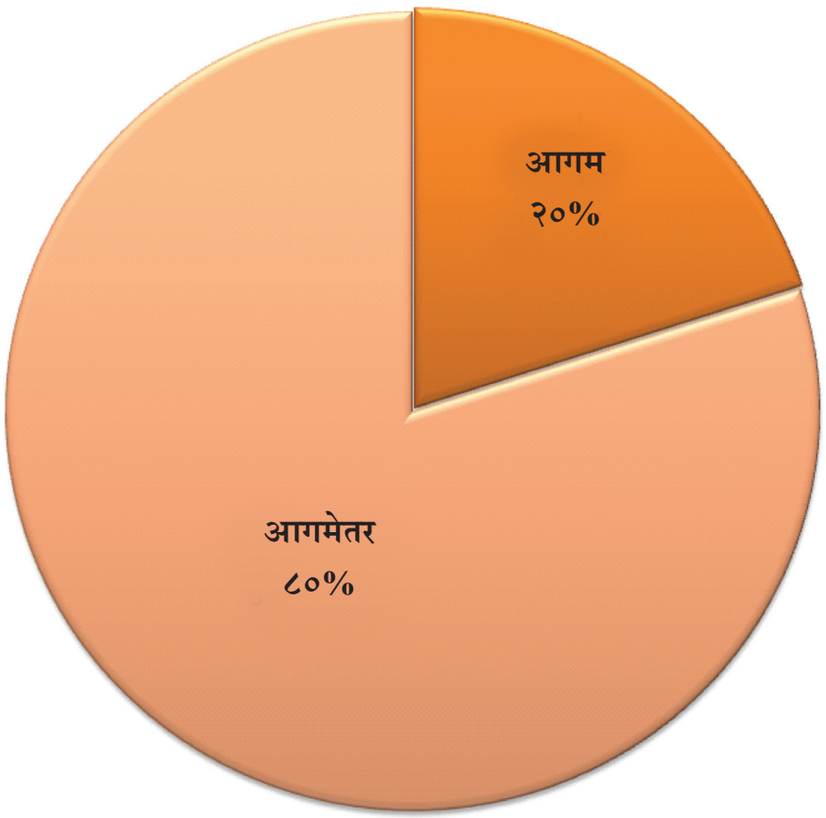

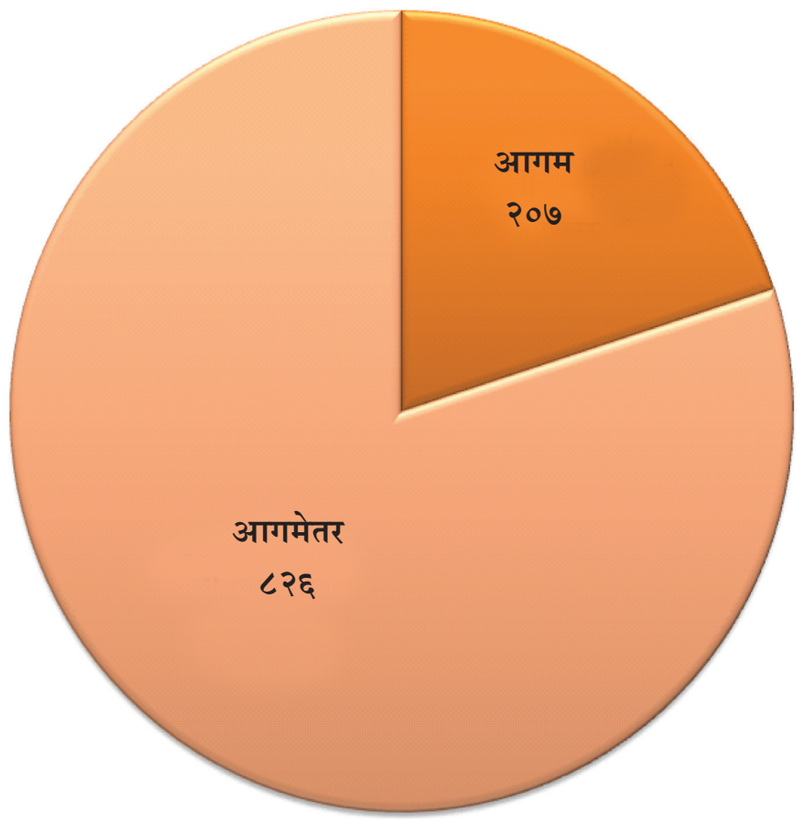

९.२ कृति भाषा आलेख

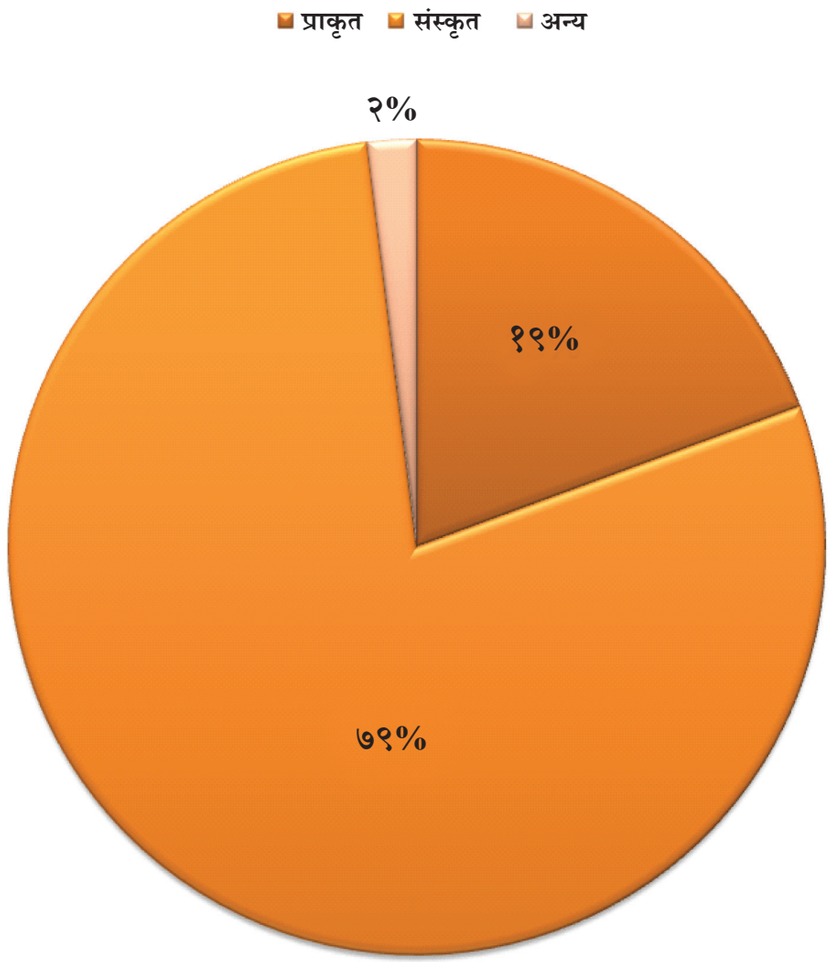

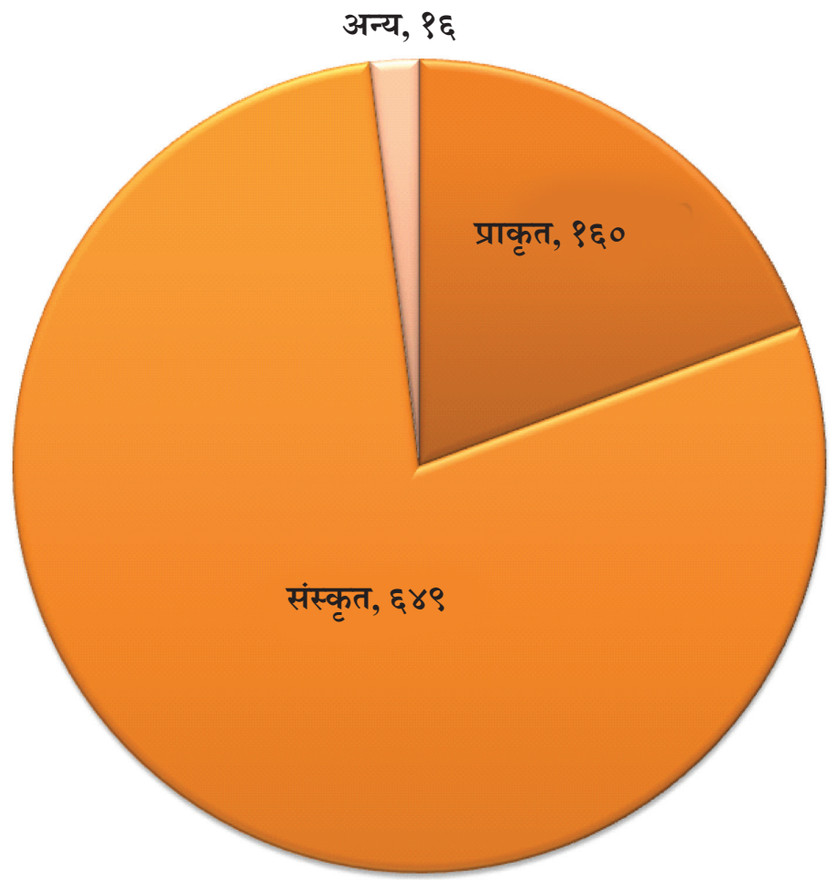

९.३ कृति स्वरूप आलेख

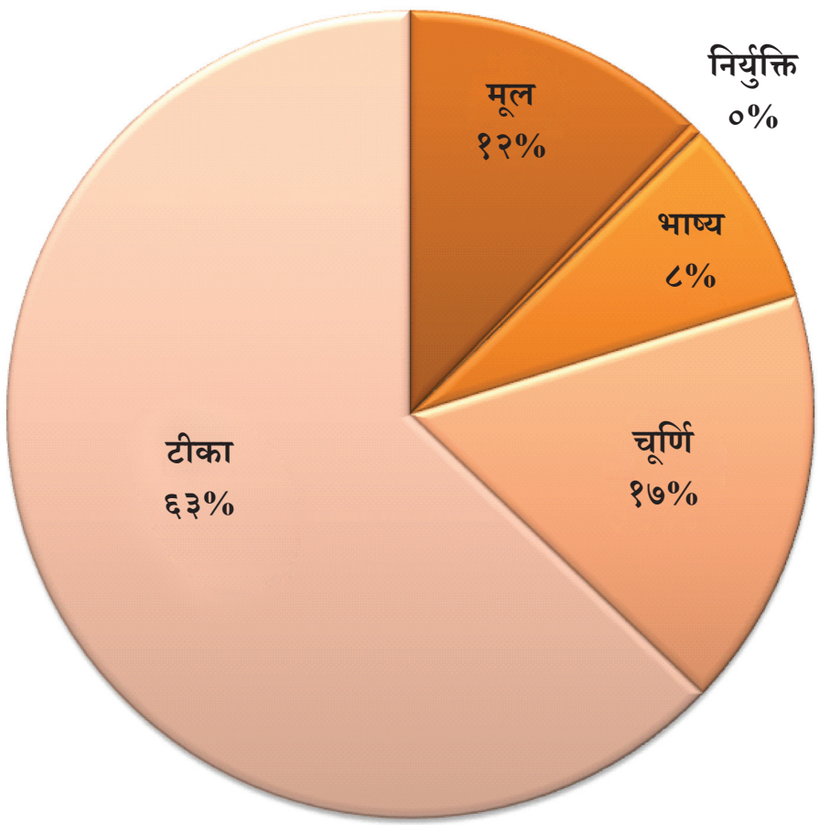

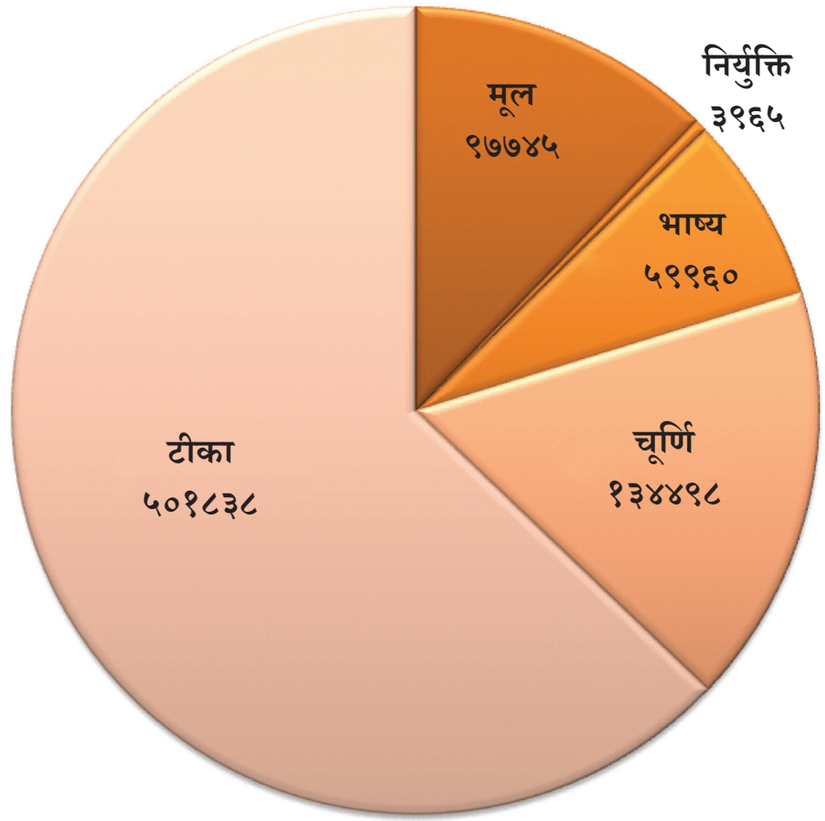

९.४-आगम कृति स्वरूप व ग्रंथाग्र आलेख

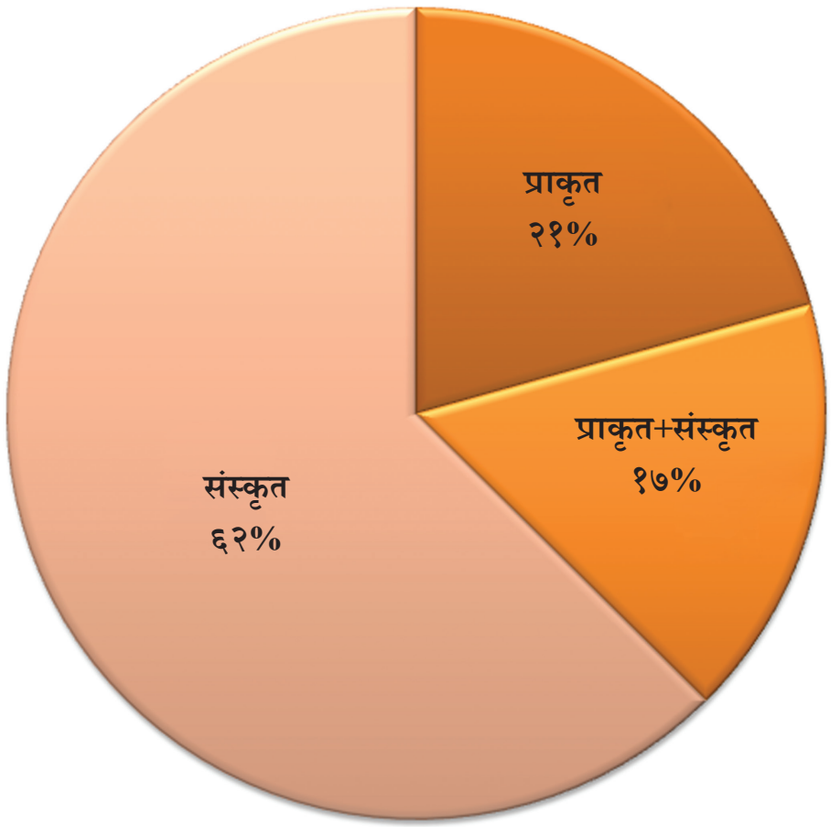

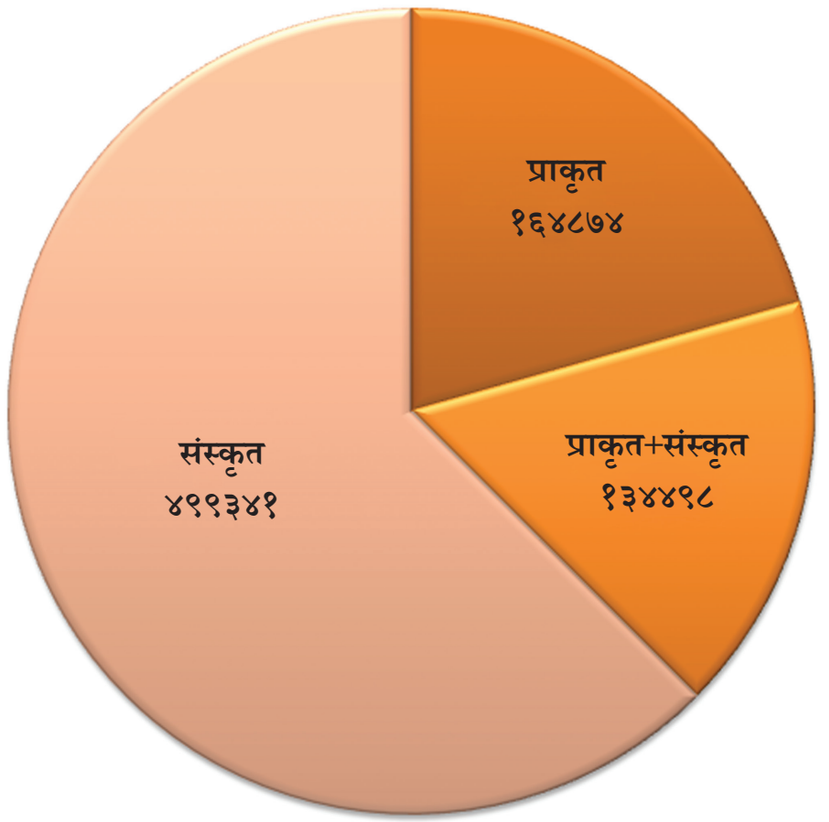

९.५ आगमेतर कृति भाषानुसार वर्गीकरण आलेख

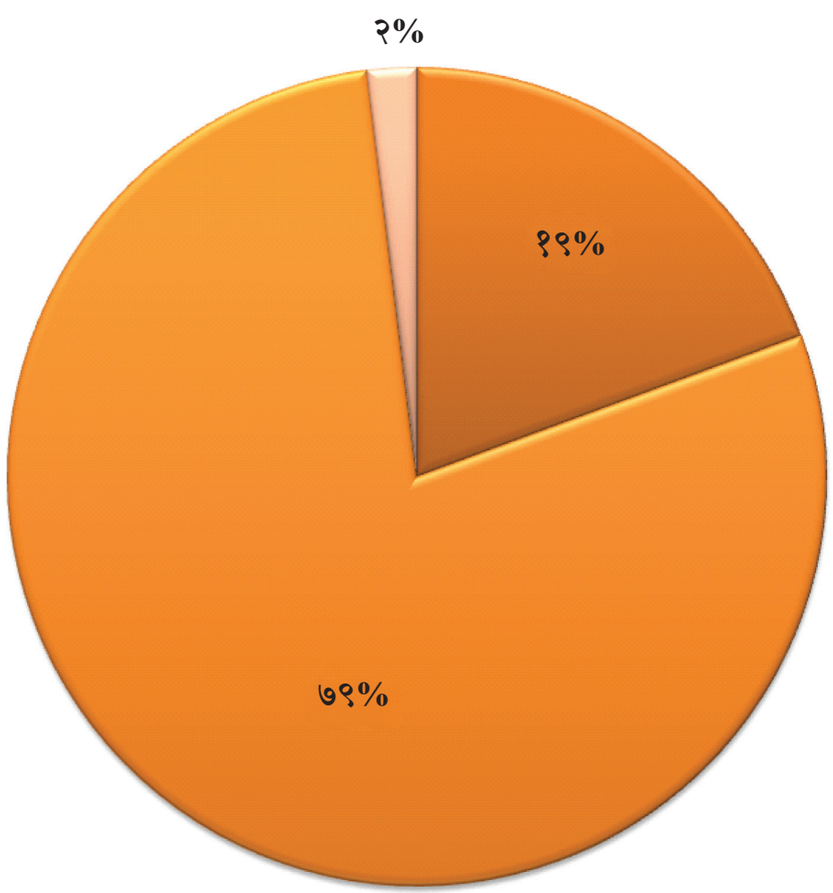

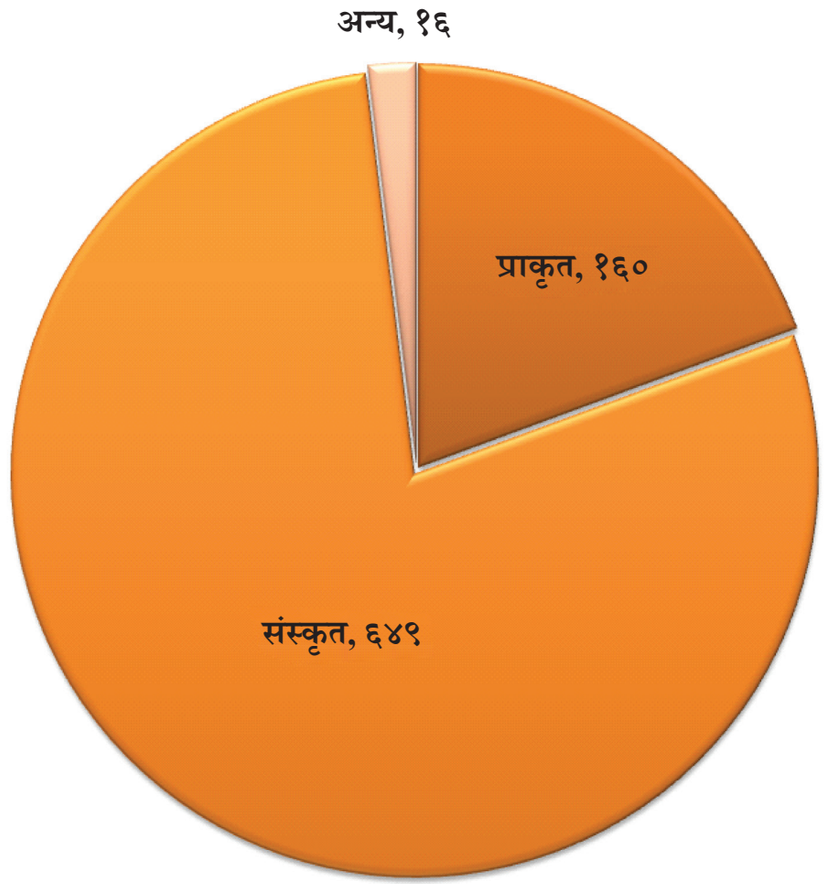

९.६ आगमेतर कृति वर्गीकृत कृति स्वरूप आलेख

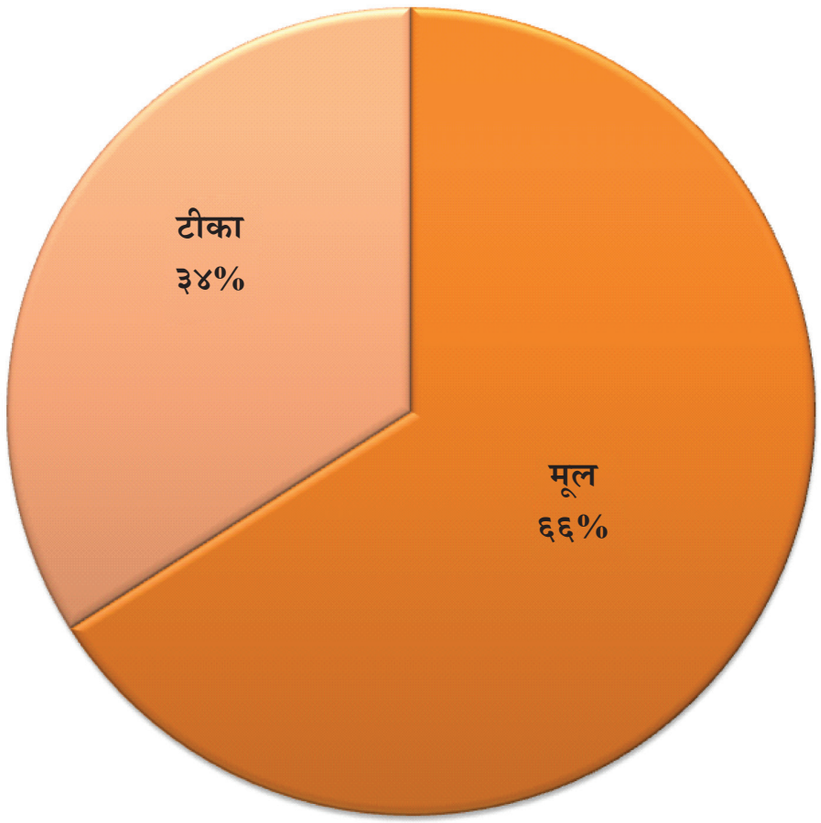

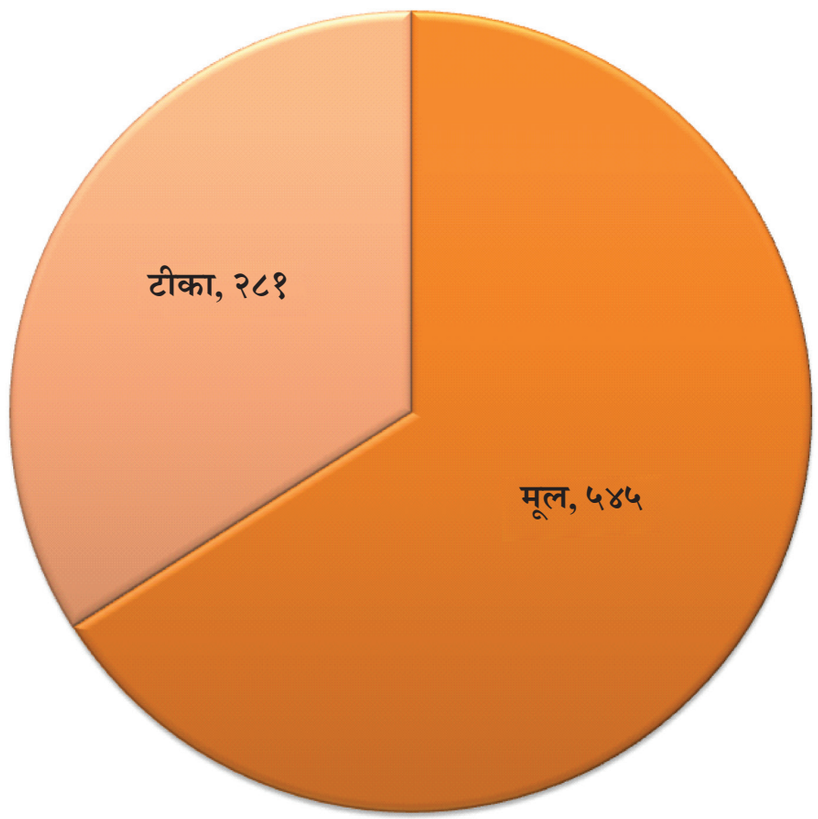

९.७ आगमेतर कृति ग्रंथाग्र आलेख

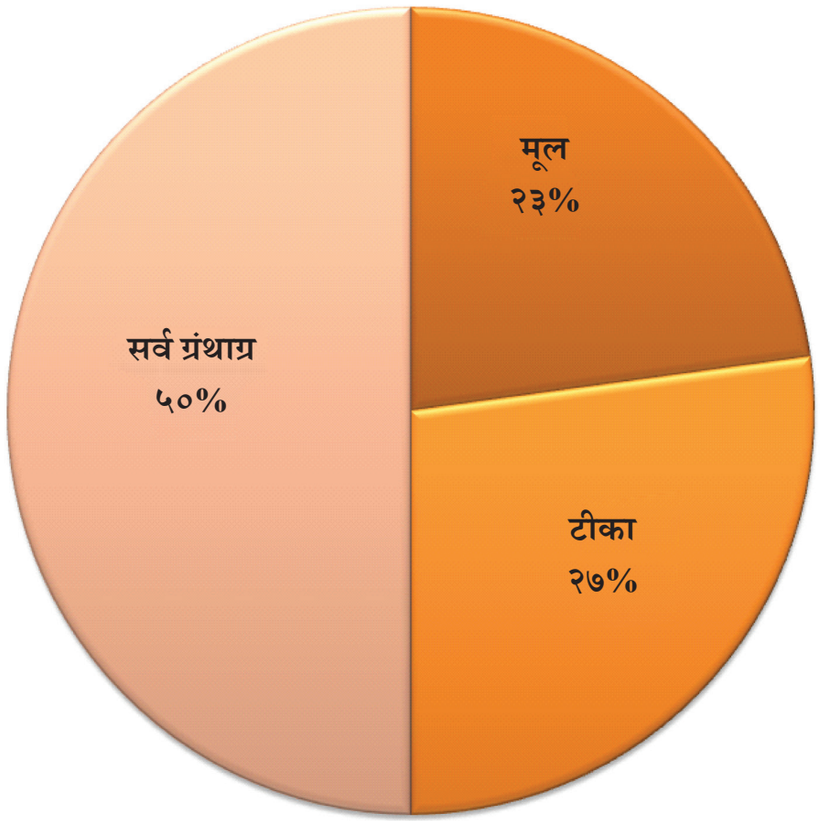

९.८ कृति स्वरूप, भाषा आलेख

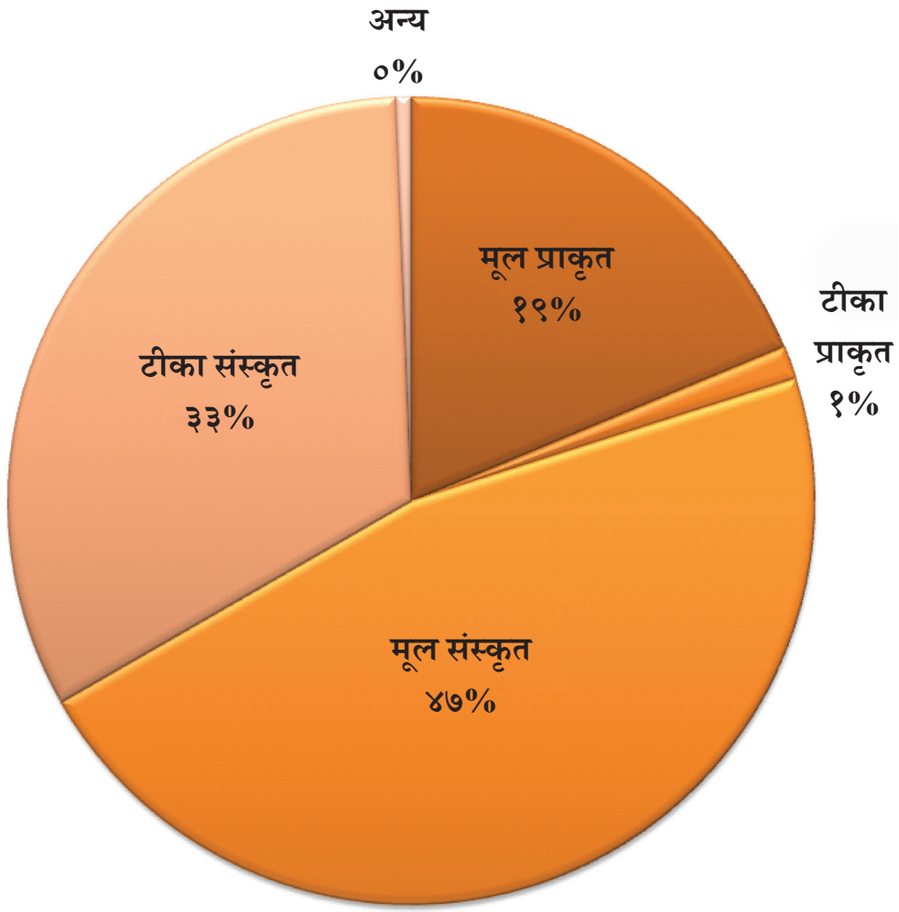

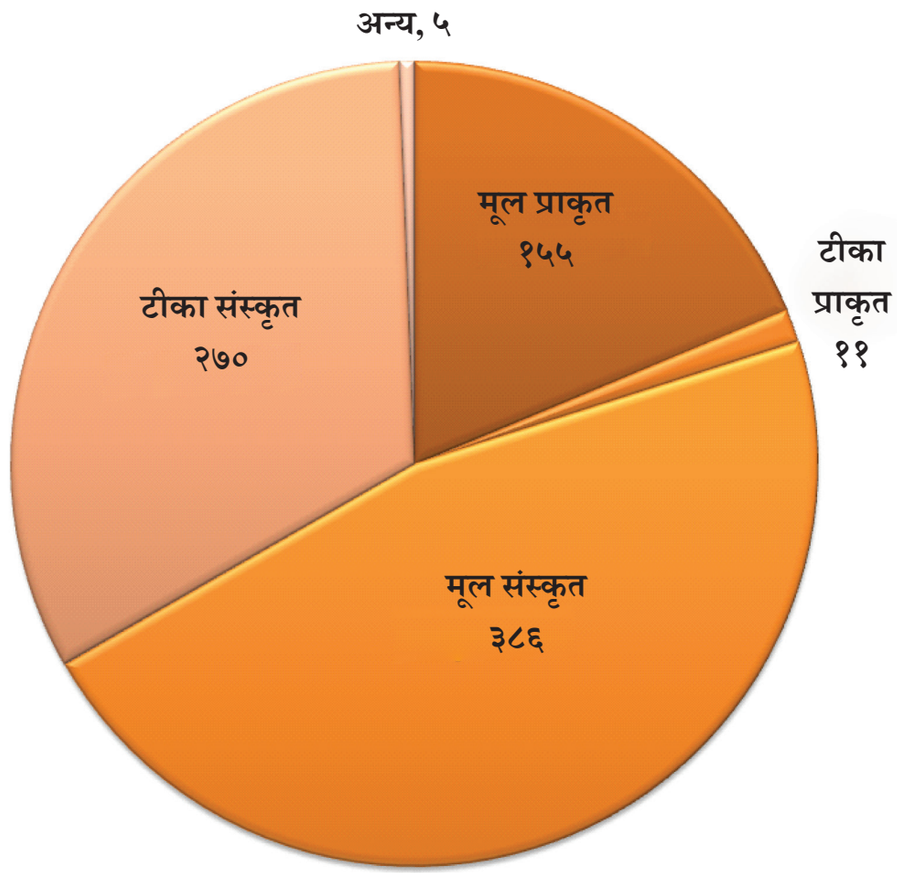

९.९ आगम आगमेतर धर्म आलेख

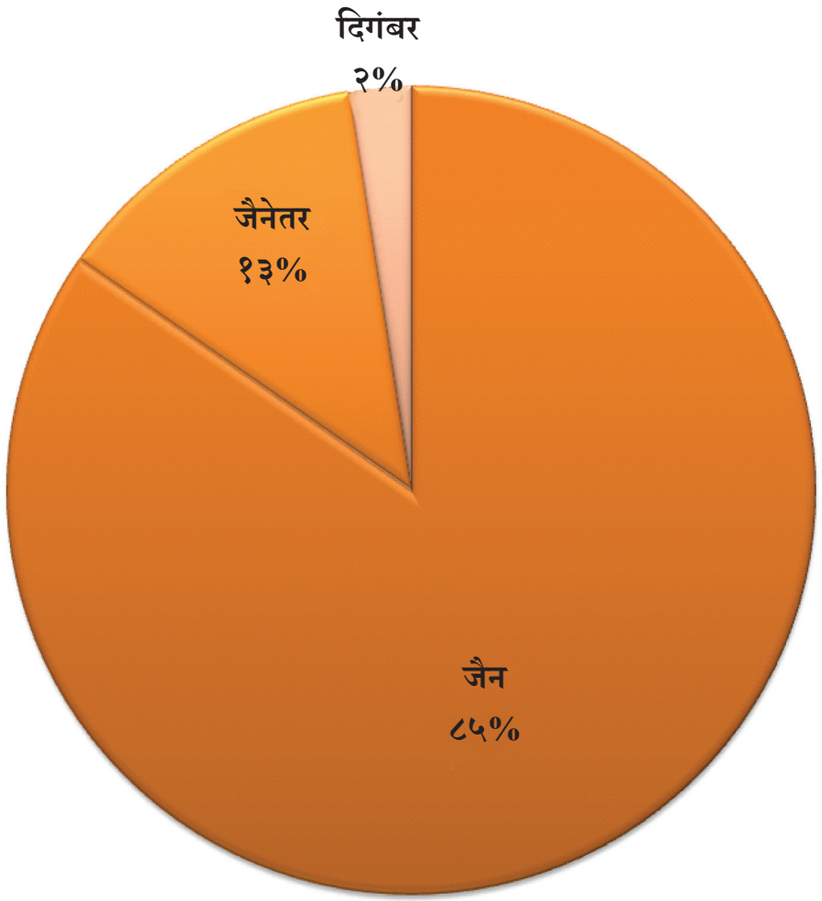

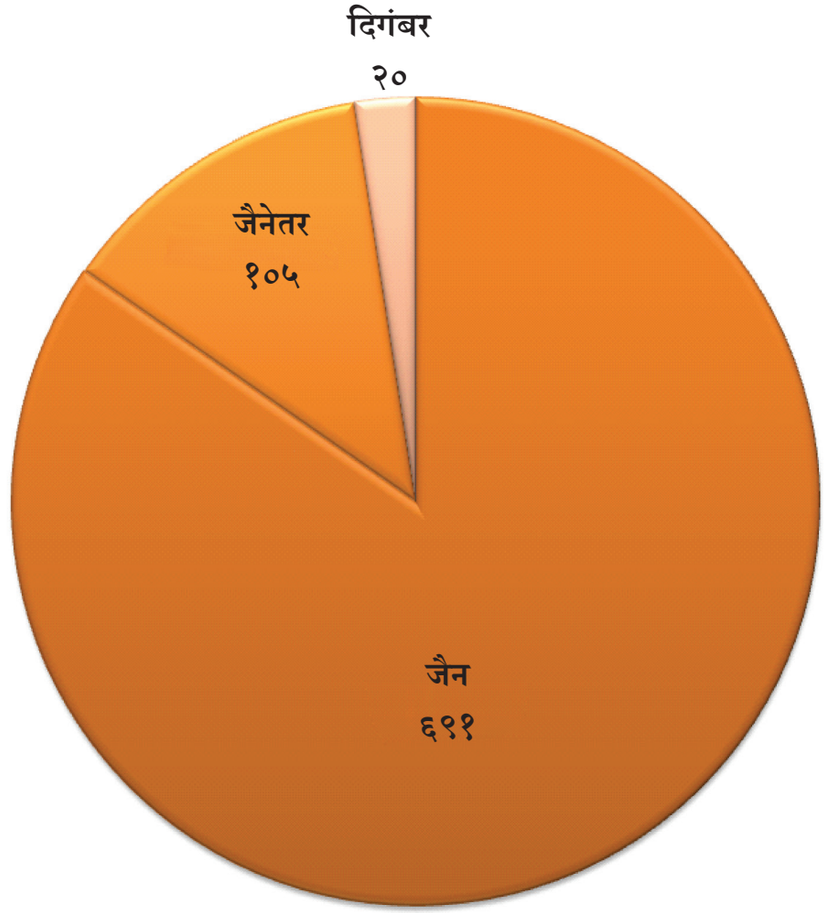

९.१० आगम आगमेतर विषय आलेख

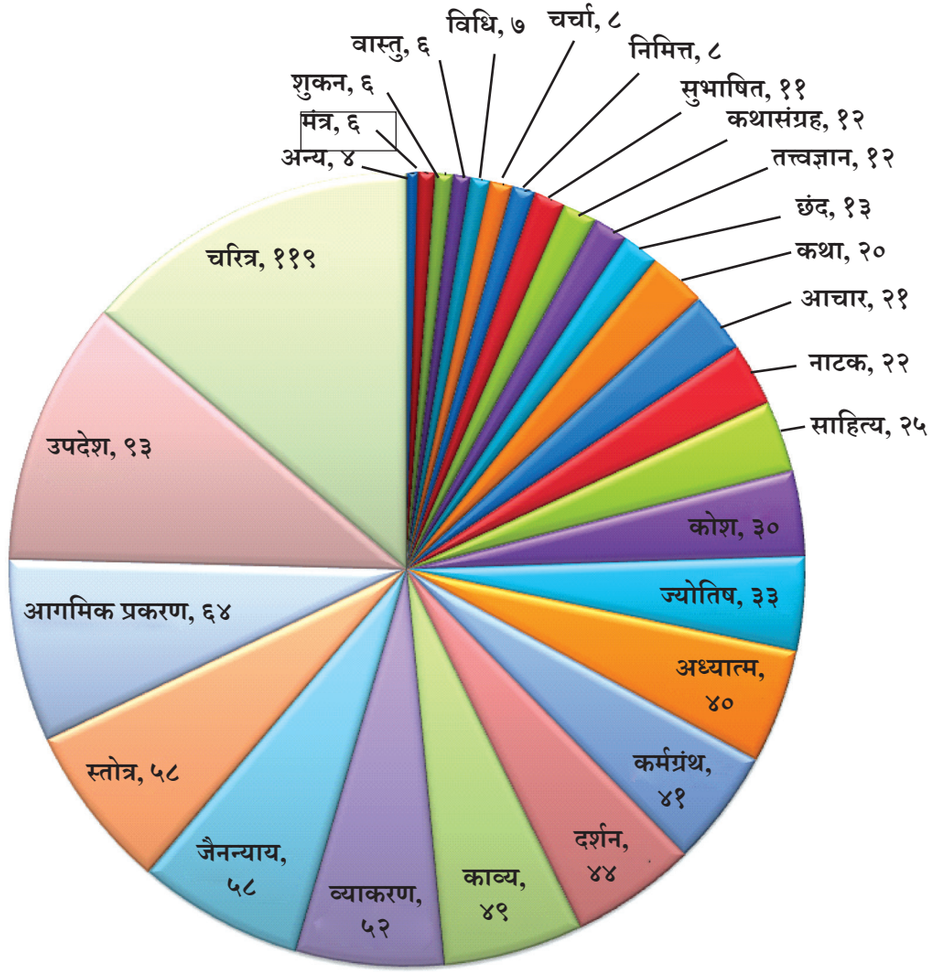

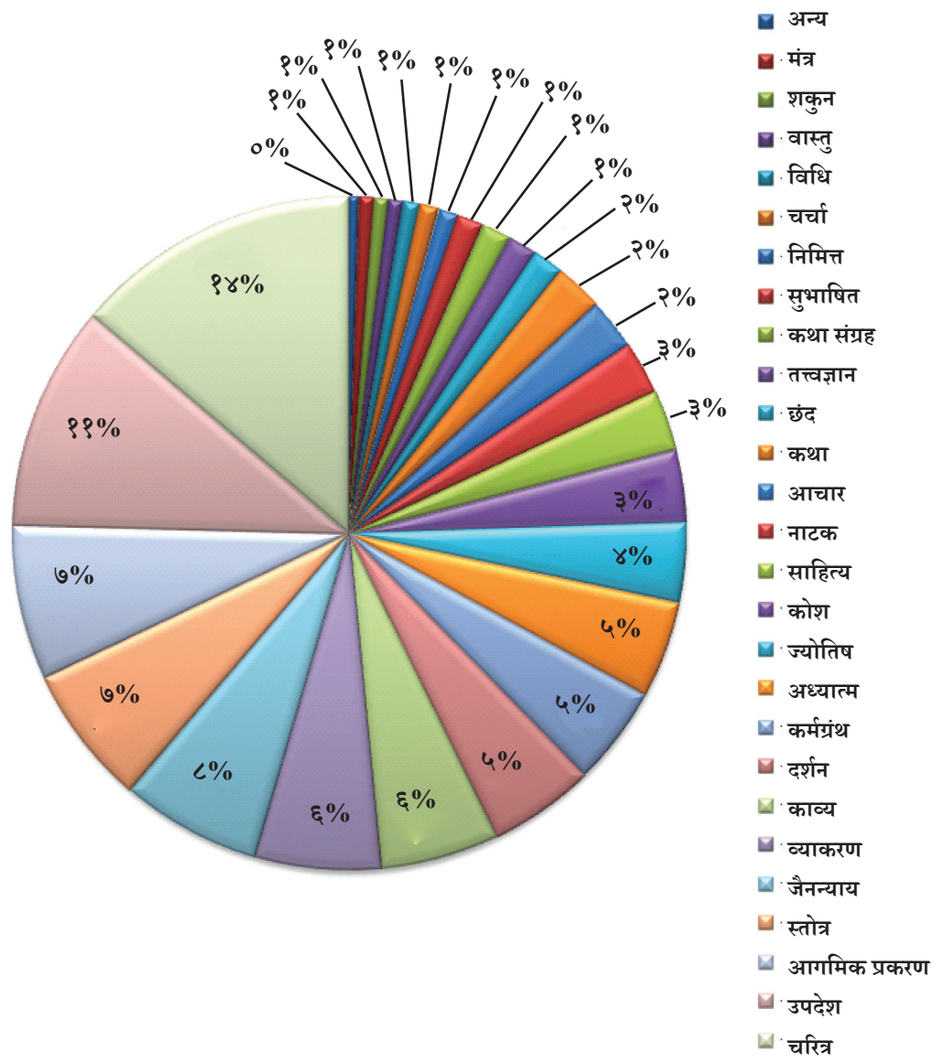

९.११ आगम आगमेतर मूल टीका ग्रंथाग्र आलेख

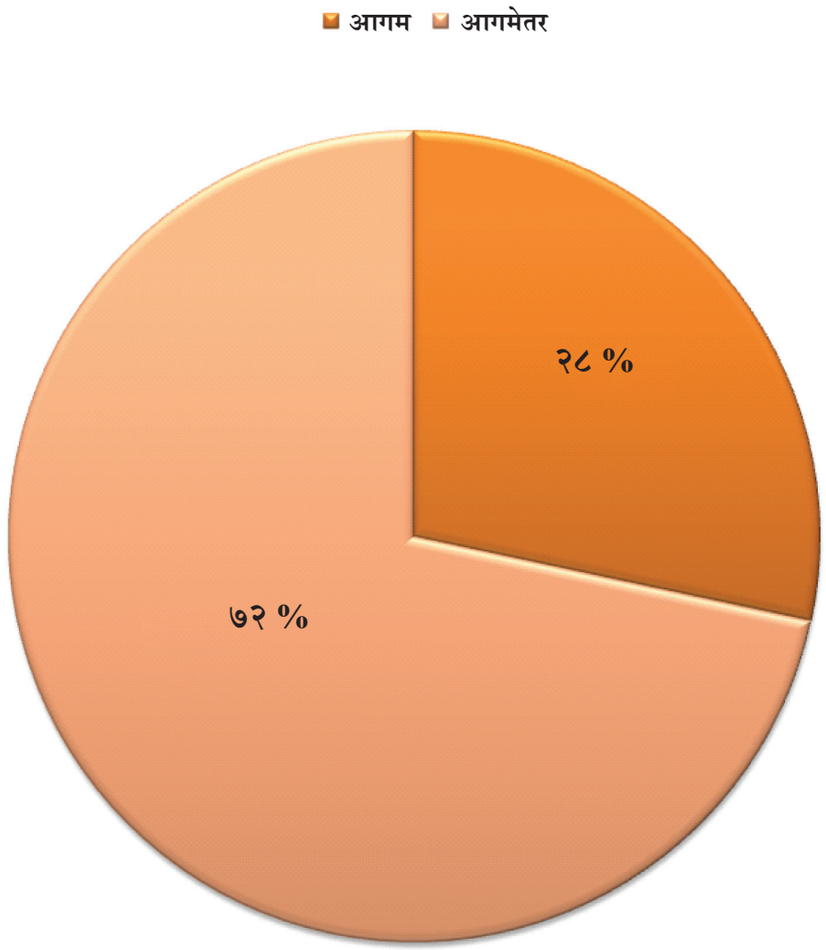

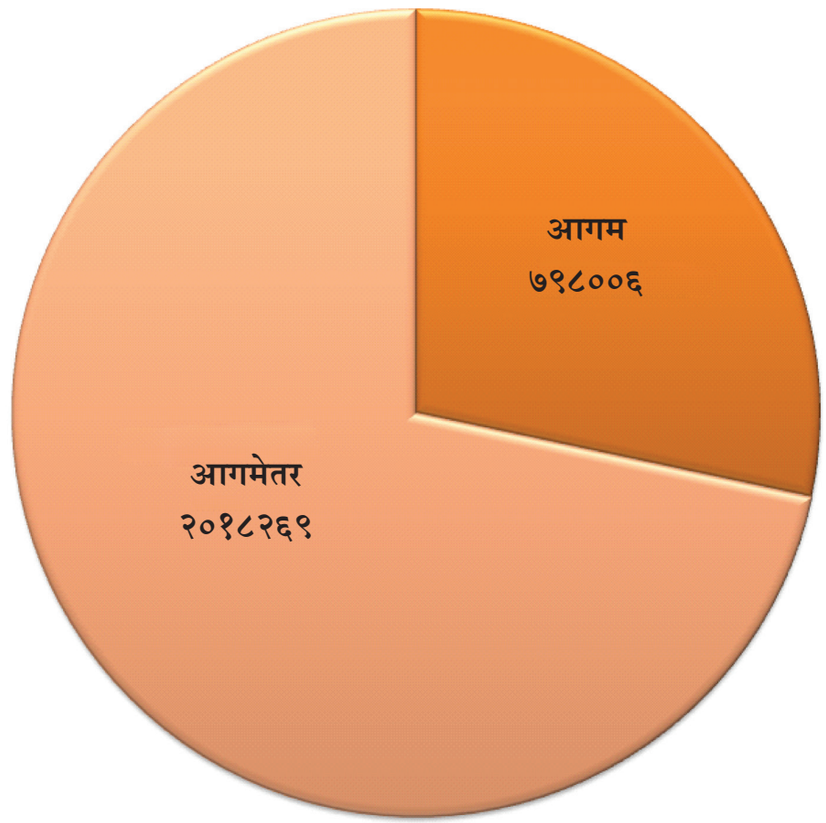

(परिशिष्ट १०)

संकेतसूचि

(परिशिष्ट ११)

संदर्भग्रंथसूचि

परिशिष्ट-१०, ११

संकेतसूचि

अनु.-अनुपलब्ध

चा.-चाईल्ड कृति

टी.-टीका

पे.-पेटा कृति

प्रा.-प्राकृत

बृ.टि.- बृहट्टिप्पनिका

बृ.क्र.- बृहट्टिप्पनिका क्रमांक

भा.-भाषा

मू.-मूल

सं.-संस्कृत

स्व.-कृति स्वरूप

स्व.पर.-स्वसमय, परसमय

संदर्भग्रंथसूचि

ग्रंथनाम/ कर्ता, संकलन/ प्रकाशक/ प्रकाशन वर्ष/

अंग आगम/पं. बेचरदास दोशी/**अनुवादक-** डॉ. रमणीक शाह/श्री १०८ जैन तीर्थदर्शन भवन ट्रस्ट/वि.सं. २०६०

अंगबाह्य आगम/डॉ. जगदीशचंद्र जैन, डॉ. मोहनलाल मेहता/ **अनुवादक-** डॉ. रमणीक शाह/श्री १०८ जैन तीर्थदर्शन भवन ट्रस्ट/वि.सं. २०६०

आगम प्रकाशनसूची/नीरवभाई डगलो/गीतार्थगंगा श्रुतदेवता भवन ५ मर्चेन्ट सोसायटी, फतेहपुरा रोड, पालडी अहमदाबाद-७/ वि.सं.२०७१

आगमिक व्याख्याओ/डॉ. मोहनलाल मेहता/**अनुवादक-** डॉ. रमणीक शाह/श्री १०८ जैन तीर्थदर्शन भवन ट्रस्ट/ वि.सं. २०६०

उपदेशसाहित्यमाला/ आ.श्रीवि.योगतिलकसू./वीरशासनम्/वि.सं.२०७०

कथासाहित्यमाला/ आ.श्रीवि.योगतिलकसू./वीरशासनम्/वि.सं. २०६८

कर्म साहित्य अने आगमिक प्रकरणो/डॉ. मोहनलाल मेहता, प्रो. हीरालाल र. कापडिया/ **अनुवादक-** डॉ. रमणीक शाह/श्री १०८ जैन तीर्थदर्शन भवन ट्रस्ट/वि.सं. २०६०

काव्यसाहित्यमाला/आ.श्रीवि.योगतिलकसू./वीरशासनम्/वि.सं.२०७०

जिनरत्न कोश/प्रो.हरि दामोदर वेलणकर/भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधन केंद्र, पुणे/ख्रिस्ताब्द-१९४४

जैन ग्रंथावली/श्री जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स, मुंबई/ वि.सं. १९६५

जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास/मोहनलाल दलीचंद देसाई/आ.श्रीवि. मुनिचंद्रसूरि/ आ. ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर सुभाषचोक गोपीपुरा, सुरत/ वि.सं. २०६२

जैन स्तोत्र संदोह/मु.श्रीचतुरवि./साराभाई मणिलाल नवाब, अहमदाबाद/वि.सं. १९८९

शास्त्रसंदेशमाला/विनयरक्षितविजयजी म.सा./शास्त्रसंदेशमाला, शास्त्रसंदेश ३, मणिभद्र अपार्टमेन्ट, सुभाषचोक, गोपीपुरा, सुरत-१/वि.सं. २०६१

(परिशिष्ट १२)

बृहट्टिप्पनिका हस्तप्रत

परिशिष्ट-१२ बृहट्टिप्पनिका हस्तप्रत

पत्र १ अ

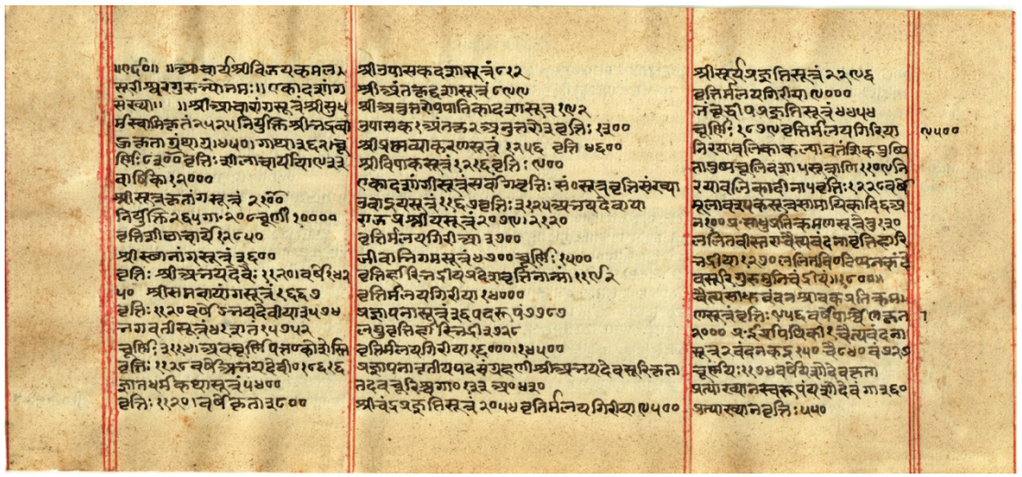

पत्र १ ब

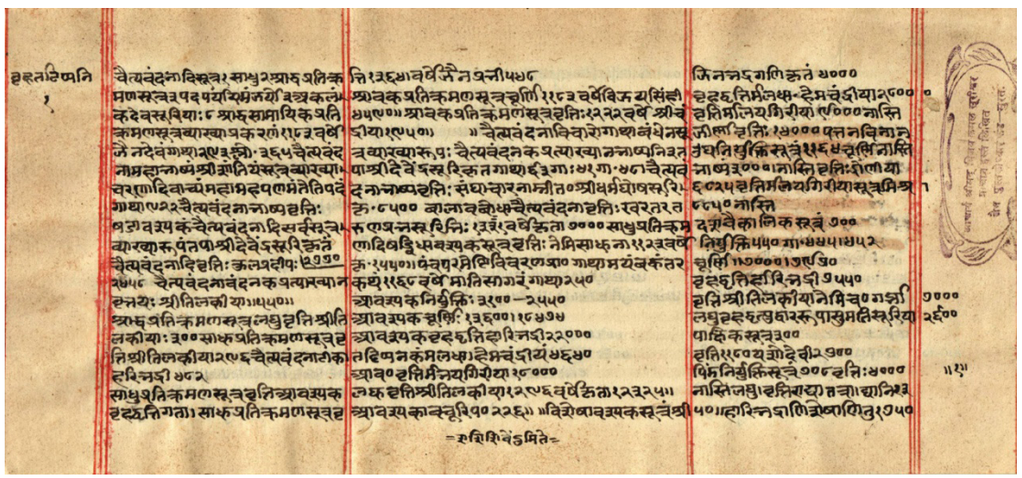

पत्र २ अ

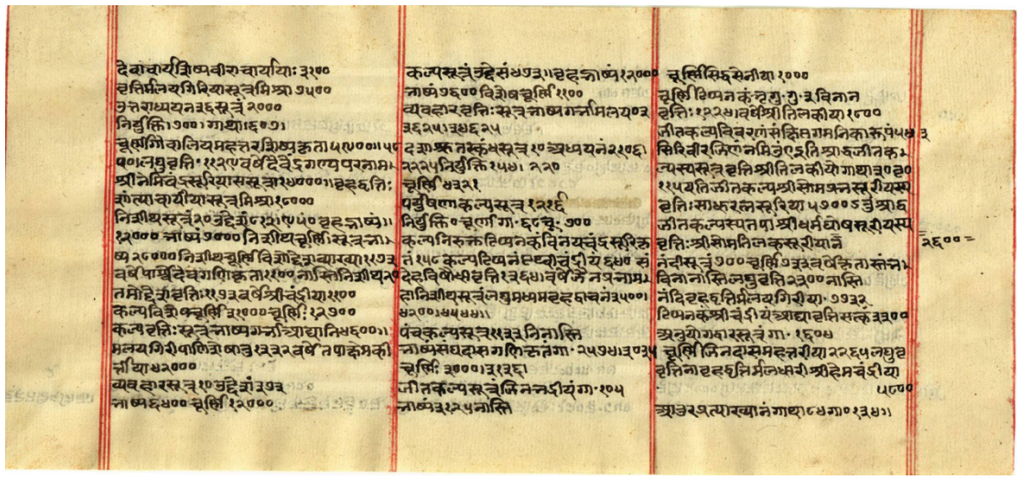

पत्र २ ब

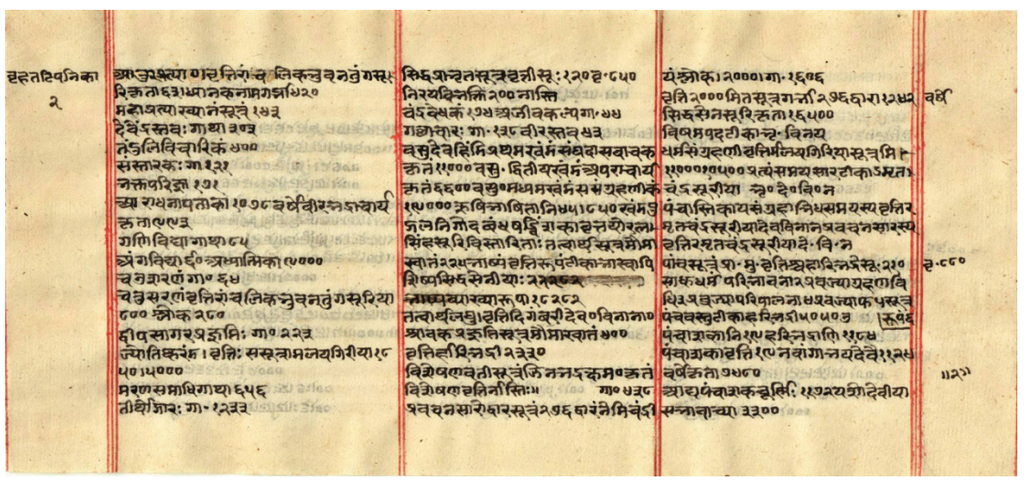

पत्र ३ अ

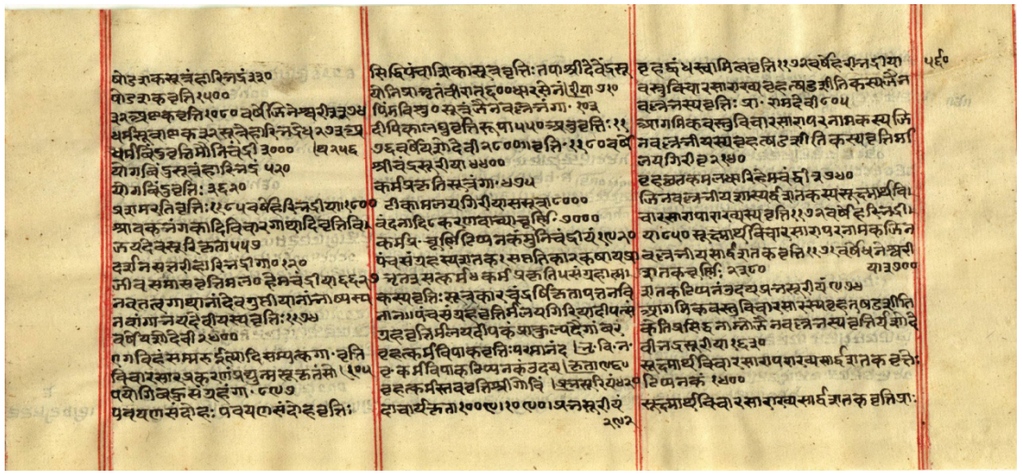

पत्र ४ अ

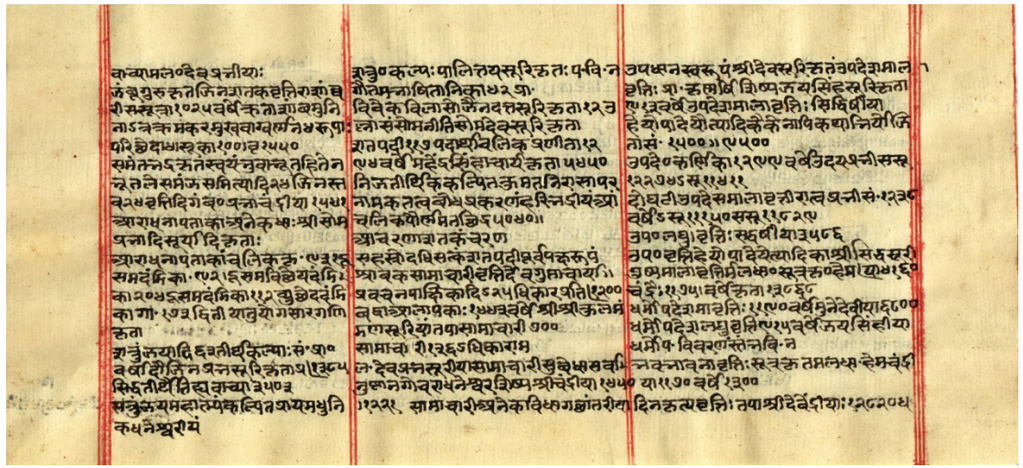

पत्र ३ ब

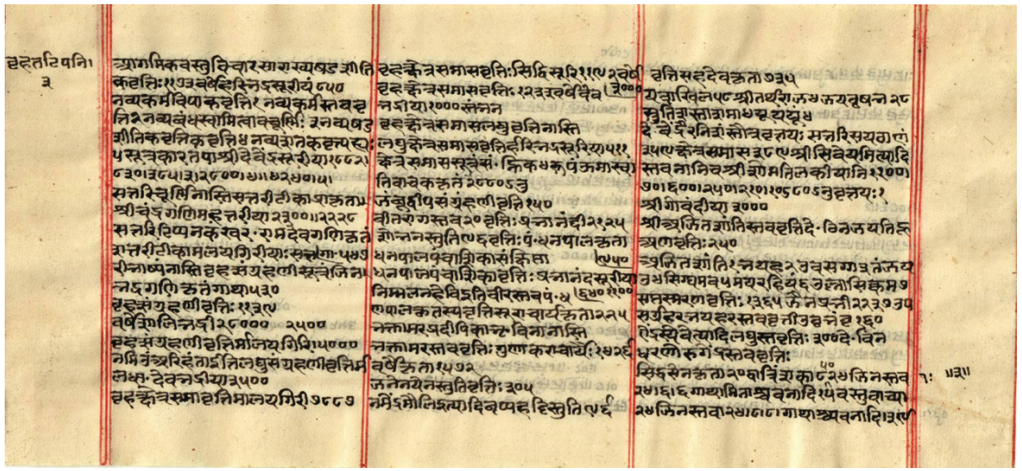

पत्र ४ ब

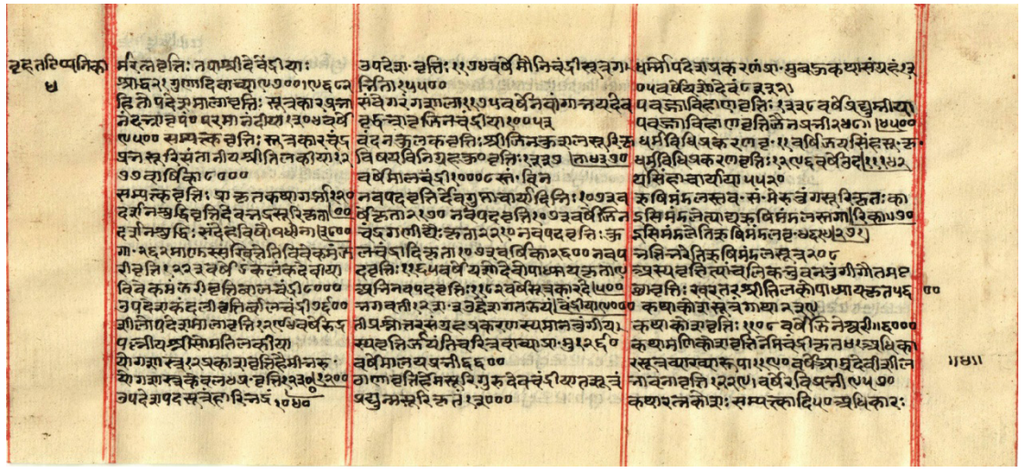

पत्र ५ अ

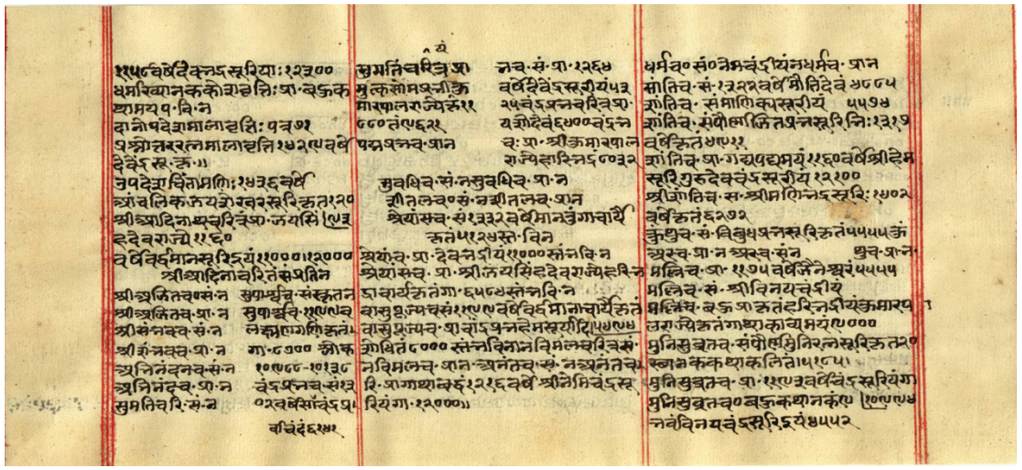

पत्र ६ अ

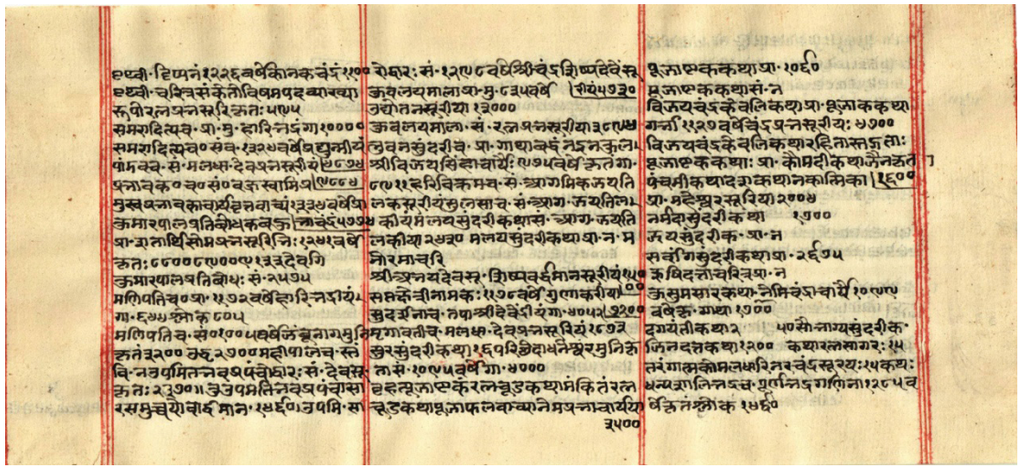

पत्र ५ ब

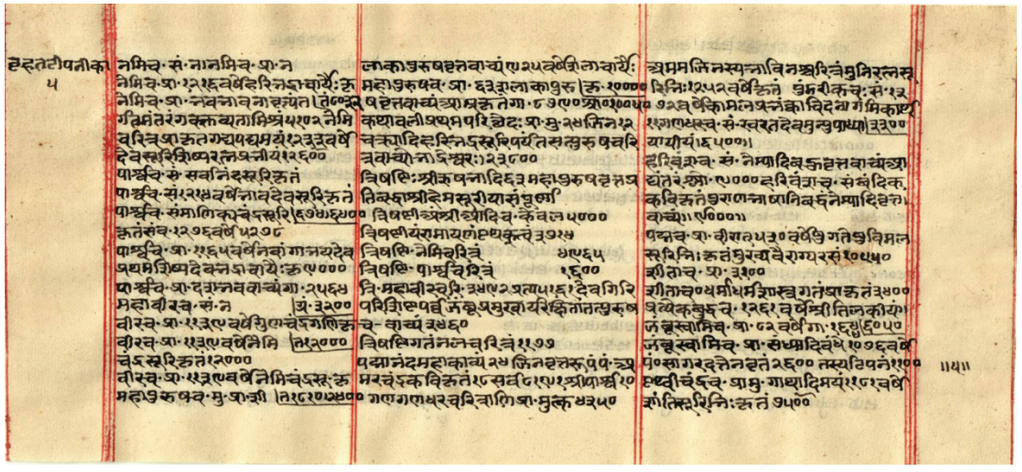

पत्र ६ ब

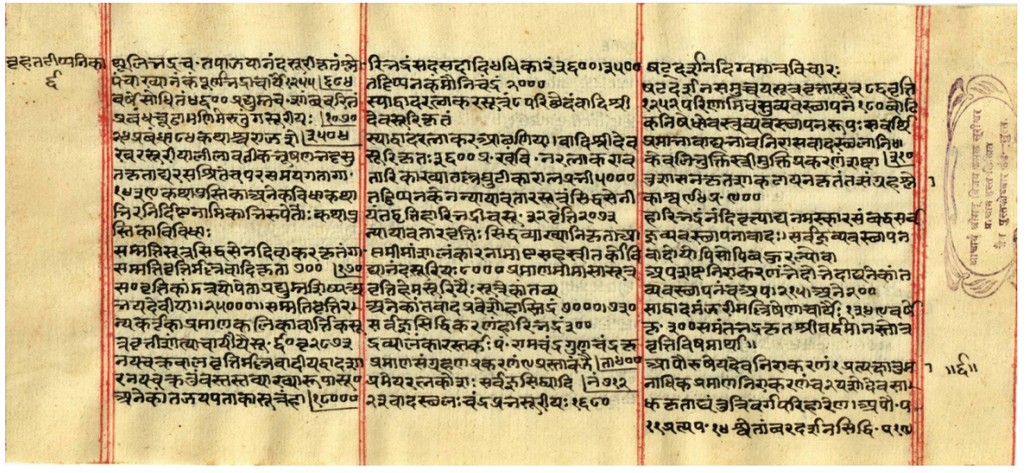

पत्र ७ अ

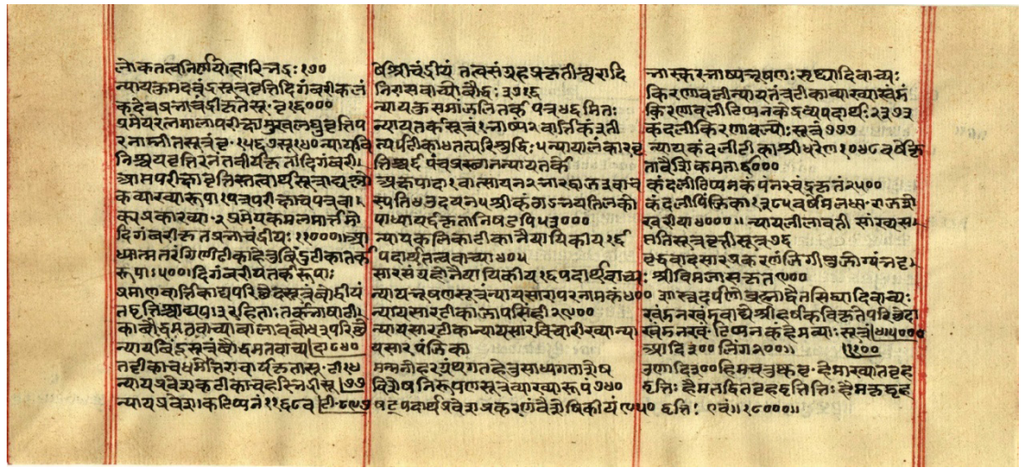

पत्र ८ अ

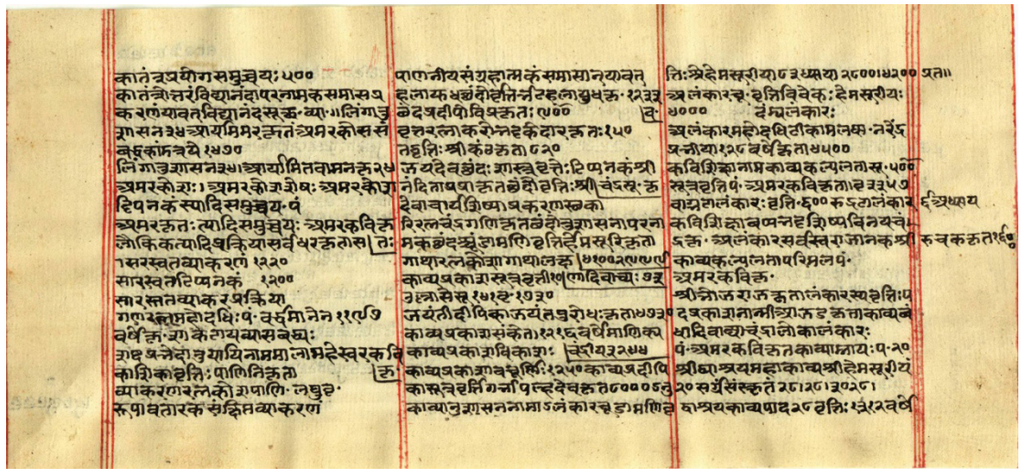

पत्र ७ ब

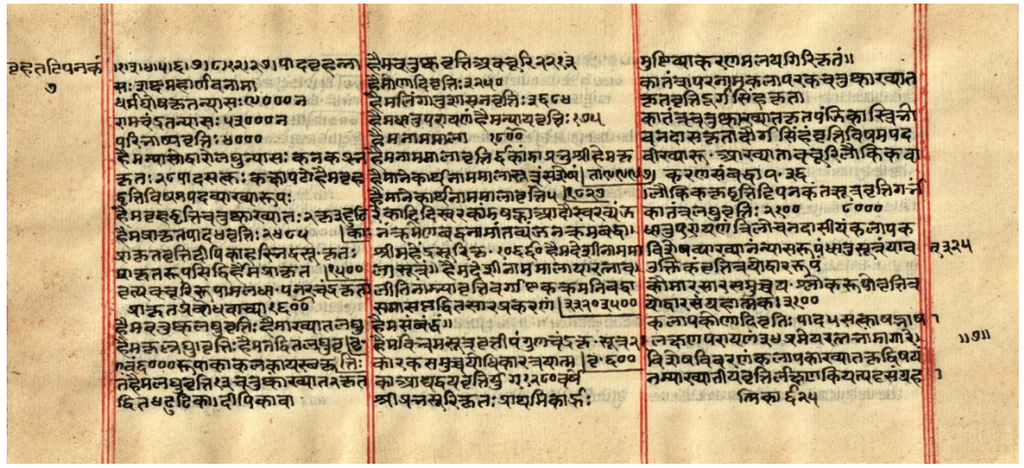

पत्र ८ ब

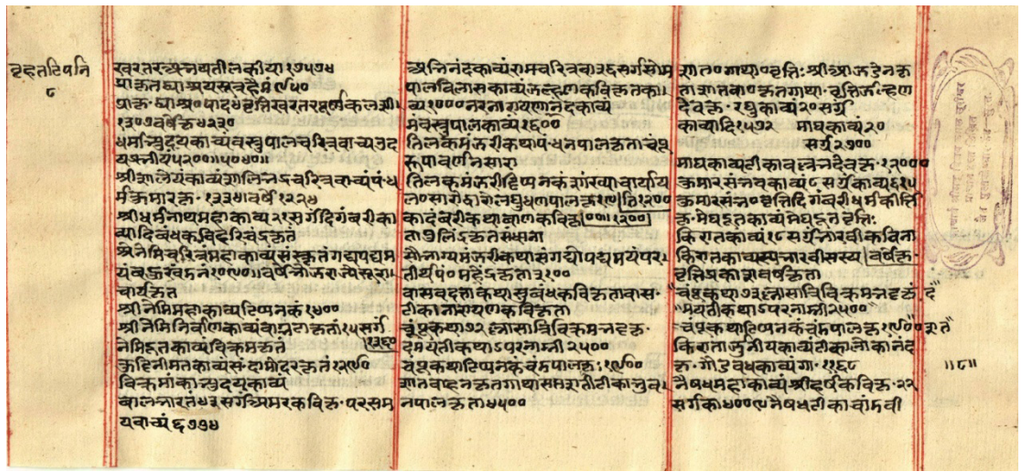

पत्र ९ अ

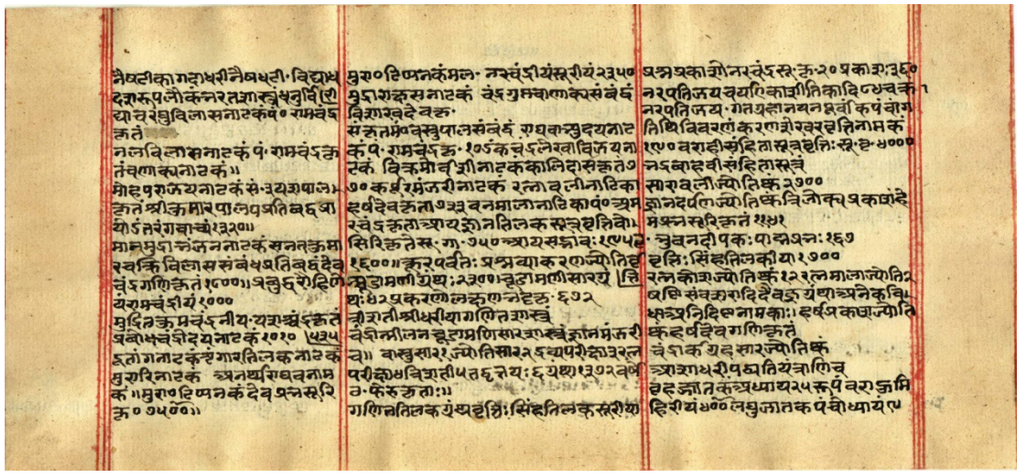

पत्र ९ ब

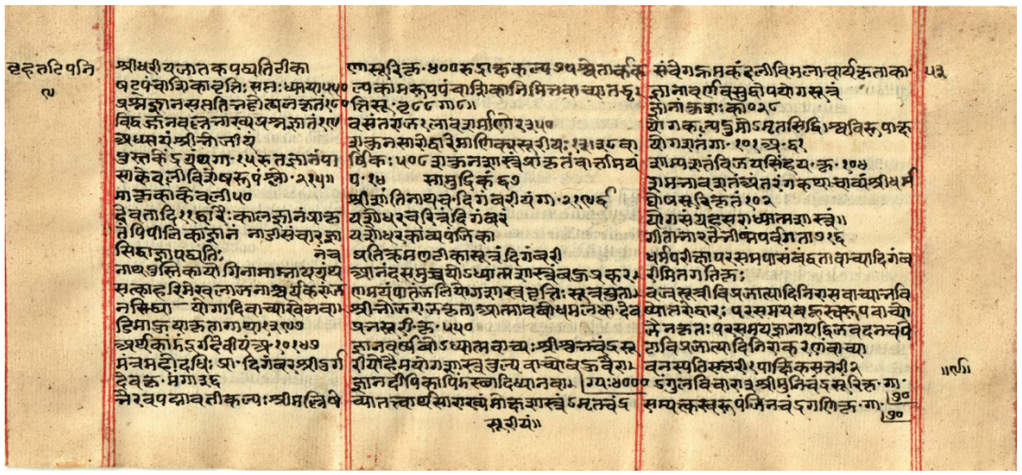

पत्र १० अ

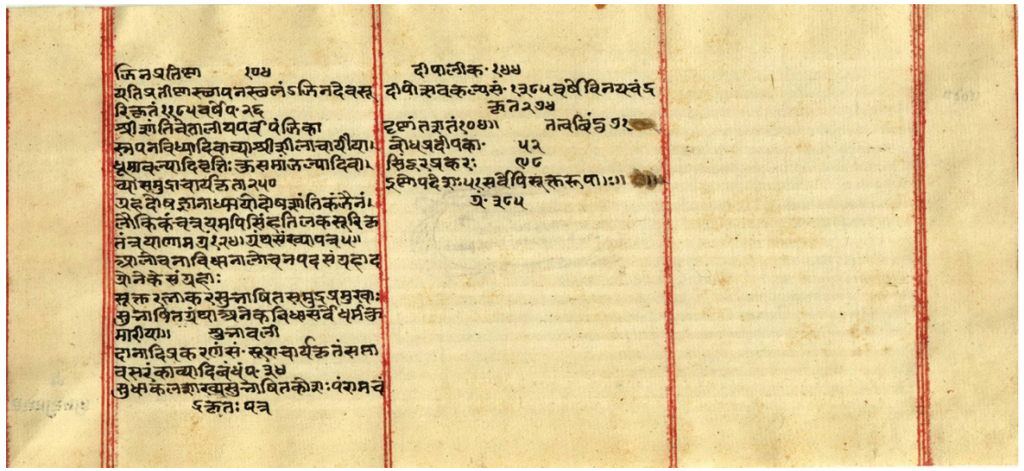

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभावों की नामावली

श्रुतसमुद्धारक

श्रीमती चंद्रकलाबेन सुंदरलाल शेठ परिवार (मांगरोळ हाल- पुणे)

श्रुतरत्न

श्री भाईश्री (इंटरनेशनल जैन फाउंडेशन, मुंबई)

श्रुतसंरक्षक

श्री हसमुखभाई दीपचंदभाई गार्डी (दुबई)

श्री भवानीपुर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ (कोलकाता)

श्री दीपकभाई विनोदकुमार शहा (तळेगाव दाभाडे, पुणे)

पूज्य सा.श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म. की प्रेरणा से
श्री अंकलेश्वर श्वे.मू. जैन संघ (अंकलेश्वर)

श्रीमती ज्योतिबेन नलिनभाई जीवतलाल दलाल परिवार

श्री माणेकचंद नेमचंद शेठ चॅरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई।

श्रुतस्तंभ

पू.सा.श्री **हर्षरेखाश्रीजी** म.की प्रेरणा से
श्रीमती वसंतप्रभाबेन कांतिलाल शाह (पुणे)

पू.आ.श्री **विश्वकल्याणसू.**म.की प्रेरणा से श्री पद्ममणि जैन श्वे.मू. ट्रस्ट

पू.आ.श्री **राजरत्नसू.**म.की प्रेरणा से श्री जवाहरनगर
श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (गोरेगाव, मुंबई)

हितेन नलिनभाई दलाल

श्रुतभक्त

श्री शांतिकनक श्रमणोपासक ट्रस्ट (सुरत)

श्री हसमुखलाल चुनिलाल मोदी चॅरिटेबल ट्रस्ट (तारदेव, मुंबई)

श्री पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (मुंबई)

श्री ऋषभ अपार्टमेंट महिला मंडल (प्रार्थना समाज, मुंबई)

वर्धमानपुरा जैन संघ (पुणे)

जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ (दहाणुकरवाडी, कांदीवली, मुंबई)

सुजय गार्डन जैन संघ (पुणे)

श्री रविकांत चौधरी (वेपेरी, चेन्नई)

पूज्य मु.श्री **प्रशमरतिविजयजी** म. की प्रेरणा से
श्री सुमतिनाथस्वामी जैन श्वे.मू.संघ (रामदास पेठ, नागपुर)

पू. सा.श्री **तत्त्वरक्षिताश्रीजी** म.सा. की प्रेरणा से
श्री सीमंधर शांतिसूरि श्राविका संघ, व्ही.व्ही.पुरम्, बेंगलोर।

पू.पं.श्री **मोक्षरति-तत्त्वदर्शनवि.**ग. की प्रेरणा से
श्री अलकापुरी जैन श्वेतांबर मुर्तिपूजक संघ, वडोदरा।

श्रीम. कल्पनाबेन एवं सुधीरभाई एस. कापडिया परिवार, (मुंबई)

श्री मरचन्ट सोसायटी जैन संघ, अहमदाबाद

श्रुतप्रेमी

श्री गोडीजी टेम्पल ट्रस्ट (पुणे)

श्री गोडीजी टेम्पल ट्रस्ट (पायधुनी, मुंबई)

श्री रतनचंदजी ताराचंदजी परमार (पुणे)

श्री मोहनलालजी गुलाबचंदजी बांठीया (पुणे)

श्री नगराजजी चंदनमलजी गुंदेचा (पुणे)

श्री नेमीचंदजी कचरमलजी जैन (पुणे)

श्री भरतभाई के. शाह (सुयोग ग्रुप, पुणे)

श्री सोहनलालजी टेकचंदजी गुंदेचा (पुणे)

श्री सुखीमलजी भीमराजजी छाजेड (पुणे)

श्री जैन आशापुरी ग्रुप (पुणे)

श्री महेंद्र पुनातर (मुंबई)

श्री सुधीरभाई चंदुलाल कापडिया (मुंबई)

श्री संजयभाई महेंद्रजी पुनातर (मुंबई)

प्रो.श्रीमती विमल बाफना (पुणे)

पू.सा.श्री **नंदीयशाश्रीजी** म.की प्रेरणा से श्री आंबावाडी जैन संघ (अहमदाबाद)

श्री गोवालिया टेंक जैन संघ (मुंबई)

श्री मोतीशा लालबाग रिलीजीयस चेरिटेबल ट्रस्ट (भायखला, मुंबई)

पू.आ.श्री **तीर्थभद्रसू.**म.की प्रेरणा से
जे. सी. कोठारी देरासर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ (मलाड, मुंबई)

श्री अशोक कालिदास कोटेचा (अहमदाबाद)

श्री विमलनाथस्वामी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (बिबवेवाडी, पुणे)

श्री मुनिसुव्रतस्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (लेकटाउन सो., पुणे)

श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (सोलापुर बजार, पुणे)

पू. मुनिराज श्री **निर्मलयशविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से
श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक गुजराती पंच (मालेगाव)

सायन जैन संघ (मुंबई)

श्रुतोपासिका सा. **चंदनबालाश्रीजी** की शुभ प्रेरणा से
मातुश्री सरस्वतीबहेन कानजी वोरा (दादर, मुंबई)

पू.आ.श्री **विश्वकल्याणसू.**म. की प्रेरणा से
श्री आदिनाथ जिन मंडळ (कर्वे रोड, पुणे)

पू.सा.श्री **सूर्यमालाश्रीजी** म. की प्रेरणा से

श्री सम्यक् साधना रत्नत्रय आराधक ट्रस्ट (अहमदाबाद)

श्री नाकोडा भैरव राजस्थानी जैन टेम्पल तथा
जैन फिलॉसॉफी रिसर्च ट्रस्ट (आळंदी)

श्री आदेश्वर महाराज जैन टेम्पल ट्रस्ट (गोटीवाला धडा, पुणे)

श्री ओमप्रकाशजी नगराजजी रांका (रांका ज्वेलर्स, पुणे)

श्री सिद्धशिला ग्रुप श्री विलासजी राठोड (पुणे)

डॉ. सुमतिलाल साकळचंद गुजराथी (हस्ते - कल्याणी मेडिकल, पुणे)

श्री जैन श्वेतांबर दादावाडी टेम्पल ट्रस्ट (पुणे)

व्ही.एल. जैन (पुणे)

वीरविभु के १९ वे पट्टधर गच्छाधिपति पू. आ. श्री **हेमभूषणसूरिजी** म.सा. की पुण्यस्मृति में संघवी वीरचंद हुकमाजी आयोजित चातुर्मास समिति, पालीताणा।

गच्छाधिपति पू. आ. श्री **महोदयसूरिजी** म.सा. के अनन्य पट्टधर गच्छाधिपति
पू. आ. श्री **हेमभूषणसूरिजी** म.सा. की पुण्यस्मृति में संघवी वीरचंद हुकमाजी परिवार आयोजित चातुर्मास समिति (पालीताणा)

श्रुतोपासक

श्री अर्थप्राईड जैन संघ (मुंबई)

पू.आ.श्री **कलाप्रभसागरसू.**म.की प्रेरणा से
श्री मुलुंड श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (मुंबई)

पू.मु.श्री **जिनरत्नवि.**म.की प्रेरणा से श्री आदिनाथ सोसायटी जैन संघ (पुणे)

पू. उपा. श्री **जितेंद्रमुनिजी** म.की प्रेरणा से श्रीमती सीमा जैन (होशियारपुर, पंजाब)

श्री वर्धमानस्वामी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट (सदाशिव पेठ, पुणे)

पू.आ.श्री **तीर्थभद्रसू.**म.की प्रेरणा से मातुश्री कमळाबेन गिरधरलाल वोरा परिवार (खाखरेची, मुंबई) आयोजित उपधान तप समिति

पू.आ.श्री **तीर्थभद्रसू.**म.की प्रेरणा से मातुश्री मानुबेन माडण गुणसी गडा परिवार
(थोरीयारी- मुंबई) आयोजित उपधान तप समिति

प्रताप बी. शाह (वडोदरा)

पूज्य आ.श्री **देवचंद्रसागरजी** म. की प्रेरणा से श्री आगमोद्धारक
देवर्धि जैन आगम मंदिर ट्रस्ट (पुणे)

श्री गोवालिया टैंक जैन संघ, मुंबई।

श्री मरीन ड्राईव्ह जैन आराधक ट्रस्ट, मुंबई।

पू. मु. श्री **शुक्लध्यानविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से
श्री रिद्धि सिद्धि आदर्श श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (मलाड, मुंबई)

पू. आ.श्री **यशप्रेमसुरिजी** म.सा. की प्रेरणा से
भाववर्धक श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (अहमदाबाद)

पू.मु.श्री **पुण्यरक्षितविजयजी** म.सा.की प्रेरणा से
श्री धन्ना शालिभद्र तपागच्छ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (मलाड, मुंबई)

श्री वर्धमान स्वामी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट (सदाशिव पेठ, पुना)

पू. उपा.श्री **भुवनचंद्रविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से
श्री कच्छ दुर्गापूर विशा ओसवाल मूर्तिपूजक जैन महाजन (मुंबई)

श्रुतानुरागी

श्री मुनिसुव्रतस्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (फातिमानगर, पुणे)

श्री जैन आत्मानंद सभा (फरिदाबाद, पंजाब)

पू.मु.श्री **जिनरत्नवि.**म.की प्रेरणा से श्री जिनरत्न आनंद ट्रस्ट
गोत्रीरोड श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (वडोदरा)

श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ (गोरेगाव, मुंबई)

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय (मलाड, मुंबई)

मातोश्री श्रीमती लीलाबाई अचलचंदजी जैन हस्ते - अशोक जैन (हिंगड)

चि. सांची सागर चोरडीया हस्ते - सौ सुनंदा संजय चोरडीया (जैन जागृति, पुणे)

अरिहंत वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेतांबर ट्रस्ट (सुरत)

।। सुयं मे आउसं ।।

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन संचालित

श्रुतभवन संशोधन केन्द्र, पुणे